

[illegible]

with the Government. It is a
 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

1. 1920-1921 - 1920
 2. 1921-1922 - 1921
 3. 1922-1923 - 1922
 4. 1923-1924 - 1923
 5. 1924-1925 - 1924
 6. 1925-1926 - 1925
 7. 1926-1927 - 1926
 8. 1927-1928 - 1927
 9. 1928-1929 - 1928
 10. 1929-1930 - 1929
 11. 1930-1931 - 1930
 12. 1931-1932 - 1931
 13. 1932-1933 - 1932
 14. 1933-1934 - 1933
 15. 1934-1935 - 1934
 16. 1935-1936 - 1935
 17. 1936-1937 - 1936
 18. 1937-1938 - 1937
 19. 1938-1939 - 1938
 20. 1939-1940 - 1939
 21. 1940-1941 - 1940
 22. 1941-1942 - 1941
 23. 1942-1943 - 1942
 24. 1943-1944 - 1943
 25. 1944-1945 - 1944
 26. 1945-1946 - 1945
 27. 1946-1947 - 1946
 28. 1947-1948 - 1947
 29. 1948-1949 - 1948
 30. 1949-1950 - 1949
 31. 1950-1951 - 1950
 32. 1951-1952 - 1951
 33. 1952-1953 - 1952
 34. 1953-1954 - 1953
 35. 1954-1955 - 1954
 36. 1955-1956 - 1955
 37. 1956-1957 - 1956
 38. 1957-1958 - 1957
 39. 1958-1959 - 1958
 40. 1959-1960 - 1959
 41. 1960-1961 - 1960
 42. 1961-1962 - 1961
 43. 1962-1963 - 1962
 44. 1963-1964 - 1963
 45. 1964-1965 - 1964
 46. 1965-1966 - 1965
 47. 1966-1967 - 1966
 48. 1967-1968 - 1967
 49. 1968-1969 - 1968
 50. 1969-1970 - 1969
 51. 1970-1971 - 1970
 52. 1971-1972 - 1971
 53. 1972-1973 - 1972
 54. 1973-1974 - 1973
 55. 1974-1975 - 1974
 56. 1975-1976 - 1975
 57. 1976-1977 - 1976
 58. 1977-1978 - 1977
 59. 1978-1979 - 1978
 60. 1979-1980 - 1979
 61. 1980-1981 - 1980
 62. 1981-1982 - 1981
 63. 1982-1983 - 1982
 64. 1983-1984 - 1983
 65. 1984-1985 - 1984
 66. 1985-1986 - 1985
 67. 1986-1987 - 1986
 68. 1987-1988 - 1987
 69. 1988-1989 - 1988
 70. 1989-1990 - 1989
 71. 1990-1991 - 1990
 72. 1991-1992 - 1991
 73. 1992-1993 - 1992
 74. 1993-1994 - 1993
 75. 1994-1995 - 1994
 76. 1995-1996 - 1995
 77. 1996-1997 - 1996
 78. 1997-1998 - 1997
 79. 1998-1999 - 1998
 80. 1999-2000 - 1999
 81. 2000-2001 - 2000
 82. 2001-2002 - 2001
 83. 2002-2003 - 2002
 84. 2003-2004 - 2003
 85. 2004-2005 - 2004
 86. 2005-2006 - 2005
 87. 2006-2007 - 2006
 88. 2007-2008 - 2007
 89. 2008-2009 - 2008
 90. 2009-2010 - 2009
 91. 2010-2011 - 2010
 92. 2011-2012 - 2011
 93. 2012-2013 - 2012
 94. 2013-2014 - 2013
 95. 2014-2015 - 2014
 96. 2015-2016 - 2015
 97. 2016-2017 - 2016
 98. 2017-2018 - 2017
 99. 2018-2019 - 2018
 100. 2019-2020 - 2019
 101. 2020-2021 - 2020
 102. 2021-2022 - 2021
 103. 2022-2023 - 2022
 104. 2023-2024 - 2023
 105. 2024-2025 - 2024
 106. 2025-2026 - 2025
 107. 2026-2027 - 2026
 108. 2027-2028 - 2027
 109. 2028-2029 - 2028
 110. 2029-2030 - 2029
 111. 2030-2031 - 2030
 112. 2031-2032 - 2031
 113. 2032-2033 - 2032
 114. 2033-2034 - 2033
 115. 2034-2035 - 2034
 116. 2035-2036 - 2035
 117. 2036-2037 - 2036
 118. 2037-2038 - 2037
 119. 2038-2039 - 2038
 120. 2039-2040 - 2039
 121. 2040-2041 - 2040
 122. 2041-2042 - 2041
 123. 2042-2043 - 2042
 124. 2043-2044 - 2043
 125. 2044-2045 - 2044
 126. 2045-2046 - 2045
 127. 2046-2047 - 2046
 128. 2047-2048 - 2047
 129. 2048-2049 - 2048
 130. 2049-2050 - 2049
 131. 2050-2051 - 2050
 132. 2051-2052 - 2051
 133. 2052-2053 - 2052
 134. 2053-2054 - 2053
 135. 2054-2055 - 2054
 136. 2055-2056 - 2055
 137. 2056-2057 - 2056
 138. 2057-2058 - 2057
 139. 2058-2059 - 2058
 140. 2059-2060 - 2059

1994

02/20/2014

राजकोट

22. 11. 1957

2000

0.506



DATA ENTERED
Date 25/7/08

रत्नरत्नावलीचंडिकाश्रीका ।
लीप्रसादचिरंजीवसद्वैद्यममाज्ञयानुसारविरचितायां ममल
घुम्रातृपुत्रालंकारतद्वचनभाषायां मुक्तकालीप्रसादवैद्यनेयहग्रंथ
वनायकोत्ताऊँडित्तैजनाथकोष्ठापतेकेलियेभेटकिया औरमतवय
समरहिंदमेष्याविनाउन्वोत्रोरकोत्रधिकारन

वृ.
चं.
२

श्रीगणेशायनमः स्वस्ति श्रीमच्चतुर्वर्गफलप्रदामलव्रह्मदेवतरे
न्योत्पन्नश्रीमञ्जैतिलोभिषमजनशिरोरत्नश्री मद्भिरीधारोलालभिषजात्मजनाविधुषासद्वैद्यतकालीप्रसादितश्रीमच्चन्द्रार्द्र
डामायंयिकाप्रसादाद्वैमचंद्रमेदिनीहारावलीशद्यार्थविन्तामयमरत्रिकाण्डशेषकोशान्प्रितनामनाममालावर्गादिपञ्च
निघण्टुमदनपालनिघंटान्माधवभिषक्त्युक्तिप्रोक्तसवसुषेणकृतवृत्तमाणिक्यमालानिदानाञ्जनशलाकास्थनिदानान्च
रकशुश्रुतवाग्भटत्रेयसंहिताशुद्धिधरवैद्यरत्नसिंहावलोकनामयारिमंजरीवैद्यजीवनवंगसेनभावप्रकाशसद्योगर
त्नावलीवाग्भटीयसंग्रहवोधस्थयोगान्वाणीधुषणवृत्तरत्नाकरश्रुतवोधस्थवृत्तान्नवलोक्येगंष्टरत्नावलीचंद्रिकाभिधा
टीकांसमीचीनामुत्पादितवान्भिषमजनहृद्व्यामविनाशनायचंद्रिकेवैद्यंष्टरत्नावलीचंद्रिकेतिसुधीभिस्संगृहीतव्या इ।

त्याव्यायिका

श्रीगणेशायनमः मेशंश्रीं शंभुं केशं दुर्गागजपियां भारतीं श्रीकुमारीं हंसं जैवात्कंचनद्विरेदमुत्पदं कुण्डली प्राणस्त्रु नलाध्यात्वागुरुं वासुभगपदयुतादृतरत्नावली
या तद्वाख्यां चंद्रिकायां कुमुदजनकदां प्रमहेदान्धहं हं तत्रो गयादौ भिरचितं यथनाराधियस्य पारमर्तितं ग्रंथकं एतस्मिं कर्तुं मुक्तकहितमात्मानं कस्य चानरायस्यो
ष्टेदनाय ग्रंथकारः ग्रंथारम्भे प्राकट्यैसात्तुरकपिशाजनाय्यात्मकमंगलं निबध्नाति स्यन्ददिति दंतिवक्रः दंतोऽस्यास्तीति दंतो हस्ती दंतिनो वक्रमिव वक्रं यस्य सः दंतिव
क्रः गणेश इत्यर्थः आशुशोभं युष्माकं पापं धुनोतु इतीकोतु ॥ १ ॥ किं कृत्वा ह्यावयित्वा कैः आश्रयोतत्पुष्करं भो विशदकागणैः आस मंतश्चोततीति आश्रयोत
दित्यत्र लठः शतशानचावित्पतेन शतप्रत्ययोस्ति आश्रयोतच्चतत्पुष्करं च आश्रयोतत्पुष्करमित्यत्र विशेषणं विशेष्येण बहलमित्यनेन कर्मधारयोस्ति अत्र पुष्करशब्देन
हस्तिश्रुण्डाद्यभागे बोध्यः हस्तिनाशाकारः श्रुण्डाहस्तासां तु पुष्करमिति हेमः आश्रयोतत्पुष्करस्य अंभः जलं आश्रयोतत्पुष्करं भदत्पत्रपटीत्यनेन समासोस्ति क

श्रीगणेशायनमः स्यन्दद्राडप्रगुंजद्रमरकनिकारभाजमानोदधानो दीव्यसिंदूरधूलीचयवचिरचितं मस्तकं दंतिवक्रः
आश्रयोतत्पुष्करं भो विशदकागणैः स्तावयित्वा श्रुपापं युष्माकं हर्षलोलक्षुतियुगमरुताचारिष्टं दंधुनोतु २ एषां गणानां सा

मूलाः कागणाः विशदश्चैककागणाश्च विशदकागणाः आश्रयोतत्पुष्करं भसः विशदकागणाः आश्रयोतत्पुष्करं भो विशदकागणास्तैराश्रयोतत्पुष्करं भो विश
दकागणैरित्यत्र पटीतपुरुषः च पुनः हर्षलोलक्षुतियुगमरुताचारिष्टं दंधुनोतु श्रीगणेशाय नमः स्यन्दः अरिष्टं दः मंत्रारिष्टं दं हर्षलोल
इत्यत्र कर्तृकारणोक्ततात्तलमित्यनेन समासः पुनश्च कर्मधारय हर्षलोलक्षुतियुगमरुताचारिष्टं दंधुनोतु हर्षलोलक्षुतियुगः पुनश्च पटीतपुरुषः हर्षलोलक्षुतियुग
सामरुत हर्षलोलक्षुतियुगमरुत तेन हर्षलोलक्षुतियुगमरुताचारिष्टं दंधुनोतु कौटशः दंतिवक्रः मस्तकं दधानः घट्टेति दधान इत्यत्र शानसप्रत्यय पुनः कौटशः स्यन्दद्रा
एडप्रगुंजद्रमरकनिकारभाजमानः स्यन्दतीति स्यन्ददित्यत्रापि शतप्रत्ययोस्ति अत्र स्यन्ददृष्टेः तस्य च मेदिनीकोशे स्यन्दंतु श्रुते नोरेति निशेनार्थे स्त्रियां

४. अन्येषामिति अन्येषां विदुषां त्रियसु श्रुतवाग्भटादीनां च चांसि विमलानि निर्मलानि सरोजराणि ॥ पुनरुत्तमिषा मुष्या न्यादायास्मिन् ग्रंथे यदहं किमपि चपली करो
 चं. मितद्वधाः संतुं समर्थाः च पुनः श्रयं तु धाः असमतया अतुल्यतया लघो यसः मम अत्र कर्मणि षष्ठी नास्त्रयं तु न निर्दां कुर्वतु कथं भूताः वधाः नूनमिति निश्चयेन गु
 १ दिदं यपुः शरीरं तदेतदेतैर्युक्तं भवति एतैः के भूतैः पुनर्गुणैः पुनर्धातुभिः पुनर्दोषैः कथं भूतैः भूतैश्चरितभो नलानिलगणैः त्वत्रोत्तरोत्तरद्वन्द्वसमासः गुणैः स
 त्वरजस्तमोभिः कथं भूतैर्धातुभिः साधिलघुधाः सास्त्रज्ञां समेदो स्थिमज्जाश्रुकांतधातवः कथं भूतैर्दोषैः सत्त्वरजस्तमोभिर्दिदैः कोर्यः उत्पन्नैर्गैर्हृतेर्युक्तैः एतादृशैश्च
 पुषि नैर्गैर्स्वाभाविकैः स्वस्थानस्थैस्तुल्यैः वातपित्तकफकैर्वाधयः भवन्ति ननु वातपित्तकफांतैर्गैर् सति कथं व्याधयो भवन्तीति शक्याह तत्पुत्रक्रमात् तद्विपरीता

अन्येषां विदुषां च चांसि विमलान्याः दाया सरोजरायस्मिन् यच्चपली करोमि किमपि संतुं समर्थो वधाः नास्त्रयं तु लघो यसो सम।
 तया श्रयं गुणैरुत्तमानूनं वक्रविशेषनिष्ठहृदियः संतो हिलुब्धा गुणो ५ यद्भवारिनभो निलानलगणैर्भूतैर्गुणैर्धातुभिर्दोषैस्त
 त्वरजस्तमोभिर्दिदैर्युक्तैर्साधैर्वपुः नैर्गैर्गैर्हृवातपित्तकफकैस्तद्वुक्रमाद्वाधयस्तस्मान्नेषु समेषु सौख्यमखिलमेतच्चिकि

मिथः स्वकीये स्वकीये स्थानितुल्यत्वाभावात् तथा च वाग्भटः ॥ त्साफलं ६ ॥ रोगस्तु दोषैर्वैषम्यं दोषसाग्यमरोगत इति तस्मात्कारणात् तेषां विपरीतानां च।
 याणां यथोचितसमतप्रयेचिकित्साकर्तव्या कृतायां चिकित्सायां सत्यांतेषु प्राप्तेषु खिलं सौख्यं भवति एतदेव चिकित्साफलमित्यर्थः ६ ६ ६

शरीरदत्तमाह तत्रेति तत्रशरीरे अस्यां चशतत्रयं वर्तते ३०० स्नायवोनवशतं ज्ञेयं ५०० संधयोद्देशतकेदशापिवाता २१० मर्मणां सप्तशतं कं ज्ञेयं २
 ०० शिराः प्राप्ताशतसंख्याका ज्ञेयाः ७०० तद्गैः धमनिकाश्चतुर्विंशतिर्ज्ञेयाः २४ अन्यो यन्मांसपेषः स्मृताः तन्मांसपेषः बुधमणोः पञ्चशतं मता कथिता ५०० अत्र
 तस्यामित्यनेन शरीरदत्तमाह तत्रवपि अस्यां कल्याणां शतत्रयं वर्तते ३०० तेषां विंशतिरस्य शतं शाखास्तु १२० तथा हि एकैकस्यां तु पादाङ्गुल्यां त्रीणि त्रीणि ता
 नि पञ्चदश १५ तल्लक्ष्मणुल्फसंस्तानि दश १० पार्श्वमिकं १ गुल्फयोरधः प्रदेशः पार्श्वः जंघायां द्वे २ जानुन्येकं १ एकमूर्ध्वविति १ त्रिंशं देवमेकसिं सविप्रभवति १
 ३० कटिमांसपदाङ्गुलीयावत्सक्युच्यते एतेनेतरसंविद्यवाहचव्याख्यातो सप्तदशोत्तरं शतं ११० श्रोणिपार्श्वद्वयोरेव स्तु श्रोण्यां पंच ५ तेषां भ्रमयदन्ति तेषु

तत्रस्यां चशतत्रयं नवशतं च स्नायवः संधयः रव्याताद्देशतकेदशापि शतकं सप्तशतं मर्मणाम् ज्ञेयाः सप्तशतं शिराधमनिका
 लाद्गैश्चतुर्विंशतिस्तन्यापंचशतं मता बुधमणौ स्तन्मांसपेषः स्मृताः ७

चत्वारि ४ त्रिकसंस्तमेकं १ पार्श्वेष्वद्विंशदेव २३ देवमेकसिं द्वितीये
 पितं पृष्टे त्रिंशत् ३० अष्टावुरसि षडे २ अष्टकसंज्ञे हस्तलो इति लोके अष्टावुरसि तिलोके शीतं प्रत्यर्द्धे त्रिपुष्टीः ६३ शीतायां नवकं ९ काठनाड्यां चत्वारि ४ देहन्वोः २ दं
 ताः द्वात्रिंशत् ३२ नासायां त्रीणि ३ एकं तालुनि २ गंडकर्णशरेष्वेकैकं षट्शिरसि चतुर्विंशतिर्ज्ञेयाः तानि प्रत्यर्धे इति सुश्रुते प्रसिद्धानि अथ स्नायुनां संख्या स्थानाद्वाह अत्रवपि
 पितवशतं च स्नायवः ५०० तानां स्नायुनां मध्यशाखास्तु षट्शतानि ६०० द्वे शतत्रिंशच्च २३० कोष्ठे शीतं प्रत्यर्द्धे सप्ततिः ७० तस्युपा एकैकस्यां तु पादाङ्गुल्यां षड्विंशतिस्तानि स्थि
 शत ३० तावत्येव तल्लक्ष्मणुल्फेषु ३० लक्ष्मणुल्फैः हस्तपादयोर्वेदेषु हस्तयोर्द्वौ पादयोर्द्वौ शीतमेदेषु रेकैकं पादस्य पार्श्वे द्वौ शिथिले शेषौ घुटिके गुल्फावित्युच्यते ता
 वत्येकजंघायां ३० दश १० जानुनि चत्वारिंशद्वौ ४० दश १० वंशमणौ जंघायाः संधिर्वेदेषु शतमध्यर्द्धमेकसिं सविप्रभवति एतेनेतरसंविद्यवाहचव्याख्यातो षष्टिः

कदां असीतिः ८० पृष्ठे पार्श्वयोः षष्टिः ६० उरि त्रिंशत् ३० वक्षः त्रिंशत् ३६ योदायां मूर्द्धि चतुर्विंशत् ३४ एवं नवस्तापुणतानि व्याख्यातानि तद्वत्प्रमाणमाह मेदसस्तेह
 ह मादाय शिरसायुत्तमाप्रयात् शिराणां च मृदुः पाकः स्नायुनां च ततः खरः इह च श्रुयते अथ संधीनां संख्या लघुनां बाहू तेषां संधीनां मध्ये शाखास्तृषष्टिः ६८ एकोन षष्टिः
 ३० ५५ कोष्ठे योवांप्रतर्द्धं असीतिः ८३ अष्टषष्टिर्विवरणमाह एकैकसंज्ञातुपादंगुल्पां त्रयस्त्रयः द्वावेगुष्ठे ते चतुर्दश १६ जातुगुल्फवत्संज्ञां चैकैकः एवं सप्तदशैकस्मिन्मर्माणि
 ४ भवन्ति १७ एतेनेतरसंज्ञि बाहव्याख्यातौ अथ कोष्ठगतानामेकोनषष्टिर्विवरणमाह त्रयः ३ कटी कपालेषु चतुर्विंशति २४ पृष्ठवंशे मावनाख्यपार्श्वयोः २४ उरस्यौ ८
 अथ योवांप्रतर्द्धं असीतेति विव रणमाह तावन्त एव योवायां ८ त्रयः ३ कण्ठे नाडीषु हृदयस्योमनि वज्रास्त्रिंशद्दश १८ दंतपरिमाणाः ३२ दंतमूलेषु एकः २ का कलके नाश
 यामेकः १ द्वौ २ तर्ममाउल्लोनेत्राभ्ययो गण्डकार्णिके चैकैकः ६ द्वौ २ हनु संधी द्वौ २ उपरि हाडुं दोषां खं यथा २ पञ्चशिरः कपालेषु ५ एको मूर्द्धि १ इति श्रुयते नोक्तं
 अथ मर्माणां संख्या स्यात्तत्राह तानि मर्माणि पञ्चात्मकानि तदाह मांसमर्माणि रीसमर्माणि स्नायुमर्माणि अस्थिमर्माणि संधिमर्माणि चेति नखलुमांसशिरा
 स्नायुस्थिसंधिविरेकेणान्यानि मर्माणि भवन्ति यस्मान्नोपलभ्यन्ते तैरेकादश १२ मांसमर्माणि एकचत्वारिंश ४२ क्षिरामर्माणि सप्तविंशत् २७ स्नायुमर्माणि ३
 ४ ८ अस्थिमर्माणि विंशतिः २० संधिमर्माणि तदेतत्सन्नेत्रं मर्मशतं तेषामेकदेशे १२ कस्मिन्संविद्ये भवन्ति एतेनेतर संज्ञि बाहव्याख्यातौ उदरे २ सोर्वा दश १२
 चतुर्दश १६ पृष्ठे योवांप्रतर्द्धं सप्तविंशत् ३० तत्र संविद्ये मर्माणि क्षिप्रतलहृदय कूर्चं शिरोगुल्फेन्द्रवसिजम्बायुर्वेलोहितादाणि विटपद्वेति एतेनेतरसंविद्ये व्याख्या
 तं अथ क्षिप्रादीन् एकैकं गणितव्यं उदरे २ सोर्वा सुगुहवसिनाभि हृदय तल नमूल सन्नोहितापलापंत्युपस्तं भौचेति गुदादिहृदयं तमेकैकं गणितव्यं सनमलादीनि द्वे द्वे एतच्चतुष्टय
 तटीकायाम् पृष्ठमर्माणितु कटीकत उगकुंकंदर नितं वपार्श्वसंधि पृहत्पं सफलकार्यं संचिति कटीका त्रुणादीनि द्वे द्वे चतुर्माणां तु क्षिप्रतल हृदय कूर्चं शिरोगुणिवन्धे ३
 वसि कूर्पे एषु वेलोहितादाणिक क्षाधरं चेति एतेनेतरे बाहव्याख्यातः अथ क्षिप्रादिकमेकैकं गणनीयम् जगूर्धमर्माण्यह चतस्रो धमन्यो ४ अष्टे मात्रिका ८ द्वे
 हकारिके २ द्वे विधौ २ द्वौ फलो २ द्वाव पाङ्गो २ द्वाव वतौ २ द्वाव त्सेपो २ द्वौ शंखौ २ एका रस्य पनो पञ्चसीमंताः ५ चत्वारिंश ४२ अष्टाटकानि एकाधिपतिरिति १ तत्र तलहृदये

न्द्वस्तिगुदस्तनोहितानिमांसमर्माणि तोलधमनोमात्रिकाश्रृंगटकायां स्यापुनोपल्लनमल्लालापस्तंभहृदयनाभिपार्श्वसंधिवह्नोलोहिताक्षोर्वः शिरामर्माणि त्रिजालि
 विटपकक्षधरकुर्वचशिरवस्तिमिप्रांसविधुरोत्पणः स्नापुमर्माणि अस्थिमर्माण्याह कटीकतत्रुणानितंवांसफलकशंखास्त्वस्थिमर्माणि चेति संधिमर्माण्याह
 जालुकुर्वीर सीमेताधिपतिगुल्फमणि कंधुकुंदरार्कोट्टकादिकाश्चेति संधिमर्माणि इति मर्माणि श्रुश्रुतेनोक्तानि त्रैयाः सप्तशतं शिरेति तासां मूलशिराश्चत्वारि
 शतासां वातवाहिन्यो दश २० पित्तवाहिन्यो दश २० कफवाहिन्यो दश २० रक्तवाहिन्यो दश २० तासां तु वातवाहिनीनां वातस्थानगतानां पञ्चशतं निशतं २०५ भवति ताव
 त्पित्तवाहिन्यः पित्तस्थाने कफवाहिन्यः कफस्थाने रक्तवाहिन्यः यद्वत्पित्तोरेवमेतानि सप्तशिराशतानि ७०० तत्र वातवाहिन्यः शिरा एकस्मिं सविष्टि पञ्चविंशतिः
 २५ एतेनेतस्मिन् विद्यवाहचव्याख्याते विशेषतस्तु कोष्टे चतुस्त्रिंशत् ३४ तासां गुदमेदोऽश्रिताः श्रोण्यामष्टौ ८ द्वे द्वे पार्श्वयोः ४ षट् षट् तावत्पञ्चोदो दश २० वक्षसि
 एकचत्वारिंशं जत्रुण ऊर्ध्वं तासां चतुर्दश १४ ग्रीवायां कार्णयोश्चतस्रः ४ नवजिह्वायां ९ षट् षट् नासिकायां अष्टौ ८ नेत्रयोः एवमेतत् पञ्च सप्तत्यधिकशतं वातव
 ह्नां शिराणां व्याख्यातं एष एव विभागः श्रोण्यामपि विशेषतस्तु पित्तवाहिन्यानेत्रयोर्दश २० कार्णयोर्द्वे २ एव रक्तवहाः कफवहाश्च एवमेतानि सप्तशिराशतानि सवि
 भागानि व्याख्यातानि धर्मनिकेति चतुर्विंशति २४ धमन्योनाभिप्रभवश्चभिहिताः तत्र केचिदाहुः शिराधमनोस्रोतस्तन्मविभागः शिराविकारवधमन्यः स्रोतांसि चेति त
 नूनमस्य क अना एव हि धमन्यः स्रोतांसि च शिराभ्यः कस्माद्वा ज्ञानान्यात्वा न्नस्तन्नि यमात् कर्मवैशेष्यादागमाच्च केवलं तु परस्परसन्निकर्षात् शब्दशामस
 कर्मत्वात् सोऽप्यप्य विभक्तकर्मणामप्य विभाग इव कर्मसु भवन्ति इति श्रुश्रुते अथपेरीना ह पञ्चपेरीशतानि ५०० भवन्ति तासां चत्वारिंशतानि ४०० शाखासुको
 ष्टेषु दृष्टिः ६६ ग्रीवां प्रतर्द्धं चतुस्त्रिंशत् ३४ अथशाखागतानाह एकेकस्यांतपादां गुल्फांतिसंस्तित्वस्ताः पंचदश १५ दश २० प्रपदे पादोपरि कुर्वसन्निविष्टास्ताव
 त्पश्च १० दश १० गुल्फतलयोः गुल्फजान्ते रविंशति २० पञ्चजा नुनि विंशति २० रूरो दश वैष्णो शतमेवमेकस्मिं सविष्टि भवन्ति एतेनेतस्मिन् विद्यवाहचव्याख्यातो कोष्ट
 गतानाह तिस्रः अणयो एकारमेदे सेवनां चागारदे रक्षणाः स्थितोः पञ्च पञ्च २० द्वे २ वस्ति शिरसि पंचोदो ५ नाभ्यामेकार एष्टोर्द्वे सन्निविष्टा पञ्च पञ्च २० दीर्घाः षट् पार्श्व

यो द्देशवदसि १० अक्षकांसौप्रतिसमंतात्स ७ वाक्चो रधोभागमूलंअक्षकं कश्चिद्देशेअंघ्र्या इति प्रसिद्धः द्वे २ हृदयामाशयोः षट्द्वयकृतस्त्री हो डुकेषु प्रीतिर्दे।
 गामाह ग्रीवायांचतस्रः ४ अष्टौ दहन्वोः एकैकाककसकालयोः २ द्वे शालुनि एकाजिह्वायां श्रोत्रयोर्द्वे २ घोणायां द्वे २ द्वे नेत्रयोः २ गण्डयोश्चतस्रः ४ कर्णयोर्द्वे २ च
 तस्योत्तल्लोटे ४ एका रशिरीत्येवमितातिपञ्चपशीशतानेत्यर्थः ७ नामेरुर्द्वमधोगातेति यापूर्वोक्ताश्चतुर्विंशतिधर्मतिकास्ताः कस्मिन्स्थानेकतिकातिचसंतीत्याशयेना
 ह स्पष्टमिदं ८ देह इति अग्निात्मसहसा आत्मवलेन देहे शरीरे यदुक्तं सर्वान्नपानादिकं आहारं तत्पाकं उपाभयति प्रापयतीत्यर्थः किंभूतोऽग्निः अविकलः

नामेरुर्द्वमधोगातादशदशद्वेदेवतिर्य्यगातेनाङ्गस्तासु सहस्रशोपरिवृताः स्रष्टमात्रस्रष्टमात्रपि ताभिर्भूतगणावहंतिसततं
 शुद्धं संपुष्टयेस्वस्वकर्मचकारयति वपुषः स्थानि स्थिता यत्र या ८ देहेनाभिगतोऽग्निात्मसहसा सर्वान्नपानादिकं भुङ्क्ते पा।
 कमुपानयत्यविकलः संधुक्षितो वायुना सस्य लेषु यवोन्मितस्तिल इवास्थ लेषु केशा यवत् स्रष्टमेषु प्रतिभाति जंतुपुतदाय
 नं वलं जीविनां ९ नामेर्वाभेपार्श्वतो वन्निवक्रं किंचिद्देहं क्षिणो वीर्य्यमार्गः क्षीरे स्नेहं यद्वदाले समंतात्तद्व्युक्रं सर्व

आत्मप्रकृतिस्थः पुनः वायुना संधुक्षितः प्रज्वलितः सोऽग्निः स्थले देहप्रचारी १० पुजंतुषु जीवेषु हस्त्यादिषु यवोन्मितः प्रतिभाति यवमात्रप्रमाणा विंशि
 शोद्योतेते अस्थ लेषु मनुष्यादिषु तिल इव विभाति स्रष्टमेषु कीटपतंगादिषु केशा यवत् विभाति अतएव कारासात् शरीराणां जीवनं वलञ्च तदायतं तदाधीनमन्याधी।
 नमित्यर्थः ९ नामेरेति नामेर्नाभिस्थानात्वाभेपार्श्वतो वामपार्श्वे वन्निवक्रं मुखमिति शेषपार्श्वे नमस्रहोपार्श्वमित्यत्र समं देहप्रत्यये ततः सप्तम्यर्थे तस्तिलवामद

तु लोयस्मान्तेजसः प्रधानत्वमुक्तमित्याशङ्क्याह तेजश्चैव ज्वलानां मध्ये तेजसः प्रधानत्वमेव तत्त्वो ज्वलनयोः उक्तं च निबन्धसासं प्रहेषु कांतानां यत्परं तेजस्तत्त्वत्वो ज
 चै सदेवत्वमित्युच्यतेति वचनादित्यर्थः १२ यत्नादृश्येति अतश्च स्मार्त्ततेजः अनेकैः योगैः सदा सर्वस्मिन्काले यत्नादृश्यं रक्षितं योग्यं कश्चिद्वल्लामेव भूषणमिति व्यर्थः
 ६ ललामपुच्छं गुडाश्च भूषा प्राधान्यकेतुषु इत्यमरः यदि तद्धानेति जोहानौ रोगनिकाः प्रभवन्ति रोगसमूहा इत्यर्थः सोमैव निकरानवा रसं घातं च वक्ष्यमः तद्देहो तेजसि।
 दृष्टौ समस्तं सुखं प्रभवति विधिवशाद्विवशात्पुत्रशोणितयो योगे सति गर्भसजीवो भवति जीविन सहितो भवतीत्यर्थः यथा आक रगतो मणिर्विधते आक १ः खान इति
 लोके प्रसिद्धः तथा अंतर्धामगतो गर्भाशयगतो गर्भः मातृरसाद्धर्ते मातृभुक्त आहारसंभवरसादित्यर्थः १३ स्वाविद्यारचिते धिति तस्मै प्रसन्नो नमः तस्मै कस्मै यः

यत्नादृश्यमतो ललाम इव तद्योगैरनेकैः सदा तद्धानौ प्रभवन्ति रोगनिकाः दृष्टौ समस्तं सुखं योगेशोणितपुत्रकयोर्विधिवशाद्
 र्भः सजीवो भवत्यंतर्धाममणिर्यथा करगतो मातृरसाद्धर्ते १३ स्वाविद्यारचितेषु सद्यसु यदा शक्त्या प्रविश्यात्स सन्तो या पूर्णा।
 घटेषु चंद्र इव जीवो यमित्युच्यते माया वै भवमात्मनो व्यवसितुं निष्काययात्मा विभुर्वालकीडनवत्करोति निखिलं तस्मै नमो च

स्तोत्रे १४

आत्मा विभुश्च यदा स्वाविद्यारचितेषु सद्यसु शरीरेषु शक्त्या प्रविश्य अयं जीव इत्युच्यते किं कुर्वन्त न अस्मत्सन्त न केषुकश्च तोया पूर्णा घटेषु चंद्र इव आ
 त्मनः माया वै भवमात्मनो व्यवसितुं निखिलं निष्काययात्मा विभुर्वालकीडनवत्करोति किं भूतो विभुः निष्कायः आत्मा विभुः सर्वत्र व्यापक इत्यर्थः स्वस्याऽविद्यात्वात् स्वाविद्या स्वाविद्य यार
 चितानि स्वाविद्यारचितानि तेषु स्वाविद्यारचितेषु सद्यसु शरीरेषु मायायाः वैभवं माया वै भवं विस्तारं व्यवसितुं दृष्टुम् १४ कालेनेति प्रवलेन कालेन नोदितः प्रेरितः वपुः

बालकः भूमौ गतः स न रोगो मति सुखं धत्ते प्राप्नोति तदिदं रोगप्रसिद्धिर्न हि देहे शरीरे सुखं दुर्लभं वपुषः शरीरत्वं धर्मार्थकाममोक्षाश्चतुर्वर्णाः भवंति रोगानुवपुषो।
 हर्ता नाशकः तस्मान्मरणाप्रकारो षधेः काथकल्कच्छर्मास्नेहादिभिः मतिमान्पुत्रुषः रोगं प्रपाकरोतु इरीकरोत्वित्यर्थः १५ वैद्यलक्षणमाह कीदृशः वैद्यः धर्ममतः नि
 त्यनैमित्तिकक्रियासुसंध्याज्ञापयोग्यागादिपुस्तः पुनः कीदृशः गुरोर्धिगतः ग्रन्थार्थः गुरोः शृणाति हितमुपदिशतीति गुरुः तस्मात् गुरोस्सकासादधिगतः ग्रन्थार्थः यथा
 वदधीतग्रन्थो यथा वतज्ञाततदर्थश्चेत्यर्थः पुनः कीदृशः उद्योगवान् किनोपार्जनशील इत्यर्थः पुनः सज्जोपस्कारभेषजादिः सज्जानिप्रणयान्युस्कारण्यप्रोपहरणीय

कालेन प्रवलेन नोदितवपुर्भूमौ गतो बालकः न रोगो सुखमेधते तदिदं रोगप्रसिद्धिर्न हि देहे सुखं दुर्लभं धर्मार्था वपुषो भवंति वपुषो हर्ता न रोगो
 यतस्माद्भोगमपाकरोतु मतिमान्मरणाप्रकारो षधेः १५ वैद्यो धर्ममतो गुरोर्धिगतः ग्रन्थार्थ उद्योगवान् सज्जोपस्कारभेषजादिरु
 लसद्बुद्धिश्शुचि मिष्टवाक्यवात्प्राणसमीरणेन वपुषो योगस्तदायुस्सृजंतीव स्तिष्ठति तावदत्र वपुषि दीर्घो वधौ किं पुनः
 १६ देहे क्लिष्टपतिकिं सुखं प्रतिदिनं किं धाम किं वा धनं तस्माद्देहसुखाय नित्यमवश्यो वैद्ये न मैत्र्योचरेत् तातः पश्यति यद्वद।
 त्मतनयं तद्वद्विषयगोपिणं पश्येत्पोषणकर्मणि प्रतिदिनं ब्रह्मादियोगैः पुनः १७ पठितानि यंत्रशस्त्रादीनि भेषजानि वयस्यसः तथा पुनः उल्ल
 सद्बुद्धिरुत्थास्वती बुद्धिर्यस्येत्यर्थः पुनः श्रुतिः आह्याभ्यंतरं शोचयुक्तः मिष्टवाक्यमधुरभाषी अर्द्धेनायुष्कारणमाह यावत्प्राणसमीरणेन प्राणवायुनावपुषः शरीरस्य यो
 गस्तदावदत्र वपुषि जीवन्तिष्ठति तं देववर्धनपुः सृजंतीव धापीत्येवमोक्षोपुनः किं किमपि नेत्यर्थः १६ देहे क्लिष्टपतिकिं सुखं प्रतिदिनं किं
 नंप्रतोति प्रतिदिनमित्यस्य प्रत्येकं संवेधः सुखं किं किमपि नेत्यर्थः किं धाम किं स्थानं धनं वा किं ब्रह्मादिकिमित्यर्थः तस्मात्कारणात् अवशः स्वाधीनः पुत्रुषः देहसुखाय नित्यं

१
 २
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०
 ११
 १२
 १३
 १४
 १५
 १६
 १७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

नतवेद्यः रोगिणां कथं पश्येत् चिकित्सां च कुर्यादित्याशंकाह तात इति तातः पितापोषण कर्मणि यद्वत् यथा आत्मतनयं पश्यति तद्वत् तथा भिषकवेद्यः दृष्ट्या दियेति पोषणकर्मणि रोगिणां पश्येत् पुनः रोगाकर्षणकर्मणि रिपुंश्च शत्रुमिव पश्येदित्यर्थः कुड्जज्वरे कुपितज्वरे तज्जस्मात्कारणात् तथा तेनैव प्रकारेणातंत्रतोयं भोजनं गुडपटं निर्वीतगेहस्थितिं एतानि कारयेत् भिषकवेद्यः देशर्तुप्रकृतिप्रियाप्रियवयोदोषाग्निरोगौषधमित्यत्र समाह्वारद्वयः सत्त्ववलेदृष्ट्या तदा गदवतां रोगिणां चिकित्सां कुर्यात् देष्टव्यस्य प्रत्येकं संवेधः सत्त्वचतुर्लोक्यते सत्त्ववलेदृष्ट्या देष्टव्यानां हृयदन्तं सुश्रुतटीकायां निवेधसारसंग्रहे देशस्तु निविधः देशस्त्वाद्युपोजांगलसाधारणं वेति तेषां लक्षणमाह तत्र वह्दकांतिमो न्नतनदीवधगहतो मृदुः शीतानिलो मह्यवह्ददोषो सुकुमारो पचितशरीरमनुष्णप्रायः कफवातभूषिष्ठश्चानृपः आकाशसमः प्रविरत्नाल्पक

रोगाकर्षणकर्मणि रिपुमिव कुड्जज्वरे तज्जस्मात् तंत्रतोयसंभोजनं गुडपटं निर्वीतगेहस्थितिं देशर्तुप्रकृतिप्रियाप्रियवयोदोषा

ग्निरोगौषधं दृष्ट्या सत्त्ववले भिषगादवतां कुर्याच्चिकित्सां तदा १८

तकिदृष्ट्या प्रायोल्पवर्षः प्रश्रवणोदपानोदकप्रायउल्लासदाद्यावातः प्रति। रत्नाल्पशैलः स्थिरकशशरीरप्रायोवातपित्तरोगभूयिष्ठजांगलः उभयदेशलक्षणसाधारण इति ऋतुनाह षडृतवोभवेति तेषि शिखरसन्तरीषवर्षाशब्दे। मन्ताः अथ प्रकृतौ नाह सप्तप्रकृतयोभवेति दोषे प्रथक् द्विषः समलेभ्येति शुक्रशोणितसंयोगो यो भवेद्दोषउत्कटः प्रकृतिर्जायते तेनेति शुश्रुते तल्लक्षणमाह जागरूकोल्पकेशश्च सुदृढतां प्रिकरः कशः शीघ्रगोवद्वायुस्सस्वमेवियति गच्छति एवं विधीयः सन्नेयो वातप्रकृतिको नरः पित्तप्रकृतिको यादृक्तादृशोऽथ तिगद्यते अकालपलितो गौरः क्रोधी स्रिदी च वडिमानवद्भुक्तास्वनेत्रश्च सन्नेयो तीक्ष्णपण्यतिष्णामकेशः क्षमः स्थूलो वह्दवोर्यो महावल्तः स्वप्नजलाशया लोकी श्लेष्मप्रकृतिको भवेत् दृश्यते प्रकृतौ यत्र रूपं दोषद्वयस्य तत्संस्पर्शेण जानीयात् सर्वलिंगैस्त्रिदोषजनमिति भावगिश्चः प्रियैः प्रियो हिताहितौ यथाप्सोस्तु अजन्मतो हि

तावप्युसैदेवाहितमिति वयसपरिमाणमाह वयस्तुत्रिविधं बालं मध्यं वृद्धमेदात् तत्रोनयोऽश १५ वर्षांतकालः षोडश १६ सप्तत्यो १७ अंतरेमध्यं सप्तते १७ रुद्धं
वृद्धमाचक्षते अथ दोषानाह यदुक्तं वाग्भटेन वायुः पित्तं कफश्चेति त्रयो दोषा समासतः विकृता विकृतं देहं घ्नन्ति ते वर्तयन्ति ते दोषशब्दस्य निरुक्तिमाह धातुसंश्रमला
श्चापि दुष्यन्ते भिर्यतस्ततः वातपित्तकफा एते त्रयो दोषा इति स्मृता दोषा इत्यत्र दुष्येवेकतो धातोः दुष्यन्ते भिरिति वाक्ये अकर्त्तरि चकार किं इत्यनेन सूत्रेण भजप्रत्या
यः अग्निश्चतुर्विधा ज्ञेयः विषमाग्निः सोष्णाग्निः मंदाग्निः समाग्निश्चेति रोगस्तु ज्वरादयः फलपाकनिष्ठा आषध्याः निष्ठा नाश इत्यर्थः फलस्य पाकेन परिणत्यानाशो या
सांतास्तथाक्ता स्ते पुनर्गोधूमादयः सत्त्वमनोबलं व्यसनाभ्युदयक्रियास्थानेषु विनिष्कृतवकरं बलमोज इत्यर्थः चिकित्सेति या क्रियारोगहरणी सा चिकित्सा निगद्यते
इत्यर्थः कर्मणीत्यत्र कर्मणि ईडति च्छेदः तस्य च्छेदो विमुध्यर्थत्वात् ननु कश्चिदप्येति शेषः तद्यथा तातन्तनमिति ब्रूयाद्भूतौ नूतिमितीरयेदिति वचनात् १८ उल्ला।

उल्लाघेलघुभोजनंक्रमगतं तत्रंजलं हासयेद्वायामप्लवनव्यवायचलनात्तर्जयेदावलं सौहित्यं ननु कारयेत्तु कु हवि।

कुप्येत्कदाचित्ज्वरस्तस्माद्देयवरः स्वकर्मनिपुणः शिष्यामिमामाचरेत् १९

यइति वैद्यः इमां शिष्यांश्चाचरेत् कथंभूतः वैद्यः वरः श्रेष्ठः
पुनः कथंभूतः स्वकर्मनिपुणः स्वस्य कर्म स्वकर्म स्वकर्मणित्तिकित्सादिकर्मणि निपुणश्चतुरः इमां शिष्यांश्च कश्चुश्रुतवाग्भटाद्युपदिष्टांश्चाचरेत् कु
र्पादित्यर्थः ननु कां शिष्यामित्याशयेनाह उल्लाघेज्वरस्य प्रशमनसमये रोगिणं लघुभोजनं कारयेत् तत्रंजलंक्रमगतं हासयेत् ननु खगपदित्यर्थः चपुनः तं रोगिणं।
आवलंवलमभिव्याप्य व्यायामप्लवनव्यवायचलनात्तर्जयेत् व्यायामंवलकर्म प्लवनंजलप्राणारूपाध्यापारः व्यवायं स्त्रीसंगं चपुनः कु हविदस्तुनासौहित्यं
मुहितस्यभावः सौहित्यं रोगिणो मनोभिलषितं ननु कारयेत् कदाचित् ज्वरः कुप्येदिति हेतोः १९ १९ १९ १९ १९ १९

तत्रांत इति तत्रांते पाण्यंगुष्ठतलांतेऽनिलोवायुः वहते पुनरपि श्लेष्मा वहते ततः पित्तं वहते इत्यन्वयः ननु सर्वत्र ग्रंथेषु पूर्वपित्तं पश्चाच्छ्लेष्मैतिक्रमो वर्तते अत्र किं
 मिदं पूर्वश्लेष्मा पश्चात्पित्तमिति सत्यम् इत्यपि मतं किं त्विदमनिलोक्तं चोक्तार्थत्वादप्रसिद्धं अतएव पुनरित्यस्यादक्षानहितीयार्थः संभवेति तथाहि तत्रांते अनि-
 लो वहते ततः पित्तं वहते पुनरित्यस्यातवाचकत्वात् पुनः श्लेष्मा वहते अंते श्लेष्मा वहते इत्यर्थः इति ग्रंथकारमिप्रायः सानाडी ज्वरात् अलाप्रथचवेग-
 वतीत्येव अर्जुनानेवे इति निश्चयेन गुरुतरं ज्ञेया सार्द्धलोकेनेरोगाणामुत्पत्तिं साध्यात्वाह अत्यर्थमिति अत्यर्थं जलपानतः अतिजलपानात् निशिरात्रो

पाण्यंगुष्ठतले स्मृता धमनिका स जीवसाक्षिण्यते ज्ञेयं देहसुखासुखं तु धर्जनैस्ते चैष्टयचेष्टितं तर्जन्यादिकं गुल्लिखयत।
 लेन स्पृश्यं वेद्यो वदेन्यितं श्लेष्मभस्वतां क्रमगतं स्थानं प्रकोपं समं २२ तत्रांते वहते निलः पुनरपि श्लेष्मा च पित्तं ततः
 सोऽस्मावेगवती ज्वराद्गुरुतरं ज्ञेया त्वजीर्णेनेवे अत्यर्थं जलपानतो निशिविना निद्रां दिवा स्वापतो भुक्ताति क्रमवेगघातन।

विधेर्मिथ्याविहारादितः २३

विना निद्रां शयनं विना दिवादिनिस्वापतः शयनात् भुक्ताति
 मः क्रमोऽस्तेषां इति शब्दार्थचिंतामणिः भुक्तस्यातिक्रमः भुक्तातिक्रमः वेगानां घातनविधिः वेधातनविधिः भुक्तातिक्रमश्च वेगघातनविधिश्च अनयोः समाहारः भुक्तातिक्र-
 मवेगघातनविधिः तस्य भुक्तातिक्रमवेगघातनविधिः समाहारी द्विगुर्वद्वयं न पुंसकं भवति वेगाः वातमूत्रपुरीषादयस्ते त्रयो दशास्सन्ति तद्यथा वातविषममूत्रज-
 माप्युद्वेगाद्वा रक्ताद्रियः सुप्तलोच्छ्वासनिद्राश्च जगुर्वेगास्त्रयो दशास्ति इन्द्रियशब्देन प्रक्रम्यते तद्यथा शुक्रतेजोऽतसीचवेजवीर्येन्द्रियाणि चेत्यमरः २४

पुनः मिथ्याविहारादितः अयथापपतनप्रधावनप्रणोडनव्यायामयानाधिरोहणजलकेलिकलादितः किलेतिनिश्चयेनवातपित्तकफजात्रामयारोगा
एकेकशः एकेनेएकेनदोषिणद्वित्रिभिः द्वाभ्यांदोषाभ्यां द्विभिर्दोषैः कायेमनसित्वकायेज्वरादिरूपेण मनस्युन्मदादिरूपेण जायंते उत्पद्यंते इत्यर्थः कीदृशा
मयाः साध्यासाध्यसुखाणभेदगतयः साध्यासाध्यसुखाणानां भेदएवगतिः प्रकारेयेषांते इहयत्रामयाएकदोषजनिताः तेषां साध्याः यदीदानीं नलस्यपुरुषस्यमयाः द्रव्या
स्यामयस्तेपि साध्याः येषां काले जनिताः सोऽप्यनभव जितेपि साध्याः ज्ञानिनः पुत्रवश्यपथ्यापथ्याविवेकशीलस्येयत्रामयास्तेपि साध्या इति २३ २४ यावदिनि यावतेवे

जायंते किल वातपित्तकफजात्येकैकशो द्वित्रिभिः साध्यासाध्यसुखाणभेदगतयः कायेमन स्यामयाः तेषां साध्या इहैकदोषज
नितादीनां नलस्यमयाः द्रव्यादास्यनभूरेकालजनिता नोपद्रवा ज्ञानिनः २४ यावद्वैद्यमिषजितेन विजितास्तावत्प्रशं
तिंगताश्चाविर्यातिविनोषधं न रतनौ याप्यास्तस्मिन् दाः नोसाध्या इह कर्मजास्तनुभृतां येच त्रिदोषोद्भवाः नष्टाग्नेश्चिरका

द्यमिषजितेन विजितामदाः रोगास्तावत्प्रशंतिंगताः लज्जागतधनस्योपद्रवैस्संयुताः २५ यदित्रोषधं विना न रतनौ शरीरेऽविर्यातिपुनरुत्पद्यंते ते जा
प्यास्तस्मिन् दाः कष्टसाध्या इत्यर्थः इह संसारतनुभृतां पुंसां ये कर्मजा मदास्ते नोसाध्याः कर्माज्जायंते इति कर्मजाः तद्यथा तत्रांतरेऽहमयास्युरपरिद्विणोपहार
गुर्वगतामनविप्रवधादिभिर्योद्धुर्कर्मभिस्तनुभृतामिह कर्मजास्ते नोपक्रमेण मिषजानुपयंति सिद्धिमिति च पुनः ये त्रिदोषोद्भवाः सान्निपातिकास्तेपि नोसा
ध्याः नष्टाग्नेश्चिरकालजः रोगास्ते नोसाध्याः च पुनः गतधनस्य सः गतधनस्य गतधनस्य पुरुषस्यापि रोगाः नो
साध्या नोसाधितुं योग्याः कथं भूतारोगाः उपद्रवैस्संयुता तद्यथा व्याधिरूपरियः व्याधीभवत्पुनरकालजः इत्युक्तमविरोधी च स उपद्रव उच्यते इत्याह चरकः ननु

कथं गतधनस्य रोगानोसाध्या भवंत्यस्मात्कारणात् तस्य निकटे धनाभावात् अतएव विकित्सां कर्तुमसमर्थत्वात् अथवा गतधनशोके न ये रोगास्तेपिनोसाध्या भवं।
 नोत्यर्थः २५ अथ रोगाणां कर्मविपाकश्लोकद्वयनाह उन्मादेति अन्यधनापहारमनसोपैश्वर्यदुष्कर्मिणां ज्वरपुंसां हि जगवांघातादिगुर्वगनासंगैः बहुपातकैः
 एते उन्मादादयः रोगांस्युः रोगिणः यदि एते रोगास्युः तर्हि एते जन्मा बोध्या इत्यनुषंगः एते केतव्या हि उन्मादादारभ्य कोसोतैः उन्मादः चित्तविभ्रमः भूताद्यविशालः
 चित्तानवस्थितिः उन्मदनं मदीहं घनं उपगतस्मृतिरपस्मारो मिर्गिद्वितिलोके प्रसिद्धा उपअधिको गतास्मृतिर्विद्विर्यस्य सः उपगतस्मृतिः वधिरतावाधि
 र्यमेहः प्रमेह इति प्रसिद्धः उदराः उदरविकाराः अर्शः ववासीर इति लोके प्रसिद्धः क्षयः राजयक्ष्मा वामेकल्पं मूकता भगंदरः स्वतः प्रसिद्धः प्रदरता प्रदरस्य भावः प्रद

उन्मादोपगतस्मृतिर्वधिरतामेहोदरार्शः क्षयावागेवैकल्पभगन्दरप्रदरतास्त्विच्छ्रुतिर्पंगुता वल्मीकाद्यपचीव्रणानलगादा।
 नाशामुत्तार्शोदितापक्षाघातगलग्रहस्वपथवोदंडापतानादयः २६ वातासृगालगंडकुष्टवपुषोकांपो विसर्प्यादयाः स्थि
 त्राणि क्षणादान्धताचक्षुमिरंस्वासाश्च कासान्युतः एते स्युर्वहुपातकैर्हि जगवांघातादिगुर्वगनासंगैरन्यधनापहारमनसोपैश्वर्य

रतास्त्रीरोगविशेषः अस्त्विच्छ्रुतिः शब्देन रक्तपित्तकोष्ठम २६ पंगु न्यदुष्कर्मिणां २७ तापंगोर्भावः पंगुता वल्मीकादयः क्षुद्ररोगाः अपचीगण्डमालायाश्चस्था
 विशेषे व्रणाः व्रणाः अत्र विच्छ्रान्ते व्रणतीति व्रणाः क्षत इति लोके प्रसिद्धः जघम इति यवनाधिकारो यंशदः अनलगाद अग्निरोगास्ते मन्दाग्न्यादयः नाशामुत्तार्शः ना
 सिकादुधिरश्चावः मुखाम्बुमुखशब्देन मुखांतर्गतदंतादुधिरश्चावो ज्ञेयः अर्द्धितो वातरोगविशेषः पक्षाघातः पक्षवधः गलग्रहः गलौघः गलरोधरोगः स्वपथुः
 शोथः दंडापतानादयश्च शीतिविधायैवातरोगाः वज्रासृग्वातरक्तं गलगण्डः स्वनाम्नाख्यातरोगः कुष्टः स्वतः प्रसिद्धः वपुषः कागोशरीरकम्पः विसर्प्यः जहरवाते

तिलेसभाषायांप्रसिद्धः स्थितं स्तेनकुलं स्नातदान्धतानक्तान्धं रत्नोद्धतलोकप्रसिद्धं तिमिरं प्रसिद्धं स्त्वाहः चपुनः कासाति इति २७ अथ पापयोगस्यार्जुनोक्तिनशां
तिमाह शांतिमिति चेद्यदिभिषजं वैद्येन सदोषधेः श्रेष्ठोषधेः एतैः पापयोगा उत्सादादयः शांतिं न यांति तर्हि दानादिभिः कर्मभिः तथा जाप्यैः मंत्रजाप्यैः तथा ।
एतेषां तीर्थगुडिजाग्रिसुमनसंशुश्रूषणैः शांतिं यांतीत्यन्वयः तीर्थमिति पुष्करैर्मिषाराण्यकुडुदोत्र भागीरथीत्यादितीर्थानि तथाहि कृते तु पुष्करं तीर्थं त्रेतायां नै।
मिषं तथा द्वापरे तु कुरुक्षेत्रं कलौ गंगां समाश्रयेदिति २८ अथ सार्जुनोक्तिनवायुप्रकोपमाह चिंतेति एतैः कारणैः मनुष्यवपुषि शरीरे वायुः कोपमुपैति एतैः कैः

शांतिं यांति सदोषधेर्नभिषजचिद्यांति दानादिभिर्जाप्यैस्तोर्थगुडिजाग्रिसुमनस्युश्रूषणैर्दर्मतः चिंतातिक्तकषायरूक्षक
दुर्कैर्व्यायामशोकश्रमेः सायंलंघनभूरीजल्पवल्गवद्युद्धैर्निशाजागरात् २८ वेगानामभिघातनादतिहिमात्कामाजलप्लावना
त्स्यामाकट्टककोरुद्वयलघुभिर्धातुक्षयात्प्राहृषि स्त्रीसंगात्प्रमिताशनान्नविरतिभ्योभीतिः शुष्कतोवायुः कोपमुपैति जन्तुव।
पुषिप्रतर्पिभिस्तंजयेत् २९ इति वायुप्रकोपः

चिंतातिक्तकषायरूक्षकदुर्कैरित्यत्र द्वंद्वसमासः तिक्तमिति योमले चोषमुत्पादयति मुखे वै शब्दं जनयति
भक्तुर्विचारादयति हर्षचसत्तिक्तः यथा रज्ज्वादयः कषायमिति योत्क्रुं पारिशेषयति जिह्वां संभयति यः काण्ठवध्नाति हृदयं कर्षयति पीडयति च स कषायः यथाज।
म्बादयः रूक्षमिति यथा भ्रष्टचणकादयः कटुकमिति योजिह्वार्यं वाधते उद्देगं जनयति शिरोगृणीतेनाशिकाञ्च श्रावयति स कटुकः यथा पिप्पल्यादयः पुनः
व्यायामशोकश्रमेः व्यायामो वलकर्म तथा सायंलंघनभूरीजल्पवल्गवद्युद्धैः सायंलंघनेति सायंलंघनादित्यर्थः चपुनः निशाजागरात् तथा वेगानामभि।

घातनात् वातमूत्रपुरीषादयस्त्रयोदशवेगाः संतिष्ठामभिघातनात् अवरोधादित्यर्थः चपुनः अतिहिमात् तथा अतिकामात् चपुनः अतिजलह्लावनात् तरणादि
 त्यर्थः चपुनः सामाकङ्ग-ककोरद्वलघुभिः एषां भक्षणे रित्यर्थः कङ्ग-ककाकुन इति लोके प्रसिद्धः कोरद्वलकोदे इति देशभाषायां प्रसिद्धः चपुनः प्राद्विषवर्षात्
 तोचपुनः धातुदायात् तथा स्त्रीसंगात् पुनः प्रमिताशनात् स्वल्पभोजनात् तथा अन्नविरतिभ्यो अन्नविरतिरन्वयाप्रोतिः तन्नन्यलंघनेभ्यो दिवा एत्रिलंघनेभ्य इत्या
 शयः चपुनः भोतितः भयात् तथा शुक्लान् भोजनादिति शेषः तं कोपं वतं वायुं वैद्यः प्रत्यर्षिभिः निवारकैः पानाहारविहारेऽजयेत् नाशयेदित्यर्थः २५ अथपि
 तप्रकोपः माह तोक्षोति एतैः कार्णैः पित्तं कोपं व्रजेत् एतैः कैः तोक्षणाक्षारकटूस्त्र्यम्भदधिपद्वम्लाशवोदाहिभिः तोक्षणा इति राजिकादयः क्षार इति यवक्षारद

तोक्षणाक्षारकटूस्त्र्यम्भदधिपद्वम्लाशवोदाहिभिः क्रोधैर्मत्स्यसकांजिकाध्वदहनैः शुक्लैः सिलैर्मैथुनैः ग्रीष्मे मध्यदिने।

र्द्धरात्रि समये रोधात् तथा सुतपो रन्ने जीर्यतिलंघनेन शरदिपित्तं प्रकोपं व्रजेत् ३० इति पित्तप्रकोपः

यः कटवो मरीचादयः उल्लमिति का

कमाच्यादयः तद्यथा तिक्ताकाकमाचीपित्तं वर्द्धयत्युष्मकोर्यत्वा त्मधुरामत्स्याश्चेति श्रुतः घर्मस्तृष्णातपादयः दधिस्ततः प्रसिद्धं पटुर्लवणः अम्लः प्रसिद्धं आशवोम
 दिादयः दाहो वंशाङ्ग-रादयः इति एतै रित्यर्थः पुनः मत्स्यसकांजिकाध्वदहनैः अन्ननो मार्गचलनात् दहनमप्रितापनमित्यर्थः पुनः शुक्लैः सुक्लमिति सुरभेदः
 तदाह मर्यामयादिसुधोभा एते सगुणं दौर्द्धकांजिकं धान्परासौ त्रिरात्रिस्थं श्रुतं त्वेकं तदुच्यते इत्यग्निवेशः पुनः सिलैर्मैथुनैश्च पुनः ग्रीष्मे ग्रीष्मर्तौ सर्वस्मिन्काले पित्तं
 कोपं व्रजेतीत्यर्थः पुनः मध्यदिने मध्याह्नसमये सर्वतुषु इत्याशयः अर्द्धरात्रि समये विवेति विशेषः चपुनः सुतपो रवोधात् पुनः अन्ने जीर्यति अन्नस्य पक्तिः।
 समये लंघनेन च शरद्वर्तव्यपित्तं कोपं व्रजेतीत्यर्थः ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३० ३०

अथश्लेष्मप्रकोपमाह भुक्तादयिति भुक्तादौ भुक्तस्य आदिः भुक्तादिः तस्मिं भुक्तादौ श्लेष्माप्रकोपं व्रजेत् च पुनः दिवसागमे प्रातः काले श्लेष्माप्रकोपं व्रजति प्राप्नोति च पुनः
 गुणुदधि क्षीरैरपि पुनः दिवा स्नापनः शयनात् पुनः मत्स्याम्लामिषमंदवन्निमधुरस्निग्धातिशीतभोज्यैः श्रमैरपि अम्लमिति यो दंतहर्षमुत्पादयति मुखं प्रावृज
 नयति अर्द्धां चोत्पादयति सोमलः अथास्लस्य गुणायथा अम्लोत्तोवाहिः शोते तु चः पित्तकफास्त्रदः विवर्त्यानाह दृष्टिभो दन्तास्मिधूनि कोचन इति श्रु ॥ ३१ ॥
 तामणिः आभिषं मांसं मधुर इति यः परि तोषमुत्पादयति प्रसूहादयति तर्पयति जीवयति सुखानले पंजनयति श्लेष्माणं च भिर्वर्जयति समधुर इति च पुनः इक्षु क्षीर वि
 कारपिष्टिलजैर्भोज्यैश्च नवान्नैरपि क्षीरविकाराः संतानिकादयः पिष्टो माषादिजन्यकल्काः च पुनः मधौ चैत्रे तथा तृतीये भोजनं ते च पुनः अर्धसनेन अर्धसनेन

भुक्तादौ दिवसागमे गुणुदधि क्षीरैर्दिवा स्नापतो मत्स्याम्लामिषमंदवन्निमधुरस्निग्धातिशीतश्रमेः इक्षु क्षीरविकारपिष्टिल
 लजैर्भोज्यैर्नवान्नैर्मधौ तृप्ता वाध्यसनेन चातिपटुभिः श्लेष्माप्रकोपं व्रजेत् ३२ इति श्लेष्माप्रकोपः दृग्मूर्द्धां शिरो रुजः श्रवण
 योः रुमेत्रयो रंतरे स्कंधं नृहनुशं षष्ठहृदये नाभौ कटौ मुखयोः मन्या वंक्षणं संधिवस्त्रियकृतिः शीहां त्रये रुग्भवेत् कक्षाकु
 क्षिगुदस्त्रिकस्तनस्तजो वैरस्यमास्ये स्मृतं ३२

मिति भुक्तस्योपरि यदुक्तं तदध्यासनमुच्यते इति च पुनः अतिपटुभिः अतिलवणभोजनैरित्यर्थः ३२ इति
 श्लेष्मा प्रकोपः अथ वातामयस्य लक्षणं श्लोकद्वयेनाह दृग्मूर्द्धां शिरो रुजः रुज इति वातामये वातगो ईदृक् कल्लां जेयं दृग्मूर्द्धां शिरो रुजः रुज इति दृक्च मूर्द्धां च ईदृशि स्थिते पुरुजः यो
 डा च पुनः श्रवणयोः कर्णयोः उक्तं तथाच नेत्रयो रंतरे मध्ये रुक् स्कंधं नृहनुशं षष्ठहृदये च नाभौ कटौ मुखयोश्च रुक् शंख इति कार्णिललाटयो रंतरे शंखः तथा हि शं
 खो भालप्रवातेरिति हेमः मुखौ चंद्रकोशौ च पुनः मन्या वंक्षणं संधिवस्त्रियकृतिः शीहां त्रये रुग्भवेत् मन्या शब्देन प्रीवायाः पश्चाद्भागे चतुर्दश शिरामन्यां चोद्धा वंक्षणं

इति जंघायाः संधीवंधाणस्यात् तथाहि हविर्धर्त्तावेष्टमानूत्रतसंधिः पुंसिवंधाणइत्यमरः यद्यदिति कालाखंडेदक्षिणपार्श्वस्थमिति श्रोहाश्रनेनैवनाम्नाप्र
सिद्धोवाचमपाश्र्वस्थः कक्षाकुक्षिगुदस्त्रिकस्तनयोश्चतुजः षोडशभवेत् कक्षेति वाहूमलस्याधोदेशयद्गतिस्तत्कक्षास्यात् काखइतिलोकेप्रसिद्धः कुक्षिशब्दउदरस्यवा
मदक्षिणभागद्वयत्वाचीतिकोषइतिदेशभाषायांप्रसिद्धः त्रिकमिति पृष्टवंसस्याधोभागेअस्थित्रयसंधातस्त्रिकमुच्यते वाहूग्रीवास्थित्रयसंधातावात्रयाणांसंवल्लिकं ।
चपुनः आस्येमुखैवैरस्यं स्रजंकथितं विस्मस्यभावः वैरस्यं अत्राण्यप्रपयः चपुनः त्रिक्यात्रुष्यंतचः पात्रुष्यंतचकारुष्यंस्वरस्यं अनिद्रताच चपुनः अतिक्रश ता

त्वकारुष्यमनिद्रतातिक्रशतावर्त्तितिकार्कस्यतावैषम्यंजठरानलस्यमनसोस्थैर्यचकुक्षोर्दितसंभस्याद्भुजजंघयोर्वधिरताभ्रकत्वश्रु।
कक्षयंस्रत्पात्रुग्दिवसेनिशिप्रचरतावातामयेलक्षणं ३३ इतिवातामयलक्षणं संतापिभ्रमःआस्यप्रोषकटुतास्वेदोच्चित्तद
ज्वरः शीतेष्वाचविनिद्रतामुखनावत्वमेत्रैपत्यंतथा विण्मस्त्रेपिमलद्रवोत्सहोदीपंगलेधूमतास्तासुःपिडिकास्तनौमद
रूपोपित्तमयेलक्षणं ३४ इतिपित्तलक्षणम् अतिदुर्बलता चपुनः कर्त्तुमिति कर्कशतामलस्यकठोरता चपुनः जठरानलस्यज्वरमेःवैषम्यंकर

दाचिम्बंदाकदाचिन्मोक्षतातेति चपुनः मनसिअस्थैर्यचांचल्यं चपुनः कुक्षः अर्दिताच कुजइति कुवडाइतिभाषायांप्रसिद्धः तल्लक्षणंयथा हृदयंयदिवा
पृष्टमन्तरेक्रमतः सत्रुक्तकुक्षोवायुर्वदाकुर्यात्तदातंकुजमादिशेदितिसदार्थचिंतामणिः अर्दिताः मुखस्यवक्रत्वंवातोगतिशेषः चपुनः भुजजंघयोस्तंभस्यात् चपु
नः श्रुकक्षयंवीर्यहातिः पुनः दिवशेअल्पात्रुक्षल्यपीडानिशिआत्रोत्रुजंप्राचुर्यंवाहूल्यमित्यन्वयः ३३ अथपित्तमयस्यलक्षणमाह संतापेति पित्तमयिहृदक्ल
षणंतेयम् संतापः शरीरेतापः भ्रमःधुमनोइतिलोकेप्रसिद्धा आस्येप्रोषः कटुताच स्वेदः शरीरेस्वेदनिर्गमः चपुनः अउचिः तान्त्रामिलाषः तद्वच्च जलाभिषं

इय चपनः ज्वरः स्वनाम्नाप्रसिद्धः शीतेष्वाच निनिद्राच निद्राभावाः चपनः मुखनलत्वमेवेषुपेत्यपीतछविः तथाविगम्बेपिपेत्यपीतता चपनः मलद्वयः भवेत्
मलस्यपरीषस्यद्रवः मलद्वयः द्रवोभावः दीपं चनसहतेनक्षमते चपनः गलेधूमताकाण्डेधूमपुंजस्येवप्रतिरिति चपनः सनो रक्तपिडिकास्यः भवेयुः चपनः मदः म
दउन्मादः रुद्धक्रोधश्चेत्यन्वयः ३४ इतिपित्तलक्षणं अथह्येषामन्यस्यलक्षणं सपादश्लोकेनाह देहेइति कफामयेकफरोगिद्विकलक्षणं ज्ञेयम् देहेगौरवं अंतराग्रपटताज
रापिमंदता चपनः उत्तेजिता उत्तेजः वमनोपस्थितिरिव अवकाईइतिलोके तथाशीतता अंगेशीतलता तन्द्राच अर्जनेत्रोन्मीलितत्वं सुप्तिः स्वापः मुखप्रशेकः ला
लाभ्यावः वमथुः वमनं देहली दीपकन्यायेनरुभयत्रशौल्यसंबंधः तेनत्वमेवयोः शौल्यंकोष्ठं वदेन्माधुर्यं मुखेमधुरता चपनः अधिकाकाण्डकंडगात्रविधर्षणां प्रज्ञाच्युतिः व

देहेगौरवमंतराग्रपटताचोत्तेजिताशीततातन्द्रासुप्तिमुखप्रशेकवमथुः स्यादक्षिणा शौल्यंत्वचः माधुर्यं वदेन्चकाण्डाधिकाप्र
ज्ञाच्युतिः पीनसः कासश्चौलचुलायनंश्रुतिगलघ्राणोष्ट्रजिह्वाक्षिणि ३५ ज्ञेयं ह्येषागदेद्वयोर्मिलितयोः सर्वेषुसर्वोद्भवम् वल्लैः हि
गण्डमधर्ममधुरैस्तैः सर्पिषामां सैर्मासरैः सृष्ट्यागुरुभिर्मत्स्यानलालैस्तथा ३६

तिलैः द्विनाशः पीनसः नोशरोगविशेषः तल्लक्षणं विकित्तायां वक्ष्यामिकाशः श्रुतिगल
घ्राणोष्ट्रजिह्वाक्षिणि चौलचुलायनं स्यात् चौलचुलायनं काण्डविशेषः चुलचुलाहइतिलोकेकाण्डतुल्यचोवाह्येभवति चौलचुलायनं तु कर्णाद्यंगेषु भवेत्
वति एतावनेव विशेषः योगतरंगिण्यामपि हरिशटाचार्यवचनं यथा अंगस्य गौरवमपाटवमंतराग्रस्तैः दगाच हृदयस्य मुखप्रशेकः शालस्य मास्यमधुरत्व
मपांगकंडगापांडतापीनसकासनिद्रातंद्रादयाश्रुलचुलायनमल्लक्षणं च स्यादौष्टकाण्डरसनारदतालुमूले घ्राणोष्णश्रवणाक्षुल्लिकान्तरे स्थिति ३५ इदं ज्ञेयं
निशेषः द्वयोर्मिलितयोर्लक्षणं ज्ञेयं सर्वेषु सन्निपातेषु सर्वोद्भवं त्रिदोषोद्भवं लक्षणं ज्ञेयमित्यन्वयः ३५ अथवायप्रशंतिमाह वल्लैरिति एतेरेव पानाहारविहारयोः

अथपित्तप्रशंतिमह शीतेति एतैरेवकारणैर्वैद्यः पित्तं जयेत्ता शयेत् एतैः कैः शीतस्वादकषायतिकृपवन्छायानिष्पृग्हेः शीतेति यथा पिप्पल्यामल्लवर्सेधवादयः तद्यथा पिप्प
 लीविजेशमयतिमृदुशीतवीर्यत्वादल्लमामलकलवणंसेधवंचेतिशुश्रुतः स्वादुर्मधुरः स्वादुर्मधोर्जेमिष्टि चेतिविश्वः मधुरेति यथाक्षोरघृतवशामज्जशालिषट्किकयवलो
 धूमपाषाणं शृंगाटककोष्ठुकत्रपुसेर्वात्रककर्कशकालावुकलिंद कतकगिलेउप्रियालपुष्करवैजकास्मर्यमधुकाखर्जरराजादन तालनारिकेलादय इतिशुश्रुते
 कषयेति यथा कुरवककोविदारकजौवंतीविस्त्रीपालंक्यासुनिषषकनेवारकादयोमुद्रादयेत्येति तित्तेति यथा कर्कोटककारितेत्पुष्कवर्त्तककरवीरसुमनादय इतिप
 वनश्चेतिपवनशब्देनपश्चिमदिगुत्पन्नोऽप्युत्पन्नोऽपिपित्तप्रशमकत्वादुक्तं चभावप्रकाशे पश्चिमः पवनस्तीक्ष्णः शोषणोक्लृप्तधुःमदः पित्तकफधंसोऽभंजनविघ्नश्चेतिध्यायान्ता
 भावः तद्गुणाग्राह आतपः पित्ततृणाग्निः स्रग्दमूर्ध्वमास्त्रकृत दाहैवैवर्ण्यकारित्वध्यायचेतानफहतीति श्रुयते निशागत्रिः भृशहैरिति भूम्यातस्वर्तगृहेः तत्वाकाइति लोके
 पथ्यापथ्यानामिग्रंथेदाहप्रसंभाभुंशीतप्रदेहभूवस्मसेकाभंणावगाहनं रक्तोत्पलदलक्षौमशय्याशीतलकाननमित्यादिनादाहस्यपित्तवक्रियाकार्योदाहपित्तयोः तुल्य
 प्रतीकारत्वात् एतेनैवपित्तप्रशमनमपिभवति चपुनः अंभोभिः जलेकेतकादिसुमनः सुवासितैरितिशेषः चपुनः पयसा दुग्धेन तथा हिमांशुकिरणैः ज्योत्स्नाभिः
 तद्यथा ज्योत्स्नाशीतास्मरानंदप्रदात्तदपित्तदाहहृदि श्रित्रियेपुक्तम् त्रिदोषशमनीज्योत्स्नासर्वव्याधिहरतमइति चपुनः द्राक्षात्तृचैफलेः द्राक्षा मुनेका
 तृचतनिशोत त्रैफलत्रिफला तथासर्पिपंकज तालवृंतललनागात्रैः सर्पिर्घृतं पंकजंकमलं तालवृंतः तालव्यजनः तालवृंतशब्देनतदत्यन्तोवायुर्धृष्ट
 ते तद्गुणाग्राह तालपत्रकराभायाः बालकोव्यजनोहितः मधुरेतिश्रमघ्नस्यादाईत्वात्कफकोपनः निद्राकरः प्रीतिकारः शोषरोषविषापहः दाहपित्तप्रमल्लानि
 नाशमेभ्रमशान्तिहृदित्यत्रियः ललनागात्रैरिति ललनागात्रसंस्पर्शनैरित्यर्थः चपुनः अलकस्वावणौ तथावैरैर्वैरमनेः हीतिनिश्चयेमलेपेपित्तजये
 कथंभूतेलेपैः हिमवाणुका मलयजेर्कपरचंदनजैरित्यन्वयः ३८

अथश्लेषप्रशंतिमाह वायमेति एतैरेषपानाहारविहारयोगवशतः सकाशात्तैवैद्यः उग्रंश्लेषाणां जयेत् नाशयेत् एतैःकैः व्यायामानलघुर्मतीक्ष्णाकटुकैः
वायमेकलकर्म अनलोः अग्निः घर्मा आतपः तीक्ष्णोयथाराजिकादयः कटुतोमरोचादयः चपुनः रुस्रद्वैर्यथाभृष्टचणकादिभिः चपुनः शिरोरचनैः
नस्यैरित्यर्थः चपुनः कांत्पावमनेन चपुनः लघनेनापिचपुनः कटुफलादिपयशास्तेनेत्यर्थः चपुनः गण्डवधूमादिभिः गण्डवोभेषजद्वयपरितमुखः गा
लालाशितिलोकि धूमादिभिरीति धूमपानादिभिः अम्भोभिः जलेः कथम्भूतैः अम्भोभिः अहिमैस्सौरित्यर्थः यैरेपि लघुतैर्भोज्यैश्चापि चपुनः पदाभ्यञ्जनैः

व्यायामानलघुर्मतीक्ष्णाकटुकैरुक्षैः शिरोरचनैर्वीत्यालंघनकटुफलादिपयसागराडूषधूमादिभिः अम्भोभिस्त्वहिमैर्यवै
र्लघुतैर्भोज्यैर्यदाभ्यञ्जनैः पानाहारविहारयोगवशतः श्लेषाणामुग्रजयेत् ३५ इतिश्लेषप्रशंतिः अदौपकगदं समीक्ष्यभिषा
जाकार्याचिकित्साततोमोहादामगदेकरोतिविफलं तत्रज्वरादौ स्फुटंलालासेकमरोचकास्यविरसंत्वालस्पतंदेहदोषु
दिर्गान्त्रयुत्त्वमप्रचुरतावन्नेश्चहृस्मासता ४०

पादयोर्भ्यञ्जनैर्नैलमर्दनादिनापि उग्रंश्लेषाणां जयेदितिभावः ३५ अथाहुर्ल्लोकेनपक्वगदि अपक्वा
गदेचचिकित्सायाः सफलतांनिष्फलतांचाहअद्वैतिभिषजोवेद्येनअदौपकगदंरोगं समीक्ष्यदृष्ट्याततः तदन्तरं चिकित्साकार्यात्तत्रामदज्वरादौयदिमोहादज्ञानीत चिकि
त्सां करोति तर्हिस्फुटं कटं यथास्यानथाविफलं स्यादित्यर्थः अथामज्वरस्यलक्षणमाह लालासे कमिति लालासेकंलालास्त्रावं चपुनः ओरोचकास्यविरसं
ओरोचकश्चास्यविरसश्चेतिसमाहारः दंडः ओरोचकः अत्रुचिः आस्यविरसं इत्यनेनमुखस्यविरसताजेया चपुनः ओलस्पतंदे ओलस्पतं चोचोचो ओलस्पतंदे अल

इतिश्लेषप्रशंतिः अदौपकगदं समीक्ष्यभिषाजाकार्याचिकित्साततोमोहादामगदेकरोतिविफलं तत्रज्वरादौ स्फुटंलालासेकमरोचकास्यविरसंत्वालस्पतंदेहदोषु

तद्वा अर्धनेत्रोन्मीलितं हृदोऽश्रुद्धिः हृदयपूर्णमिवगुरुमिवापरं चपुनः गात्रमुत्तलं चपुनः वन्हेरप्रचुरतामंदतेत्यर्थः हृत्तासताचकंदोपस्थितवमनमिषेत्यर्थः चपुनः मूत्रंभूरिवदुस्त्रप्रवृत्तिरिति चपुनः बहुज्वरोधिकज्वरः चपुनः नपचतिः अन्नस्यापक्तिः तथास्तद्योगात्ताकदोरता चपुनः अनिद्रता निद्राभावः तैजिनिश्रयेनत्राकांक्षान चपुनः मनसःप्रसस्तगतयोना आकांक्षानेति सर्वविषयेषुअनभिलाषइत्यर्थः मनसःप्रसस्तगतयइति प्रसस्तश्रुताःगतयश्चप्रसस्तगतयः गमनानौत्यर्थः आमज्वरेणतल्लक्षणजेयं यत्रयस्मिंज्वरे एतस्माद्विपरीतं । तल्लक्षणं दृश्यते असौनिरामज्वरेति यइत्यर्थः अतउर्द्धएतेपुलंघनंदातव्यमित्याशयेनाह

मूत्रंभूरिवदुज्वरोनपचतिस्तथांगतानिद्रतात्त्याकांक्षानमनः प्रसस्तगतयोनामज्वरे तल्लक्षणंयत्रेतद्विपरीतलक्षणमसौ
ज्ञेयोनिरामज्वरस्तत्रामज्वरिणांज्वरेकफशिरोरोगोदृशोरामये ४१ विस्फोटेषुविश्वचिकाषुमुखजेस्तृपांक्षतेजीर्णेषु शो
थेशोणितपित्तज्वभिषजाचामातिसारेवमौ दृष्ट्यादोषवत्तावलंमतिमतादेयंत्वरांलंघनं वातेसप्तदिनंज्वरेदशदिनं
पैतेपुनर्द्विषां ४२

तत्रेति तत्रतस्मिन्आमज्वरिणांपुत्रुषाणांज्वरे चपुनः कफ शिरोरोगोकफजन्यरोगेशिरोरोगेच यद्वा कफजन्यशिरोरोगेविकारे चपुनः
दृशोरामयेनेत्रोरो ४१ चपुनः विस्फोटेषु शीतलेतिलोकेप्रसिद्धा चपुनः विश्वचिकाषु चपुनः मुखजे मुखरोगे चपुनः स्त्रुपांस्तिकायामित्यर्थः चपुनः क्षतेत्रोच।
पुनः अजीर्णेषुअजीर्णेषुपुत्रुषेषु चपुनः शोथेशोथरोगे चपुनः शोणितपित्तज्वरपित्तज्वररोगे चपुनः आमामातिसारे चपुनः वमौवमने एतेषुमतिमताभिषजावे
द्येनदोषवत्तावलं दृष्ट्यादोषवत्तावलंलंघनं देयं अथतत्प्रकारमाह वातेइति वातेज्वरसप्तदिनंअनशनंलंघनं हितंसप्तदिनानियावदेयमित्यर्थः पैतेपित्तज्वरेदशदिनंअनशनं

नंहितं पुनः कालासेकफज्वरे द्वादशं अनशनं न्हितं द्वादशदिनानि याद्वेयमित्यर्थः कालासाज्ञाते कालासे लंघनेऽयं विधिः शीतवा अनिलादौ वातदौ तु इति निश्चयेन ज्वरे
अनुक्रमात् पानीयं उलंसते कथितं कथं भूतं उलंसनीयं एकदित्रिपदैर्विहीनं च पुनः द्वंद्वे दोषद्वयेनोत्पन्ने ज्वरे च पुनः सर्वसमुद्भवे ज्वरे यथासंहितं यथायोग्यं लंघनं पानीयं
च कुर्यात् अथ सम्यक् कृत्वा लंघनं जानमाह सर्गे इति मन्त्रपुरीषयोः सर्वे निस्सर्गे सन्ति लघुतरे देहे हल्कमे निगते ४३ उद्ग्रासननकंठहत्सु विमलेषु सन्तु ग्नौ प्रवृद्धौ च चो तं द्राया विरतौ त
ज्योष उचौ सति च पुनः तं द्राया विरतौ नासे सति तस्यः समुदये सति पुनः शरीरे स्वेदे सति च पुनः आत्मनि ग्रव्यं सति शुद्धये सति सुतश्चेन सुधा बोधाश्चिक्वा वा च पुनः शिरः

कालसेनशनं न्हितं विधिरयं पानीयमुत्सं मतं एकदित्रिपदैर्विहीनमनिलादौ तु ज्वरे अनुक्रमात् द्वंद्वे सर्वसमुद्भवे च सुभिषकु
र्याद्यथासंहितं सर्गे मन्त्रपुरीषयोर्लघुतरे देहे हल्कमे निगते ४३ उद्ग्रासननकंठहत्सु विमलेषु ग्नौ प्रवृद्धौ च चो तं द्राया विरतौ त
सः समुदये स्वेदेऽव्यथे चात्मनि सुत्वं इति शिरसो मनश्च प्रकृतौ ज्ञेयं कृतं लंघनम् ४४ इति सम्यक् कृत्वा लंघनम् सुत्स्यारोच
मन्त्रज्वरे भ्रमरुषि स्वासस्य याध्यश्च मे नंगो ते येषि पृष्ठे द्वभौ वृत्तं पिते चिंतास्य शोषे कशे गुर्विण्यां चिरे ज्वरे प्रिजनि ते नो लंघ
नदापयेत् तत्तत्प्राणिकोरेण भेषजवरेण प्रशंति नेयेत् ४५ इति लंघनवर्जनं

कंडूदये शतिमन्त्रप्रकृतौ प्रकृतिस्थे सति लंघनं सम्यक् कृतं ज्ञेय
मित्यन्तर्यः धूम्रं अथ लंघनवर्जनमाह सुत्सीण इति वैद्य इति शेषः एतेषु लंघनं नदापयेत् एतेषु केषु तथा हि सुत्सीणे सुधासीणे निर्वले रोगिणि च पुनः मरुज्वरे मरु
तावायुनोत्पन्ने ज्वरे इत्यर्थः च पुनः भ्रमरुषि मन्त्रमध्यरुद्धं अनयोः समाहारः भ्रमरुट् तस्मिन् भ्रमरुषि भ्रमश्चक्राहूदस्ये वरुषशब्दः कोधे च पुनः स्वासस्य याध्यश्च मे स्वा

१५

सम्प्रत्ययश्च अधश्च मश्च एतेषां समाहारः स्वासकायाः ध्वश्च मं तस्मिन् च पुनः अंगोत्थे कामादुत्पन्ने ज्वरे च पुनः शिथुवृद्धभोरुदपिते शिथुश्च वृद्धभोरुश्च
तदपितश्च एतेषां समाहारः शिथुवृद्धभोरुदपितं तस्मिन् च पुनः चिन्तास्य शोषे अत्रापि समाहारः द्वे द्वेः आस्य शोषे सुखशोषे च पुनः कृशे अमं शोषं सरहितं च पुनः
गुर्ति एषां गर्भवत्या च पुनः विरजे ज्वरेपि च पुनः अग्निजनि ते ज्वरेपि जनि ते ज्वरे अत्राग्निशोषोपितत्वाच्चकः उक्तं च अग्निः पुंरक्त चित्रके भस्मात्केशनिर्मुक्तोपि
तर्लवेति शब्दार्थचिन्तामणिः ननु यदि लंघनं तोदपयेत् तर्हि किं कुर्यादि न्यायेनाह तत्तद्भोगाणां शान्तिकरणं भक्ष्यं त्वरेण शोषधेन च शोषं तान् भोगान् शान्तिं नयेदित्यर्थः

अंगामर्दनपर्वमेदमत्रुचिस्त्वृत्स्वासकासो तमो हानिर्देहवलेषाण्युतियुगे हृतं भ्रमाद्यागदाः मंदाग्निर्मुखशोषता।
त्वत्किं ते संजायते लंघने लक्ष्मे तत्तरसा विमृष्य सहसा दद्याद्विषकतर्पणम् षट् इति अतिलंघितलक्षणं

एधातोः द्विकर्मकत्वात् एकस्मिन् द्वयमिति ४५ अथ अतिलंघितलक्षणमाह अंगोति अतिरुते लंघने सति एते रोगाः भवेतीति शेषः एतैकेतानाह अंगामर्दनपर्वमेद
म अत्रुचिः अंगानां अवयवानां स्फोटनं आमर्दनं अंगामर्दनं पर्वमेदः पर्वस्फोटनं अंगामर्दनं च पर्वमेदश्च अत्रुचिः समाहारः अंगामर्दनपर्वमेदं अत्रुचिः नान्नाभिलासः
च पुनः त्वृत्स्वाजलाभिकांक्षा च पुनः स्वासकासौ च पुनः तमो अंधकारप्रविष्ट इव च पुनः देहवलेषाण्युतियुगे हानिः स्वविषयग्रहणा सामर्थ्यं च पुनः हृतं
भ्रमाद्यागदोरोगापि भवेति संभवः भ्रंतिः तपुनः मंदाग्निर्मुखशोषता च जायते अतः करणात् निषेधेनः एतत्त्वद्वयमचिन्तं तरसा देगेन यथास्यामथा विमृष्य वि
चार्य सहसा शोषं तर्पणं दद्यात् तर्पणं कर्म तर्पणं दद्यादित्यर्थः तर्पणमिति तथैवेतत्भावप्रकाशे अतिलंघितं च तद्वद्व्यातस्य संतर्पणं हितं तद्व्यातर्पणं हेतु कर्तव्यं

अत्रागीजप्रापर
अंगामर्दनपर्वमेद

अथ कस्यचित्पुरुषस्य रेचनं न दातव्यमित्याशयेनाह स्निग्धेति सदैवेन विज्ञानतामिति मता एतादृशा पुत्रुषाः नो रेचनीयाः नो रेचनं दातुं योग्याः च पुनः नार्यश्च नो रेचनं दातुं योग्येत्यन्वयः स्निग्धस्तथाहि स्निग्धः स्नेहनकर्मणा स्निग्धं शरीरं यस्य तस्याभूतः स्फीणः दुर्बल इत्यर्थः च पुनः शिथ्यः च पुनः क्षाता तुरन्ततः क्षीनेन वृत्तान् आतुरान् तु ये सप्त तस्याभूतः च पुनः स्त्रातः अध्वादिना च पुनः तृषार्तिः तु पुनः यो वृद्धः च पुनः रूक्षः च पुनः न त्वप्रसूतललना न च प्रसूतास्तीत्यर्थः च पुनः स्थूलः च पुनः मंदानलः पुमान् च पुनः गुर्तिण्यः गर्भवत्य इत्यर्थः च पुनः न वज्जरी न कज्जरी स्थास्तीति न वज्जरी च पुनः मदहतः पुमान् च पुनः शल्यादितः शल्पेन स स्त्रिणा च दितः पंडितः च पुनः भीरवः भीता इत्यर्थः ४५ अथ स पादलोके न तस्य निषेधनीय न एनाह पीतस्नेहेति वितुधो वैद्यः काल्यादिप्रभृति पुरुषेभ्यो तादृशेषु ना

स्निग्धक्षीणशिथ्यदातातुरतनुः स्वांतस्तृप्तार्तस्तुयोवृद्धोरुद्धानवप्रसूतललनारण्यलश्वमंदानलः गुर्विण्यश्चनवज्ज्व
रोमदहतः शल्पादितोभीरवः संद्वेद्येनविजानतामतिमतानोरेचनीयानराः ४५ पीतस्नेहजलासवेपुल्लपितेशोकाभिभूतेन
१ गुर्विण्यांगारद्वषितेवविविधः कुडितथाजोर्णिषु स्नातेस्नातुमद्योदितेचपुत्रुषेतद्वन्नेवपीनसे ह्यर्वागष्टसमेषिशोवि

मलधीवृद्धे गतामोतिके ५० वेगारोधिन दत्तवस्तिषु पुनर्नो न स्य कर्माचरेत् ११३ चनेन स्य कर्म आचरेत् न कुर्यादित्यन्तरः कीदृशेषु तथाहि
पीतस्नेहजलाशेषेषु पीतस्नेहादिकं घृतादिकं जलं च आसवादिकं मूत्रादिकं यैस्तेष्वित्यर्थः चपुनः तद्विधेः पुत्रेषु चपुनः शोकाभिभूतेनो शोकव्याप्तिनो चपुनः पुर्नार्था
गर्भाण्या चपुनः गर्भविधेः विधेः पुत्रेषु चपुनः स्नातव्यं तस्मात् अथ च स्नातुमुदिते पुरुषे समुद्यते इत्यर्थः चपुनः नेतेषु न से पुत्रेषु न वं पीन संनासो गप
स्य सस्तस्मिन् चपुनः शिशो बालके कथं भूते बालके हेति निश्चयेन अर्वाक्ये अष्टमे अष्टवर्षादाभ्यन्तरक इत्यर्थः विमलधी विमलं निर्मलं धीवृद्धिर्यस्य सः विमलधीरिति
वेद्यस्य विशेषणं चपुनः वृद्धे कथं भूते वृद्धे गतामोतिके गतानि अशीतिवर्षाणि यस्य सस्तस्मिन्नित्यर्थः चपुनः वेगारोधिनः वेगानारोद्धंशो लं यस्य सः वेगारोधी न स्य वेगारोधिनः

पुत्रवत्सल्यार्थः पुनः दत्तवत्सलिषु दत्तवत्सल्यार्थः दत्तवत्सल्यार्थः
दत्तवत्सल्यार्थः पुनः दत्तवत्सलिषु दत्तवत्सल्यार्थः दत्तवत्सल्यार्थः ५०

४: चः समन्विते रक्ते रक्तपित्तस्यार्थः भूयो पुनः संगीरणे लोहितं प्रोक्त्यन्वयः ५२ अथ स्यादहो केन शिरावेधपर्वणमाह कासस्वासेति विवक्षाणर्जनैर्वैद्यैः एषां पु
 १७ रक्ताणां शिरानसस्यते शिरावेधतकर्मनसस्यते न समीचीनं भवतीत्यर्थः केषां कासस्वासादशान्तिशारवमिनां कासप्रस्रासप्रलशब्दप्रतिहास्यमिति न वृत्ते रोगाः
 संतियेषां तेषां पुत्राणां च पुनः क्लीवस्य न पुंसकस्येत्यर्थः तथा मीमेभीतस्यापि च पुनः गुर्विण्यागर्भवत्या अपि शिरानसस्यते च पुनः उदरामय उदरे आ
 मयं रोगो यस्येत्यर्थः च पुनः सर्वांगशोथस्य सर्वेषां गुणश्लेधो यस्यैव भूतस्य न रस्यापि च पुनः सूत्रानवप्रसृताया इत्यर्थः च पुनः पञ्चमुक्तमनर्विचिनादिषु कर्म
 सुशुद्धि वपुषो पुनः स वेति पक्षांतरे चिरस्यापि पांडो चिरात् पांडुरोग युक्तस्येत्यर्थः अत्र लक्षणाणां दुर्गन्धिन्यां दुर्गन्धयुक्तस्य ग्रहणं तत्र वीजं नुतात्पर्यानुपप
 द्भवात्

सक्यान्तावुविषाणकैर्मतिमतारक्तश्रुतिसस्यते कासस्वासादशान्तिशारवमिनां क्लीवस्य मीमेभीतस्या गुर्विण्याः उदरामय
 स्य च पुनः सर्वांगशोथस्य वा सूत्राः पञ्चशुशुद्धकर्म वपुषो पांडोश्चिरस्यापि वा ५३

निरुपपांडुरोगस्य शिरया संभवात् च पुनः स्वित्रे हिदिने पुरुषे च पुनः अनागतघोडशब्दगतवत्पृष्ठुत्तराशास्मेपि शिरानसस्यते अनागता न प्राप्तः घोडशा
 दान्तियेषां अनागतघोडशब्दाः गतावतीताषष्टिः : कथं भूताषष्टिः उत्तराशब्दिशान्तस्मेवैषपि च पुनः पीतलेह तनो पुरुषस्यापि शिरानसस्यत
 त्यर्थः वक्षिरिति यस्ति वक्षिकर्मप्रतिपादिका युक्तिः पुनः पूर्वमया वाच्यापि वक्तुं योग्यापितथापि मया विस्तरीयतः कुत्रापि न कथिता च पुनः शरीरे किय
 दुक्तं स्वल्पमुक्तमित्यर्थः एतदेव शरीरं यस्य भिषजः कण्ठे स्थितस्यात् समिधकप्रतिदिनं ग्राह्यं हि ते पुष्टे पुष्टाचारेषु च पुनः सदसि सभायां लज्जमानो

नोभवेत् अनंतगुणवत्तद्दूलविक्रीडितमिति शरीरविशेषणं तथाचायमर्थः अनंतगुणवतो येषां दूलाः श्रेष्ठाः तैः विक्रीडितं विशेषेण क्रीडितं आलोचितमि
 ति यावत् अनेन शूद्रविक्रीडितं दौर्दिष्टं तत्पक्षे अनंतगुणवदिति प्रथकं सिद्धत्वा व्याख्येयम् तत्रापि तस्यैव विशेषणं अथवा अनंतगुणवत्तद्दूलैक्यम्
 वा विक्रीडितं बहुशो विचारितं अथवा अनंतगुणवत्तद्दूलविक्रीडितमिति पाठे हे अनंतगुणवत्तद्दूलैक्यं न संयोक्तं शरीरं ज्ञात्वा सर्वत्र सदसित्वया विक्रीडयता
 मिति तदर्थं व्याख्येय इति अथ ज्वरिणां यो यो श्लोकविधातमाह वर्षास्त्विति ज्वरिभिः पुंभिः वर्षासु वर्षा ऋतौ अष्टांशशेषं शलिलं जलं पेयं च पुनः शरदि

शिवमेनागतषोडशाष्टगतवत्पञ्चुत्तराष्टसमेपीतस्नेहगतनोपि चक्षुषा जनेनैषां शिराशस्यते वस्तिर्विस्तरभीतिनो न कथि
 तः कुत्रापि वाच्यः पुरा शरीरं कियदेतदेव भिषजः कण्ठे स्थितं यस्यैव ५४ दृतेष्वात्महितेष्वापि प्रतिदिनं नो लज्जमानो भ
 वेत् सर्वत्रापि सदस्यं तं गुणवत्तद्दूलविक्रीडितं वर्षास्त्वष्टांशशेषं शरदि च शलिलं षष्ठभागावसिष्टं हेमं ते पंचशेषं स्यत
 मथ शिशिरे तच्चतुर्थांशशेषं ५५ पेयं तद्वसंते त्रिभि रथ चरणैः शिष्टमिष्टं ज्वराणां ग्रीष्मे त्वर्द्धावशेषं ज्वरिभिरिति सदायंग

शरदौ षष्ठभागावसिष्टं षष्ठांशशेषं पेयं हेमं ते हि मृत्तौ पंचशेषं पंचमांशं स्यतां शलिलं पेयं शिशिरे शिशिरं ऋतौ चतुर्थांशं शेषं तज्जलं पेयम् वसंतौ वसंत
 ऋतौ त्रिभिः अथ शेषं त्रिभागावशेषं तज्जलं पेयम् ग्रीष्मे तु अर्द्धावशेषं जलं पेयं कथं भूतं इदं जलं ज्वराणां सदा सर्वस्मिन् काले इष्टं श्रेष्ठमिति यदंगं तेनोच्यते त
 नाया कथितमिति शेषमित्यत्वयः इति श्रीमद्विद्वत्सिरोमण्यार्जुनंदात्मजश्रीमद्देवीदत्तगुप्तोत्तुग्रहाश्रीमद्विष्णुजयकोरिबुक्कमद्वं धवश्रीगिधी

पिपटविकुण्डितवालुकायास्पर्शेत्ताम्रमिश्रशेषः किंभूतयाग्रहिमया पुनः किंभूतयातुषवार्युतसिक्चयेत्यन्वयः कफश्चमनुष्यकफमनुतौताभ्यांभवः जनितेयोरोगास्तस्यनिरुत
 येद्रीकारणाय पटेनवस्त्रेणविकुण्डिताहृन्नितायावालुकातयास्पर्शेत्तत्सुप्रतिनिकुर्यात् नहिमाचहिमातयाग्रहिमया उश्रयेत्यर्थः मुखवार्युतं तुलवार्युतं तुषवार्युतं सिक्चयेत्यं
 सातुषवार्युतसिक्चातयातुषवार्युतसिक्चयातुषवारमितितुल्वेदकेकांजिकप्रभेदेपिवोध्यं अस्यलक्षणंयथा तुल्वेदकंयवेः समैः शतुषैश्चकलीकृतैः यवेतुदकसहितैः संधा
 न्यगोक्तत्वात् अस्यागणः तुषांबुदीपनंहृद्यंपांडूक्रमिगदापहं तीक्ष्णोसंघावनं पित्तकृत्कृतवस्तिशूलनुदितिशस्यार्थचितामणिः ५५ अथोद्धतवातेः उद्धलनमाह अजमु
 देतिरोगिणोवपुषि शरीरे अजमुदाकटुभद्रकजातिकाफल्यवानि सटीरजउत्तमम्

अग्रहिमयातुषवार्युतसिक्चयाकफमनुद्धवरोगनिरुतये ५८ अजमुदाकटुभद्रकजातिकाफल्यवानि सटीरजउत्तमम्
 वपुषिधूलनमुद्धतवातनुद्धलकांज्वरहृत्स्फुटनप्रणुत् ५९ अतिगुहातिवलास्यतवस्त्रिकामधुफलायुतवालुककान्य

केस्तममूभिरिदंहरतिज्वांदुतविलंवितामुग्रमनुद्धवं ६० भूतंवलकां पुनःज्वरहृत्पुनःस्फुटनप्रणुत् स्फुटनं प्रणुत्तीति स्फुटनप्रणुत्
 स्फुटनंयंगस्फुटनंतत्राशकारमित्यर्थः अजमुदा अजमोद कटुभद्रकः शुण्ठी जातिकाफलं जायफलंशिलोके यवानि अजमास्त सटीकचूराः नारकचूरान्तिलोके
 ५९ अथवातज्वरहृत्स्फुटनमाह अतिगुहेति अतिगुहातिवलास्यतवस्त्रिका मधुफलायुतवालुककान्यके अमूभिरौषधीभिः कृतमिदं हृतं कषायंज्वरहृत्तीत्यन्वयः कथंभूतं
 ज्वरं उग्रमनुद्धवं पुनः कथंभूतंज्वांदुतविलंवितां दुतं च विलंवितां च अतयो समाहाराः द्रुतावलवितकंदुतंणीघ्रभवंतं विलंवितां बहुकालिकमित्यर्थ अतिगुहाशालिप
 ली शरीरेनशिलोके तल्लक्षणमाह गुल्म काशालिप्रण्याल्यानूयेशालिदलास्थिरितिवागमटीयस्यहवाघेः अतिवलाकंघीशिलोके रुसवीजाप्रसिद्धा शतिवलासा
 रिपुत्रिणी ग्रामिणीतमुमागौरेलोमशाचक्रमंफलेति अमृतवस्त्रिका गुडूचीवल्यागडूचीविद्धिजेति मधुफलाद्राक्षावालुकंहीवेरं हाऊवेरशिलोके तथाचशिव

६:चः निघंटे बालकं वारितो यंच वैजलनामकमिति तद्वक्ष्ये यथा हवुषा पाटपः पंक्तिपत्रः सूक्ष्मासितं सुमंतत्फलं शणिकं शुष्कं तीक्ष्णं तद्दिगुणाधिकमिति कन्यकाष्ट
१५ तकुमारिकाधीकुम्भोऽस्ति अथ वातज्वरस्य लक्षणं यथा काम्यः कंटौष्ठविद्येषोऽश्वो मूर्द्धी दरांगनुक्वैषम्याच्च प्रवैश्यं जंभावातज्वरकृतीति निदातां जनशलाका
यांद्रुतविलंबितश्चेदपीदं ६० अथ पित्तज्वरे कायमाह जलजेति जलजतिल्वकपद्मकशाखिामृतलतास्तंकषायं असतां पिवतां जनानां पित्तभवज्वाहरति नाशं क
रोति कथं भूतं स्रुतं सहर्करं सर्करासहितं अथेत्येनंतरंगुडान्टपट्टक्षमवं कषायमपितथा करोति पित्तभवज्वाहरतीत्यर्थः जलजं कमलं तिल्वकोलोधः तच्चिह्नं यथा ग्रे
लेमहीनुहोरोधोषटीर्षदलः सितः क्षीरीकषयोहेमं ताद्यान्तः श्वेततरैः सुमेः शशंवोवल्कमेतस्य सोपयोगीतार्त्रत्विति पद्मकः पद्माघ पद्मकः सूक्ष्मविश्लिप्तपत्रोद्गोपा

जलजितिल्वकपद्मकशाखिमृत्तलतास्यतमेवसमर्करंहरतिपित्तभवज्वरमस्रतामथगुडान्दपट्टक्षभवंतथा ६१ अवननिनिंबकटू
त्कटुकण्डलीनियमनश्चपलाटहतीसटीसतपदीतिजलेक्षयिताभृशंकफभवज्वरमाश्रुहरंतिता ६२

दशोपलः कषाय इति सारिवाकलेसुर इति लोके सारिवाजं वृषत्रसदृशः गोपवल्ली च नाम प्रसिद्धः काष्ठ सारिवा विरहटापत्र सदृशः दशवन्दनां धाकावेस्ति इति लोके
इति निबन्ध सारसंग्रहाख्यश्रुतटीकायां शिवनिधंटे व्युत्पत्तिं जेवूपत्रादुपगमाभिलता गोपांग सारवेति धर्मिष्ठः अष्टतलता गुडुची गुडाद्राष्टादपरदृशः अमलता स इति
अथ पितृजात्यलक्षणमाह वेगली क्षणितिसारश्चानिद्रात्पत्वं तथा वमिः कंटौष्टमुखनाशनांणकः खिदश्च जायते प्रलापो वक्रकंटोतामूर्षादाहो मदहृषापीतविण्मूत्रनेत्र
त्वपैतिकोभम एव वेति साधवनिदाते उक्तमिति इदमपि द्रुतविलं विति शब्दः ६१ ६१ ६१ ६१

अथकफज्वरकायमाह श्रवनिनिवेति श्रवनिनिवेकदूलाटकुण्डलीनियमनश्चपलाटहृत्तोमदीमतपदीश्रयंता औषधः जलेकथिताभ्यंश्रतिशयेनयथाह्यतेथा
कफभवज्वरं आशु शीघ्रं हरीत्यन्वयः श्रवनिनिवे भूनिवः चिरायताइति अथभूनिवे भ्यापत्रो गिरिममः सुवर्णपुष्पाटणकइति * * * * *

कदलकटशुण्डीप्रसिद्धमार्दकं शुष्कं तग्रां प्राग्भवं शुभमिति कुण्डली गुडूची नियमनोनिवः चपला पिण्डी अथ पिण्डिका नाडी नागवल्ली दलामृदुः स्थिरा फलोपिण्डीति वृद्धी कंठकारी भटकोटे या इति लोके सटीकं चैः नरकं च इति प्रसिद्धः कर्चूरकंदो भवतु दनस्तृणकस्तनुरिति श्रुतिपदी शतावरी तद्यथा शतावरी शतपदी पीपरी धीवरी वरी वरुणप्रोता ही पशुवृत्ति धन्वंतरिः तल्लक्षणां यथा अथ वरी श्रुतिपरीत पृथुकं दणु विष्टनक्षदना स्थिरा वीनुद्धुजटा चिति अथ कफज्वरस्थलक्षणा माह स्तमित्यं स्तिमितो वेगः आलस्यं मधुरास्यता शुक्लमूत्रं मूरीषत्वं नवादिषु च दृश्यते गौरवशीतशुक्लदोरो महर्षीति निद्रता प्रतिस्थाया रुचिः कासकफज्वरश्च श्रुत्वातेति ६२ इदमपि द्रुतविलंबितघ्नं च अथ वातपित्तज्वरकाथमाह वशुमतीति एतैः श्रुतकषायपित्तमनुतज्वरपित्तमनुद्यामुद्भूतं उत्पन्नं ज्वरपित्तमनुज्वापंच मकसरे पंचदिना नामऽपि तैः अणो हतिना संकरोतीत्यर्थः एतैः कैः वशुमतीपिचुमंदपयोधरा मृतलता कुटुभद्रकपर्पटैः वशुमतीमालिती च विली इति लोके मालिती

वशुमतीपिचुमंदपयाधरा मृतलता कुटुभद्रकपर्पटैः श्रुतमपोहति पंचमवासरे द्रुतविलंबितपित्तमरुज्वर ६३ कथित

वारिमहौषधपौष्कारा मृतलता क्षितिनिव निदिग्धिकात् ज्वरमपोहति पित्तवलासयो रथपटोलमहौषधयोस्तथा ६४

गंधसिद्धेति पिचुमंदो निवः पयोधरो मूलानागारमोथा इति लोके तच्चिह्नमाह मूलमं बुधो न्येष्टणकंदः कसेरु वदिति अमृतलता गुडूची कुटुभद्रकशुण्डी पर्पटैः पित्तपापडा इति लोके पर्पटैर्जकवसिद्धस्तृणकः क्षेत्रसंभव इति अथ वातपित्तज्वरस्थलक्षणा माह कण्ठास्यगोषस्तृणमृष्टा दहौ स्तिप्रोवमिभूमः तमिः पर्व शिरानुक्वातपित्तज्वर इति रिति ६४ अथ कफपित्तज्वरकाथमाह कथितेति महौषधपौष्कारा मृतलता क्षितिनिव निदिग्धिकात् कथित वारिजलं पित्तवलासयोः ज्वरं अणो हति हंति अथेत्यनंतरं पटोलमहौषधयोः जलं काथं तथा करोति हंतीत्यर्थः महौषधं शुण्डी पौष्कारं कासीरं पुहं का मूलं इति लोके तथाह उक्तं पौष्कारमूलं तु पौष्कारं पुष्पां च तत्पद्मपत्रं च काशीं कुष्ठमे दमिदं च गुरिति भावमिश्रः अमृतलता गुडूची क्षितिनिवो भूनिवः निदिग्धिका कंठकारी भटकोटे या इति

33

निखातः एषा ह्येताभ्यां यत्रा मितो भौगिरैवेति

अथपिप्पलिकाताडीनागवह्नीदलामृदुस्थिराफलं पिप्पलीति मूलं तस्यास्तदाक्यमिति मगधिकापिप्पलीति अथवातश्लेष्मज्वरस्य लक्षणमाह मित्यंभांति
द्रादिमणिमिश्रः पर्वणुकपीतसम्यक् स्वासः कासो विवंधोऽरुचिपिपवनश्लेष्मरोगस्य लिंगमिति इदमपि द्रुतविलं वितथंदः ६५ अथ त्रिदोषज्वरकाथमाह त्रि
कटुकेति त्रिकटुका त्रिफला कटुकामृतानियमनावनिर्निवकवत्सकंधनपटोलरसाएताः कथिताः औषधः अनिलपित्तकफज्वरं जंघाशीघ्रेण हंतीत्यख्य
त्रिकटुका मुंदी मरिचिपिप्पली त्रिफला विभीतिका मलहरीतकी कटुका तिक्ता कुटंकी इति लोके अमृता गुडूची नियमनो निवभ्य निवः वत्सकं कुटजं कुंभिया इति लोके
कुटजो मालिती प्राणपुष्पः क्षीरोसं वकः तिक्तश्चंपकवक्षायपत्री वर्षादिपुष्पिता वीजमिंद्रयवादीर्घो हितः सर्वज्वरादिघतिघनो मूलः पटोलं कुलकं परबलः

अथसन्निपातज्वोद्याथमाह नियमनेति नियमनामरदानुनिशाफलत्रिकपयोदपटोलनिदिग्धिकं कथितंजलंसकलज्वरंपंचविंशतिविधंज्वरंहंति कथंभूतंजलंसक
 टुकं अथचकणसहितंदशमूलजंकथितंजलमपिसकलज्वरंहंतीत्यन्तयः नियमतोनिवः अमरदानुः देवदानुः न्यग्रोधशालाक्षोटकंदेवदारुधवादयः चिरायुषोम
 हास्कंधाः शतहस्तीतरोच्चगाइति निशाहरिदनिशार्द्रकदलः कंदः प्राच्यांष्ट्रेषुसिद्धकइति फलत्रिकंशिवामलविभीतकं पयोदोमुह्यपटोलंकुलकं निदिग्धिका
 कंदकारीइति अथसन्निपातज्वरखलक्षणमाह तंद्रागीतादिनानाविद्यतावलतास्यावर्त्ताधरोष्टाः पित्तसूक्ष्मवांतिशिरसिहृदिचतुर्कण्डशेषत्वमोहौक
 र्णोष्ठस्थानपीडादंडरनिकशूनंशीतदाहानिनिद्रा श्वेदानामवस्थाप्रलपनमनुणसाश्रुमग्रेचनेत्रेजिह्वादग्धेनरूक्षास्वरलघिममूलसिधितेविटविवंधः सल्ला
 वाविटप्रव्रतिश्चि स्मलपतनंसन्निपातस्यरूपमिति सुषेणकृतवृत्तमाणिक्यमालायां इदमपिद्रुतविलं वितथंदः ६७ अथकर्णशोथेलेपमाह कुमुदेति कुमुदयासह

नियमनामरदानुनिशाफलत्रिकपयोदपटोलनिदिग्धिकं सकटुकंकथितंसकलज्वरंह्यथकण सहितंदशमू
 लजं ६७ कुमुदयासह नागकारवीयुतकुलत्थकृतं वलेपनं मुहुरशीतमिदंश्रुतिमूलजेद्रुतविलं वितएषादोवृजेत्
 नागकारवीयुतकुलत्थकृतमिदं मुहुः पुनः पुनः वलेपनंकथंभूतंअशीतंउलंतस्मास्त्रेपनात् श्रुतिमूलजः कर्णमूलजः कर्णमूलाजातः कर्णमूलजः
 द्रुतविलं वितएषादः रोगाः प्रजेत् नासमितिशेषः लेपनमित्यत्रपंचमर्थेद्वितीयातेनलेपनोदेषोर्थोवोध्यः कुमुदाकटफलः काइफलइतिलोके कटफलः
 संधवः शैलेणद्वयइति नागरंशुटी कारवीएथ्वीकाकलौंजीइतिविख्याता शतपुष्पेवएथ्वीका तृणामधुसुगंधिकासिद्धेति कुलत्थः कुलथीइतिलोकेप्र
 सिद्धा कुलत्थश्चेतवनकुलत्थोवोध्यः सचकणसवर्णकस्तथाह्यात्रेयसंहितायामुक्तं उलः कुलत्थोरसतः कषायाः कटुर्विणकेकफमारुतघ्नः शुक्राश्रमीगुल्म
 निषूदनश्चसंग्राहकः पीनसकासहारीअनाहमेदोगुदकीलहिष्कारासापहः शोणितपित्तकृच्छकफस्थहंतानयनामयघ्नोविशेषतोवन्यकुलत्थउतामिति कला

८: ३: कुलत्थकायस्यां वसिकाशं विनीतानुग्रहैल्यदलावेति अथ कर्णशोथस्य लक्षणमाह सन्निपातज्वास्यांते कर्णमूलमुदामुणः शोथः संजायते तेन कश्चिदेवं प्रमुच्यतेति ६६
 २१ अथ शीतज्वरे काथ स्यादश्लोकेन हृदि निक्षुद्रानिवधनापटोलकुटुकाभूनिववासासृतामुस्तापर्पटपद्मपुष्करजटाभार्गिचविश्वौषधं एताः औषधः कथं भजाः चंदनसंयुता जले
 निकाथ्य कषायं हृत्वा हृतं कषायं यद्विधीतं वैतर्हिकः शीतज्वरः ज्वरः यः उद्धतो प्रसंतसन् ज्वलयति संतापयति न कटापि संतापयतीत्यर्थः ज्वलदीप्तास्माणि जंतप्रक्रियायां
 हेतुमतिवेत्तणिचप्रत्ययः ततः तिवादि कार्यकृते ज्वलयति कथं भूते ज्वरः ज्वालासमः ज्वालाश्रमि ज्वाला पुनः दाहवान् दाहो ह्यास्तीति दाहवान् च पुनः एकदिनि चतु
 र्थकाण्यविषमं सर्वज्वर एतत्सृजं ध्रुवमिति निश्चयेन निहंति तां शं करोतीत्यर्थः क्षुद्रा कंठकारी भटकौटेशागिलोके निवोपिचुमंदः तीव्रतिलोके धनाधान्यं धनिय
 षतिलोके तद्यथा अजाजीशतपुष्पावजमोदमजिरुलका यवानीधान्यपृथ्वीकादीण्यकादीनि भूरिप्रः भवन्ति मत्तकोदारसंज्ञैषां तृणाधिकेति धात्यकाटणकाप्रा

क्षुद्रानिवधनापटोलकुटुकाभूनिववासासृतामुस्तापर्पटपद्मपुष्करजटाभार्गिचविश्वौषधं एताश्चंदनसंयुता यदि जले निः
 काथ्य पीतं सृजं कः शीतज्वर उद्धतो ज्वलयति ज्वालासमो दाहवान् ६५ एकदिनि चतुर्थकाण्यविषमं सर्वं निहंति ध्रुवं

अथ यदि पटोलकुलकं कुटुकातिका भूनिवोअवनिनिवः वासाग्राटहृषकः त्रुसागिलोके विल्याता वासाविटपकस्तिकाकुटुजामदलाफलाप्रसिद्धेति अमृतागुड
 चीमुस्तानामासोथा पर्पटोरणुः पिताणपडा इति विल्यातः पद्मपद्मकः पद्मागिलोके पुष्करजटापुष्करमूलं भा र्गिअंगारवल्लीभार्गी इति लोके भार्गीमहीनुहः
 शूलैर्गुल्यारिषटनामितायलधात्रीसमेति विश्वौषधं शुद्धी चंदनमिति चंदनशेदेन रक्तचंदनं ग्राह्यं तद्यथा कषायलेपयोप्रायोयुज्यते तत्तचंदनं रक्तचंदनं रोहीतक
 षेदेति एकदिनि चतुर्थकं इति एकशेदेन अन्येष्टु कः ज्वरस्य ग्रहणं कितु अन्येष्टु फलत्वहोरात्रमेककालं प्रवर्ततेति वचनात् हिशेदेन सततकीजेयकं समात्तयद्वा
 एताणि सतकीद्वा कालावनवर्ततेत्यस्मात् त्रिशेदेन तृतीयकं योज्याः तृतीयेदि वसे अनुवर्तते सतृतीयकः तिजारी इति लोके यः चतुर्थदि वसे अनुवर्तते सच

चतुर्थकंति चैथियातिशितिलोके अथविषमज्वरेकाथमाह सकटुकमिति सकटुकं सयवासकसारिवंसगिरिशानुभवं एतदुत्तमं हतं कषायं सततं दिकेद्रुतविलं
 वितकेविषमज्वरेदियमितिशेषः आदिभवेः मुनिभिरितोरितमितिशेषः सकटुकमिति कटुकं न सहितं सकटुकं यवासकसारिवाचयवासकसारिवेयवासकसारिवा
 भ्यांसहितं सयवासकसारिवंगिरिः शानुः गिरिशानुः गिरिशानुनिभवं गिरिशानुभवं गिरिशानुभवेन सहितं सगिरिशानुभवं कटुकं योषं शुद्धीमरिचिपिप्पलीयवास
 कंधन्यनः यवासइतिलोके धन्वनः पाठपोरुतदला कोलफलो सुमइति सारिवागिपवल्ली हरिवनइतिलोके तस्मैक्षणं पूर्वोक्तं ज्ञेयं गिरिशानुभवं त्रायं तीत्रायमा
 णइतिलोके त्रायमाणदुस्थितामार्कवसंदलेति सततादिकमिति सततं सततं चैव अन्येषु फलत्वीयकं चतुर्थकं प्रपंचेते कीर्त्यते विषमज्वरः तद्यथा समाहं वादशा
 हं पाद्वादशाहमथापि वासंतत्यायोविशर्गिण्याः सततः सनिगद्यते अहो एत्राणि स कोट्येकालावनुवर्तते अन्येषु फलत्वीयकं त्रमेककालं प्रवर्तते त्वीयकं सुती

सकटुकं सयवासकसारिवंसगिरिशानुभवं हतमुत्तमं मुनिभिरादिभवेः सततादिकेद्रुतविलं वितकेविषमज्वरे ७० अमृतया
 मृतदेनमहौषधामलककंठकिनीभिरिदं जलं कथितमप्युहरेद्विषमज्वरं समधुमागधिकाजसायुतं ७१

यदि चतुर्थं चतुर्थकंतिश्रुत्युत्तमं विलं वितं च अतया समाहारः द्रुतविलं वितं तस्मिन्द्रुतविलं वितकेज्वरे द्रुतं शीघ्रं भवंतं विलं वितं वद्रु कालिकमित्यर्थः
 द्रुतवितं दोषाहं ७० अथविषमज्वरेकाथमाह अमृतंति अमृतया अमृतदेनमहौषधामलकं कंठकिनीभिः कथितमिदं जलं कषायं अमृतं शीघ्रं विषमज्व
 रहरत् कथं भूतं जलं समधुमधुना सहितं पुनः कथं भूतं मागधिकाजसामागधिकापाजः मागधिकाजः तेन मागधिकाजसायुतं संयुक्तमित्यर्थः अमृतया
 गृह्यते अमृतदो मृता महौषधं शुद्धी आमलकं धात्री आवलाइतिलोके भिन्नत्वडमाउलोवादानुणकाणाणुपंक्तिः दलेद्रुमः फलं धात्रीफलमस्यत् कंठ
 किनीसिंधीभटकंठयाइतिलोके मधुक्षौद्रं माक्षिकं पौतिकं क्षौद्रं धामं मधुजातया माक्षिकं तैलं संकासं घृतं वणीतु पौतिकं क्षौद्रं कपिलं विद्याङ्गमं शशिब

२२ वृ: च: अथ तृतीयकज्वरेणाथमाह त्रिदिवसेति अंशुमतीधतचंदनैः सह कटूकटवीराणाधान्यकैः कथितं उत्तमं कषायमिति शेषः पिवेज्वरीत्यध्याहारः कथंभूतं कषायं
 त्रिदिवसज्वरात्तापहरं आगमनदितदि काहं मुक्तापादिते आयाति स त्रिदिवसज्वरः पुनः कथंभूतं मधुसितामधुरीकृतमित्यन्वयः अंशुमतीशालिपर्णीयाकृष्ण
 पुष्पासंखहिनि धनोमुक्ता चंदनं रक्तचंदनं कटूकटशुंटी वीराणां वीरतरुः गोंड इति भाषायां अन्येतु वीरतरुः वेङ्गनर इति नाम्ना जांगलदेशे तर्मदाते चर्मण
 यतीसमीपे च तल्लक्षणमुच्यते स्याद्दीर्घाणं जगति वीरतरुप्रसिद्धः श्वेतः सितानुणविलोहितनीलपुष्पः स्याज्जाति तुल्यकुसुमः शमि सूर्यमपत्रः स्यात्कंटको
 विजले देशज एष दृश्यः तदभावे उशीरं ग्राह्यं कस्मादुशीरं वीराणी जेटे त्वस्मात्धान्यकं कुलंबुधुनि याप्रतिलोके त्रिदिवसज्वरः त्रिदिवसज्वरः त्रिदिवसज्व

त्रिदिवसज्वरात्तापहरं पिवेत्कथितमंशुमतीधतचंदनैः सह कटूकटवीराणाधान्यकैर्मधुसितामधुरीकृतमुत्तमम् ७२ दाद

पादगंधघृणं प्रियाफलमुदुंवरपर्णीकया त्रिभिर्विष्टदितं सराडयमार्द्रकस्वसयुकज्वरहा द्विशिषडिकं ७३
 एतापः त्रिदिवसज्वरात्तापहरः तंमधुचसितामधुसिते मधुसिताभ्यामधुरीकृतं मधुसितामधुरीकृतमिति ७२ अथ शीतज्वरे शी
 तभंजीरुमाह दादिति दादपादगंधघृणप्रियाफलमुदुंवरपर्णीकया त्रिभिः विष्टदितः सत्ज्वरहा अथ सराडयमार्द्रकः स्वसयुकद्विशिषडिकः उच्छ्रितं न
 वंज्वरं अनेकहिमज्वरं कटिति यथा स्यात्तथा प्रहरमात्रे प्रहरमात्रेण हंतीत्यन्वयः दादपादगंधघृणप्रियाफलमित्यत्र समाहारद्वंद्वः अतएव न पुंसक
 मिति उदुंवरपर्णीष्वउदुंवरपर्णीकातया उदुंवरपर्णीकया तदुत्पन्नमेतित्यर्थः द्विशिषडिकमिति द्विशिषडितौ द्विगुणे प्रमाणमस्य असौ द्विशिषडिकौ दे
 यमित्याशयः दादं हिंगुलं सिंदुनुफ इति भाषायां स्यात्गंधकसंयोगादादं कृत्रिमानुणमिति हिंगुलं शुकनुंडा लोहं सपादस्तथापरः प्रथमोत्पगुणस्त

त्रयमर्माः सतिगद्यतिश्चेत्तरेष्वप्रकालामोहं सपादः सतिरितिः इतिवाभयार्थः पादं सूतं पादश्चपलः प्रेतस्तस्मिन्नुत्तरुण्यवत् स्वलिपेविधिवेनानतत्रविलम्बे
 भजेदिति गंधंशिवार्जं श्वेतदीपेपुरादेव्याः क्रीडांयाजसांलुतदुकूलोत्तवस्त्रेणस्तोतायाः क्षीरतीर्थोप्रसृतंयद्रजस्तस्माद्वधकः समजायतवार्द्धिगंधको
 प्रोक्तोक्तः पीतः सितोसितः रक्तः हेमक्रियास्तः पीतश्चेवासायतेव्रणदिलेपनेस्वेतः कृष्णश्चेष्टः सुदुर्लभ इतिभावमिश्रः घृणप्रियाफलंरुद्रहृतीफलंदू
 नाप्रतिलोके अरिष्टतैर्द्वैर्दीपैरंडानुसंपल्लास्थिरागुल्मानूपदिप्रोक्षितस्वच्छपयः श्रुतिरिति उद्वंषणीलघुदंतीतद्रसं ग्राह्यं ग्राह्यं प्रसिद्धं शिषंडीगुंजा
 तद्यथा गुंजातामाकृल्लवूडारक्तिकाकुकाणंतिकारव्युच्चदकृल्ललाचशिषंडीभिल्लभूषणद्वितीयश्चेतगुंजाचकांवेज्यमिहिकेतिनिघंटसारे संभुक्तातदुपरि

रुदितिहंतिनवज्वरमुष्टितंप्रहरमात्रमनेकहिमज्वरंसदधिभातमिहेश्तिभोजनंह्यनुपिवेद्विमवारितथैश्वं ७४ शीतमं

जीरसोनामसर्वज्वरकुलांतकः ७५ कथितविश्वपयोमुगुशीरकंपिवतुदाहहिमज्वरपीडितः दिहतुदाहनिष्टतिकरांतनुंवद

थ्यंचाह सदधीत्येन संभुक्तातदुपरि सोपरि रिकापिचुमंदजफेणतः ७६ सदधिभोजनंकुर्यात् होतिनिश्चयेन हिमवारिणीतंजलं तथैश्वं
 इहसुसंचशुपिवेत्यश्चानुपिवेदित्यर्थः ज्वरीतिशेषः ७७ शीतमंजीरसोनामेति एष्टम् ७४
 अथदाहहिमज्वरेकाथलेपश्चाह कथितेति कथितविश्वपयोमुगुशीरकंदाहहिमज्वरपीडितः पुमात्पिवतुश्रुतमितिशेषः चपुनः वदरिकापिचुमंदजफेणतः
 तनुशीरंदिहतुलेपयतु दशगणीपाठोवहुलंतेनदिहअचयेधातोः तुदादिगणणठानविरोधः बहुलमेतन्निदर्शनमिति सूत्रादयमर्थोलायते इति कथंभूतां
 तनुंदाहनिष्टतिकरांलिप्तासतीसातनुः दाहनिष्टतिकारभवति अतएवदाहनिष्टतिकारमिति तनोर्विशेषणंदतमिति विश्वंशुंटीपयोमुक्पयोमुंचतीतिथयो

२: च: मुक्तमेघ: मेघोमुत्तानागामोथातिलोके ३शीरंनलदंस्वसतिलोके ३शीरंवीरणीजटेति वदरिकाकोलीविरुतिलोके कोलीकंठकिनीसिद्धावदंभालंचत
 २३ तद्वयंप्रसिद्धंचतयोऽप्युपुष्पंचसद्गुणंकर्कधर्महतीतत्रेतिपिचुमंदोतिव: निवर्तिप्रसिद्ध: वदरिकावापिचुमंदयो: पत्रंजलेतत्रवत्सथनेनोत्थितपोतेततद्विह
 तिव्यथ: तथाचशुश्रुते वदीपक्षवोत्येनफेतेनारिष्टेजेनवेति लिप्ता दहतराम्प्राप्तवैवप्रशास्यतीति इदमपिदुतविलंबितधंद: ३७थशीतज्वरद्वितीयशी
 तभंजीसमाह विमलतालकेति द्विचतुरेकगुणीविमलतालकशुक्तिंशुधाशिषीगृहकुमारिकयामृदितंयथास्यातथागजपुटेनपुटेततत: कृतमसनामौष
 धीनांत्रिषिषंडिकंत्रिगुंजापरिमितं मागोविमलशर्करयासहृद्यदादीयते तदासकलशीतसमूहमपोहतिदूरीकरोतिइदंमिषगतेकयशस्कारभेषजंवहुलदाह
 तृषार्तिहरं पुन: हिमज्वरशीतज्वरहर अत: परंकिंचिद्भेषजनंहिर्वर्ततइत्यर्थ: अस्मिन्भेषजेसदधिभक्तंभोजनंइष्टियंथकर्तृतिशेष: विमलतालकं शुद्ध

विमलतालकशुक्तिशुधाशिषीद्विचतुरेकगुणीकृतमसनां गृहकुमारिकयामृदितंपुटेतगजपुटेनततस्त्रिषिषंडिकं ३७

विमलशर्करयासहृद्यतेसकलशीतसमूहमपोहति बहुलदाहतृषार्तिहरं हिमज्वरहरंनहि किंचिदतापरं ३८

हरितालं हरितालं द्विधाप्रोक्तं पत्राख्यं पिंडसंज्ञकं सदधिभक्तमिहैष्टिभोजनं मिषगते कयशस्कारभेषजं ३४ तयोऽप्यंगुणेऽपि धृतं तिहीत
 गुणं पत्रं सर्वाणामंगुलिगंधं पत्रं चातपत्रवत् पत्राख्यं तालकं विद्यातगुणाख्यं तद्रसायनं निष्पत्रं पिंडसंज्ञकं खलपसत्वं तथा गुग्गुलीपुष्पहारकं खलपगुणं तत्पिण्डा
 लकमिति शुक्तिशुधा शुक्तिद्विषीशिषीकारवा शिषीतुः संत्रितियातिलोको ताम्रकिट्टंतुल्यमिति शर्करा उपलामिश्री तिप्रसिद्धा भक्तं शोदनं भातं इतिप्रसि
 द्धं ३७ इदमपिदुतविलंबितधंद: ३८ ३९ अथदाहशीतज्वरसंवाह सवपलमिति य: पुमान् अमृताक्तचित्तं कषायं पिबेत् कथं भूतं कषायं सचप
 लं चपलासहितमित्यन्वय: अथवा तथातिन प्रकारेण मागधिकं स्वरसं पिबेत् कथं भूतं स्वरसं सधुमधुना सहितं हीति निश्चयेन सगुपुमान् सदैव सका सचिरज्वरानु

चं: ४: अथसपादषड्भिः स्त्रीभिः सुदर्शनचूर्णमाह निशेति निशाद्यंभार्गपतमितत्सर्वमोषधंसमंतुल्यं ग्राह्यं महीतिवंसर्वतः अर्द्धं क्षिपेत् इदं विसृज्य क्राह्यं सुदर्शननामाख्यं चूर्णं
 २४ गौदेत्याधिपानरोगाः एवदैत्याः रोगदैत्याः रोगदैत्यानामधिपः रोगदैत्याधिपाः तान् रोगदैत्याधिपान्सर्वज्वरानहंति कथंभूतान्ज्वरान् एथकद्वित्रिजागंतुकान् एथगिति एके
 न्तैकेनदेविणजातानुत्पन्नान् द्वित्रिजानिति दाम्बादोषाभ्यांजातान् त्रिभिर्दोषैः जातान् आगंतुकान् च मिघातनिमित्तजान् पुनः धातुसंस्थान् रसतुधिरसां समेदोस्थिमज्जा
 शुक्राण्यनज्जान् तल्लक्षणमाह दैत्यं दाहो गुरुत्वात्तु विवमथुतमः स्याज्ज्वरश्च द्रसस्थो दाहो मूर्च्छाप्रलपितुधिरवमिरपिभ्रांतयोः रक्तगोस्थु सांसंस्थालानि द्रस्ताध्रमवमथु
 तथापिडिको द्वेष्टनंचस्वेदोदौर्गाध्यमूर्च्छाप्रलपनलपनलानि मेदोगतिवा अस्थिस्थोस्थिप्रभेदममिवमिति नदः स्वासवेगांश्च धत्ते मज्जास्थिमोहद्विकाक्षवथुशिथिरता

दहनैर्मेधवपूतिनिकाकणामलकचूर्णमिदं बुचिदायकं हरति हारद्वगुडूयसंचयं द्रुतविलं वितकंचकफं हरेत् ८२ इति जीर्णज्वर
 द्रुतविलं वितृतापदर्शितघाथस्वरसष्टतचूर्णानि निशेकं टकारीयुगं जातिपत्रं वचावालकौपर्ण्यश्च व्यचित्रौ सटीव्योषतिकां
 तुदत्रायमाणवलाशिगुवीजं विषाधत्वयासः ८३ गुडूचीस्थिराशलिपर्णीविडंगं तथापक्षकोशीस्यष्टीमुनिवं

मर्मधातोमदश्च शुक्रास्थे

शोथमूर्च्छासुषतयननुजं वद्विनाशोत्पशक्तिः तस्य लानिर्भवति पक्तेस्तस्य स्यातांगीप्राग्भेचि किंचिद्विषमगदयोर्दूषणं लिङ्गमुक्तमिति सुषेणशतशतमाणि क्यमालायां
 पुनः मनस्थान् मानसान् क्रोधशोकमयहर्षविषादेर्ष्याभ्यसूर्यादेत्यामासर्पका मलीमप्रभृतिजान् तथैवेदं शीततोयं प्रयुज्यं चूर्णं समस्तं शीतपूर्वपणाहिकज्वरं हंति तथा
 वैषमंचविषमस्य भावः वैषमं विषमज्वरं स्वासकासौ च हरेत् पुनः इदं चूर्णं जानुपृष्ठोद्वेचणार्थं कट्योऽष्टकस्यापिशूलं हरेत् त्रिकशदिनात्रष्टवंशस्याधोभागं बोध्यं क

रुम्भतंशूलं सवेगांतीवमित्यर्थः चपुनः तृषातो हतं दाम्भमंचकामलापांडुहृद्गेगांतु एतच्छूर्णं अवस्यं हन्यात् अतः अस्माच्छूर्णं सर्वजोवाज्वरः त्रिदोषोद्भवोपि चरः कप्रयास्यति ग
मिष्यति यथा ताक्षर्यतः गनुस्स सकासातकः मुजंगाः रार्पः प्रयातः नकोपीत्यर्थः निशे निशाद्वयं हरिद्राद्वयं एका हरिद्रा द्वितीया दानु हरिद्रा हरिद्रा हलदी इति लोके निशार्द्रकदलः
कंदः प्राच्यांक्षेत्रेषु सिद्धा इति दानु हरिद्रा हलदी इति प्रसिद्धा दार्वाकुंजवापत्रैः कोठशदृशैः गिरि क्षीरलीवेति कंठकारैः युगं रहती युगं एका रहत्फला द्वितीया द्वयफल
तिमातिपत्रं जातिकोपिका जावित्री इति लोके चंपवजातिपत्रिकेति ववाउग्रगंधावेचति प्रसिद्धं यथवचानूपे नुगा कटुः तन्विक्षुपत्राभुवालुमध्यस्थपर्विणी पृथुः पुष्पफल
कथिति बालकेंद्रीवे हउवे इति लोके पर्वटोरेषुः पितपापडा इति लोके चमंचविकावावदाह इति लोके वविकावहिका अहाराहणापि पिलिकी समास्थिराति कटुका

यवाती ससौराष्ट्रिका त्वकपटोलां वुजं ग्रंथिकं पुष्करस्या विमूलं ८४ लवंगं सुवंशी वताली सपत्रं सुरात्रै फलं देवतादाह चक्रं य
वः शक्रसंज्ञः कलिं गाल्यपत्रं च काकोलिका चंदनं जी वकात्यं ८५ सुरेण क्षमार्गी समं सर्वमेतन्न हीनिं वमर्द्धं क्षिपेत् सर्वतोपि ८
दं विस्तुचक्राकृत्यं रोगदैत्याधिपानं हंति चूर्णं ज्वराताशु सर्वान् ८६

तस्याः फलं तु गजपिप्पलीति चित्रोमिः चीता इति लोके सदीवर्षूः नारकसूर इति
प्रसिद्धः व्यापंशुदीमचिपिपली तिका कटुरोहिणी कटुकी इति लोका अंबुदीमुक्ता त्रायमाण त्रायंती अस्य लक्षणं पूर्वीतं ज्ञेयं वलावाट्यालकः बलिया इति
प्रसिद्धः वलामनुषुदीघांगुलिपत्रासकं केति सिप्रवीजं शैभां जतवीजं सहितं न इति लोके तयथा घनः चंदनीक्षणांघोसोवको वहल छट इति धर्मिष्टः
विषातिविषा अतोस इति भाषायां सितसितानुणः कंदे स्त्रिविषट्कं गिराविति धन्वया यासः जवासा इति लोके गुडची शिना स्थिराष्टिपर्णी पिटवन इति भा
षायां शूविनी रक्तकुशमाप्यन्यात्र गुलिपत्रिणी तावती तितमधुराणुश्वेतमुश्रविनी पृष्टिपर्णीति शालिपर्णी अंशुमती सखिनि इति लोके अस्य लक्षणं पूर्वीतं

२५ रुचंजियमविडंगं रुमिशतुः वायविडंगं इति भाषायां विडंगपादयोर्वाग्रितपत्रोणुष्यकः मरिचामफलो गुंघ्रसंजीवक इति पञ्चकः पञ्चः पञ्चाख इति लोके यष्टीमधुकं मुलेटी इति
 एतां अथस्यान्तधुर्गुल्मखल्पमिष्टरपुंखवतकिंविन्महादीर्घपत्रोल्फकृष्णसमिदस्यत्विति निर्वोप्रसिद्धः यवानीप्रसन्नदर्भाश्रजवा इति लोके यवानीवल्लिकाल्याणुः शृङ्ग
 कादणकोयका अणुवीजंतुगुणवग्निषंफलवधपादपतिर्लण्डिकासौराष्ट्रीफिटकेरी इति लोके सौराष्ट्रीभूमिजः पांशुः धारः साकुंदकचमृदितिलक चोचंतज इति भाषायां
 प्रतापीपादपः खल्पाङ्गीगुलीश्वरः सुमैपीतकेशसुगंधिस्त्यातास्तवकपत्रकेशोः तस्यत्वक चोचंतज इति लोके पत्राणितमालः तेजपात इति लोके प्रसिद्धः केशरीनागकिश
 रः सारसपुन्ययोगित्वात्रोक्तः पटोलंकुलकं पावल इति भाषायां अंबुजपद्मं कमल इति लोके पञ्चशरदिदृश्यत इति ग्रंथिकं पिथलीमूलं पुष्करमूलं खनाम्ना प्रसिद्धं लवंगं द्वे

एथकृद्विजिगांतुकात्थातुसंस्थाननस्थानिदंशीततोयप्रयुक्तं तथैकाहिकादिज्वरंशीतपूर्वं समस्तं तथाविषमं स्वासकासौ ८०
 हेरेज्जातुष्टोद्वंषापूर्वकाद्यौस्तकस्यापिशूलचिरस्थंस्वेगं तृषामोहतं द्राघमं कामलापांडुहृद्गमितनिहन्त्यादवस्यं ८८ प्रया
 स्यत्यतः कः ज्वरः सर्वजीवायथाताड्यतः कोभुजंगः प्रयातः ८९ इति भुजंगप्रयातवृत्तौ पदार्थितसुदर्शनचूर्णं इति ज्वराधिकारः

कुसुमं लौग इति भाषायां वल्लीलवंगकात्पावल्लीवस्तिपुष्पिकागंधिवेति सुवंशीरोचनावंसलोचन इति लोके वंसपर्वस्थरोचनाशुभासातकाविडसेषंजीवयता
 न्येति तालीसपत्रं तालीसंखनात्तैवप्रसिद्धं अथभूस्यामलकीवज्रुषलालीसः मुरामधुरः मरोरफली इति भाषायां मूर्वासपील्युपीनुचखोद्वहिस्त्रासुमाधुरेति ९१
 त्रैफलं त्रिफलाशिवामलविभीतकी देवतादानुः देवदानुः चक्रं कुटिलंतग इति लोके चक्रं सकावती उत्तरवारिदलकं सुगंधिसलिलांतिकं टणकं चक्रमित्यु
 त्तमिति शक्रयवः इद्रयवः कुटुजोमालिनीप्रापपुष्पः क्षीरीशसवकः तित्तश्चंपकवधायपत्रीवर्षादिपुष्पितः बीजमिद्रयवादीर्घास्तिताः सर्वसदतादिषु कलि
 गात्पापत्रं कुटुजपत्रं कुर्येति प्रसिद्धः काकोलीखनाम्ना उत्तरपथेप्रयिता अथकाकोलिकानूपेरविपत्रपयोन्विताकं टिन्यकाष्टामधुरात्यावल्लीक्षीरेणि ९२

स्थिराकंदित्यामधुरापूर्वागुल्मकोन्यायचोदितेति भावमिश्रलु जायतेक्षीरकाकोलीमहामेदोद्वयस्थले पत्रस्याक्षीरकाकोलीकाकोलीतत्रजायते पीवरीसदृशोवन्दः सुक्ष्माः प्रियगांधवान् स
 प्रातोक्षीरकाकोलीकाकोलीलिङ्गमुच्यते यथास्याक्षीरकाकोलीकाकोलीव्यपितथाभवेत् एषाकिंचिद्वेत्कृत्वाभेदयसुभयोरपिकाकोल्योभयव्यप्यगंधाधुलंदद्यादिति चंदनं चेतचंदनं स
 तथावनेत्रांतरे चूर्णलिहासवालेहेप्रायसः खितचंदनं कषायलेपयोः प्रायोयुज्यतिरक्तचंदनमिति चंदनाष्टकसन्त्योः पत्रको द्रुमपदपसर्वद्रुमाश्चंपकाभपत्रातिपुद्गयं पुनः पत्रगोक्तसंज्ञश्च
 यरोहीतकष्टमिति अथखितचंदनस्थष्टत्वलक्षणमाह एवेदितिकं कलिपीतं हिंदिरं कंतनौमितं ग्रंथकोटरसंयुक्तं चंदनं श्रष्टुच्यते इति प्रष्टव्यं चित्तमणो जीवकाख्यं जीवकं सुरिषाक्षं क्रधमं
 अयमव्युत्तराधोप्रसिद्धः तद्यथा जीवकर्मको ज्योहिमादिशिरोरुतौ सोनकंदवाकंदौ निसर्गसिद्धा पत्रको जीवकः कूर्चकाकारोऽरुधमोऽष्टपत्रावा जीवकर्मभयोरप्येविविदारीवन्दः ।
 स्वभागाद्वयंदद्यादिति अथज्योतिस्मात्स्वामिप्रायेण ज्वरस्योत्पत्तिमाह यथाकं जातके नीचस्थितास्वमानोर्दशाक्षितासाशिरोऽगंधनप्रत्यध्वरुजः कुष्ठस्य च दर्शनं जनयतीति शेषः सप्त
 वल्गामयुक्तं मुहूर्द्धसमायोगोभूनिमित्तकलिर्भवत् देहपीडाज्वरो व्याधिः शिखिमध्ये गते बुधे शनिरंतरगतितमस्यपि न तत्तद्गृहवै कृतनिराकृतये जपादिकुर्यात् अथशान्तिमाह
 तच्च नीचगोचोत्तडाधोपशान्तये श्राधलेति जपः श्रीर्क्षमिः समिद्धिराधिकसहस्रं जुह्यात् विद्रुममाणिक्यौ धार्यौ नीचगते च देहपीडाधोपशान्तये यतिधाममिति मंत्रेण जपः ब्रह्मरुक्षसः ।
 मिद्धिर्जुह्यात् शंखदानं च दद्यात् रूपं मुक्ताफलं तथा च केतुदशांतगीतबुधजनितदुरितक्षय उद्धृष्येति मंत्रस्य जपः अणमार्गसमिद्धिर्जुह्यात् हेमदानं दद्यात् हेमधार्यं शनैश्चरान्त
 र्गतिराह जनिदुरितोपशमाय कथानश्चित्र इति जपः दुर्वासमिद्धिर्होमः श्रयादद्यात् राजवर्तिपरिधानं च अथवार्सविणा कामिप्रायेण हितमाह तत्रकारं च यदाहमार्गः येषुनः पूर्वजन्मनि
 पिभुनेवैवरांस्थानेन्यजन्मनिसंततं चरवंतस्युः तच्छासनार्थं जातवेदसे इत्यष्टोत्तप्युक्तं कल्पे सहस्रकलशमिषेकं महोद्वेस्य कुर्यात् ब्राह्मणभोजनं च कुर्यात् अन्यच्च येषुनः त्रारक
 मर्माणः पापाः पिशुनचेतसः ते भवंतु सदा दुष्टा ज्वरोगकराः सदा ताः शान्तये धृतसंख्यां जपं कुर्यात् प्रथमोजपं जातवेदसमंत्रेण ब्राह्मणभोजनं च यदाहमार्गः येषुनः पूर्वजन्मनि
 प्रशस्यते सहस्रकलशस्नानं शतब्राह्मणभोजनमिति तत्र ब्राह्मणभोजनं गुरुलघुभावेन दृष्टव्यं आत्मशुद्धये पक्षया वा वित्तश्राद्धं न कुर्वतीति वचनात् तथाचोक्तं माहेश्वरतेत्रे ३
 पुनज्वरे मेहशस्य प्रकुर्यादमिषे च नमिति शीतज्वरे तथा कुर्यादमिषे कंदरे तु धृतिवचनात् इदं भुजंगप्रधानं चंदोपि तत्तद्वर्णयथा यदाद्यं चतुर्थे तथा सप्तमं चैतत्तैवोक्तं स्वरो
 मेकादशाद्यं प्रसृजं विद्विषिवक्त्रा विदेतादुक्तं कवींद्रैर्भुजंगप्रयातमिति श्रुतिगोपे इति भुजंगप्रयातं नोपदर्शितमुदर्शनं पूर्णं इति ज्वराधिकारः समाप्तः श्री श्री

माह यातामंदरमंथनाजलनिधौपीपृषरूपापुरात्रैलोक्येविजय प्रदेतिविजयाश्रीदेवराजप्रियालोकानांहितकास्यकाक्षितिलेपाभावेः कामदासर्वातंकविनाशहर्षजननीसंसे
 वितासुत्वरमिति इदं मपितोटकघटः १४ तदुपरिपथ्यं चाह दध्यनमिति स्पष्ट इति कानकसुंदरो नामरसः अथग्रहणीगदेषांमाह नुचकोषणेति नुचकोषणवद्विभवं इदं च
 र्णीयदिमथितैः सहसततंत्रदितेनप्रसितंमुक्तंवेत् तर्हिपुनरुषशरीरस्थःग्रहणीगदःविरतिविनाशयातीतिशेषः इतःग्रहणीगदतोटकतःग्रहणीगदतोटीतिग्रहणीगदतोठ
 कःतस्मिन्ग्रहणीगदतोटकतःचूर्णीतःरुदितिशीघ्रंरजितुंग्राभुंकःग्रहणीगदःप्रवलःनकीपीत्यर्थःअतःचूर्णीसेवितं पुरुषस्यततोग्रहणीगदःनप्राप्नुयादित्यर्थःनुचकं
 सौवर्चलंरुललवणं शुद्धसिंधवंरुदिकामंभविष्याद्यत्रिलिनिर्वीर्येतरांजीवौपुनिमग्नलुगंनृनयशंलद्वंयुनित्रिलिनिर्वीर्येतिष्वेवांरुणीतेषुच नुचप्रिपिपलीरु
 स्य

रुचकोषणवद्विभवंमथितैरसितंयदिचूर्णीमिदंसततं रुजितुंगदितिप्रवलोविरतिकइतोग्रहणीगदतोटीकातः १५ वसुटेककपि
 त्थरजोमगधाकमलाफलदाडिमचक्रफलं अजमोदमदाकुसुमंचपृथक्धारणैस्त्रिभिरेवकुटुप्रवरं १६

र्णैःप्रत्येकंतत्पुनस्त्रिधासमृज्यसाधितंबुध्यातद्विसेवर्चलंशुभमिति अमणमरिचं वह्निश्चित्रकं चीताइतिलोकेप्रसिद्धःमथितंक्रंमहाशिलीके इदं तोटकं च चूर्णीयति तत्र
 क्षणंयथा समुत्पीयकषट्मनाहिनवर्मवि रतिप्रभवंगुरुचेतयतपीनपयोधरभारतेननुतोटकंरुजितमिदंकथितमिति १५ अथग्रहणीगदेन्निमिष्लोकैःकपित्थादिचूर्णी
 माह वसुटेकेति वसुटेककपित्थरजोमगधाकमलाफलदाडिमचक्रफलंअजमोदमदाकुसुमंचएतत्सर्वमौषधंत्रिभिरेवधारणैःअमणंप्रत्येकंपृथक्कयही
 त्वा कुटुप्रवरंआणंज्वलनत्रिसुगंधिजलंमरिचंवरधात्यकदीप्ययुतं नुचकनुटिकेशरशौडिजटात्यकइदंसर्वमौषधमत्रप्रत्येकंपृथक् अर्द्धकोलसमंप्रमाणंरुहीत्वा एत
 त्सर्वत्वागंतयतचूर्णीतस्मिंश्चूर्णी इह सितांदिगुणं कथंभूतांविमलांनिर्मलांपरियुज्ययदिइदंचूर्णीभक्षति तर्हिग्रहणीक्षयगुल्मगलामयस्वासहरांभवतीत्यर्थः वसुटेकस्य

२८ दृ. चं. तु. द्व. त्रिंश. भाषणमिति मानं त्रिनिर्देशीः द्वादशभाषपरिमितप्रमाणेनेति अर्द्धकोलस्तुचतुर्भाषकोज्यः कपित्थदंतशवंकैथा तिलकेप्रसिद्धः तरुः कपित्थोल्पदलः कषाया
 सितकः फलसितभाषकषाया मूलपत्रांखादुसुगंधिचमकापालद्वयंतमहदल्पफलेभिदेति मगधाधिप्यस्ती कमलाफलंश्रीफलंवलइतिलोके द्यडिमंकारकं अनारइति
 भाषायांदिदडिमंतुमध्यहंतुल्याकारंप्रसिद्धकमिति चक्रफलं तिलिडीकं तंतरीकामाषायां तिलिडीकंफलंतस्यचिंचाईदडिमीदलः दलंकषायमलंचफलंतद्रुपणकं
 फलानिवायशुष्काणितिलिडीकमुदाहृतं उदीच्यांतसिद्धितरंशुष्कंमगल्यककृतीति अजमोदस्वननैवप्रसिद्धः अजमोदाद्वयंपोतंड्वयंतनुदलंतातुः क्षत्रेविची एषत्रं
 चातत्रतीक्ष्णजमोदकाइति मदाकुशुमंधातकीपुष्पं कटुप्रवरंशुदी जरणंजजीजीराइतिलोके धन्वयासपमोजजीत्यणकोकंरकस्तुरिति ज्वलनंचित्रकं चीताइतिलोके

जरणंज्वलनत्रिसुगंधिजलंमरिचंवरधान्यकदीप्ययुतं नुचकत्रुटिकेशरशोडिजदातगिदंष्ट्रगार्डककोलसमं १९७ इतद्व
 एमथात्रशितांविमलांपरियुज्यकणांतमिहद्विगुणां यदिभक्षतिचूर्णमिदंग्रहणीक्षयगुल्मालामयस्वासहरं १९८ इति

त्रिसुगंधिः त्वगपत्रनागकेशरं त्रिषुत्वकपत्रकेशरं तोटकटुतोपदर्शितग्रहणीचिकित्सा इतिशेभनः गंधोयस्मिन्नसोत्रिसुगंधिः रश्मिविशेषः
 उक्तंच प्रतातीपादयः खल्पाईगुलिः छदलः सुमैः पीतके अत्रसुगंधिस्त्यात्सात्त्वकपत्रकेशरैः तस्यत्वकवीचांज
 इतिलोके प्रसिद्धं पत्राणितमालः तेजपातइतिभाषायां अस्मिन्कपित्थादिकेचूर्णे त्वचः केशरस्यचष्टम्यंग्रहणात् त्रिसुगंधिशब्देनपत्रस्यैवग्रहणंपत्रंतुतमालः ॥
 तेजपातइतिलोके यद्यपि एकमप्यौषधं योग्यसिन्धुत्वनुच्यते मानतोद्विगुणांप्रोक्तं तद्व्यंतत्वदर्शिमिरितिवचनात् द्विगुणं मानंप्राप्तं तथापि अनेकविवंधेत्वदर्शना
 तश्चैतद्विगुणभागेनमांतव्यः अतः द्दिशंव्याख्यानंरुतामेतिजलंहीवेरं हाजवरइतिलोकेप्रसिद्धं मरिचंशिरिचतमिचइतिभाषायां धान्यकं कुलुंबुरुधनियोइति

२७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

२७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

ग्रहणीगदनाशकरं सथितं कथितं त्वथ विश्वयुतं कथितं अमृतामृतदातिविषासहितं त्वथ नागरविल्वगुडं प्रथितं १३ विष
 टंकणहिंगुलांधकणामरिचंकनकस्यवबीजमिदंसकलं विजयासलिलैर्मदितं प्रहरंचणकप्रमितावटिका १४ ग्रहणीज्व
 रमद्दुतासहरासति सारविनाशनशक्तिकारः दध्यन्नं दपयेत्तथ्यं अथवा तत्र क्रमत्तकं इति कनकसुंदरो नाम रसः

अतीसारविनाशनशक्तिकारः अतीसारस्य विनाशनं अतीसारविनाशनं अतीसारविनाशनस्य शक्तिः अतीसारविनाशनशक्तिः अतीसारविनाशनशक्तिः कण अतीसारशक्तिक
 रस इत्यर्थः विषं वत्सनाभं वत्सनाभ इति लोके प्रसिद्धं सिद्धं वा रसद्वयं पत्रो वत्सनाभ्यां कृतं तल्लथा यत्पार्श्वे न तरोर्द्विर्वत्सनाभः समाधितः टंकणांधा तु द्रावीक्षारः सुहृगा इति लो
 के प्रसिद्धः क्षारः स्वभाविको मूस्थो मनुष्यं डीशको ध्यय हिंगुलं ददं सिद्धं नुप इति भाषायां गंधशिवाजी गंधक इति लोके प्रसिद्धं कणपिण्ली मस्तिप्रसिद्धं कनकांध
 नूरंधतुरा इति लोके धतूरा सितमध्विस्तु सितपीतानुणैः सुमैः सिद्धा पाकस्पृष्टद्वैः फलैरकादिकं टंकैरिति विजयामोहनी भां इति लोके अथ प्रसंगाद्विजयाया उपनि

भाषायां वेति श्रेष्ठं दीप्यं वतानी च जवा इति लोके नु च कं दल लवणं सो च इति भाषायां त्रुटिः एला ला इची भाषायां एला तु द्विधा सूक्ष्मे ला रूह दे ला च तद्वयो ले
 दा ए मा ह सूक्ष्मा रि द लि नी स्ते त्रे ल्य गु द्या व ल्लिका त्रुटि रूही ति सूक्ष्मा सु मा त्रिको ण फल वी ज कं सूक्ष्मं त्रुटिः सुगंधेति केशं नाभं केशं श्रोत्रं डिजटा पिण्णली मूलं
 त्वक् चो चंत ज इति लोके सिता उपला मिश्री इति भाषायां अथ संग्रहणी रोगस्य लक्षणमाह गतेति सारेण्यामेन दुष्टा चेद्गृहणी मुहुः वर्वा मुंचन्या मने यो च्यते सौ ग्रह
 णी भादः कुप्यति ग्रहणी नित्यं दिवा भूयो रुजाम सुकसान्या संग्रहणी नाम्ना याम संग्रहं मुंचति शोथा मिमांथ वै वषि ज्वरणा कानु विक्षयाः तडा वल्य रुगा धानो
 द्वा रस्यु ग्रहणी गदः पृथक् सर्वं शतुर्द्वा सौ तस्त्रिंशति सारवत् विडामं पूत्य शुभजो त्से द्रवं स्ते गध शट्चुक इत्यग्निवेश कृत निदानां अनुशला कायां अथ ज्योतिः
 शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह यदुक्तं शारा वल्यां प्रचुरमित्रस्तीक्ष्णो मृदु काया मिर्मदालसश्चंद्रिषे चोदरो धक भावैः परिपीडितो भवति अन्वच्च जात के क्षीणो दु
 दशा योगे चिह्नान्वितानिलक्ष्ये हि दान् उदरामय ज्वरशिरो नयनोत्कं पः प्रजायते पुंस्तौ अन्ने दरा मयाः ग्रहण्यादकः तदुपशान्तये चंद्रप्रीतये जपहो मादिकं कुर्या
 त् इमं देवा इति मे त्रिण जपः शास्त्रोक्तं तल्लिंग मंत्रेण वा व्याधितारता म्येन तिला न्यपालाश स मिद्धिर्होमः शंखदानं च सुजात मुक्ता फलं च धार्य तेनोपशान्ति भवति
 अथ कर्मा विणार्क चारु यः पुनरदुष्टा भाव्य मनन्य गति का कारण मंतरेण त्यजति स जन्मांतरे ग्रहणी रोग वा भवति शिव संकल्प मष्टोत्तर सहस्रं जपेत् स धुहिर
 ण्यं च दधात् तथा च धर्म शास्त्रे साध्वी भार्या च यो मर्त्यः परित्यजति कामतः ग्रहणी रोग संयुक्तः सदा भवत्यशंसयः शिव संकल्प सूक्तेन जपेदंष्टोत्तरं श्रुति नि
 ति शिव गीता वचनं धेनुं सुलक्षणां दद्यात्सवत्साभरण वितां पयः श्विनी गुणोपेतो वा स एव निशेषत इति अन्ने ये तु परं व्यापहारि च जायते ग्रहणी गदाः
 ता प्रतीकार माह चतुर्थे धनदानेन साध्या हि ग्रहणी गदा इति इदमपि तोटक घंदः तल्लक्षणां यथा स्वयं शोधिक शोभित भूमि पते स गौ री हवे दगौः सुम
 ते शुभ तोटक एतमिदं विहितं तनुतेति मुदं हृदये निहितमिति इति तोटक एतौ पद श्रित ग्रहणी चिकित्सा ५६ ५७ ५८ शिव

२५ दृ.चं: अथाशीरोलेपमाह अथैति कांजसहितं अथारलूज्वलनसैंधवविष्वशक्रचूर्णमथितेनसहपीतंसगुदज: अर्श: स्वहेतो: स्वकारणोपि नैव प्ररोहति तिलकैरपि गुद
 जा: कल्पकल्पं बहुकालपर्यंतं भस्मयसंतीत्यन्वय: अक्षोविभीतक: वहेडा इति लोके अरलूखताम्नाख्यात: निंवादभ्रदलो विष्वमसूक: पंक्तिपत्रफ: प्रसिद्धो भंगुणसा
 रलूकोदिशभाषयेति ज्वलनश्चित्रक: यीता इति लोके सैंधवंपट्टमं विश्वंशुंदी शक्रो कुटज: कुरिया इति लोके कांजो नक्तमाल: कंजुत्रा इति लोके मथितं तेक्रं
 तिलक: तैलफलं तिल इति भाषायामिति तनुगुदज इत्यस्यैकवचनत्वात् संतीति बहुवचनोत्प्रेयोग: कथमिति चेन्न संतीति गुअद्यादिगोप्यवतिधातो: प्रसिद्धिनुज्वत
 धतिधातो: लट: स्थानेति वादेशे कृते उपदेशे जनुनासिक इति तीकारस्थितसंज्ञायां इदितेनुमइति नुमागमेव दत्ते कोरिति मुनिपिरोरीतिताकारलोपेव दत्ते संतीति सिद्धं

अथारलूज्वलनसैंधवविष्वशक्रचूर्णं कांजसहितं मथितं पीतं नैव प्ररोहति पुनर्गुदजस्वहेतोर्भस्मयसंतीति तिलकैरपि कल्प
 कल्पं २५ पाठाद्गुजंहरति नागदूरमूलदीप्यै प्रथक् प्रमिलिता गुदजामयानां तद्गुडेन सहिता यदिव वयस्य स्थाले पोथरात्रि

एतेन केचिन्नुपस्थातो: अमाप्रयोगमनुश्रित्वा शुद्धं कटुतैलकजालिनीनां १०० मित्याहुस्तदपास्तमवैद्यकशस्त्रस्यैव दमूलकत्वप्रदर्शनार्थं भक्ति
 धातो: संतीति शब्दस: प्रयोग: कृत इति वसंतिलकारत्तम् २५ अथाशीरोलेपमाह पाठेति नागदूरमूलदीप्यै: सह प्रमिलिता प्रथग्वाणटा गुदजा
 मयानां गुजंहरति वेति पक्षांतरे यदि गुडेन सहिता वयस्य चित्तं हि तद्गुजंहरति अथेत्यनंतरं रात्रिकटुतैलकजालिनीनां लेपोपि नुजंहरतीत्यन्वय: नागरंशुंदी दूरमू
 लंधत्वत: जवाहा इति लोके धन्वन: पादपोरुतदल: कोलफलो मुमइति पाठापापचेली पाटी इति भाषायां पाठात्स्थापापचेली च स्थिरैव प्रतातिती विश्व
 क्रांतीपमापीलुफलामधुपिच्छिलेति गुडाप्रसिद्ध: वयस्थाहरीतकी वासादलोद्गुमोद्रिस्थ: फलंतस्य हरीतकीति एत्रि: हरिद्रानिशाद्रकदल: कंद: प्रा
 नी

श्रेत्रेषु सिद्धकः इति कटुतेलकं सर्पपतेलं जालिनीकटुकोशातकीयंदालतुरः इति लोके सितापीतानुणैः पुष्पैर्देवदालीत्रयं मातं वल्लित्तास्थिरा एताः कर्कोटाभदले
 पे आद्याफलं दीर्घकं टेलघुष्टं वताशोति इदमपि वसं ततिलकानामुष्टदः १०० देवदाल्याकाषायेनेति साष्टम् अथ गुदजामये श्लोक इत्येतत्पमाह पंचांगेति अ
 नलेयग्री अर्कस्येदम् अर्कतस्येदमित्येता पंचांगं विधिवद्विदग्धं सत् अर्कततः क्षारोक्तविधिना क्षारं प्रकलय विबुधैः अस्य क्षास्य स मंतुल्यं उतमं सिंदूरं योज्यं कथं भूतं
 सिंदूरं द्विशिखंडियुक्तं द्वाभ्यां शिखंडीभ्यां बर्हितुं न्यास्यां युक्तमित्यर्थः तत इति शेषः सुखपरेण गुदजानि निधर्ष्य इदं द्विशिखंडियुक्तं सखारसिंदूरं लिप्यं लिपनीयम् तेषां
 मितितेण गुदजानामुपरि उपरिभक्तदधिप्रलिपेत् दिनामां त्रितयि गतवति धर्मेति सति लेपं उच्चाटयेत् हीतियस्मान् एवेति न्या गुदजानि गुदां कुराणि अचिरं शीघ्रं एव

देवदाल्याकाषायेन धावना गुदकीलजित् पंचांगामा र्कमनले विधिवद्विदग्धं क्षारं प्रकल्प विबुधैः सममस्य योज्यं सिंदूर
 मुतममिदं द्विशिखंडियुक्तं लेप्यं निधर्ष्य गुदजानि सुखपरेण १०१ तेषामुपर्युपरिभक्तदधिप्रलिपेद् उच्चाटयेद् गतवति त्रितयेदिना
 नां हो वंपतीति गुदजान्यचिरं नूनं दृष्टं सयाच बहुशस्तदनान्यथास्ति १०२ इति वसंततिलकरुतोपदर्शित गुदजचिकित्सा

तंतिनां शोणानुवर्तीत्यर्थः नूनमिति निश्चयेन सयाच बहुशः बहुधा दृष्टं तदेतज्ज्ञेयो अन्यथा मिथ्या नास्तीत्यर्थः अर्कः सन्दूरः मदार इति लोके श्वेतोत्कश्चित्रेषु सिद्धकः
 तणका काष्टगभश्चमेदः श्वेतार्कयोः सुमेः सुगंधिपुष्पश्चान्यो क इति सिंदूरं नागसंभवं सेंदुर इति भाषायां रक्तोष्णीगगर्भश्रीमच्छृंगारभूषणं गंधवभूषणं रक्तं सिंदूर
 नागसंभवमिति केचिदेषः बर्हिः अणामार्गः लटजीरा इति लोके प्रसिद्ध अणामार्गस्तृणकवत्तिडोदुर्मंजरीः स्थितः दिग्रक्तदलकश्चेति तत्स्थं सम्यग्ग्रीवतृतीया इति लो
 के विल्याता ताम्रकिंदुत्यमिति अथाशो गस्य निदानमाह त्वङ्गा समेदः सेंदुरागदेशीयं कुरानमलाः कुर्युः षोढाप्रथकद्वंद्वं सर्वैर्दे सहजास्तजे शोद्याग्निमां द्य
 विष्टं भंसवथेपीडाल्यविद्धताः पांडुतास्तक्षयावल्याधमानोद्गारानुजीर्णं प्रागुक्तं हेतुचिह्नैर्लेदीषान्ते सुलक्षयन् त्रिदोषचिह्नं सहजमललावितदलजं

२: चैः कासमध्यांतवलिजात्रेकाद्विप्रवृत्तानिचतानिसाध्यानिकष्टानिनसाध्यानिवदे क्रमादितिनिदानांजनशलाकार्या अथज्योतिःशास्त्राभिप्रयिणाशस्यहेतुमाह यदुक्तं
 ३० शारावलीजातेकेककटसंस्थेभानौस्वपुत्रदृष्टेपुमानिपुनः दुर्गमकुष्टरोगैरभिभूतो निर्दयो विगतिलज्जः कर्कटस्थितसूर्यस्यशनिदृष्टस्यवाघोपशांतयेजपहोमदाना
 दिविधिमाह आकलेनेतिमंत्रेणजपः तिलार्कसमिधुतैर्होमः गुडोदनैर्वेद्यं आधितातम्यनयथोक्तं धेनुदानंदद्यात् विद्रुमधार्य अथकर्मविपाकमाह शुक्लमा
 दाययोगेदमाध्याययतिविहिजः तथादिवाचनेमंत्रजपंवा सोशोभवेत् शुक्लंवेतनं दृष्टातिरुष्ट्रचोद्रायणं कृत्वा पुरुषशुक्तकंतयत्प्रचं विष्णुहृदं श्रीशुक्तं शांतयेज
 पत् काथेर्गुरुलघुभावं विचित्रप्रयतो नरः सष्टतहमदद्यात् श्रोत्रियाय कुटुंबिने कुटुंबपोषणायालंबनंदद्यात् नहाधनी प्रसंगीतावचः श्रुत्वा पुराणात्पद्यतः शृणुयशः
 स्वांगोवधान्त्यः ग्राह्योद्वायनो मुनिरिति सद्यागरात्वावल्यां यात्रेयेतु सुखलयेजलेवापिशुद्धिं करोति च गुदरोगाः भवंत्यस्य पापरूपाणि दारूणा इति इदमपि

दौष्टारौलवणानिपञ्चदहनं पाटांकारं जं सटीं हि गुग्गुलुषणशक्रमुस्तकमिनुदार्वाट्टरपुष्करं वसंततिलकनामधंदः १०२ १०३

इति वसंततिलकहोतोपदर्शितगुदजचिकित्सा अथाजीर्णसार्द्धत्रयेन श्लोकेनाग्निमुखचूर्णमाह दौष्टारौलवणानिपञ्चदहनं पाटांकारं जं सटीं
 हि गुग्गुलुषणशक्रमुस्तकमिनुदार्वाट्टरपुष्करमित्यत्राष्टानां समाहारहृदः जीरहृदं वचाजमोदहृदं बुधिरिग्यायवानीत्रुटि श्रेयस्यग्निमुखमित्यत्रापि समाहारहृदः
 मुदारुभगुजाष्टास्लसोचामवाः एते शब्दाः कर्मभूताः सन्ति अतएव बुधेर्द्वितीयांताशयाः तिलमुष्कशिगुपिकटकुक्षारोत्तमनां सत्कारान् पत्रंचदाडिमंचय ।
 म्लवेतसंयधपः किट्टंचयतानि सर्वाण्यौषधानि पृथक्पृथक्स्थानेन समंतुल्यं संगृह्य चूर्णीयेत् तच्चूर्णं फलपूर्वाकार्द्रकारैः शुक्तैश्च निरानं पृथक्भावभा वनीयं इदं
 बहिर्मुखं चूर्णीदहनं प्रप्रिकरोति कथंभूतंदहनं कालाग्निजैः समं प्रलयकालाग्निजैः समं प्रलयकालाग्निजैः समं प्रलयकालाग्निजैः पुनः किं करोतीत्याशयेनाह वातेति कतास्त्रामयमंत्रद्विज
 दल्लीहोदराजीर्णकांश्च शीलं गुल्मचविनिहंति नाशं करोतीत्यर्थः पुनः किं करोति अनिशं निरंतं संशनलं मंदीभूतानलं दीपयेत् प्रकाशयति शामिषयुतं मां

^{मु}स्युतंगुरुभक्तमोजनंकातदुपरिदिश्यश्मात्रंषोडशमाघप्रमितमिदं चूर्णमश्नाति तर्हि सद्यः शीघ्रं पुरुषस्य भुक्तं जीर्यति पाचयति पुनः कौतुकं भुक्तस्य पक्तिरूपमा
^{३१}श्रय्यं कुरुते भूयः वाङ्मार्गं तस्य पुरुषस्य बुभुक्षामोक्तमिच्छा भवेत् यदि सकलामयोधहरणमिदं चूर्णं विधानेन युक्तं चेत् तर्हि भूयः किं कथनीयम् पुनः सर्वजीर्णकरीशना
 शनविधानिदं चूर्णं शार्दूलविक्लीडितं स्यात् सर्वजीर्णरूपेयः करीशः हस्तिमूत्रपतस्य नाशनविधौ शार्दूलविक्लीडितं वर्तते शार्दूलस्य सिंहस्य कपिषु यथा

जीरहं द्व्यचाजमोदहृषणो मया यवानी त्रुटि श्रेयस्य प्रमुखं सुदारु रूग्ण गुजादृक्षा स्तमोत्ता मयाः १०३ सत्क्षारं क्लिलमुष्णं शिगृपिकद
 कृष्णोत्तमानां पृथक् पत्रं दाडिममस्तवेत समयः किदं समं चूर्णयेत् तद्भावं फलपूरकार्द्रक रसैः सुते स्त्रिरात्रं प्रथक् चूर्णं वह्निमु
 खं करोति दहनं कालाग्नि तेजः समं १०४ वातास्त्रामयमंत्रद्विजटालीहोदराजीर्णकान् पीलं विनिहंति गुलामनिशानं शानलं दी
 पयेत् अत्यंतं गुरुभक्तमामिषयुतं भुक्त्वा क्षमात्रं विदं सद्यो जीर्यति कौतुकं च कुरुते भूयो बुभुक्षा भवेत् १०५ किं भूयः सकलाम
 योधहरणं युक्तं विधानेन चेत् सर्वा जीर्णकरीशनाशनविधौ शार्दूलविक्लीडितं इत्यग्निमुखं चूर्णं

विक्लीडितं भवति द्वदित्यर्थः द्वौ क्षारौ खर्जिका यवक्षारौ सजीयवात्वा इति लोके प्रसिद्धं खर्जिकालोपिका तुल्यादाहिताक्षारतां गता यवासंश्रुकादग्धाश्च क्षारता
 मायिताः तथा क्षारोत्तमामका विनिलवणानि यंच संधवसामुद्रविडसौवर्चल्लोमकानि संधवसंधानोन इति भाषायां शैलेः संधवः स्फटिकाभं सामुद्रं अखिलवर्णापागा
 नोन इति लोके पाश्याणं बुद्धनेदग्धं क्षारत्वमाप्नुयात् सामुद्रं तु तदा व्यातं लोके पांगेति विश्रुतमिति विडं क्षारलवणं खरीनोन इति लोके शुद्धसंधवगामूत्रमजितं विवा

प्यासलेतनस्त्रिधा खर्जिकोदुनित्राणि मंधूमेन

[illegible]

अभ्याहरीतकी तिलतिलफलंतिलैवप्रसिद्धतिलशब्देनात्रगुलतिलाग्राह्यातद्यथा तिलः कृत्तः सितैरक्तः सवर्ण्यन्यतिलसृता दालश्रेष्ठतमतेषुशुक्रलेपय
 मसितः अन्वेहीनतराः प्रोक्तास्तैरेकादश तिलाग्निमुष्ककः मोक्षकः मोक्षइतिभाषायां तथाच भाषप्रकाशेपलासवर्षतदृष्टः मोक्षलमुष्ककोपिज्ञोलीहोमोति
 हतथाध्याश्रेष्ठः क्षारदृष्टोद्विविधश्चेत्तद्वैकैति मुष्कशब्देनात्रकाष्टणटलापिग्राह्यः ३ तं चभावप्रकाशेअपरास्यात्पारलासितामुष्ककोमोक्षकोर्धटापाटलिः
 काष्टणटलेति शिगुंलोभांजनः सहजनइतिलोकोपिकाट्ठककोकिलाष्टः तालमघानाग्निभाषायां अथेशुरोग्रंथ्यमिकंठकाः नृणकोर्दोगुलिदलाः कर्कशः दाल
 कोस्थिइति क्षारितमः पलासः दौकइतिलोके क्षारितमः पलाशेचेत् तत्रांतरे मदनविनोदियुक्तं पलाशः किंशुकः किर्मीयश्चकोब्रह्मपादपः क्षारश्रेष्ठोरक्तपुः

पथ्यापिप्यलिसंयुतंनुचकजंचूर्णचकोलाखुना हन्यात्सर्वमजीर्णमितदमृतंयुतंतथा मलुना १०६

पथ्यद्विष्टतः समिद्धतमइतिअथ

प्रसंगात्क्षारणकविधिमाह लुहकोकटलीपलाशकुब्जास्फोताग्निसप्तच्छदन्गुंजारबधितिल्वकाक्षकारजापामाकिशानकीः मुष्कांशिप्रुतिलाश्रपाटलियवते
 तांलुचान्यौषधान् शाखावापलपत्रमूलसहितानुत्पाद्यवन्हौदेहेत् १ तद्भस्मर्तुगुणेजलेवसुशुभेरालोडचमूत्रेथवाविश्राव्यंचतोपटेनविबुधैः बाराचितविश्रुतिः
 पथ्यालोहमयेददेसुविमलेक्षिप्त्वाकटोहपचेत् सद्वाय्वात्रवधट्यतयदिभवतीक्ष्णोचामाकितः २ शोवालिभधनवांशुकेनसुभिषक्भूयोः परिश्रापयेत्तंवाद्यसुप
 यत्ततोपुनरपिक्षिप्त्वाकटोहपचेत् तीव्राग्नेचतदाभवत्यतिशुभः क्षारः सुशर्मप्रदः सर्वातकविनाशनोनिगदितोमंदाग्निहंदीपनइतिइत्यपिशार्दूलविक्रीडितशब्दः १०३
 १०४ १०५ इत्यग्निमुचूर्णं अथजीर्णरोगे अर्द्धश्लोकेनचूर्णमाह पथ्येति पथ्यापिप्यलिसंयुतंनुचकजंचूर्णचकोलाखुनाइषड्कोलाखुनासहसर्वमजीर्णहन्यात् कथंभृगुचूर्णं
 अमृतंअमृतोपमंअमृतचूर्णममृतनात्रोणमुक्तमपितथाकरोतीत्यर्थः पथ्याहरीतकी पिप्यलीमगधापीपलइतिलोके नुचकंमोचर्चलंशोचइतिलोके तत्रांतरेयितंमहासति

१०६
माषांशुति

३२ दःचः अथाजीर्णसपादश्लेकिनसंजीविनीगुटिका माह कलेति कृत्वात्रिफलजंतुनाशनवचाविश्वौषधं कुंडलीं भस्मातंसविषं समानितुल्या चेत्यौषधानि गृहीत्वा सुरभीमू
 त्रेण गोमूत्रेण संपेषयेत् ततः गुंजाभां गुटिकां विधाय सुधिया विधेन आर्द्रकां भोयुता आर्द्रकस्य अग्नः आर्द्रकां भः आर्द्रकां भसायुता आर्द्रकां भोयुता वटिका अजीर्ण एका देया
 च यो अनेतरे विश्वामये वटी द्वयं देयं पुनः सर्पविषेति स्त्रो वटिका देयाः ताः वटिकाः सन्निपाति गदे च तस्मा उदिताः कथिताः देयाः इत्याशयः इह अस्मिन्नेके लोकानां मनुष्याणां
 सन्निपात निचये ससुहे अजीर्णसंजीविनीगुटिका परं भेषजमित्यर्थः कृत्वा पिप्पलीत्रिफलं विभीतकामलहरीतकी जंतुनाशनो विडंगः वचास्वनास्त्राप्रसिद्धं विश्वौषधं शुंदी कुण्डली गु

कृत्वात्रिफलजंतुनाशनवचाविश्वौषधं कुण्डलीं भस्मातंसविषं समानितुल्या चेत्यौषधानि गृहीत्वा सुरभीमूत्रेण संपेषयेत् गुंजाभां वटिकां विधाय सुधिया देया
 र्द्रकां भोयुता एका जीर्ण गदे वटी द्वयं मथो देयं विश्वामयेति स्त्रः सर्पविषे च तस्मा उदिता स्त्रा सन्निपाति गदे लोकानां मिह सन्निपात
 निचये जीर्ण परं भेषजं १०० गुटिका संजीविनी नामा संजीवयति मानवान् रुक्मिण्डू इव चुक्रा कल्क सहितं तैलं विषयं परं हन्यात् स
 स्त्रि विश्वचिको प्रजनितं शूलं मना कमर्दनात् १०५ इति कुण्डलितैलं इति शार्दूल विन्नीडित एतोपदर्शिता जीर्ण चिकित्सा १०६

इदी मस्त्रातको अग्निः भिलां वा इति विख्याता विषं शृंगिक विषं सीगियामी ठा इति वल्लोके प्रसिद्धं अथ शृंगिकस्य स्वरूपमाह यस्मिन् शृंगको बृहोदुग्धं भवति त्ना हि
 क तस्मै शृंग इति शृंगोदयत त्वविशारदे रिति भावप्रकाशे शृंगोपमं पुरुषं न निविडं च शृंगी इति रामनाथ प्रकाशे इदमपि शार्दूल विन्नीडितं धंदः १०० गुटिका संजीविनी नामा
 तिस्रष्टं इति संजीविनी गुटिका अथ विश्वचिको प्रजनितं शूलं तैलमाह रुग्मिति रुक्मिण्डू इव चुक्रा कल्क सहितं विषयं परिषयं तैलम अत एव शृंगं मना कम
 र्दनात् इषमर्दनात् तस्त्रि विश्वचिको प्रजनितं शूलं हन्यादित्यर्थः मनां भाव्ययः लोके उक्ता कुण्डलितैलं इति लोके सिद्धं इव संधानुन इति माषाय चुक्रां च क इति लोके जंवी रस

संग्रहितार्योऽन्यत्रिवेतसाख्यं चलोके तच्चूकसंज्ञकमिति कल्कं दृष्ट्वा पिहीतिलोके खल्लिश्चविश्वचिकावखल्लिविश्वचिके खल्लिविश्वचिकाभ्यामुग्रजनितं खल्लि
 विश्वचिकोऽग्रजनितं खल्लिः हस्तिपादावमर्देनाख्यरोगः तस्य क्षणमाह खल्लिस्तुपादसंघोरकारभूलावमोढिनीति शब्दार्थचिन्ताम एतच्छब्दमंदाग्रजीर्णविलंबिकाविश्वचि
 कासां निदानमाह भुक्तात्रणवितनेववह्निनोदायेनतत् तस्योपरिपुनर्मुक्तमजीर्णतं विनिर्दिशेत् १ भुक्तान्तं न विपाकमध्यजदरे विष्मद्योः संभ्रमात् एतौ जागरणादि
 कातिशयनादव्यवधानात् एतदुर्मुक्ताद्विषमाश्रयादतिभया क्रोधाद्विनुद्धाशनात् मंदाग्रैर्वह्निभोजनाद्गुह्यराद्यद्विषयश्रितयारथाताधिके विषमतां समुपेतवह्निः पिता
 धिको भवति वह्निरतीव तीक्ष्ण स्नेहाधिके जठराद्यो हुतमुक्तमंन्दो वाताधिके पुष्यसमेषु समाप्रिते इति विष्टम् विषमो नलः प्रकुर्ये एषां श्ववातोद्भवात् तीक्ष्णमिवि
 दधाति पित्तजनितान् रोगान् चिदाश्रयनं श्रमोऽस्नेहसमुद्भवात् तनुते रोगाश्च मंदाग्रलो नैरोऽयं हुतमुक्तशमो हि सततं धीरुचिमानसं ४ वाताजीर्णविह्वलमेतत्प्रसिद्धं मं
 शूलं क्षुत्पिपासां गमर्दः साह्योऽरोगधूमयुक्तो निकटः स्वासाशोकी मूत्रघातोऽथ हि का ५ मूर्च्छादाहः संभ्रमः शूलमुपमं स्त्रीद्रोणधूमयुक्तो तिसाहः मोहस्वेदोऽथर्वणं संधि
 संधिपित्तजीर्णलक्षणं सद्भिनुक्तं ६ कफाद्याजीर्णभवति गृह्णाद्विचिकाग्रतीसारः शोथोऽनुचिरपिष्टपाक्षुद्विकलतावमिलोलावत्रादरति नूदरे भासधिकं शिरः
 पीडा लसंगुदयवनसंचारमधिकं ७ अजीर्णतो विश्वचिकाभवेद्विलंबिका श्ववा विश्वचिको ईदमिनी क्षणेन ताशयेत्तरं ८ अधोगतिर्विलंबिका विलंबिका एतुसा
 ते अपानगारुग रितामले जटिहारिणी ९ शुक्लानां प्रहादूर्द्ध्वदृष्टव्योर्द्ध्वमयेत् तासां विश्वचिका प्राक्ताऽधो नयेत् सा विलंबिका १० अतीसारमूर्च्छापिपासां पीडा
 श्रमोऽसाह्योऽविमुक्तां गमधिः निमग्राश्चण्डलदंतोऽग्निद्वयसंज्ञा विश्वव्याभवंती ह शूलं ११ विश्वव्यामशुद्धिर्वीमं मूत्रघातो भवेद्देपथुः कंठवद्रोऽग्निश्वः विसंज्ञो
 रतिर्दहदोहाल्पशय च वाकोचनं क्षुद्धिनाशो लघ्वेष्ट १२ इति मिसगचक्रचितोत्सवनिदातेष्वमंदाग्रजीर्णयोः र्ज्यतिशस्त्राभिप्रायेण हेतुमाह यदुक्तं जातके
 अतिपरिभूतः कृपणः सहचयुतामानवो भवति जीवे मंदाग्निः स्त्रीवियु मोदुश्चिकेपापकर्म च अन्यच्च अत्योदराग्निपुंल्लवः परिभूतो दुर्वलोलसः षष्ठे ह्यो विजितो गोपुहं
 ताजीवियु र्को तिथित्यातः तज्जानिताजीर्णमंदाग्निप्रशमायं तत्पीतपे यथातं जपहोसं कुर्यात् वृहस्पतये अति यदव्यतिमं त्रेण जपः तिलाज्याश्वत्थसमिद्धिर्हमिः

३३ चः रीतवासोदातं पुष्पाणां वासोति कं धार्यम् अथ कर्म विपाकमाह अन्नहती लजीर्णवा नावति अन्यस्य मूत्रस्यैवाभुक्तानामहतास्य हि जस्य मूलव्याधिमेति तत्तं जीर्णना
 ३३ पिपीडिता इति पाएन विप्रकरणादजीर्णच प्रजायते कदनादमिमांदि कं इति इदमपि शार्दूलविक्रीडितश्चः तस्मात्प्रमाणं यथा ग्राह्यं नृवलेयप्रियतममहत्तथाचाष्टमं
 नन्वेकादशाहस्रयोस्तदनुचदष्टादशौततः मांति डैर्मुनिभिश्च यत्राविरतिः पूर्णं दु विज्ञाननेतद्गुणं प्रवर्तिका व्यासिकः शार्दूलविक्रीडितमिति शार्दूलविक्रीडि
 तहृत् पदार्थिताजीर्णविलं विका विशू विका चिकित्सा १०८ अथ रुमिरोगस्य प्रतीका माह चूर्णमिति मधुप्रयुक्तं विडंगस्य चूर्णं लीढं चेतथाः रुमीणां नुजस्ताः वितस्य
 निविडंगो विडंगचूर्णं रित्यर्थः विडंगकथिता जुलादिति शेषः पीतात् याः रुमीणां नुजस्ता वितस्य तिकोऽयं इन्द्रकजातशैलपक्षाऽ वेत्यन्वयः विडंगैः कथितं विडंगकथि
 तं तस्मात् उक्तं च सद्योपलब्धं विडंगप्रतपनीयं विडंगो नावधूलितं पीतं रुमिहं हृष्टं रुमिजांश्चादं जयेत् लिह्याद्विडंगचूर्णं वामधुना रुमिनाशनमिति मधुस्रोत्रं सहतऽ
 चूर्णं विडंगस्य मधुप्रयुक्तं लीढं विडंगकथिता द्विडंगैः पीताद्विनं स्यंति नुजं रुमीणां वास्ति वं इन्द्रकजादिव शैलपक्षाः १०९ इतीन्द्रकजादौ तोपदर्शित

तिलोके विडंगं रुमिप्रं वायविडंग इति लोके रुमिचिकित्सा अथ रुमिरोगस्य लक्षणमाह ह मयस्तु द्विधा प्रोक्ता वाह्याभ्यन्तरे दतः वहिर्मा
 ल कपासृग्विट् जन्मभिदाश्चतुर्विधाः नामतो विंशतिविधा वाह्यास्तत्र मलीङ्गवाः तिलप्रमाणं संस्थानवर्णकेशां वराश्रयाः बहुपादाश्च हृक्ष्मात्र
 यूकालिष्याश्च नामतः तद्विधाकोटिपिटिकां कंडूगंडां प्रवर्तति अजीर्णभोजी मधुराम्लनिव्योद्रयप्रियः पिष्टगुडोपभोक्ता व्यायामजीवी च दिवा शयी च विनुद्धमुक्तं लभते ह
 मीश्च माषपिष्टात्तलवाण्डुशकैः पुरीषजाः मांसमाषगुडशीर्दधिमुक्तैकफोद्गवाः विनुद्धजीर्णशाकाद्यैः शोणितोत्था भवंति हि ज्वरे विवर्णता मूलं हृद्रोगः स्वशनं म
 मः मुक्तद्वेषेति साश्च संजातिरुमिलक्षणमिति यो रसिंहायलोके अथ रुमिरोगस्य कारणां ज्योतिष्माभ्यामिप्रायेण व्याचष्टे यथोक्तं जातके संजार्हो विकलो व्या
 धिरुमिस्थितदेहः निधनस्थ रजनिर्करे स्वल्पायुर्भवति सक्षीणे वचनांतरं जातके शुन्रुग्रहेर्दशायां नयनविना सो भवेच्चकु ज्ञातं ज्वालागर्भरोगा भवंति दास

यः प्रसरभूता इति अष्टमस्यानस्थितचंद्रजनितावाधोपशान्तयेयदुक्तं काविदध्यात् अथ कर्मविपाकमाह कुंजरघाताश्वघातीचकमिकुक्षिभवेनारः हनीलदृषभान्दद्याद्वास्त
 लोभश्चमोजनं अन्यच्च हतिमर्तयिनाहिनीलवस्त्रप्रधारयेत् साहजानरकंयातिठमिकुक्षिस्ततः परमिति ततः परमिति जनांतरमित्यर्थः १२ मपीन्द्रवज्रातामरतम् ॥
 तत्सदृशं यथा यस्यान्निषट् सप्तममक्षरं स्याद्व्यंजुं धेनवपं वतद्वत् गत्या विलुङ्गीकृतं हंसकंतेतमिन्द्रवज्रां प्रवते कपीन्द्रा इति १०१ इतीन्द्रवज्रादतोपदर्शितकमिवि ।
 किंसा अथ पांडुगेगितिलादि मोदकमाह तिलेति तिलोपकुल्लोषणनागागणप्रत्येकं पलाईमानमिति शेषः अथ सुचूर्णस्यापि पलाईमानं द्वात्रिंशन्माषपरिमि
 तं मानं समस्तसर्वोषधसमंतुल्यं माक्षिकधातोः विशोधि तं चूर्णं तस्य मधुप्रयुक्तं वटोभवेत् कथंभूतः वटः मोदकः अ च्छमितः षोडशमाषपरिमितः पुनः अनुतक्रः अनु

तिलोपकुल्लोषणनागागणमपसुचूर्णस्य पलाईमानं विशोधि तं माक्षिकधातुचूर्णं समं समस्तस्य मधुप्रयुक्तः ११० वटोभवेदक्षमितोनुतक्र
 श्रितं तने पांडुगदे पिशस्तः प्रकंपते पांडुगदः कृते सिन्धुपेन्द्रवज्रे सति यद्वटिः १११ इत्युपेन्द्रवज्रादतोपदर्शितपाण्डुचिकित्सा

पश्चात्तक्रं यस्य सः अनुतक्रः एतादृशः अनुतक्रः चटः चिरंतनि बहु कालिके पांडुगदे पिशस्तः श्रेष्ठः किं पुनर्नवीने इत्याशयः
 सिन्धुपेद्रकृते सति पांडुगदः प्रकंपते उपसमीपे इन्द्रवज्रे सति प्राप्ते सति यद्वटिः प्रकंपते तद्वदित्यर्थः तथैवोक्तं वासेने अथ हिलस्त्रूषणकोलमग्नौः सर्वे समं माक्षि
 कधातुचूर्णं तैर्मोदकः क्षौद्रयुतेनुतक्रः पांडवामयेदराते पिशस्त इति गिलः प्रसिद्धः उपकुल्लोषेदेहीपीपल इति लोके ऊषणं शिरोरुतं मिर्व इति भास्वार्थं नागं शृङ्गी
 अथः पासवंधनं लोह इति लोके तद्यथा लोहं कालापसं प्रत्यपि डं पासवंधनं गिरिशारं शिलाशरं तीक्ष्ण कृत्वा मिषे अय इति हेमः लोहशस्त्रेनात्र कांतलोहं ग्राह्यं कांती
 सा इति लोके तद्यथा ये गुणाः सारिमुंडे ते गुणाः मुंडकिदके तस्मात्सर्वत्र मंडू रोगशोचै प्रयोजयेत् किं द्वादशगुणं मुंडं मुंडातीक्ष्ण शतो निर्मितं तीक्ष्णं लक्षगुणं कांतं मक्ष

दः चः एतत्कुरुत नृणां तस्यैकांतं हृदये वंजयाम्यहं नृणां मिति स्मरन्तस्मयये अथकांतलोहस्यपि क्षामाह यत्पात्रेन प्रसरति जलेते लुपिंदुप्रतप्रेहिं गुरीधं त्यजति वनिजं तिक
 ३४ तां निवकल्कः तप्तं दुग्धं भवति शिलाकारकं नैति भूमिं कृत्वा गच्छात् स जलचरणकः कांतलोहं तदुक्तमिति शिवनिघण्डे माक्षिकं शब्देन सुवर्णमाक्षिकं ज्ञेयं तद्यथा सुवर्णश्री
 लप्रभो विलुनाकां च नो रसः तापी किरातवीनेषु पवनेषु च निर्मितः ताप्यः सूर्यांशुसंतप्ते माधवे मासि दृश्यते मधुरः कांचना मासः सान्नीरजतसन्निभः किंचित्कषा प्रमुभपो
 शीतः पाके कटुर्लघुः तत्सेवनाज्जगत्याधिविवेकपरिभूयते माक्षिको द्विविधो हेममाक्षिकस्तस्मात्माक्षिकः तत्राद्यं माक्षिकं कान्यकुजोत्थं स्वर्णसन्निभं तपती तीरसंभूतं पंचवर्ण
 सुवर्णवत् माषाणवहलं प्रोक्तस्तस्मात्त्वौगुणल्यक इति अथ प्रसंगात्माक्षिकस्य शोधनमाह शंडतैललुंगां बुसिद्धं शुध्यति माक्षिकः सिद्धं वा कदली कंदतोयेन धटिका
 द्यं तप्तं क्षिप्रं यथा कथं शुद्धिमाप्नोति माक्षिकमिति मधुक्षौद्रं सह त इति लोके तत्रं मयितं मद्य इति भाष्यायां अथ पांडुरोगस्य लक्षणा माह पांडुरोगाः स्रक्ताः पंचयातपित्तक
 कैः स्रपः घृतुर्यः सन्निपातेन पंतमोश्च दमक्षणात् १ व्यथयमस्तं लवणानिमद्यं मद्यं दिवा स्रमती नतीक्ष्णं निषेवमानसविदूषणं कुर्वति दोषप्रत्यसि पांडुभावं २ त्वगणो
 टनिष्टी वनगात्रहादसृक्ष्णप्रक्ष्णकूटशोथाः विण्मूत्रपीतत्वमथा विपाको भविष्यतस्तस्य पुरस्सरणि ३ पांडुदंतनखो यस्तु पांडुनेत्रस्तथैव च पांडुसंघातदृष्टी च पांडुरोगो
 वितरति ४ अंते पुश्रूने परिहीनमध्यां लानंतथांते पुचमध्यश्रूतं गुदे च शोफस्तथमुष्णयोश्च श्रूतं प्रताप्यंतमसंजकल्पं ५ विवर्जयेत् पांडु कितं वंशीर्थातद्वनिसाज्ज्या
 पीडितं वेत् अथ पांडुमयस्य ज्योतिशाल्वा निप्रयिणहेतुमाह सिंह राशे वर्तमाने चंद्रे पि पांडुरोगो द्वयोपि जायते सिंह राशिस्थितचंद्रजनिता पांडुरोगप्रतीकारं सचंद्रप्री
 तये यद्योक्तविधानं कुर्यात् तेनोपशान्तिर्भवति अथ कर्मविपाकमाह देवब्राह्मण द्वयोपहारी पांडुरोगवान् भवति कक्ष्यति कक्ष्य चंद्रायणानि कुर्यात् कूष्मांड
 हामं च कुर्यात् हिरण्यं च दद्यात् अथैव शौनकोक्तं अंत्यजागमने नर्त्यः पांडुरोगि प्रजायत इति इदमुपेद्रवज्जातानामवृत्तम् तस्य क्षणं यथा यदीं रवचा चरणि पुपूर्व भ
 वति वर्णालधवः सुवर्णो अमन्दमाद्यागमने तदातीमुपेद्रवज्जाः कथिता कर्वान्दे इति इत्युपेद्रवज्जा यतोपदर्शितपांडुचिकित्सा १११ १११ १११

अथकामलारोगोत्तरमाह निवस्येति निवस्येति नमोद्भववाकटं कटेर्याश्च फलत्रिकस्य पिष्टौद्रान्वितोयः स्वसः सः स्वसः कामलापाविनाशं उपपत्तिकरोति धातूनां
नेकार्थत्वादित्यन्वयः निवापिचुमंदः नीवश्चित्तोको छिन्नमयागुडूची कटं कटेरी कांठकारी कटाईतिलोको फलत्रिकं शिवामलविभीतकी क्षौद्रं मधुसूत इतिलोको अथ
कामलायानिदानमाह पीतावज्जूनविशतेत्रयदुपिताप्यकामलामैवरुद्राक्षपीतावगादिः कुंभकामलेति अथ कामलारोगस्य चोतिं प्रालम्बिप्रयिणहेतुमाह यदुक्तं
जातके दुःखानि च शिरोगकामलायातविभ्रमः शरीरक्षेपमाप्नोति शृणुके शुक्रमध्यो शुक्रादंशतः पतितचंद्रजनितकामलारोगस्य शंतेये प्रागुक्तचंद्रजपहीमदान
स्नानविधानं विदध्वात् अथ कामविणकमाह यथाह रुद्रगीतमः कामलोमतचौरः स्यात्सर्वद्वयमितिः कृतिं कुर्याच्च पश्चाजंतु विलोर्वीहनमुत्तमं सुवर्णनातिशुद्धेन

निवस्यवाष्टिं नमोद्भववाकटं कटेर्याश्च फलत्रिकस्य क्षौद्रान्वितोयः स्वसो विनाशं कामलायामुपयाति सद्यः ११२ इत्युपजातिस्तोप

पञ्चयोः मौक्तिकद्वयं नासिकायां तथा च दक्षिणकामलायिकित्सा सुतीर्थं वाज्रतं एवं च त्वागाहृतं तं प्यादोषोपरित्यजेत् सितवस्त्रेण संवेष्ट्य सितमाख्यैः
स्पर्शयेत् सर्वशस्त्रार्थतत्त्वज्ञेयैस्त्वयोधर्मतत्परः ब्राह्मणोत्पिणो भक्तवायजमानेन शक्तिः उपचारेणोद्भविर्द्विजमभ्यर्चयेत्तदा श्रेष्ठ्यादिशि होमश्च कर्तव्यः एवं डिले शुभे
समिदाज्यतिलैस्तत्रपालाही समिधोपि च जपश्चिरं जायविद्महे स्वर्णपक्षाय धीमही १ तत्रो गह्वः प्रवेदयात् इति गानुडगायत्री मंत्रो गानुडगायत्री समिदाज्येन कीर्तनात्
तिलहोमो व्याहृतिभिः कार्यं सिद्धं कृतं यजेत् स्थापयेत्स्वर्णकुंभं सितवस्त्रेण विष्टयेत् क्षिपेत्तत्र पंचात्मानि मृत्तिकापंचोचनां अथ स्यात्तत्र गजस्थानाद्वल्लीका तांगमाद्वृत्तान्
पचत्वं कपक्षवां कृत्वा पूरयेत्तीर्थवारिणा तेनाभिषेकं कुर्यात् शोषो हिष्टादिभिः कृमात् हिरण्यवर्णमंत्रेण पात्रमानेनैव हितं तत्तात्वाश्रुभैर्मंत्रिविलोर्वीहनमुत्तमं सदक्षिणं
मुदयुक्तं प्राङ्मुखाय निवेदयेत् मंत्रेणानि न विधिचत्वा चार्घ्यं निवेदयेत् श्रीकृष्णस्य नंदजगतः परिपालक पूर्वजमनियतापमं मातुं दुष्टं चोर्ध्वमपाकृतं तस्मादवाप्नोति

रुचः तैः यं यन्मया सति दुःसहं कामलोत्थमिदं देवाय वाहनदानतः विनाशाय शुभे रक्षजगतां पालको ह्यसि इति दानमंत्र एवं गनुडदानं च कृत्वा मर्त्यमुखी भवेत् प्राचार्यो भो
 ३५ जयित्वा तु प्रणयत्नविहर्जयेत् इति कामलाहरणगनुडदानविधिश्च द्वापजातिश्च तम् तत्सम्पन्नं यथा उपेन्द्रवज्राचणोपपन्नश्चिद्विन्द्रवज्रा वरुणप्रयुक्तः स
 र्धं द्वापजातिवर्मेन दत्तं तदीयमाद्येन उपजातसंज्ञमिति इत्युपजानि रतोषदर्शितकामलाचिकित्सा ११२ अथ कृत्वा पिते काशं स्वासं वाह वासेति शितामधुभ्यां मधुरी
 हातः अथ वासागुडापूतनिका कषायः कासश्च सनाह्वपितं निहंति अथ त्वनंतरं शितामधुभ्यां मधुरी कृतो रषस्यापि रसः कासश्च सनाह्वपितं निहंतीत्यत्वयः शितामि
 श्शी मधुश्चीद्रं वासागुडाग्रहः रसा इति लोके गुडाद्राक्षामुनका इति लोके पूतिनिका हरीतकी रषोपि सिंहाननः रसा इति लोके अह्वपितं कृत्वा पितं अथ कृत्वा पितस्य

वासागुडापूतनिका कषायः शितामधुभ्यां मधुरी कृतो यं निहंति कासश्च सनाह्वपितं रसो रषस्यापि शितामधुभ्यां ११३

निदानमाह घर्षित्वा यामश्लोकाध्वगमनुसुरतश्चाकद्रहती क्षणे दाधं पितं च रक्तं दहति बहति गच्छात्ता विलैस्तैः निःस्वसेलेहगंधो वमनमिति हि स्तेः शितामधुभ्यां ॥
 शितामधुभ्यां श्लेषातस्तत्कपिशमनिलतः कृत्वा श्लेषे च पित्तं तमिलं चिह्नैः समलो धणमनिलादूर्द्ध्वं श्लेषसंगं वातश्चैकाचित्तं चोभयामनमिदं काशं ॥ अग्निगंधासाधं
 एते कदोषादितमिह बूधैर्जायमव्यदिदोषं दैषि र्भेषासाधं शितामधुतहतवहः सति मार्गानुगंधायां का
 मां सुप्रक्षालनामः सममसितसरु व्रीलश्रीणाप्रभं वनि साध्यो रक्तपित्तं यद्विमुक्तिनरः स्वासकासज्वरार्तः क्षीणो दाहो चणंदुःसद्वययुरधति मूर्तिरलोतिर्पडिति अथ ज्यो
 तिः शास्त्राभिप्रायेण रक्तपित्तस्य हेतुमाह चंद्रक्षेत्रे यदा गौमोजायते मनुजस्तदा रक्तपित्तेन दुर्नां गो नाना व्याधिसमाकुलः अथां च रक्तपित्तज्यां दाह मग्निधौ रस्यद्रुतं लभते

नात्र संदेहः चंद्रमध्यगतकुजः चंद्रमध्यगतकुजजनितवाधोपशान्तयेतत्प्रातयेचजपहोमदानादिकविधिमाह अग्निमूर्द्धेति मंत्रजपः तिलाज्यखदिरसमिद्धिर्होमः रक्तव्रषभदातं वि
 दुसंचपरिद्ध्यात् हविष्यनैवेद्यं अथ कस्मिं विपाकमाह यः पूर्वजन्मनि वैद्यशास्त्रमदादुक्तौषधमन्यथा लब्धो प्रयोजयति स शोणितपित्तव्याधिमान् भवति सोऽग्निं दूतं च णो महेत्या
 दिचमधु घृतमयामष्टोत्तरायुतमग्नौ जुहुयात् रक्तपित्तापनुत्तये इति गरुडपुराणमिधानच्चेति अत्रेयेतु वणेशूलं शिरोशूलं रक्तपित्तं तथोद्देगं ऐते रोगाः महाप्राजरमिश्रापा इव
 ति हीति ११३ इदं विपरीतपूर्वाध्रंदः अथ रक्तपित्ते लघुखंडाद्यामाह लौहमिति लौहं अथ च सिताक्षौद्रं इदं त्रयं शमांशं तुल्यं ग्राह्यं च पुनः श्रयस्कतः लौहात् क्षीरं चतुर्गुणं स्या
 त् भवेदित्यर्थः तत्र विडंगसारं विडंगचूर्णं चरणप्रमाणं चतुर्थीशं स्यात् घृतं च समस्तात् द्विगुणं दद्यात् इदं सर्वमौषधमेकीकृत्या पाकविधानविज्ञः वैद्यः पाकं चरेत् कुर्यादित्य

लौहं सिताक्षौद्रमिदं समांशं चतुर्गुणं क्षीरमयस्कतः स्यात् विडंगसारं चरणप्रमाणं घृतं च दद्याद् द्विगुणं समस्तं ११४ पाकं चरेत् पाकविधानविज्ञो

यथाग्निखादेस्त्रिगुणं दद्यात् सुयंत्रिता शोणितपित्ततोयै भवन्ति ते स्नाद् विपरीतपूर्वा ११५ इति रक्तपित्तचिकित्सा व्याघ्रं च यंकुमिरिपुरिदं चूर्णितं क्षौ

द्रयुक्तं लेह्यं सर्पिर्युतमनुत्तये जडमरोगप्रशान्तिं ११५ र्थः ततः इदं लघुखंडाद्यामाग्निखादेति अग्नि म नतिरुम्ययथाग्निं ये पुनुषाः शोणितपित्ततः यंत्रिताः य

स्नाः ततो स्नात्त्रिगुणं दद्यात् विपरीतपूर्वा भवति पूर्वस्तात् शोणितपित्तात् विपरीताः इति विपरीतपूर्वाः तथा भूताः भवतीत्यन्वयः लौहं लौहचूर्णं लौहचूर्ण इति लो
 के सिता मिश्री मधु क्षौद्रं क्षीरं दुग्धं विडंगं रुमिश्रुः वायविडंग इति भाषां घृतमाज्यमिति इदमपि विपरीतपूर्वाध्रंदः तल्लक्षणं यथा आख्यातं की स्यात् पाकटीक
 तार्थं यदीदं वज्रा चरणः पुरा स्यात् उपेन्द्रवज्रा चरणस्त्रयो न्यसनीषिणोक्ता विपरीतपूर्वा इति इति विपरीतपूर्वा रक्तोपदर्शितरक्तपित्तचिकित्सा ११५

यथयक्ष्मारोगे अवलेहमाह व्योषमिति व्योषं च यंकुमिरिपुरः इदं चूर्णितं इदं यक्ष्मारोगप्रशान्तिं अनुत्तयेत् प्रापयेत् कथं भूतं चूर्णितं इदं क्षौद्रयुक्तं पुनः लेह्यं लीढं योग्यं पुनः
 सर्पिर्युतमित्यन्वयः व्योषं शुद्धीमरिचपिप्पली च व्यं च विवा चावदार इति लोके रुमिरिपुरः विडंगः क्षौद्रं मधुः सर्पिः घृतमिति इदं च्यमन्दाक्रान्ता रतं ११६

३६ दृ:च: अथयक्ष्म रोगोद्वितीयत्रयलेहमाह ताप्यमिति ताप्यंपथ्याद्यमिरिपुशिलाजत्वयश्चूर्णसर्पिःक्षौद्रंक्षौद्रयुक्तं एतच्चूर्णरोगराजप्रशान्त्यैतनुजः लिह्युग्राश्व
 दयचित्तमवयवः दशगणीपादो बहुलानेति लिह्युग्राश्वदेनेधातोः मुदादिगाणपाठान्नविरोधः बहुलमेतन्निदर्शितमिति सूत्रादयमर्थो लभ्यता इति ताप्यं सुचर्णमाह्निकं
 पथ्याहरीतकी रुमिरिपु विडंगां शिलाजतुः शैलनिर्व्यासं शिलाजीत इति लोके अथशिलाजतोऽव्युत्पत्तिमाह हेमाद्याः सूर्यसंतापात्तद्रवतिगिरिधितवः जलामंभृदु
 स्सामंभृदंति शिलाजतु इति चक्रः अथपीशाणाह शिलाजत्वस्मितं रसं शिलाधातुः प्रीमेतीशं श्रुतोभ्यः पादेभ्यो हिमभूयतः स्वर्णहृत्कार्यार्गभ्यः शिलाधातुविनिर्ग
 दिनिगामतः अथश्चूर्णलोहचूर्णसर्पिर्धृतमिति क्षौद्रं मधु इदमपि मन्दाक्रान्ता एतः ११६ अथयक्ष्मारोगोन्निभिश्चोक्तैः महातालीसदिच्छूर्णमाह तालीसमिति ताली

ताप्यंपथ्याद्यमिरिपुशिलाजत्वयश्चूर्णसर्पिःक्षौद्रंवेतस्मिहनुमनुजो रोगराजप्रशान्त्यैः ११६ तालीसंचत्रिकदुदह्नोदाडिमंतिंतितीयं प्रत्ये
 कं स्वात्पलमितमिदंच च्यदीप्येभक्षलाधान्यं विहाकनकशतवेध्यं त्रिजातं यवानी कृत्वा मूलं छमिरिपुशुभाशालुकंदेवपुष्पं ११७

संचपुतः त्रिकदुदह्नोदाडिमंचतिंतीडीयंचेदमौषधंप्रत्येकंपलमितं स्यात् च्यंचदीप्यंचद्वभक्षलाचताचव्यदीप्येभक्षलाः धान्यंचविहाचकनकंचशतवेध्यंच
 अनयोः समाह्वयः कनकाशतवेध्यं त्रिजातंचयवानीचकृत्वा मूलंच छमिरिपुशुभाशालुकंदेवपुष्पंच जीरंच इदं सर्वमौषधंप्रत्येकमक्षप्रमितं षोडशभाषमितं एतद
 ऽखिलंतुल्यं पूर्वात्तप्रमाणेन पलाक्षप्रमाणेन तुल्यं नतु न्यूनाधिकंचूर्णयित् ततः सर्वौषधात् शुभंचितं खण्डं द्विगुणतुलितं मेलयेदिति शेषः एवंविधमेतच्चूर्णरोगाधी
 संराजयक्ष्माणं चपुतः नयनहृदशशीति वातप्रसूता रोगान्नयनेच हृदयंच एषां समाहारः नयनहृदयं अशीति संख्यकाः वाताः अशीति वाताः नयनहृदयंच अशी
 ति वाताश्च नयनहृदयाशीति वाताः तेभ्यः प्रमूर्तिर्यथांति तथा तानि चपुतः इदं पांडुज्वराणां पीनसंचशपतंत्रंच उरुतांभंचादुज्ज्वालनुक्ताविंशतिश्लेष्मजाता

नोगांश्च दपुनः चत्वारिंशद्गणितगणितात्पित्तजानोगान् चत्वारिंशद्गणितं च चत्वारिंशद्गणितं तेन गणितास्तानिति शूलशोफौ च वैष्वर्य्याद्यास्तत्त्वराख्यः ।
 तेषां च हनोः ग्रहमपि मूत्ररुधिरं च निहन्त्यात् हननं कुर्यादित्यर्थः मंदाक्रांतः शनैश्चराक्रांतः नरुयथा तसंश्लिष्टं विनश्यतं तथा अनेन चूर्णं न सर्वरोगा विनश्येदिति मन्दः ।
 तीक्ष्णं च मूर्खं च खैरिचामास्यरोगिणोः श्लेष्मन्निष्ठं पुंसि स्याद्दृष्टिजात्यन्तरिणारिति मिदिनी तालीसंस्तामप्रसिद्धं अथ भूषासलकवद्गच्छालीसः त्रिकटुशुण्ठीम
 मरिचपिप्पली दहनोऽग्निः नीताऽतिलोके दाडिमं कर्कशं नास्ति भाषायां द्विदाडिमं तु मध्यमं तुल्याकाप्रसिद्धं कमिति तिग्मिडीयेति तिग्मिडीकं तं तं शिकभाषायां ति
 तिडीकः फलं तस्य विचार्द्धं दाडिमीदलः दलं काषायमहत्तं च फलं तस्य सवोषकं फलानि चास्य शुष्काणि तिग्मिडीका मुदा हतं उदीच्यांतं तिग्मिडीकं शुष्कं मंगल्यकारकमीति

जीरकश्च प्रमितमखिलं चूर्णयेत्तुल्यमातृत्वं शुभ्रं हि गुणतुलितं चूर्णमात्रं निहन्त्यात् रोगाधीशं नयनहृदयांश्चैति वात प्रसृतान् रोगान्गांश्च
 रणामिदं पीनसंवापतत्रं ११८ अरुस्तंभादजगलनुकविंशतिस्त्रिषज्जातान् चत्वारिंशद्गणितगणितात्पित्तजान् शूलशोफौ वैष्वर्य्यचग्रहम
 पिह नोर्मूत्ररुधिरं च नेन मंदाक्रांतो नर इव ग्राहं सर्वरोगो विनश्येत् ११९ इति महातालीसादिचूर्णं इति मंदाक्रांतोपदर्शितश्च यचिकित्सा

चयं च विकावावदाऽतिलोके दीप्यं जतोदायजमोदं शिभाषायां भूषासलकपिप्पली धान्यंधतिकासनियोऽतिलोके विह्लाहीवेरंदाजवेरं इतिलोके कनकं
 केशरं नागकेश इति भाषायां शतवेधं दृष्ट्वाहं अमलेपतस इतिलोके दृढतरोपपत्राश्च दीर्घकटकापादपा इतिलोके त्रिजातं च कृपत्रैला जवानीष्टसदभा
 अजवांश्च नाभाषायां कृत्वा मूलं पिप्पलीमूलं कृमिरिपुर्विडंगः शुभातुगाक्षीरियं हलोचन इतिलोके मंसपर्वणोत्तना शुभासातुगचिदंशं खंजरीदरानिति इति

६:३: ३

शालुकं जातीफलं जायफल इति भाषायां वंपवजातपत्रिका कालं जातीफलं तस्य मज्जा एतः सुगंधिक इति जीतं स्वनाम्ना प्रसिद्धं षंडं शर्को इति अथ यश्च सैम
एतिदनमाह अतिव्याय व्यायामव्रणशो कज्वरा ध्वमिशोषा नुर्वति ते कुड्या यश्माणं मुक फोल्याः १ कर्णाग्निदाहः पार्श्वशनुक्रपा हवमिर्ज्वरः चेश्वर्या हृदि
कका सखासमुत्तकगौरवं २ शुक्लेक्षणात्वं मांसे च्छिरं सा चक्षया कृतिः कासाति साणा श्वर्वा नि स्वभेदानुचिर्ज्वरैः षड्भिरभिः क्षये साध्यः किं वा स्वकासन च्छिरैरिति अथ
यश्मा रोगस्य ज्योतिश्चाभिप्रायेण हेतुमाह यदुक्तं जातके कुएकंडविकारैश्च क्षयरोगा भागंदरैः मज्जादिवाहनभयं भवेच्चंद्रांतो गोबुधौ अन्यच्च चंद्रक्षेत्रे यदा चंद्रिर्जा
यते यस्य जन्मनि मज्जात क्षयरोगी स्यात् कुष्टादिभिर्नुपद्रुतमिति वचनात् वंद संयोगे तं गतिबुधजनि राधोपशान्तये पूर्वी तां जपहोमादिकं कुर्यात् तत्तेनोपशाम्यति व्याधि
तत्प्रत्ययनचित्तशब्दं न कुर्वीत सति विभवे अथ कर्मविषाकमाह पूर्वजनानि स्रष्टा ह्रस्वहा क्षयरोगवान् भवति प्रायश्चित्तं असाध्यरोगोपलक्ष्यं षड्वंदं व्रतमाचरेत्तरो
ततात्तस्य भावान् प्रायश्चित्तमावोदृष्ट्याः तथा मांसलो लुपः परवत्त्वमिलाषी पाविषयभोगानसहमानः स्वांसहर्ता च क्षयरोगी तत्र च यवमध्यपि पीलिकामध्या
नित्रीणि चांद्रायणात्मा चोत् कश्चाश्चाशक्तस्य धनितः अशीत्युतांशतं निष्काणादानं तत्राप्यशक्ते तदर्धं तत्राप्यशक्तस्य तदर्धं न तु ल्पेन कुर्यात् हीनकल्पं न कु
र्वीत् सति द्वेषफलप्रदमिति वचनात् अत्राप्यशक्तस्य चांद्रायणं कुर्यात् प्रतिदिनं चतुर्विंशति ब्राह्मणभोजनं कारयेत् तत्राप्येतत्तदंगत्वेन मुंचामित्येत्त्वेन न सूतेन
प्रत्येवं च हृष्टताभ्यां होमं कुर्यात् जुहुयादथैतत्तमिति अनुक्तसंख्यापत्रस्याच्छतमष्टितरंशतमिति वचनात् रोगाभूय त्वोपेक्षया युतसंख्यो जपहोमश्च भवति तथा
चोक्तं असाध्यराधिना ग्रस्त उग्रेण प्रतिहाणि अतिरौद्रेण सूतेन प्रत्येवं वाक्यतः शुविः पूर्वमाज्याहुती हुत्वा उपस्थाय च शंकारं हविशोषेण वर्तते एकोत्तरशतं ततः पूर्ण
मांसे जपन्मार्त्ये रोगो भयश्च प्रमुच्यते होमकर्मण्यशक्त अनियत द्विगुणो भवेदिति अथ बाहुल्याभ्याद न्यात् कर्मविषाकं नोक्तमिति इदमपि मंद्रावा नाह तस्मात्तस्य
एतं यथा चात्वाश्चेत् क्षितिपगुरुवः पंचह्रस्वागुनुद्धौ द्रुखा दीर्घा लघु रागु रूडि वंशा च तं शविश्रामश्च श्रुति सह्यैरादतश्चेत्तणीं द्रोमं द्रां क्रान्तो कथयति तदानंद

स्येह द्यौः हा इति मंद्रां क्रान्तोपदंशुत क्षयचिक्लि

अथोरक्षतिचूर्णमाह लाक्षनिक्षीरिणी अक्षतविनाशयसर्पिष्कं क्षौद्रयुक्तं लाक्षाचूर्णलिह्येदित्यन्वयः सर्पिलिह्येदित्यन्वयः सर्पिलिह्येदित्यन्वयः सर्पिलिह्येदित्यन्वयः
 द्रव्ययुक्तं क्षौद्रयुक्तं लाक्षाचूर्णं लाक्षाचूर्णं असः ४ ततः ३ क्षतं अक्षतविनाशः तस्मै अनुष्टुप्छन्दोऽपदशितं अनुष्टुपं अथवाचूर्णपक्षितुं अ
 नुष्टुपमिदं चूर्णलिह्येदित्यर्थः लाक्षाप्रगमात् लाक्ष इति लोके पिप्यत्यस्य द्रवो लाक्षान्यसिंश्चापि क्वचित्तेषां विति अथोरक्षतस्य लक्षणमाह अक्षतोऽस्याद्रुकपूति
 कफस्यास्त्रावति युमिति अथोरक्षतस्य ज्योतिश्चास्त्राभिप्रार्थयेत् हेतुं कर्मविपाकं चतुश्छांतिं च पूर्णं कं दक्षमणश दृष्टं ज्ञेयं अनुष्टुपश्चतुर्म् तद्यथा

लाक्षाचूर्णसर्पिष्कं क्षौद्रयुक्तं लिहेक्षती अक्षतविनाशयप्रोक्तमेतदनुष्टुपं १२० इति अनुष्टुप्छन्दोपदशितं अक्षतविचिता
 सिंधिनीकथितदारिवायेत्काशमाशुमाधाजोयुतं चूर्णमप्यनुविचूर्णयेत्तयोर्माक्षिकेन लिहतामनुत्तमं १२१ पारदामृतविडं
 गांधकं टंकणं मृतमयो मृतवरा व्योषदानुरसनाच पदकं क्षौद्रयुक्तममृतार्णवाद्द्वयं अग्निसंध्यमरिचो नितं यदा भुज्यते सकल ॥
 काशहारकं १२२ इति सकलकाशोऽमृतार्णवनामसः

पचमं लघुसर्वप्रसन्नमं द्विचतुर्थयोः षष्ठं गुरुविजानीयादित्यनुष्टुपलक्षणमिति १२० इत्यनुष्टुप्छन्दोपदशितो रक्षतविचिता अथकाशेकाथं चूर्णमाह
 सिंधिनीति मगधाजोयुतं सिंधिनीकथितदारिजलं आशुशीघ्रं काशं निवारयेत् अथवा ज्ञेयोः सिंधिनी मगधयोः अनुत्तमं अनुष्टुप्छन्दोऽपदशितं उतमं विचयेत्स्मात्तदनु
 त्तमं चूर्णमाक्षिकेन सह लिहतां जनानां काशं विचूर्णयेदिति शयिनचूर्णं कुर्यादित्यन्वयः सिंधिनी व्याघ्री भटकटैया इति लोके मगधा पिप्यली १२१ यो ह्येतत्तं
 अथकाशे अमृतार्णवसमाह पारदेति पारदामृतविडं गांधकं टंकणं मृतमयो मृतवरा व्योषदानुरसनाच पदकं एतेषामौषधानां चूर्णं कृतं क्षौद्रयुतं ॥

एतरोयदियगोनसंजकोरुत्तोलघुगुरुनिवेशितौगौडवंशतिलकप्रकाशितासातदाकविकुलार्थोद्वेतेति १२३ इतिरथोद्धृताष्टोपदर्शितकासचिकित्सा
 अथहिक्कारोगिकसायानिधूमपानञ्चाह हरेणुकेति हरेणुकायाः सतंकसायं अथसमठं विप्ली सतं चपुनः एकमुंघ्रियोद्वं सतं मुशीलितं चैत् पीतंतर्हि सक
 लांपंचविधाः हिक्का निहंतिनाशं करोतीत्यर्थः चपुनः माषचूर्णोद्वधूमपानकंतथा करोतीत्यन्वयः अघ्रिणापिवतीत्यंघ्रियोद्वः सुरणामंघ्रिपः मुंघ्रियस्तं एक
 आसामुंघ्रियश्चतेनेद्वं सतमिति हरेणुका कौंतीसंभानुशतिलोके कौंत्यास्तुपाटपोरुतपत्रोपुषः फलस्य चर्वाजंतु कौंतिका संजुंति क मिति समठं हृषधूपनं
 हींगशतिभाषायां हिंगुमौलकचर्द्रिहोप्रथुत्कंधाप्रकाशस्य हिंगुनश्चतुरंगुलंतत्क्षीं प्रच्छिते हिंगुशुष्कं शुद्धं दलादिभिः मूलकामंफलं रितं नुटिवडिगुपत्रिके

हरेणुकायास्त्वथपिप्ली सतंसमठंचैकमुंघ्रियोद्वं निहंति हिक्कां सकलां मुशीलितं हि माषचूर्णोद्वधूमपानकं १२४ इ

तिहिक्काचिकित्सा सविप्रयष्टीकादुभद्रचूर्णितं पिवेदशीतेन जलेन योनरः सः स्वासहिक्कां विनिहंति सत्वं सुखेन शीते विगतत्कमच्चरः १२५

तिपिप्ली प्रसिद्धा मुंघ्रियोसुदानुः देवदारु शतिलोके माकोन्नविशेषः अथ हिक्काया निदातमाह पूर्ववत्कुनुते प्राणो हिक्कापंचाति क्रमात् अन्नजाहारबाहु
 ल्यद्यमिकाद्विनिवेगिनो हिक्काशुद्रजन्तुमंद्रागांभीरानामिकम्यस्त कस्ययत्नं गमखिलं महत्वं तेन सिध्यतीति अथ हिक्कारोगस्य स्वासकासांतर्भाषितत्वात्तद्व
 देवग्रहपूजाविधानं कर्मविषाकप्रयोगंच दर्शयति यः श्लात्वा अजन्ता ब्राह्मणो भुंक्ते सहिक्कारोगी भवति संत्रीणि चंद्रायणानि सातिश्च व्रणचरेत् ॥
 तामप्रिवणमित्यादिश्रुतं जपेत् सुवर्णमूर्तिदानं च दद्यादिति श्रंगिरो वचनात् इति हिक्काचिकित्सा १२४ वंसस्थ रुतं १२४
 अथ स्वासरोगिचूर्णमाह सविप्रयष्टीति सविप्रयष्टी फटुभद्र चूर्णितं रुतचूर्णं योनरः अशीतेन उलजलेन पिवेत् सनरः सत्वं शीघ्रं यथास्थानं स्वासंहिक्कां च विनिहति च

२: च: पुनः सः पुनः पुनः विगतः क्लमः ज्वरः सन्मुखिनश्चेति विगतिविशेषेणातोत्तमज्वरौ यस्य स तथा भूतः क्लमो व्यथेत्यर्थः विप्रयष्टी ग्राह्याण्यष्टी भारंगी इति लोके क
 ३५ दुमं श्रुंटी इदमपि वंशस्थ एतत् १२५ अथ स्वासकासे च त्वचूर्णमाह विभीतकमिति मधुप्रयुक्तं विचूर्णितं विभीतकं यदि लिहेत् तर्हि स विभीतकः स्वासविभीत
 कारको भयकारको भवति अथ च कूष्माण्डभवा विचूर्णिता जटापि यदि उलवारिणा सह पीता चेत् तर्हि स जटासकासकः स्वासहृण भवतीत्यन्वयः विभीतकं कलि
 दुमः बहेडा इति लोके अथोदुमा मधुकवदलैः रुद्धैः फलंतस्य विभीतकमिति कूष्माण्डः प्रसिद्धः इदमपि वंशस्थ एतत् १२६ स्वासकासे काथमाह कु
 लथेति पुष्करचूर्णसंयुतं कुलथविश्वौषधकं टकारिकाटपैः हृतं कषायं सकासजं स्वासादं दहति मल्लीकोरोतीत्यर्थः वनानिवंशस्थो वल्य नल इव श्रमि रिवे

विभीतकं स्वासविभीतकाको मधुप्रयुक्तं यदि चूर्णितं लिहेत् जटाय कूष्माण्डभवा विचूर्णिता सकासकः स्वासहृण उलवारिणा १२६

कुलथविश्वौषधकं टकारिकाटपैः हृतं पुष्करचूर्णसंयुतं दहत्यहो स्वासादं सकासजं वनानिवंशस्थ इवानलो वली १२७ इति वंशस्थ एतत्

तर्था कुलथि कुलथी इति भाषायां पुष्करं पुष्करमूलं विश्वौषधं पदार्थितस्वासचिकित्सा श्रुंटी कंठकारिकाटहतिका टपोटस्सकः रुसा इति लोके वासावि
 टपकहिता कुटजामदला फलापसिद्धेति अथ स्वासो गत्य निदानमाह अथ श्रोत्रैर्कफी वातो यात्यायाति मूर्ध्न्यदा कफमुद्गतिर्विष्वक्तदा स्वासान्को न्यसौ महोर्दु
 श्चिन्नतमकश्चुद्राब्जान्त्वाति क्रमात् गह्वरानि स्वसिन्धुचैर्हृन्ना ई मधोनलः विषिन्नवेगां चिन्नेन तमकेनाति मूर्ध्न्युक् शुद्धेण स्वसनेनाल्पं पूर्वसाध्यानं तेनैव इति नि
 दानं जनश्लाकायां असज्योतिशास्त्राभिप्रायेण हेतु कर्मविषयकश्रुतयः कामवेद्वेया इति इदमपि वंशस्थ एतत् तेषां यथा ओन्द्रवज्राचारिणोऽसंति वेदुपात्य
 वर्णालघवः कान्थायदि मदील्लसद्भूजितकामकार्मुके वदंति वंशस्थमिदं बुधास्तदा इति वंशस्थ एतत् पदार्थितस्वासचिकित्सा १२७ १२७ १२७

अथ स्वभेदप्रतीकारमाह पथ्येति पिप्यलियुक्तापथ्यायदिजाधाचेत् भुक्ताचेत्त्रिविधं स्वरोपधातं हरोवाविश्वसंयुतापिपथ्यातथैवपूर्ववत् ज्ञेया च पुनः तैलाक्तः
 तैलसंयुक्तः आस्याः मुखस्यः खदिरः तद्व हरोते इत्यन्वयः पिप्यली प्रसिद्धा पथ्या हरीतकी विश्वं शुंठी तैलशब्देन तिलतैलं प्राक्षं तैलेनुकेनिलोद्भवमिति वचनात्
 खदिरोगायत्री खिरइतिलोके प्रसिद्धा शनीदलस्तपुः शैलेफलसस्यकपायकः खदिरस्यैव सारो घः सस्याः सारस्तदाह्वयः युज्यते तत्र गानार्थं तदभावेन साधितः तद्व
 क्षवल्क निर्घोषो घनाश्रुष्को पुणोत्तरः सारदपि स योज्या वा सारः खदिरज इति गीतिरुतं १२८ अथ स्वभेदेऽथ च लेहमाह धात्रीफलमिति सकलं लाजायुक्तं च पुनः
 बीजपूरकं धात्रीफलं मधुना क्षीरं दिला लीटं सन्तूनमिति निश्चयेन सह सैव किन्तरी गीतिं गायतीत्यन्वयः रुक्मापिप्यली लाजालावा इति भाष्यं तद्यथा एवं सुलं

पथ्यापिप्यलियुक्ता जाधावाविश्वसंयुता विविधं स्वरोपधातं हरोत तद्व तैलाक्त आस्याः खदिरः १२८ धात्रीफलं सकलं लाजायुक्तं
 च बीजपूरकं मधुना लीटं नूतं गायति सह सैव किन्तरी गीतिं १२९ इति गीतिरुतौ पदार्थित स्वभेदविकित्सा

दुलालानिधान्यानि सतुलानि च मध्यनि सुगुटितान्या दुर्लजा नीति मनीषिणः बीजपूरे लुंगं विजोरती वृइतिलोके प्रसिद्धः तद्यथा मातुलुंगी बीजपूरे लुंगो मध्या
 न्तिकेशर इति लुंगं द्रवंच जंवीरं नारंगं लुकुवं तथा रुतपत्रोपपन्नाश्च दीर्घकंठकपादपा अल्पतराः मिथो संज्ञा रूतैषां कंठकेशर इति धात्रीफलमांमलकी
 किन्तरीणां गीतिरिव गीतिः किन्तरी गीतिस्तं शाकपार्थिवादित्या मध्यमपदलोपी समासः गानं गीतिः तां गीतिं गैशब्देऽत्र नभावेतिः गायति किं न वच्छब्दं करो
 तीत्यर्थः अथ स्वरोपधातस्य लक्षणमाह अतुमानत्यजलैरपि विषविषामाद्योतसंदूषणाद्यैः क्रुद्धाः कुर्वन्ति दीषास्वसारणिगताभेदमाश्रुस्वस्य प्रत्येकं तैः
 समं लेह्यत उपनर्मदं सस्तत्रपातात् षष्ठ्यांत गीते तत्तदनुकृति युतो सावसाध्या लोप्या इति सुषेणकृत रुत रुत सा विषमालायां अथ स्वभेदस्य ज्योतिषा

४० चः स्वभिप्रयिणहितुः कर्मविपाकश्चाद्भवेत्तद्यथा रुशिकांशस्थितक्षीणचंद्रमिति तस्योपघातप्रशमाय प्रागुक्तचंद्रपूजाविधानं विदध्यात् अथ कर्मविपाकमाह
 काचिरोधंगारः कृत्वा भवेद्भद्रवान्नर इति अथ सरोपघातशान्तये वायुपुण्यलोकास्य तीक्ष्णदानं कुर्याद्भुंथविस्तारमयमथानकथितमिति गीति चंदोष्णलितलक्षण
 माह आर्यापूर्वार्द्धसमं द्वितीयमपि पत्रमवतिहं सगते चंदो विद सदा नीं गीतितामस्यतजणिभाषंते इति गीति एते पदपूतिस्वमेदचिकित्सा १२५ १२५
 अथाहोचकोलपंगदिचूर्णमाह लं वंगेति लवंगवहुला तुगा कनकमागधी चंदनकुशेशयमहौषधं हिमगुक्लजीरागुहं जटाजलनतं त्वचं कटुकजातिकायाः फलं सवी
 रं एदलिलमौषधं समंतुल्यं बोध्यं सकलतः सर्वभ्यः औषधेभ्यः सिताग्रद्विभागज्या एतेषां भेषजानामिदमद्भुतं चूर्णं लसनपीनसौहिद्यां च हरेत् चपुनः उरः क्षतं ग्रहणि

लवंगवहुला तुगा कनकमागधी चंदनं कुशेशयमहौषधं हिमगुक्लजीरागुहं जटाजलनतं त्वचं कटुजातिकायाः फलं सवीरमसि
 लं समं सकलतोर्द्धभागसिता १३० सुचूर्णमिदमद्भुतं रुचिदमाहृतं तर्पणं नृपोचितमथो हरेत् सनपीनसौहिद्विकां

कांच चपुनः गुल्मादिकं सकासमं तिसारकं च हरेत् चपुनः पृथ्वीपतिं रोगं रोगो गं राजयश्माणं हरीत्यन्वयः अन्यानि सर्वाणि पदानि चूर्णस्य विशेषणानि सन्ति
 लवंगो देवकुशुमं बहुला दहदेलावडीलाश्ची इति भाषायां स्रष्टमादिलिनी क्षेत्रे ल्यागुच्छवस्त्रिका छुटिः दहतीति तुगावंशशर्करावंशलोचन इति लोके कनकं
 केशं नामां केशर इति भाषा पां मागधी पिप्पली चंदनं प्रसिद्धं चंदनशब्देनात्र श्वेतचंदनं ग्राह्यं तद्यथा चूर्णलिहासवलिहे प्रायसश्चैतच्चंदनमिति वचनात् कु
 शेशयं कमलं महौषधं शुंदी हिमगुक्लं सिद्धारं भासमाद्भुतः विकाशार्मः कर्पूरः उच्चैरपि चतत्रतु स्वेकामूर्जातिरिति चंद्रदत्तानि सर्वशः आमध्यं सारवतत्रण्य
 लखंडमनुजममिति दालजीरेति प्रसिद्धः आरुजो गजं आर इति लोके आरुदुः सुखगुलिषदनः शुभं अत्यंतं च फलं काष्ठं जंतुजगधावसिष्टकं साः सोभुः

एतत्तु प्राज्ञः दालो विप्रियत इति जटाजटामोही अथ विच्छिन्नदलः खितः सुलोमशः मृदुः सुगंधिस्तृणकोदलतोयुष्कीपिचेति जलं सुगंधवाला नतं कुटिलं त
 गा इति भाषा यो त्वचं तज इति लोके कटुकं कंकोलं कंकोलमस्त्रि इति लोके प्रसिद्धं कंकोली वल्लिका वाटपत्रा मरिचसंफलेति जातिवायाः फलं जाती फलं वीरु
 तीरे खस इति भाषा यां उशीरो वीरणी जटिति प्रथी श्रद्धा पितृक्षणा यथा गणजसजसा ह्यथा एयो गिनो पौलौः चार्थ विनिवेशितो यदितदा हि प्रथी हि सा
 श्रद्धा विनिवेशित इति मिनवभिरन्नच ज्ञायतां नो शयशवंतं हेह दिमुदे समाधीयतामिति इति लवंगादिचूर्णम् १३० अथाहोचके द्वितीयचूर्णमाह दलेति बहुलसंयुतं चूर्णं
 तंदलव्यगिभकेशां सपित्तकफजिद्धवति चपुनः नुचिप्रदस्यात् अथ चवर्ण्यवर्णकारकं चपुनः लघ्वपीत्यन्वयः दलंतमालदलं तेजपात इति लोके त्वकचोचं
 ज इति लोके र्भकेशां नागकेशां बहुला दहं दलेति अथाहोचकस्य निदानमाह स्त्रो वप्यन्तं मुखे चैत्रस्यादौ सावरोचकः सपंचाप्रथक् सर्वेति यो कुट्टयादिभिरौ च

त्रिदोषहरणं शुभं वलद्विप्रसंदीपनं सुदृष्टमनुचिप्रनुकूलनुजाविहृद्गानुत् प्रमेहजिद्धरुष्टं ग्रहणं काचगुल्मादिकं सकाशमतिमार्कं
 हरति रोगपृथ्वीपतिं १३१ इति लवंगादिचूर्णं दलव्यगिभकेशां बहुलसंयुतं चूर्णं तं सपित्तकफजिद्धचिप्रदमथोपि चवर्ण्यलघु १३२

चके मुखं ततद्रसप्राकृतमतिम इति अथ ज्यो
 चकप्रयोगं ज्योतिष्शास्त्राभिप्रायेणाह अतिपादिनः

इति पृथ्वीरुजोपदर्शितारोचकचिकित्सा

तिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह अथ मंदाप्रित्यदो
 रूपणः मृदुजयुतो मानयो भवति जीवे मंदाप्रित्यदो

जितो दुष्प्रवृत्तपापकर्माच दुश्चिक्वस्थानस्थितस्य गुरोः प्रागुक्तं जपहोमदत्तादिकं विदध्यात् तेनोपशम्यति अथ कर्मविपाकमाह श्रद्धाहीनो धनी प्रदाता दा
 ननुचिदानामसगुणान्वितो यः सो नुचिमान् शूलीवाजायते अथ प्रायश्चित्तं कृशति कृष्टं चंद्रायणं व्यस्तं समस्तं वा व्याधितारतम्यनुकुर्यात् अत्राशक्तो धनी प्रतिदिनं पंचो
 श द्वाद्वान्नभोजनं कारयेत् अत्राप्यशक्तौ सततं होमं तथा तीर्थस्नानं वापि समाचरेत् तीव्रवैषम्यसंयुक्तं कुर्याद्वा ह्यलभो जनं मिथ्या नंद्यादिति वचनात् अग्निरग्नी

४१ चः तिसंज्ञेण जपेद्युतसंख्यया चरुणा च घृतेनात्रजडुयाडुववाहने जपादिकं यावद्गोमाशुक्तेभ्यमित्यावेदेव कर्त्तव्यं एतद्वाहणविषयं इतरविषये हेमाद्रदानमेव शक्तमिति
 इदमपि मथ्याधेन्यः १३२ इति प्रथीरतोपदर्शितारोचकचिकित्सा अथ छर्दिप्रतीकारमाह हरीति श्लोड्रयुतं गुडूच्या कथितं स्थांसकलवांतिं छर्दिहरति च पुनः वि
 ल्वत्वकृतं मपितद्वेदेवमनं हरति च पुनः चलदलभवशुष्कत्वकृतां गारसौर्वपितं जलमपि पानाच्छांतिं वसुनं हंतीत्यन्यथः चलदलापि पलाइवाशशुष्कत्वकृता
 याकृतये अंगारणां साराः तैर्वपितं संस्कृतं यदिदं जलं तज्जलं पानागानमात्रेण वांतिं हंतीति गुडूचीप्रसिद्धा श्लोड्रमधुविल्वः श्रीफलः चलदलो बोधिद्रुमः पीपलः
 तिलोके मालिनीरुचं तंत्रांतरेषु कं अथत्यवल्कलं शुष्कं दायं निर्वपितं जलं तज्जलं पानमात्रेण हि कां छर्दिनिवारयेदिति १३३ अथ छर्दिरोगेण हलादिचूर्णं श्रुतीति

हरति सकलवांतिं श्लोड्रयुतं गुडूच्याः कथितं मपि च विल्वत्वकृतं तद्वेदेव चलदलभवशुष्कत्वकृतां गारसौर्जलमिदमपि वांतिं वापितं
 हंति पानात् १३३ त्रुटिमलयजलाजाकोलमज्जा प्रियंगु त्रिदशकुशुमकुलानागपुष्पां वुदानां त्रुटिमलयजलाजाकोलमज्जा प्रियंगु त्रिदश
 कुशुमकुलानाग पुष्पां वुदानां मधुसिताक्तैर्चूर्णितं भवति सति छर्दिदोषाभट्टितियथा स्यात्तथा व्रजति गच्छति नाशमिति शेषः कस्मिं वा इव तेजो मालिनीसूर्य
 मणि अंधकार इवेत्यन्यथः सूर्यो भवति यथा धकारो व्रजति तद्विदित्यर्थः त्रुटिः सूर्यस्यैला गुजराती लाइची इति भाषायां सूर्यस्य सुमात्रिकोणफलवैजकं सूर्यसं त्रुटि
 मुगधेति मलयजं नंदनं लाजाशर्द्रिभृष्टधानं विलेइति देशभाषायां कोलमज्जा वदरीमज्जा प्रियंगु फालिनी गोंदनी इति लोके उमरुनी इति च क्वचिद्देशे प्रसिद्धा प्रियंगुः
 पिप्पलीकं गुराजका फलिनी पुचेति शिवनिघंटे प्रियंगुशब्देनात्र फलिनीति बोध्यं न तु पिप्पल्यादिकं बोध्यं वांतु प्रयोगांतरेषु दृष्टव्यं तद्यथा त्रुटिदेवसंतुकारिके प्रा
 लाजैः सह कोलमज्जा फलिनी घनश्लैरिति दिक् त्रिदशकुशुमं देवकुशुमं लवंगं कुलपिप्पली नागपुष्पं नागकेशरं अंबुदोमुतेति अथ छर्दिर्निनुक्तिमाह

पदयेत्ताननं वीरदयं तं गभंजिः निरुच्यते र्धिरिति दोषवक्त्रप्रधावित इति अथ निदानमाह दुष्टैर्दोषैः प्रथक् सर्वैर्बोभालो कनादिभिः धर्धयः पंचविजेयास्तपृथक्
 लक्षणैर्मताः रूक्षा हो हारं रोधात्तसे कोलवणा स्यता द्वेषोन्नपानेषु भृशं वसीनां पूर्वलक्षणां कासस्वाहो ज्वरो हि षात् ह्ना वै चित्तमेव च हृद्रोगस्तमकश्चैव जेयाः
 र्धिरपक्वा इति वीरसिंहवलोको अथ ज्योतिशास्त्रमभिप्रायेण हेतुमाह रिपुस्थाने यदा स्यातां चांद्रिशुक्रौ ततो भवेत् र्धिमान्मनुजः क्षीणो क्षीणचंद्रावलोकितो
 क्षीणचंद्रावलोकितपथस्थानस्थितबुधशुक्रकाधोपशान्तयेत त्रीतये बुधस्य पूर्वोक्तमेव सकलं जपहोमादिविधानं विदध्यात् शुक्रस्य वक्ष्यामः अत्रात्यरिपुतेति मं
 वजपः तिलाज्यो दुंबरीसमिद्धिर्होमः अश्वदानं च रोषं च धारयेत् अथ कर्माविषाकमाह यो ब्राह्मणाय बोशकीटकसारमेयाद्यु पहतमनं जानन्नेव मोह्यते प्रयच्छ

भवति माधुशिताते चूर्णिते र्धिर्दोषो ब्रजति रुटिति ते ज्योमालिनी वांधवारः १३४ इति मालिनी वृत्तोपदर्शित र्धिचिकित्सा १३४

निरुच्य र्धिमात् जायते यदुक्तं शागातपीयै कर्मविषाकेश्वकीटकेशकाकादिदूषिते मोहो नारः दत्वा द्विजाय भवति र्धिमान्मनुजं न नीतिवचनात् गौतमोक्तम
 पिविश्वासघातकी र्धियुक्तो भवति तच्छान्तये पंचाशद्ब्राह्मणभोजनं कारयेत् अश्वदानं च यथा शतपात्राज्ययुक्तं कुर्यात् अग्निरग्निजर्मेनेति मंत्रेण व्याधिरु
 लघुभावेन जपं कुर्यात् तिलहोमं च कुर्यात् तेनोपशान्तिर्भवतीति मालिनी वृत्तमपि तल्लक्षणं यथा प्रथममगुरुषट्के विद्यते यत्र वा नेतदनु च दशमं चेदक्षरां द्वा
 दशांशं गिरिभिरेषतुरीयं त्रयोविंशतिं विरामः शुक्रविजनमतो ज्योमालिनी सा प्रसिद्धेति इति मालिनी वृत्तोपदर्शित र्धिचिकित्सा १३४ १३४ १३४

एवं हतेन दोषोपशान्तिर्भवतीति पुष्पिताग्राष्टतं १३५ इति हलाचिविक्तासा अथ मूर्ध्नागोचूर्णमाह हिरदकुसुमेति हिरदकुसुमकोलमज्जैव्यं च पुनः मगधभवां विचूर्ण्य
इदं चूर्णं शीततोयैः शीतलजलेः सह प्रणीत्वा सकलभवापि त्रिदोषोद्भवापि मूर्ध्नि विमूर्धितक्रियत इवेत्यन्वयः हिरदकुसुमं नागपुष्पं नागकेशर इति लोके वा
लमज्जवद्वीफलमज्जा शैव्यं उशीरं खस इति लोके मगधभवामागधीपिप्लीति पुष्पिताग्राष्टतः अथ मूर्ध्नागोचूर्णमाह भवतीति मधुना सह
रुक्मां विलीढ्वा आशुवादनं कृत्वा मनुष्यः विगतविषादविमूर्धितो भवति यथा दिनकारकिरणैर्विशुष्कं कलमंधान्यं श्रमः जलमवाप्य प्राप्य पुष्पिताग्रं भवति तथै

हिरदकुसुमकोलमज्जैव्यं मगधभवां च विचूर्ण्य शीततोयैः क्रियत इव तस्मिन् प्रणीत्वा सकलभवापि विमूर्धितैव मूर्ध्ना १३६
भवति च मधुना विलीढ्वा रुक्मां विगतविषादविमूर्धितो मनुष्यः दिनकारकिरणैर्विशुष्कं श्रमः कलममवाप्य यथास्ति पुष्पिता

ग्रं १३७ इति पुष्पिताग्राष्टतोपदर्शितमूर्ध्नि विक्तासा

वेत्यन्वयः मधुक्षौद्रं रुक्मापिप्लीति अथ मूर्ध्नागोचूर्णमाह संज्ञाश्रोतांसितेनुध्वाविशान्ति कारणानि चे त क्रुद्धपित्तसदा मर्त्या मूर्ध्नि गतचेतनाः सप्तमूर्ध्ना
प्रथमैर्वैतैश्च मगधविषाहृतः दोषवर्णविद्यत्यश्वेष्टैर्मूर्ध्नि त्वथ सवान् शसौम्यस्स प्रलापोथदाहहृत्काम्यवान् विषात्पित्तवद्धतगंधनसंन्यासोत्तंद्वयः क्रिय
ति निदानाश्च न शलाकायां मूर्ध्नायाः ज्योतिः शास्त्रेण कारणं कर्मविपाकं च सुधीभिः हलावद्बोध्यमिति इदमपि पुष्पिताग्राष्टतः तस्माद्विषयान्नाणयु
गमणो रथौभाणौ चेद्विषमपदेव सुधापतेनि विष्टौ नाणजगणयुगमतोगणोः समचरणे तु गुरौ हि पुष्पिताग्रेति १३७

४३ चः चयदहोप्रातीकारमाह विधुरिति विधुश्चंद्रः चपुनः वालालापः वालानां कामिनीनां आलोपः वालालापः वालाणेऽशहयती आलोपिणं चपुनः व्यजनकमले व्यजनं च
 कमलं च मे व्यजनकमले व्यजनं च कमलं च अनयोः समाहारः व्यजनकमलं व्यजनकमलमित्यपिशुद्धं चपुनः स्म्यललनापरीरंभः रमितुं योयाः रम्याः रम्याश्चताः ललनाश्च रम्यल
 लनास्म्यललनानां परीरंभः आलिगानां स्म्यललनापरीरंभः व्यजनकमलस्म्यललनानां भूतिपादितु व्यजनं च कमलं च व्यजनकमले आरमितुं योयाः आरम्याः आरम्याश्चताः ललनाश्च आ
 रम्यललना व्यजनकमलैः सहिताः स्म्यललनानां परीरंभः व्यजनकमलस्म्यललनानां परीरंभः आजातनिश्चयेऽप्येति मितिदिती मलयजनिशानां जोजनिताः लेपश्च दनकपूरिता
 ३३४ योणा च कथं भूतवीणा रमीयोना श्रवणवादि मिरखंडिता पुनः कथं भूता द्विजातीनां भणितयोः श्रवणमुषलीनां द्विजातीनां ब्राह्मणपक्षीणां भणितयोः सुमंगलशब्दयोः य

विधुर्वाला लपो व्यजनकमले स्म्यललनापरीरंभे लेपो मलयजनिशानाथ जनितः समीचीना वीणा श्रवणमुषलीनां भणितयोर्द्विजातीनां माला
 सुमंगलकुसुमानां हिमजलं १३८ मनोरम्यंगीतं कमलकदलीपत्रशयनं शिवस्नानं दानं सलिलजनितं यंत्रमनिश हरेद्दाहं चेतनाधुरिशिशिरस्वा

दुमथितं सितायुतं धीरं हरिचमुदाहं शिषरिणी १३९ श्रवणमुषंत श्रवणमुषंतीनां यथासाद्विजातीनां भणितयोः श्रवणमुषलीनां देवदत्तस्यां रुकुलमि
 त्यादिघनित्यं सापेक्षत्वेन समासः चपुनः सुमंगलकुसुमानां मल्लिकादीनां माला हिमजलं च चपुनः मनोरम्यंगीतं कमलकदलीपत्रशयनं च कमलानि च कदल्याश्चताः क
 मलकदल्या कमलकदलीनां पत्राणि कमलकदलीपत्राणि कमलकदलीपत्रेषु शयनं कमलकदलीपत्रशयनमिति शिवस्नानं च शिवस्नानं दानं च चपुनः शनिशनि
 तं शलिलजनितं यंत्रं च लयं च पुद्गाशिलौके एतत्संयदाहं हरेत् नाशं कुर्यात् चपुनः मथितं तत्र मणिदाहं हरेत् कथं भूतं तत्र मधुरशिशिरं मधुरं च शिशिरं च मधुरशिशि
 रं मधुरशिशिरं मधुरः तत्र मधुरशिशिरं शरीरं च पुनः कथं भूतं तदाहं हरेत् मधुरमनो जे मिये चेति हेमः चपुनः सितायुतं धीरं दुग्धमणिदाहं हरेत् चपुनः शिषरिणीना
 मधुरं श्रवणं तदपि दाहं हरेत् चपुनः सुदेदाहं युते हृदि सुसिताया धाम्यप्रभये हिमपानं यदास्यात्तदा श्रवणैः रूपैः किं न किमपीत्यर्थः कथं भूतं तदाहं हरेत् हृदि हनमदहं नदलितं

दहनोऽग्निः तत्समेयोदाहृतदहेन दलितो विदीर्णोऽयन्त्ययः अथदाहस्यनिदानमाह देहेऽग्निना मूर्ध्नि तं प्रकृष्टो दाहं महादानुणं श्रंगं यद्वा जेतो मेव देहो वा होत्वचो
 भांते मंसं शोणितनाडिकास्थितिचयान् श्लेष्मं वसं वर्जिकां सर्वाणि मुगांतं दह्यन्मयं सर्वं पुषाहर्निशं १ क्षीणो धातोवस्थितो पोददाहो मूर्ध्नि कुर्यान्मर्मधातं च मूर्ध्नि त्वाशेषं
 क्षीणशब्दं शतैवेधैरुक्तो तेनोपधायुक्तः २ मर्त्यादायिकं रक्तगुदिकं देहं संस्थितं लोहं गंधं देहस्य गणितवत्तत्त्वभेषजमिति सिष्यकचितोत्तवे अथ ज्योतिःशस्त्राभिप्राये
 लोहितुमाह यथोक्तं जातयो जेतो भवति भूपुत्रोऽग्निं भवति भास्वरः जन्मकाले यदा यस्य सदाहं ज्वरवानो वा मूर्तिस्थानस्थितस्य भूपुत्रस्य रंध्रस्थानात्तस्य च भानो दीहपीडोप
 श्मनार्थं तत्प्रीते ये धेनुदानादिकं विधेयं संगलप्रीतये च पूर्वोक्तमेव जपहोमदानादिकं कुर्यात् अथ कर्माविपाकमाह तत्प्रीतीनां च यथा कपिलग्रेहे यः पुनरग्नौ दीह

उपयेष्विचान्ये देहनसमदाहेन दलितो हृदि लुष्टे धान्यप्रभवहिमपानं सुसिताया १४० इति शिष्याणीष्टोपदर्शितदाहचिकित्सा

ति तं कपिलनामरहो गच्छति तत्क्षणं उवाश्रूली सर्वा गदाही पीतनयनश्च भवति । बलिंचनिशि चतुष्वपि पृथक् जपिष्य कनुधिरागिलपेतुगंधपुष्पैर्मन्त्रेण दद्यात् प्र
 गृहीष्वबलिंचमवापिताश्च महाग्रह आग्रास्य सुखं सिद्धं प्रयच्छत्वं महाबलेति वीरसिंहावलोकने शिष्याणी धन्वा तत्क्षणं यथा लघुः पूर्वा
 वार्ता सादुनु गार्तः पंच लघवः शरादीर्घं दंडं त्रय मथ लघूक्तं गुरु रथो रौ नुद्रे गोड क्षिति पयश वंत प्रसरितो विरामोपहतोर्मु जगमादि
 तासा शिष्याणीति १३८ १३९ १४० इति शिष्याणीष्टोप दर्शित दाह चिकित्सा १३९ १३९ १४०

अथापसारस्ययोगत्रयमाहसेवेति सर्वस्यापिअपस्यजेर्विनाशेतैलयुतः एकः ^{४५}स्नानकल्कः तैलयुतश्चासौस्नानकल्काश्चतैलयुतास्नानकल्कः सतासेव्यः चपुनः सुमधुयुताषड्द्वयपिसा
तंसेव्या चपुनः सुमधुयुताएकासस्वतीचापिपुतचायत्नितसेव्याननुइतिनिश्चयेनयमौषधीसततंनिरंतरंगिणिणं प्रहर्षिणीप्रकर्षणहर्षदात्रीमयतीत्यन्वयः तैलेतैलेनादितिलो
वंग्राह्यं स्नानः पवनेष्टकंदः लहसुनइतिलोके स्नानकंदो ग्लिष्टा नांकंदश्चापिप्रसिद्धौष्टदीपिकांदलौष्टौदुर्गिधेनोचनक्षमाविता तिष्टा नांकंदः पलांडः सुमधुप्रेषयौष्टं
या उष्मांधावचइतिलोके सस्वती ब्राह्मी चोलीइतिभाषायांब्राह्मीइत्यपिनाम्नानैसिधारण्येप्रसिद्धा ब्राह्मीपिच्छिलापितपुष्पिकाभूसाताकहूयः श्रेयोद्वितीयातितानाष्ट
तृणवत्तृणकावेति अथापसारस्यनिदानमाह तमः प्रवेशसांभदोषोद्रेकहृतस्ततः अपसाराइतिव्यायोगदोषोश्चतुर्विधः हृत्कंपः शूल्यतास्त्रिविधानंमूर्च्छाप्रसूयतानिद्रा
मेयतैलयुतेस्नानकल्क एकःषड्द्वयसुमधुयुतासस्वतीच युक्तैकासततमपस्यजेर्विनाशेसर्वस्यास्त्वपिभवतिप्रहर्षिणीयं १४२ इतिप्रहर्षिणी

[illegible]

वृ: चं: ४५ अथोनादेकाल्याण्यतमाह रात्रीति रात्रीहेलताहे देजलजकमिरिपु जलजं वक्षमिरिपु श्रेति जलजकमिरिपु त्रैफलं नागादंती कौंती पण्यौ विशाला कनकमलयजं
 कनकं कमलयजं च अनयोः समाहारः कनकमलयजं दाडिमं नुकप्रियंगुः संजिष्टा देवदारुः कुटिलहृदिके कुटिलं यश्च कृत्वा चते कुटिलहृदिके पद्मं च पुनः
 पलवालुः तालीसंजातिकायाः कुसुममिति एथ कर्पमनिरामीभिः कल्केः सुदृष्टस्य प्रस्थं दत्वा द्रोणीन्मानं षोडशमेष्टकमानं याचिजलं दत्वा तं घृतं पचेत् कथं भूते घृतं च म
 यहरताणि ग्रामयस्योपायहृदः ग्रामयहरः ग्रामयहरेषु तरणिः हृदयः ग्रामयहरताणि तंततः सिद्धीभूतमेतद् दूतं च विलम्बमपेक्षारं उग्रं उन्नादं च यद्दमाणी यवागण
 चतस्रावेगेन त्रैदिनं तृतीयकं वा चतुर्थं चातुर्थकं वा कामोत्पज्वरमपि निहन्त्या त्रांशं कुर्यात् च पुनः एतद् दूतं मंदं वक्षोमंदं मोदिविधविषादेऽप्यारजं गामां विषादु

रात्रीहेहेलताहे जलजकमिरिपु त्रैफलं नागादंती कौंती पण्यौ विशाला कनकमलयजं दाडिमं नुकप्रियंगुः संजिष्टा देवदारुः कुटिलहृद

तिके पद्मकं त्वेलवालु त्तालीसंजातिकायाः कुसुममिति एथ कर्पमनिरामीभिः १४३

तपत्रैरोगोचमस्तद्व्येचविमर्षं च च पुनः कंडूपांडुप्रमेहं च कंडू
 पांडुप्रमेहश्च एतेषां समाहारः कंडूपांडुप्रमेहं तस्मिन् च पुनः विधिवद्यत्नेन कटिनुजिकाटिपीडायां प्रतिस्थाप्य रोगोच च पुनः बंध्यायां च पुनः यक्ष्माश्चेनुजियेक्ष्मा
 भ्यामुपश्ले रोगोच पुनः भूतारोगोपिशाचरोगो एतद् दूतमधिकं युज्यात् सेवेदित्यन्वयः रात्रीहे हरिद्रेहे एकाह रिद्रा द्वितीयादाह रिद्रा लताहे हे सारिवहे एकाह सारिवा
 द्वितीयादाह सारिवा सारिवा त्रैफलं नागादंती कौंती पण्यौ विशाला कनकमलयजं दाडिमं नुकप्रियंगुः संजिष्टा देवदारुः कुटिलहृदिके कुटिलं यश्च कृत्वा चते कुटिलहृदिके पद्मं च पुनः
 मिमिः विडंगं त्रैफलं शिवा मलविभीतकं नागादंती निकुंभः जमाल गोटा इति भाषायां तद्यथा नागादंती निकुंभायां श्रीहृत्विद्यामपि स्त्रियापि तिमेदिनी कौंती र
 णका संभालु इति लोके कौंत्या तु पादपोरुतपद्मोपुष्पः पालस्य च वीजं तु कौंतिका संज्ञं तिलमिति पण्यौ शालिपर्णी एष्टपर्णी सखिनपिठवन इति लोके अथ लक्ष

एतद्वर्तमानं ज्ञेयं विशालांद्रवाहणी इन्द्रायन इतिलोके ऐन्द्रीविशालाचसमेव ल्यौ स्यात्पमहायलेति के वनेस्थोऽति कनकं नागकेशं मलयजं चंदनं चंदनेनात्र श्वेतचंदनं ग्राह्यं कु
 तः पुनस्तिहासवालेहं प्रायसः श्वेतचंदनमिति वचनात् द्युडिमंकारकं अनार इति भाषायां नुवाकुष्टं कूट इतिलोके द्वियंगुः गुडगोदनी इतिलोके मेजिष्टासमं गं मंजौट इति भाषा
 यां समं गं द्विविधा धूर्तफला नीला सुपीतकारसौ स्यापश्चिमेः क्षुद्रा मजिष्टाकोष्ठगर्भिणी कोंकणे इति पञ्चकं पद्मं पद्माख इतिलोके एलवालुः एलेयं शीतलचीनी इतिलोके
 एलवालुयामेलेयं सुगंधिहरिगलुकमित्यस्मः सुगंधिमरिचाकारमुषशीमलगाकारिद्रव्यं शीतलचीनी इत्याख्ययाख्यातलोके इति शिवनिघण्टे तीलीसंखना न्नाख्यां तं ग्रन्था

कल्केः प्रष्टं घ्रास्यामयहरतरणिर्वादि त्वापचे तद्रोणेन्मानं निहत्यादखिलमवमपस्मात्सुन्मादसुग्रं यक्ष्माणं वातरक्तं ज्वरमपिनरसाद्वैदिनं वा
 चतुर्थं कासोत्पंसंदवहो द्विविधविषादेऽमूलकश्चेति सूर्ये १४४ वांडुपांडुप्रमेहे कटिनुनिविधिवच्च प्रतिश्यायोपो वेध्यायां यक्ष्माणं रूजि
 घृतमधिकं मृतरोगोचयुः १४५ इति पानीपकल्याणघृतं ब्राह्म्याः कूष्मांडिकायाः स्वरसमिहपृथक् क्षौद्रकुष्टप्रयुक्तं शंखित्यावाव
 चायाः कथयति ननुतरां सर्वजोन्मादसुग्रं पडुंध्यासर्षपानां नियमनकदलीग्राहि निर्मोककानां धूपोभ्राप्रहरीहरति वसकलांडाकिनीं शान्तिनीं च

पिलक्षणं पूर्वोक्तं ज्ञेयं जातिवायाः कुशुमं मालती पुष्पं पंक्तिपत्रा १४६ इत्यन्मादचिकित्सा मालितीतुगुंघः सिद्धेति स्त्रायराष्टः इति पानीयकल्याणघृतं १४५
 घृतोन्मादे स्वरसनाहं ब्राह्म्योऽति ब्राह्म्योः स्वरसंवाकूष्मांडिकायाः स्वरसंवाहोन्मादाखरोगे पृथक् यथास्थानं चापेयमिति शेषः कीटशंखसं उग्रं
 सर्वजोन्मादे दोषशोकोभीतवक्ष्णरक्षादिजोन्मादे नन्विति निश्चयेन तरां शीघ्रं कथयति नाशं करोति पुनः कीटशंखसं क्षौद्रकुष्टप्रयुक्तं मित्यन्वयः ब्राह्मीकापोतवं काचोत्ती
 तिभाषायां ब्राह्मी इत्यपि नैमिषारण्ये प्रसिद्धा ब्राह्मीपिच्छिलापीतपुष्पिकाभूसजावद्धः शंखो द्वितीयमिति काभुदुः स एव चट्टणकाचेति कूष्मांडी कुन्दो इतिलोके सूर्ये

वृ: च: नोशंखपुष्पीकौडिकालाङ्गिलीके शंखपुष्पसितानुणे चस्मिकितरणके विष्वक्कलोसशेल्पकपत्रकङ्कति वचोप्रांथावचङ्कतिलोके द्वैदंमधुकुण्ड्याधिः कूटङ्कतिलोके अथा
 ४६ हे श्लोको नोन्मादेधूपमाह पङ्कथेगि पङ्कथामर्षपानानियमनकदलो प्राहिनिर्मिकिवानांधूपंसकलांडाकितींशयतींशहरतिकथंभूतंधूपंभूतप्रहारीत्यन्वयः सङ्कथामोलाभी
 वचङ्कतिलोके सधपंसिद्धार्थकं सरसौङ्कतिलोके नियमनकदलंनियपत्रं ३ प्राक्षुहिवोधिनीराईङ्कतिलोके अहिनिर्मिकिकः सूर्यकंचुकङ्कति अथोन्मादस्यनिदानमाह भीशोक
 कामदुश्चने: पूज्यादेश्वावधर्षणः मद्यंतिमनोदोषाः स्यादुन्मादस्तदोद्भवा अस्यानेहास्यागीताचैर्द्वाधीस्त्रविपर्ययैः रहस्यकथनोद्भागेनोन्मादसादिशत दोषैर्व्यस्येसगस्येअपि
 सशुभमांसधुधः दोषांकापूर्ववच्छेवाभीकामपैत्तुतत्त्वथादेवैदेत्यपिशयाहिरक्षोप्रांधर्वयक्षतः पिरतश्चग्रहेभ्यः सुरुन्मादः प्रोक्तलक्षणाः पानिश्चदिविदेवोनप्रत्नसर्पनदूतिः
 बहुभूतं गानदनेश्वाङ्गेगितदोषाति कंयोनिडाफेनवमिः दुमादिपतनादिभिः त्रयोदशाष्टेतीतेचनोन्मादीजातजीवतेति इतिनिदानांजनशलाकायां अथोन्मादस्यज्यातिश
 ल्याभिप्रायेणगारणमाह यद्भूतंजातके बहुशस्त्रदारितमुखोराजादुतोविदेशगः सुगन्धकर्मकराणिदिनभर्तोरिदंरुहणामहोन्मादः अनश्च येषित्वानप्रभवेर्दोषैर्व्याध्यादिपी
 डितोमनुजः शुक्रैर्कर्कटैःसंस्थेस्विदोषवत्कलदोषसंतप्तः उपत्य दक्षिणरूपधनभोगागुणैः प्रधानश्चंद्रे कुलैरव्यभजगतेविलग्रे ३ मत्तनीचविकलोपधिरश्चसूकः
 शेषेसुतामयतिथंस्तनौविशेषः कन्यायांकर्कटे कस्थितगुरुविलोकितादिनना यजनितोन्माददोषोपशान्तयेगुरुप्रीतयेप्रागुक्तं जपहोमदानादिकंकुर्वीत कर्कटस्थित
 शुक्रदोषजनितोमत्तत्वदोषोपशान्तयेशुक्रप्रीतयेप्रागुक्तमेवमयादिकंकुर्वीत वृषकर्कटमेवजसत्यराशिस्थधीणचंद्रजनितोमत्तत्वदोषोपशान्तयेपूर्वीतं जपहोमा
 दिकंनिविलमपिविदध्याततेनोपशान्तिर्भवतीति अथकर्मविपाकमाह यद्भूतंपूर्वचार्यैः मद्गर्वमियांपस्वप्तेपीनिषिद्धवस्तुभोगेशपराभोहित्वाष्टद्वगुरुणामुप
 हासकश्चशास्त्रज्ञोनेसतिनजानामीतिवंचकाश्च ३ मत्तः परोपदेष्टा अज्ञानीवाजायते एतद्भूमामहेइवसंबोदेभिहितं मंत्रगुरुणामुपहासी चंद्रायणंकुर्वीत एत
 द्दोडायनेनोक्तं सदस्यतिमद्भूमिति हेमंचरुष्टताभ्यांकुर्वीत कयानश्चित्रङ्कतिशूक्तंजपेत् हिरण्यं वमधुद्रव्याणिदद्यात् ब्रह्मपुराणेभिहितं एतत्स्वतंसंभजये
 दितिस्मार्था छंदः इत्युन्मादचिकित्सा १४६

अथवातरोमोकाथमाह काथेति सहचरमुमनोदाहविश्वौषधानामैलप्रसक्तः संयुक्तः असौकाथः पानमात्रं सतसर्वांगीकांगं सततगतिं ताशयेदित्यत्वयः सर्वांगं च एकंगं च सर्वांगीकांगगितयोः सर्वांगीकांगगोपान्तं प्राप्यत इति सर्वांगीकांगमिति सर्वांगान्तं एकांगान्तं वा इत्यभिप्रायः सततं निरंतरं गतिर्यस्य सततगतिः सततगतिः कायुमित्यर्थः सहचरमुमानः सैर्यकापुष्पः पियावासा इति लोके सैर्यकात्रितयतुल्यं समित्वां टकापमकैः भेदः पुष्पेषु पीतरक्ताश्वेतामुगुल्माका इति दाहदेवदारुः विश्वौषधं शुंदी इति इदं मपि स्रग्धरादं इति वात व्याधिरोगोकाथः १४० अथवायुरोमोत्रयोदशंगमुगुलुमाह अश्वेति अश्वत्थाभाण्डूचीमिश्रितपादिकागोशुक्रयिश्वास्तास्यामाकर्षदीप्य

कायसौलप्रसक्तः सहवासुमनोदारुविश्वौषधातां सर्वांगीकांगंवास्ततप्राप्तिसौनाशयेत्पानमात्रं १४५ इति वितेकाथः अश्वाह्वाभागुद्घोमि
सिशातपटिकाप्रोक्षुर्विश्वालाश्यामाकर्चुर्दीप्यं सहवुषमिति समं चूर्णितं चूर्णितुल्यः पीतामः कौशिकः स्याद्भुतमथपुरतोर्द्ध तथा धाईमानं धा
देत्कोलांनुपूषैरथपल्लवरसैर्वसुगमद्यदुग्धैः १४६ गृह्ण्यं पापुपृष्टे मनुततनुगते स्नायुमजस्थिते वा कुक्षिस्थे घञ्जवाते पवनकफभेदे योनिदो
षे चतुर्दशसंघिस्थे चास्थिना कटिनुजिह्वदिरोपाद्युमे च जातौ वा यौ भग्रास्थि विद्धि त्र्यधिकदशमिसंस्मृतिमुतीन्द्राः १४७ इति त्रयोदशंगगुगुलुः
सहवुषं इति सर्वमौषधं संस्तुल्यं ग्राह्यं भागेनुक्ते च सास्यं स्यादिति वचनात् कथं भूतं त्रौषधं चूर्णितं चूर्णितुल्यः कौशिकः स्यात्कथं भूतः कौशिकः पीतामः अथेत्यनेतां पुरतोर्द्ध कौ
शिकोर्द्धं पुरतोर्द्धं तस्य सर्वमौषधं पिंडी द्रव्यकोलांनुना सहचार्यैः चैदलानां स्रुतैः सहतवाकारं वा हृद्र वाधिकां हृत्पथि चतुर्दशगुणे भले सिद्धोपेयावुषैर्जवापुषः किं
इति ननु नस्ततेति अथ त्वनतरपल्लवरसः माससः अथ नो इति लोके तत्प्रकारमाह नीत्वा पलं पलं लं संवुधं प्रसृतैः प्रक्षालयेच्च विधिना पिटे रथधृत्या दत्त्वा वनं
विमलमधिपलं पचेत्तैकोत्कोटगगनप्राणमुखि च धीमान् १ पादांशुकां सलिलमेव शुभं विदित्वा मांसं च तस्मात्तुलितं त्वथ वह्नि गेहात्पत्न्याणां द्विपसने परिमालयेच्च

[illegible]

४८
 यथावातगोकुचिलादिवटीमाह कुंलिह्येति विमलधीविद्यः प्रत्येकं रत्नैकाकं अनुमितं यतानुमानं तारंगोद्भवपूर्णं अपि विश्वेन सह वातं हरेदित्यन्वयः अमलं निर्मलं कुंवि
 श्लोषणनापेणं प्रादीकृतमिति शेषः यारिगुणं दद्यात् पुनस्तदन्तर्गतं बलपत्राणि दद्यात् गुटिकायाः पश्चात्तां बलचर्यणं कास्येदित्यर्थः एतद्गुटीकृतं कुंविह्योमणनापेणं
 सर्वकांपातानिलासयगणं धुषमिति निश्चयेन तद्व्याख्यातं सर्वकाणि च एकं च सर्वकाणि सर्वकाणि वादं गानि सर्वकां गानि सर्वकां गानि पुनः सर्वकां गानि गानि श्रुतिं
 विलासयश्च सर्वकां गानां निलासयगणः सर्वकां गानां निलासयगणः कुंविह्यः विषतुंदकः कुचिलाभासायां तदेवाह शिवनिधंटे कुपीलुः कुलकः काकतिडुक

कुचिस्त्रोषणनागपेणमसर्लप्रत्येकारत्वेककंदद्याद्दरियुतांपुनर्विमलधोस्तांवूलपत्राणिचै सर्वकांगगतानिलामयगणंहन्याद्भुवंतत्स्थणान्नासोद्रवर्णमय्यनुमि
तंविश्वेनवातं हरेत् १५० इतिकुचिस्त्रादिवटिनांणादिपूर्णविल्वशुवाद्वाकटिस्त्रासरणिश्चहतिवाचंद्रहाभावलेद्वे श्योनावाह्यप्रिमंथोनियमनसहितागोक्षुरंका
मद्गती एताः प्रत्येकमाश्लगणितपलमितावाक्त्रिंभद्वयेनपक्तायादावशेषंरुतमथविधिवच्छुद्धौलांढकेता १५१ दद्यात्तैलप्रमाणंस्वरसमाथूवरोजंपचेदुभय
माजंगय्यंचाद्रोणमातंदिपलपरिमितैः स्रष्टृण्यैः सुकलैः प्रत्येकंवाजिरांधामलयजतगौरः कुष्ठमांसींद्रदौलाशैलेपरात्तापदुर्वारिमिः पर्णिकानां

काशपीलकः पातोंदुर्षिपतिंदुश्चलेकेतुकुचिलामिधः चतुष्पात १५२ तल्लक्षणं यथापदयो विपतिं द्वा एवोदीर्घशेखुदलः कडुः तदीजं रतकठिनं
शालिकं पांडुलोमशमिति ऊषणं मरीचं नागणेणं अहिणेणं अर्कमशितलोके क्षीरं सप्तपलस्य त्रितितां मूलं नागवल्लीति इदमपि सप्तपदं १५० शतिकुतिलादियद्ये
अथ यत्तच्छाधोमध्यनारायणतैलमाह विलेपेति विल्यामाह कटिह्वाशरणरुहति काचंद्रहां सावलेहे श्योना कत्तमिमेथो नियमनसहिता गोक्षुहः कामदूती एताः त्रयोम

४८ वः चं धः प्रत्येकं एकं प्रति आशुणापितमिताः दशपलमिता गृहीत्वा वाक्कुंभ द्वयेन कुंभद्वयपरिमितेन वारिणा चतुष्पष्टिसेटकमितेन वारिणा पञ्चायदि पादावशेषं रक्षां वा वायं भवेत्
 तत्कावायं विधिवच्छु डैतैलाटके चतुः सेटकपरिमिते तैले दद्यात् अथेत्यनंतरं तस्मिन् तैलाटके वरीजे स्थाप्य कथं भूतं स्वस्मिन् तैलप्रमाणं चतुः सेटकपरिमितं तस्मिन् अर्थः चपुनः
 आजं दुग्धं अजापामभवं अजंगव्यं वा गोविंदं गव्यं तस्मिन् क्षिपेत् कथं भूतं दुग्धं द्रोणमा नषोडशमितेन परिमितेन मित्रार्थः अथेत्यनंतरं वा चिगंधा मलयजतगैः कुष्ठं मंशींद्रक्षरैः
 शैलेयरास्त्रापदु वैरमिसिभिः सह पर्णिकानां चतुष्कान्तमिते तैले क्षिप्तं दधः दक्षः चतुरः सृष्टुर्दहने को मलाग्रेण चयेत् कथं भूतं एभिः द्विपलपरिमितैः पुनः कथं भूतः स्रक्षणापिष्टैः
 पुनः सुकलैर्भूतैः पुनः वात्सालद्वयैः वा वा लकयुग्मयुक्तै रित्यन्वयः ततैलं पाताभ्यंगादियोगात् सकलपवनजान्ता रोगान् प्रकर्षद्वा लातनाशयेत् ननु कान्ता रोगान् तथा हि पक्षाघातं

वात्सालद्वयैः पुनै रथ सृष्टुर्दहने चयेद्दक्षः पाताभ्यंगादियोगात् सकलपवनजान्ता शयेत् अथ कर्षात् पक्षाघातं चलात्वं श्रवणविकलतामंत्र
 रुद्धिं कुरांडं मत्स्यास्तंभं च पंगुत्वरद गदादाधीशपाश्वर्यस्थि शूलं गृह्णन्मंग शिषे गतिगतपवने बुद्धिहानौ हनुस्थे वाते कंठग्रहे वा ज्वरकाटि

चपुनः चलात्वं कम्पनं चपुनः श्रवणविकलतां वाधि पवने पीठसर्पिण्यवश्यं १५३ र्यं चपुनः अंत्ररुद्धिं चपुनः कुरांडं अंडरुद्धिं चपुनः मत्स्यास्तंभं चपुनः पंगुत्वं दश
 नागदं दंतादं गदाधीशराजयक्षसाणंपाश्वर्य शूलं नाशयेत् गृह्णन् गृह्णन् गतिगते चपुनः अंगशेषे चपुनः गतिगतपवने चरणगतपवने पवने एतेत्यर्थः गम्यते अनेनेति गतिश्चरणं
 बाहलकात्वारणोक्तिं चपुनः बुद्धिहानौ बुद्धिभंशे चपुनः हनुस्थे वाते कपोलादुर्द्ध स्थिते वाते चपुनः कंठग्रहे कंठस्ते चपुनः ज्वरे चपुनः काटिपवने काटिस्थिते वाते
 चपुनः पीठसर्पिण्ये रोगे अथ वश्यं प्रयुज्यात् पीठाभ्यां हर्षितुं तथीलं पीठसर्पिण्ये रोगे रोगे इत्यर्थः चपुनः शुक्रेन्द्रियाणां हानौ चपुनः शिरसि स्थिते वाते रसनास्थिते पवने
 चपुनः पुरोगेषु तैलं प्रयुज्यात् रक्षादित्यर्थः चपुनः अस्मात् तैलात् मानुषाः क्षिपाश्च हस्तिनश्च गतनुजगता पीडासुः भवन्तीत्य

र्षः इव नारायणाख्यतैलं गदगणान् हन्यात् नाशं कुर्यात् कथं भूतान् गदगणान् सर्वगन्त्रप्रपन्नान् कड्वैदेत्यादिनाथान् चण्डिका इव कथं भूता चण्डिका विविधमणिमयी स्त
 धोत्यन्वयः स्वर्जमाना गद्यया माल्यमाला अविद्यमरः विल्वः श्रीफले अश्याह्वा अश्यांधा कटिस्त्रापुनर्नवागदपौ नाडितिलोके पुनर्नवाप्रसिद्धस्तु पूर्वमस्थ्याप्यधो रूपा अः
 न्यावाद्दलमस्थ्याविषकार्पासंजिता पुनर्नवः प्रथुदलोदृष्टमाह्व चोर्द्धगः पूर्वाभ्या रूपासुमा होता ह्यासमह्वाणेति वाभटाचार्यः लंबपत्रमवेक्षु घ्रीरुतपत्रस्तु खपरः सुदी
 पिस्तीर्णवस्त्रीत्यासितपुष्पा पुनर्नवैतिकेचित् सरणीप्रसारणी गंधप्रसारणी इतिलोके प्रियोनाकः शुकनासा सोनाणटी इति भाषायां अग्निमंथः अणिः श्रीशूडितिलोके दुर्गंधा
 रणिका श्वेतेशुभ्रवंवानुजातिभिः पुमेसारदला चेति नियमनो निवः गोक्षुरः गोकंदकः काव्यदूती काष्टपाटला कदपाटल इति भाषायां वरीयतावरी वाजिगंधा अश्यांधा :

ह्यनौ शुक्रां द्विवाणं शिरसि चरसनास्थे प्रयुज्यात् तदस्मात्तैलाहं ध्यासु पुत्रा भवति गत रजो मानुषाश्च द्विपांसुः तैलं नारायणाख्यं सततमाद्यान् सर्वगा

त्रप्रपन्नान् हन्याद्वैत्यादिनाथान् विविधमणिमयी स्त्राधरा चण्डिको व इति मध्यनारायणतैलम् १५४

मलयजं चंदनं तारं प्रसिद्धं कृष्टं तु क कूट इति मा

षायां मांसीभूतके श्रीजटा मासी इतिलोके अथ विष्टितदलः श्वेतः सुलोमशः रुदुः सुगंधि रूपा कोदल तो गृध्रकोपिचेति इंदुदृष्टः कुटजः कुरैया इतिलोके रूपा
 नृदिः लाडची इति भाषायां शैलेयशिलाजतुः शिलाजत्वसितं रुत शिलाधातुः श्रीफेगीत्रां सुगन्धेभ्यः पादेभ्यो हिमभ्यः स्वर्णरूपा कर्गभ्यः शिलाधातुर्वि
 निःसरेदिति वाभटः रास्सारसारासन इति भाषायां पटुवरं मंधवमिसिः शतपुष्पा सौफ इतिलोके पणिकानां चतुष्कः शालिपर्णी पृष्टिपर्णी मुग्दपर्णी माषपर्णीति ताम्
 शालपर्णी पृष्टपर्णी लक्ष्मणपूर्ववत् जेयं मु दूपर्णी यथार्थेव शरपुष्पा भगुल्मकः शंखो श्रीरोचते नुष्पी माषपर्वयत द्विधा विष्वक्कटिनभ्यः इलोमशा न्यामधुस्थिरे अपा
 वक्ष्मी जोजी विसर्पति कुतश्चेति वाजालहं वलायुमं वाट्या लहं देनात्र सह देवी नागवलापिशा संनागवला गुलशकरी इतिलोके स्त्राधरा चण्डेपि इति मध्यनाराय

हृत्तः अथवातव्याधौ यत्नतैलमाह तैलमिति तैलं वा दद्यात् कल्कं वा दद्यात् कल्कं न युतमित्यर्थः कथं भूतं तैलं कथितं विधियुतं पुनः क्षीयुतं पुनः विपक्वं पुनः वायुना संतकारिणा
 ४९ शरीरार्थः यदि इदमेवमेव तैलं वायुना संतकारिण्यात् तर्हि अन्यः सरुद्धिस्तु तैलेः किं किमपि नैवेत्यर्थः कथं भूतं तैलं प्रथितं गुणगणैः प्रथिताः प्रसिद्धाः गुणनामाणाः स
 मूहाः पशंते प्रथितं गुणगणैरिति वलाधालियारा इति लोके प्रसिद्धः इदमपि स्तगधराधंदः इति वलातैलं १५५ अथवातव्याधौ स्वेदविधिमाह मायेति
 माया कर्षा सवीजान्यतसि श्वनिला सर्षपास कुलत्था निर्गुडी कथं भूतं निर्गुडी सास्त्रांधा सरणि सुरतरु वीतशुर्वले द्वेष्टा गौषधातां स्वेदः स्वेदविधिः तनुगता मनलार्ति
 हरति च पुनः सरुद्धिस्तैलादं अशीति संख्यं रोगं आमवातादिरोगं च हरति कथं भूतः स्वेदः सद्यो दृष्टप्रभावः पराक्रमो यस्य स तथा भूत इति माया प्रसिद्ध कर्षा सवीजानि वि

तैलं वा दद्यात् कल्कं कथितं विधियुतं क्षीयुतं विपक्वं वायुना संतकारि प्रथितं गुणगणैः किंचुतैले सरुद्धिः १५५ इति वलातैलं

नैले इति लोके चासी शलसी इति लोके यवो वा तिलं सर्षपः सिद्धार्थः सरसो इति भाषायां कुलत्था कुलथी लोके निर्गुडी सिंदुवारः संभालू इति लोके अश्वगंधा वाज्रिगंधा
 सरणि प्रसारणी गंधप्रसारन इति लोके सुरतरु र्देवदारुः वातशत्रुः एरंडः बले द्वेष्टा वलाधालियारा इति लोके द्वितीया कंकति का कंधी इति लोके अथवातव्याधिर्निदानमाह
 अशीति र्वातजाः रोगाः भवंत्याक्षेपकाक्षयः अतिप्रसिद्धा क्वियतस्तिष्वहंगानि ह्रुवे १ आक्षेपको गविक्षेपात् वस्त्रिजंघोरुणा द्रुक् सनुद्राभे घोघं थिरहीलानुद्रुक् विद्व
 प्रत्यही लोदरे चेत्सा सपीडातिर्यगुत्थिता आध्मानं स्थाद्यदा न्यानं सटोपमुदं सनुक् ३ कफव्याकुलिते वाते प्रत्यध्मानं प्रजायते विण्मूत्राशयजापीडाधोगता दूणिकोच्यते
 ४ गुदोपस्थोत्थितानुक्वेयात्पूर्द्ध प्रतिरुणिका वक्त्री वारोति वक्त्राद्धि वातश्चेत्सरुर्गदितं ५ रुद्धी स्फिका स्तायु कटी जानुजंघा पदव्यथा क्रौष्टुशीर्षं जानुशोथे विषवायी

भुजयोर्व्यथा ६ त्वज्यंस्त्रिग्रहास्तत्रः पंगुत्वमुभयोस्तयोः शत्युद्गारसर्द्धवातो नष्टवात्कतुसूकता ७ वात्तायावजः समवेत्प्रग्रामन्वेपतेतुयः ग्राम्यलमेकवाहोश्चव्यथास्या
 दपयाहुवाः ८ विरतं संवृतं वास्यं यः कुर्यात्सदुनुग्रहः सर्वगीवांगारागोस्तुसर्वगीकोसनिग्रहात् ९ मुहुर्द्विर्बुध्नमये मोहयेच्चापतं व्रकः जिह्वासांभश्चसमवेत्पानवाक्येष्व
 नीसता १० वाह्यायामांतरायामौ वहिरांतश्चकार्यणात् स्तायूनामथविजयोव्राणायामोरुषातदा ११ स्थानानुमानरुणश्चलिगोशेषान्तिदिशेतप्रतिवातामयावृद्धाः क्षी
 णमांसवत्तानलमिति अथवातव्याधेर्ज्योतिःशब्दाभिप्रायेणहेतुमाह यदुक्तं जातको अतिमारुतोगातेः परस्वहृदि विलोममतिविष्टः कर्कटवास्थेमातौ सुपुत्रेष्टे
 पुमानपिशुनः अन्यच्च वातपित्तोद्भवापीडाहीनजैः सहविग्रहः विदेशागमनं वापिस्मिन्मध्ये यदाशिली कर्कसस्थः कर्कस्येवाशं नष्टसूर्यः तदायोपशान्तये पूर्वोक्तं सर्वजपहोमा

माघाकर्षसवीजन्यामिषवतिलासर्षपासकुलत्था निर्गुडीसाखांधासरणिमुरारुवातशत्रुर्वलेहे एषांस्विदोनितार्तिहरति तनुगातां नात्र सदेहबुद्धिः

सद्योदृष्टप्रभावो मरुद्विलगदं चामवातादिरोगं १५६ इति स्वग्रहस्तोपदर्शितवातव्यधिविकित्ता

दिकं कार्यं श्रुतिधर्मातकोत्पाधोपशान्तयेयथा वेतुकावचित्रितिसंज्ञजपः तिलाज्यकशसमिद्धिर्जुह्यात् सहेमं श्यागंदद्यात् राजवर्तपरिधानं अथकर्मविणकमाह
 गुरुप्रत्ययीवातरोगीभवति अन्नोदेवीति मंत्रेण जपं कुर्यात् अमासहे प्रवरसंवादे अन्यत्र वातरोगीकारणांतरं पृथक्त्यंतरं वोच्यते देवब्राह्मणपरस्वापहरणात्वा
 मिद्राहाद्यातरोगीभवति अथप्रायश्चित्तं शृष्टं वांदायणं कुर्यात् अग्निरग्निंस्तु चंजयेत् अनेन सप्तेण होमं कुर्यात् वातयात्रातमंत्रोयं जप्यते शुतसंख्यया अग्निरग्निस्तु चं वापि जपेद्वा
 जुहुवाद्गीतिकाचस्यतिर्वचः स्नायान्धेदी क्षित्तिस्तृक्ष्णमाह वेदावर्णश्च दीर्घालघुलघुगुणं च द्वाद्विंशत्युहो लघुलघुगुणं सप्तमिस्थायति श्रेत कीर्ति

दंतिकाचपिबुः प्रमाणं षोडशमाघपरिमितं एतत्समस्तमौषधं एकतः दंतं एकी दंतं सुधीविचः दंतस्य भाजने स्थापयेदिति शेषः ततः शण्णमानं चतुर्मीषमानं दोषधंददीत तदनंतरं
 पयः द्राघं च पुनः कदुसवारिडिषदुलजलं वा समंगकादि स्तं कषायं अग्न्यपेक्षया अन्यनुसारेण अनुपानकं ददीत कथं भूतः अथं पुरः समस्तकुष्ठमंदबुद्धिवातरक्तशोथमा च
 पुनः अथं पुरः ब्रणप्रमेहं प्रणयावे च पुनः पिंडकोटरप्रमेहं पंडुताः निहंति किंतु कासं अशुशीघ्रं निहंति पुनः कथं भूतः पुरः सर्वरोगनाशनः पुनः रक्तसारकादिना कषायेण अशुशीघ्रं
 बहुप्रदुष्टकुष्ठं निहंति च पुनः गुल्मकादिशाकृक्षकादिनां वृना कषायेण वा रूपादिना कषायेण पथ्यभोजिनां नृणां दृगामयं निहंति अतो महौषधातमिषक क्रियाभिषजं क्रियाप्र

समस्तमेकातः दंतं द्यास्यभाजने सुधीददीत शण्णमानमग्न्यपेक्षया अनुपानकं पयः कदुसवारिण स्तं समंगिकादिवा समस्तकुष्ठमंदबुद्धिवातरक्तशो
 थनुत् १६० ब्रणप्रमेहं पिंडकोटरप्रमेहं पंडुताः निहंति काशमाशु किंतु सर्वरोगनाशनः बहुप्रदुष्टकुष्ठमाशुरक्तसारकादिना निहंति गुल्मका
 दिशाकृक्षकादिनां वृना दृगामयं रूपादिना निहंति पथ्यभोजिनां भवेन्महौषधादतो मिष क्रियाप्रमाणिका १६१ इति प्रमाणिका
 एतोपदर्शितवातरक्तचिकित्सा

पुरः गुगुलुः कदुन्निकं शुंदी मरिच पिप्पली कृमिद्विषः विडंगकः तृष्टेत्स्यामानिशोत इति लोके दंतिकाजयपालः जमालमोव इति भाषायां समंगामं जिष्टमं जीठड
 तिलोके रक्तसारोपमं जिष्टा इति गुल्मकोरक्तकरवीरः कनैर इति लोके शाकृक्षो वरुणः खनाम्ना प्रसिद्धः अथवातरक्तस्य निदानमाह अथ ध्रुवाहनविदाद्यनदिसहस्राहजो
 युज्यते येन मरुदृष्टदास्याद्वातशोणितं दारुगौषक्यतोदं कंडूयैव पथ्यमंडलं सुस्पृहं दं सकोचशोथं वाताखिलक्षणं वातेधिकेन कुपिते च दाहो रक्तोतिशो एता कपेति गौर
 रं चिह्नि विजिह्निदो षतः मोहदाहज्वरप्रपणं ल्यांगुलिचैकतं मर्मग्रहभ्रमं स्फोटवातालोपश्चानवेति अथवातरक्तस्य ज्योतिः सास्त्रमिषायेण हेतुमाह यदुक्तं जातके

अथामरगिरास्त्रापंचकमाह एतेति रसादिवाशुंटीजीरादारुश्चैतैः सिद्धं घ्रायः समेवाते आमसंयुक्ते वा ते च पुनः सर्वागस्थे वा तेप्येनं वाचं संसंति प्रशंसति मुनय इति शेषः तद्वद्वातौघा
 त्सांस्थे वातोपि शंसंतीत्यन्वयः १६५ इति विह्वला खंडः इति रास्त्रापंचकं अथ योगाजगुगालुमाह वह्निरिति वह्निः रसामूलजाजीकारव्येलाथोषामोघाचव्यंदारुव्योषपथ्या
 मोदरोगोशीरंपत्रं धान्यक्षेष्टः रास्त्राधान्यंदीप्यक्षारः त्वक्तालीसंगो कंदो योसिंधोर्जातः एषामोषधानां युक्त्या यत्नेन पूर्णं कुर्यात् यावापरिमाणपरिच्छिन्नमोषधंतावन्मानः पौष्ट्यगु
 लुः सूर्यप्रेतनष्टो न सह देयः ततः गटं दृढं सघ्नः मर्दितुं योग्यः ततः समेवाते वह्निं जहाराग्निं दृष्ट्वा पुनः पुनः च पुनः दुष्टेज्जंतौ रसमिरोपोखंदेन गुलोचल्यो हि श्वयष्टिर्गंदे च पापो
 रोगोदरोगो च पुनः वै इति निश्चेत्त आनाहे पुनः चंडांतं केवातारोगो आद्यवाते वातसंयुक्तारोगो च पुनः क्षुद्ररोगो अयं योगेशः योगारजः रोगोदृष्टिं शुक्रं दृष्टिं कुर्यात् च पुनः ओजोत्

रास्त्रादिवाशुंटीजीरादारुश्चैतैः सिद्धं घ्रायः शंसंत्येनं समेवाते सर्वागस्थे धातो तद्वत् १६५ इति रास्त्रापंचकं वह्निं रसामूलजाजीकारव्येला
 थोषामोघाः चव्यंदारुव्योषपथ्यामोदारोगोशीरंपत्रं १६६ धान्यक्षेष्टे रास्त्राधान्यंदीप्यक्षारत्वक्तालीसंगो कंदो योसिंधोर्जातश्चूर्णं कुर्यात् संवयुक्त्या

द्विकुर्यात् च पुनः दुष्टाद्यातानकुपितां वातानहन्वा न्नाशं कुर्यात् यद्वच्चंडः वायुः मेघान् हन्ति चंचा देदीप्यमानानविद्युत्साल्मोश्च तद्वद्वयंपुरः सर्वान् रोगान् हन्तीत्यन्वयः च
 हि श्वित्रकः रसामूला पिप्यलीमूलं जाजीजीरकं कारवी एष्टीका कालौजी इति लोके शातपुष्ये व पृथ्वीकात्तणामधुसंगधिका सिद्धेति एला मुदिः लायचीति भाषायां घोषा
 विदेगं वायुपिडंगा इति लोके अमोघापाटलापाटी इति भाषायां पाटानुस्यात्पापचेली व्यस्थिरैव प्रतानिनी विस्तुक्रांतोपमापीलुफला मधुरपिष्टिलेति चव्यं च विकाचापदारु
 तिलोके दारुः देवदारुः व्योषं शुटी मरिचपिप्यली पञ्चाहरोतकी मोदा अजमोदः रोगोषाष्टं उशीरं सेव्यं स्वस इति लोके पत्रंतमालपत्रं तेजपात इति भाषायां धात्री
 आमलकी अक्षोविभीतकः वहैडा इति लोके इक्षुः क्षुरकाः तालमस्त्राना इति लोके अथेक्षुः प्रथ्वभिवंदकः तणकोर्द्धागुलिदलः कर्कशः रसकोस्थिरेति रास्त्रास्त्रा

५२ चः एतन्मिलोके धाम्निर्वा दीर्घयवानी धारोयवधारः यवाखार इति भाषायां त्वक चोचंतज इति लोके ताली संखनात्ता प्रसिद्धं अथामवातस्य निदानमाह युगपत्कुपिता कमवा
 तौ ह्यीय प्रकोपनेः यामवातं जनयतः संसंधिस्थिरुग्रहं यामवाते धिके वतिः इति उग्रदाह कुपिततः कफात्तेमित्यगुरुता सर्वलक्ष्मिदोषतः सर्वोर्गाणां संध्यस्थि शोथ
 तिग्रह गारवं ज्वरपाकाग्नितां घंघत्सु चमानिलाकृतिः जाड्यो ब्रूजनाह तद्वर्द्धिवह मूत्राशूलं शयन नाशो पदेषां चामवातजाः अथामवातस्य ज्योतिंशास्त्राभि
 प्रायेण हेतुमाह अष्टमगो गुरुमवेति वचनात् अष्टमस्थानात् गुरुजनिता मवातः प्रोपशां स्येते तपोत्ये पूर्वाभासे वज्रपहो मदानादिकं कुप्यते तेनोपशम्यति अथ कस्मिं वि
 णयमाह दुर्लभा प्रियाय कश्चामवातगतिरिति स्मृता तदुक्तं दोषोपशांतयेयुतं संख्याको गयत्राजपः तिलैराज्येन च होमः सुवर्णिदानं यत्र यत्र च संकीर्णमात्मानं मन्यते द्विजः त

यावत्वेतन्नावमानो देयः पौरः सूर्यि प्येन मर्घा गाढं दृष्टा वहिं खादेनं समेवाते १६२ दुष्टे जंतौ गुल्मसीहे त्यग्रे मंदे पायै रोगे आनाहे वै चंडा तं के
 त्वाद्योवाते क्षुद्रे रोगे १६९ योगेशो यरे तो रडिं विजः कुर्याद्दुष्टान्वातान् हन्याद्यावन्मेघा न्वायुश्चंडश्च विद्युत्सालान् १६५ इति योगराजगुण
 लुः घ्राथ्यविश्वपवनास्त्रिमूलं पापयेद्दुचकारामदयुक्तं वातशूलशमनं सदनोवाकांजिकेन कृतनाभिसुलेपः १७०

अतत्र तिलैर्होमो गायत्र्या वाजपत्येति वचनादिति विद्वन्माला छंदोपि तद्यथा सर्ववर्णादीर्घायस्यां विश्रामस्याद्वैदे विद्वद्द्वैर्वाणा वाणि विष्ट्या तासां विद्वन्माला इति
 योगराजगुणलुः इति विद्वन्माला रतोपदर्शिता मवातचिकित्सा १६५ अथ वातशूले घ्राथ्यलेपश्चाह घ्राथ्येति रुचकारामदयुक्तं विश्वपवनारिजमूलं घ्राथ्यघ्राथ्यक
 त्वापापयेद्दोगेण मिति शेषः कथं भूतं विश्वपवनारिजमूलं वातशूलशमनं वेति पक्षान्ते कांजिकेन सह कृतनाभिसुलेपो सदनः वातशूलशमनो भवतीत्यन्वयः कृतो नाभयो मु
 लेपो यस्य अहो कृतनाभिसुलेपः रुचकं सौधं च लंलवणं रामहं हिं गुः विश्वं शुंठी पवनारिः एरंडः कांजिकं कुल्माषमंडादिसंधितां तुषामोसिमदनो एरः सैनफल इति लोके
 राटको गुलि पिल्वैक पत्रपत्रौ सनूपजः विटपो सदनं तस्य फलमेवोपयुज्यत इति स्वागता छंदः १७० १७० १७० १७०

अथ वातशूलवटीमाह अम्लवेतसेति यत्नयेतासपदुत्रयहिं गव्योषदीप्यकं इदमौषधं समभागं गृहीत्वेति शेषः मातुलुंगारसयुक्तवटी वातशूलशमनानाशकरा कथं भूता कम
नीयारुचिरारुचिकरेयव्ययः अम्लवेतसो अम्लवेदः अम्लवेतस इति लोके दृत्त एतौ पपत्राश्रदीधकं टकपादपाद इति पदुत्रयं लवणत्रयं सैधवसौ वचेलशार्कं भेषिति हिं गुः
सूपधूपनं व्याघ्रशुटीमरिचपिप्ली दीप्यकं यवानो मातुलुंगो बीजप्रस्वाः विजौ स इति भाषायां इदं मपि स्वागता छंदः इति वातशूले १७१ १७२ १७३ हि
अथ पित्तशूलशमनसंज्ञायाह गोस्तनीति पंडयतः गोस्तनी स्वरसः पित्तशूलशमनः स्यात् वायुत पंडः आमलजः स्वरसोपि पित्तशूलशमनः स्यादित्यव्ययः अथेत्यनेतरं
पंचकोलपदु हिं गुर्जः रूरी शीतजलेन सह स्नेपशूलचिद्वैतौ सव्ययः गोस्तनी प्राद्या पंडः सितामित्री इति लोके यामलः आमलकी पंचकोलं पिप्ली मूलं चैव चित्रकनाभरः

अम्लवेतसपदुत्रयहिं गव्योषदीप्यकमिदं समभागं मातुलुंगारसयुक्तवटीयं वातशूलशमनानाशकरा कमनीया १७१ इति वातशूले गोस्तनी स्वरस आमल
जीवापित्तशूलशमनो घृतपंडः पंचकोलपदु हिं गुर्जो यश्चेष्टशूलजितशीतजलेन १७२ इति पित्तशूले स्नेपशूले च हृत्तितं वरुजं मैणविषा
णं हंति दार्धसंयुतपीतं लोहधूलिरभयामधुसर्पिर्विश्वमाशुपरिणामजशूलं १७३ इति रुदयनितां वपरिणामजशूले इति शूलचिवित्सा

पंचकोलमिति व्यातमिति सैधवं हिं गुः प्रसिद्धः इदं मपि स्वागता छंदः - इति पित्तशूलशूले १७२ अथ हृत्तितं वपरिणामजशूलप्रतीकारमाह हृदि ति व्यर्थं मैणविषाणं
असक्तदने कवारं यदि घृतपीतं घृतेन सह पीतं चैतर्हि हृत्तितं वरुजं शूलं हंति हृत्तितं वेति हृदयं च नितं वरुजं हृत्तितं वरुजं हृत्तितं वरुजं हृत्तितं वरुजं
हृत्तितं लोहधूलिरभयामधुसर्पिर्विश्वमेतत्सर्वमौषधं परिणामजशूलं हंतीत्यव्ययः अन्नपरिणामजशूलं तत्परिणामजशूलमिति अथ शूलस्य निदानमाह एकदेशेति
नुक शूलं शिबीधो न्यादि संप्रनातं कृद्भिः प्रथक देह सर्वदोषैश्चास्मात् देहधापितान्नाभ्यां बलाह लोपायैव हृत्तितं जकपात हि निस्थाने हि त्रिदोषशूलं चास्मात् परमात् वेद
नानाह मूषायास्तद्वत् प्रयोगारुची का सखा मश्चि का च शूलस्यो पद्वयादशवलासः प्रच्युता स्यान्नातपितेन सह सूर्यितः वायुमादाय कु रतो शूलं जीयति भोजने इति

५३ वृचः अथ ज्योतिः शस्त्राभिप्रायेण शूलस्य हेतुमाह शूलद्विकलशरीरमातुरनर्थवहं दक्षोऽस्ति तितनययोऽस्ति तत्तनुमंजनयति वेदो नरं कुलीरगृहे अथ कर्मविपाकमाह याचिता
 रमकिंचनं वाह्याणं श्रुताऽयनसंपन्नं प्रतिशान्तमाद्यप्योन प्रयाति तज्जटा शूलवान्भवति कदाचिदाधमानी भवति सकृदप्रतिघट्टाच्चंद्रायणानि कुर्यात् यस्यापि दद्यात् हि
 संघातं च दद्यात् अन्यत्र संघोपासनादिप्रनष्टो न्यजननिहस्तशूली भवति स्त्रीणां दशकंदद्यात् यथाविभवं शस्त्राणामोजनं च दद्यात् यो मातापितृभ्यां प्रष्टव्यं मेयुनं शृणोति स
 कर्णशूली भवति पश्चाद्विधिः किंचिदेव शृणोति वातद्विस्त्रित्यष्टोत्तरायुतं जपेत् पुरुषशूलांश्च अपामार्जनस्योत्राभिर्मंत्रितं जलं पिबेदिति इदमपि स्वाभाताधदः इति शूलवि
 कित्ता १०३ अथानाहोदावर्तवर्णमाह हव्यवाहनेति हव्यवाहनपवाग्रजपथ्यालोमशीगदविषाचपलानां चूर्णं यदि उल्लजलपीतं उल्लजलेन पीतं चेन्नर्हि शशेषाता

हव्यवाहनपवाग्रजपथ्यालोमशीगदविषाचपलानाम् चूर्णमुल्लजलपीतमशेषानाहमूढमरुतो विनिहंति १०४ हिंगुमाक्षिकपट्ट

तमवर्तिदापयेद्गुदं घृते स्निग्धसिंदुकदलान्यथोदावर्तनाशनविधौ बुध्वैद्यः १०५

हमूढमरुतः विनिहंति शशेषाश्चानाहाश्चोतेः शशेषानाहाः शशेषानाहाश्चमूढमरुतश्च शशेषानाहमूढमरुतः मूढमरुच्छेदेन कोष्ठे नुक्नुवायुः ज्ञेयः हव्यवाहन
 स्निग्धः यवाग्रजः यवश्चापः पथ्याहरीतकी लोमशीमांसी जवमांसी इति लोको गदे कुष्ठं कूट इति भाषायां विष्वक्प्रतिविषा शरीरस्य इति लोको चपलापिप्यली
 स्वाभाताधदः १०४ अथोदावर्तवर्तिमाह हिंम्विति घृतयुतां हिंगुमाक्षिकपट्टं तमवर्तिगुदं घृदिदापयेत् वैद्यः अथवा शशेषास्निग्धतमानि सिंदुकदलानि
 उदावर्तनाशनविधौ बुध्वैद्यः चतुर्वैद्यः दापयेत् गुदमार्गे इत्यनुषंग उदावर्तस्य नाशनविधिः उदावर्तनाशनविधिः तस्मिन् घृतमाज्यं हिंगुः समदं मा
 क्षिकः क्षौद्रं पट्टं तमं सैधवं लवणं सिंदुकाः निर्गुडी संमलू इति भाषायां इदमपि स्वाभाताधदः १०५ १०५ १०५ १०५

अथानाहोदावर्तप्रतीकारमाह । खंडिनिगाढविट्पवनपित्तकफेषु खंडतुल्यरुष्टतारुष्टतायाः पादयुक्तचतुर्थीशयुक्तचपलायाः स्रजः माक्षिकायुतां आसांचूर्णीलीढ्यंलीढं
 योयंवायंभूतंचूर्णीकारमध्यंकारमध्यप्रमाणंषोडशभाषपरिमितमित्यर्थः । खंडंसीतारुष्टतस्यामा निहोतइतिभाषायां चपलापिषली माक्षिकंमुधु अथानाहोदावर्त
 स्थानिदानमाह वातविण्मृज्जमाश्रुश्रुवोद्गारवमीन्द्रियैश्चुल्लोघ्रासनिद्राणां धत्वोदावर्तसंभवः वातएषोधादाधानमर्द्धविद्धविशेषानुक्तवलीसूत्रस्वर्जभाषाशि
 रोनुकद्वयुजोगुणः क्षवथोरिद्रियालानिरुद्धारस्थानिलार्तयः छेदः कुशनीन्द्रियस्यासरोदृज्जदताक्षुधः रषोतिहंलोघ्रासस्यहृदकस्वामस्यज्जमणविडंतिशूलमृडा
 निक्षययुक्तंत्वजदसुम् अथानाहोदावर्तस्यज्योतिःशस्त्राभिप्रायेणहेतुमाह तथाचोक्तं मध्येपापएहयोश्चंद्रमदनेस्थितोर्कजंजतिः स्वामक्षयविद्धधितपुल्लमही

खंडतुल्यरुष्टतारुष्टतायाः पादयुक्तचपलास्रजशासांलीढ्यमाक्षिकायुतंवारमध्यांगाढविट्पवनपित्तकफेषु १०६ इत्यानाहोदावर्तचिकित्सा

ह्लादिपीडितसमरः अत्रशदिशदेनआध्मानोदाकर्तारोगावपिह्येति ततः पापद्वयांऽवर्तचंद्रजनिताध्मानो दावर्तारोगोपशान्तयेपूर्वमेवचंद्रप्रीतोयेयथोक्तमेव
 दद्यात् अथतयोः कर्मविपाकमाह देवहिज्जश्चत्रतडागावल्मीककृपादीनांभेदं करोति तंवायसोनामग्रहोपह्लाति तत्क्षणासाध्मानीउदायर्तज्वरी अरुचिमान्
 पाददाहीचजायते अथप्रायश्चित्तं यथुमाचरेत् व्याहृतिभिराज्येनजुहुयात् हिरण्यंदद्यात् श्वेतकलपीताघनेकवर्णध्वजादिभिः दीपादिभिः सहप्रदो
 षेयुतुष्येषेवलिर्भविणानिदध्यात् अनेनमंत्रेण प्रणिप्रह्वलिंचेमं वायसायमहमग्रह आतुरस्य सुखं सिद्धं प्रयच्छत्वं महावलेति इदमपिस्वागत
 छेदः १०६ इत्यानाहोउदावर्त चिकित्सा श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्री

८:चं: अथगुल्मशूलिघ्नमाह अल्लवेतसशिवापदुमुख्यभूतशत्रुजटिलासयवानीयावशूकअमीषांइतिचूर्णेशशीतजलेनउलजलेनपीतंसतपुल्मशूलजिद्वयती
५४ त्वन्वयः अल्लवेतसं दृष्टाभक्तं शिवाहरीतकी पदुमुख्यसैधवंभूतशत्रुहिंशुः जटिलाउपगंधावचइतिलोको यवानीप्रसिद्धायावशूकोयवश्चाइतिइदमपिस्वागताधंदः
अथगुल्मेघ्नमाह धात्रिकेति एतासर्पिः घातवातपित्तकफसंभवगुल्मसर्पिरेतदचिरेणनिहंति कथंभूतंसर्पिः धात्रिकाफलरसेनविपक्षं कथंभूतेनरसेनपडुणेनघटा
दितिप्रश्नः पुनः कथंभूतंघृतंपदुषंड विमिश्रंयुक्तमित्यन्वयः धात्रीशामलकी पदुलेवणत्वेडंशर्वाइद मपिस्वागताधंदः १०० अथरुधिरगुल्मेप्रयोद्वयमाह
शोणगुल्मेति चिरविल्वत्वक्वाणमृगुभवाभिः अभिसुसिद्धः एषः काथः शोणगुल्महरणः अथेत्यनंतरंगिलानां एषः काथः शोणितागुल्मेस्वागतापसुविन आमसंताज्जतायनाश

अल्लवेतसशिवापदुमुख्यभूतशत्रुजटिलासयवानीयावशूकइतिचूर्णममीषांगुल्मशूलजिदशीतजलेन १०० धात्रिकाफलरसेनविपक्षं

पडुणेनपडुलंडविमिश्रं वातपित्तकफसंभवगुल्मसर्पिरेतदचिरेणनिहंति १०६ एकथ्यतइत्यन्वयः चिरविल्वः कांजः कांजुआइतिभाषायां अ
थकांजकः सिद्धोप्रांघोभर्जत्वक् लक्षपत्रोत्पशंवकः चिरविल्वस्ततद् यमस्तद्धोल्पविधाविताइति त्वक्चोचंजइतिलोको काणापिप्वर्लमृगुभवा भार्गभां
गीइतिलोको भार्गमहीरुहः शूलैंगुल्मरिच्यदनासिताव्यस्तधात्रीसमेति तिलंप्रसिद्धं अथगुल्मस्यनिदानमाह हन्नाभ्योतरेग्रंथिः संचारीयदिवाचलः रुतश्चपाप
चयवात्सगुल्मः पंचधामतः तस्यपंचविधस्थानं पापैवहन्नाभिवहायः दोषैः व्यक्तैः समस्तैश्चक्षौणांत्वस्त्रिणपंचमैः जीर्णैर्नैवातजाकुप्येत तस्मिंजीर्धतिपित्तजः भुक्तेषु
कफजोगुल्मः सर्वदासर्वदोषजः प्रसवार्तवपातानां कालेजासात्स्यभोजनवायुस्तदुक्तमाद्यगुल्मनिर्मातिपि तद्यतस्यन्धोपिडितो नांगेसशूलोगार्भविहृयुक् गुल्मोस्त्रि
जश्चिवात्सोसौसासेतुदशमेगते श्वासशूलपिपासानविहृषग्रेश्चिमुदता जायतेइवेलात्वंचगुल्मिनोमरणायवेइति अथगुल्मस्यज्योतिः सास्त्राभिप्रेतहेतुमाह यथा
तंजातकं मध्येपापग्रहयोश्चंद्रमदनस्थितेर्कजेजंतोः स्वासक्षयविहृषिमिः गुल्महीहाविपीडितः सनरः अत्रपापद्वयोतर्वर्तिचंद्रजनितागुल्मरोगोपशांतयेपूर्वो

कमेवजपहोम दानादिकंकुर्यात्तेनोपशास्यति अथकर्मविषयकमाह तत्प्रतीकारं च यथोक्तं गुरुप्रत्यर्थायातुल्यवान्भवति अस्य प्रायश्चित्तं वातुल्यवान् यद्विभवति
 तर्हि मासमेकं पयोऽष्टमाचरोत् मुचामित्येवनेन एतच्च चरुष्टाभ्यामयुतं बुद्ध्यात् अनुवानुभेषजमिति जपेत् अन्नदानं च पुण्यादिति स्वागताष्टंदो हातस्त्रक्ष
 एयथा अक्षरं च नवमं दशमं च ध्यात्वा इवति यत्र विनीते प्राक्तनैर्धदिष्टुगोश्च एतेव स्वागतेति कविभिः कथिता साविति स्वागताष्टतोपदर्शितगुल्मचिकित्सा १०२
 अथमूत्रकृच्छ्रे पूर्णमाह बहुलेति बहुलशिलाभिन्ना गधभवानां रजःचपुनः उपलज्जत्यमिति रजः कृच्छ्रे कृच्छ्रे गोयोनाः तंडुलशलिलैर्जलेः पिवति सः नरः सुखी भवति
 चपुनः यदसि पुरुषा गुडेन सह एतद्रजः लिहति तदा शुक्राज्जनितं श्लेष्मणो रोगं हरति चपुनः शशिवदनानां स्त्रीणां मिलनं संगं शुक्राज्जनितं श्लेष्मणो रोगं अवश्यं हरतीत्यन्वयः

शोणगुल्महरणश्चिरविल्वत्वक्काणामृगुभवामिसुसिद्धः काथपृषकथितो यतिलानां स्वागताय किल शोणितगुल्मे १०३ इति स्वागताष्टतोप
 दर्शितगुल्मचिकित्सा बहुलशिलाभिन्ना गधभवानां उपलज्जत्यमिति रजः कृच्छ्रे पिवति नरस्तंडुलशलिलैर्यो भवति सुधी चिलिहंति गुडेन
 हरति च शुक्राज्जनितमवश्यं मिलनमश्लेष्मणो शशिवदनानां १०४ इति शशिवदनाष्टतोपदर्शितमूत्रकृच्छ्रचिकित्सा

बहुलादहदेला शिलाभिन्ना पाषाणभेदः अश्मभिदृषद्विधेरक्तपुष्पसुगंधिक इति मगधापिप्पली उपलासिता मिश्री इति भाषायां जतुः शिलाजतुः अथमूत्रकृच्छ्र
 स्थनिदानमाह व्याया मतीष्टौषधरूक्षमघप्रसंगानित्यद्रुतदृष्टनात् अरूपमस्याधसनादजीर्णात्सुर्मूत्रकृच्छ्राणि नृणां तथाष्टे प्रथमलाहिकुपितानि दन्तैः
 र्मिथवाकोपमुपेत्य वस्तौ मूत्रस्वामी परिपीडयति यदा तदा मूत्रयतौ हृक्षशदिति अथमूत्रकृच्छ्रस्य जातकाभिप्रायो व्यञ्ज्यते तत्प्रतीकारश्च यदुक्तं जनकाले यदा यस्य
 स्मरे भवति भास्वरः राहुदृष्टः प्रकुरुते मूत्रकृच्छ्रादिकां रूजं सप्तमस्थानस्थ राहुदृष्टः शनिज्जनितो रोगो पश्याते यो शनिप्रीत्ये पूर्वोक्तमेव जपहोमदानादिकंकुर्यात् अथक

५५
 ८: नः कर्मविपाकमाह गुरुणागर्हं सततं मन्त्रोद्गीद्व्यागामी मूत्रकृष्टवानभवति गुरुतत्त्वादिदेशप्रयश्चितं कुर्यात् अन्यच्च वायुपुराणे सुरापो मूत्रकृष्टीत्यादिति अत्राहवौ
 ह्वावनः सौवर्णकारयेत्पद्मं पलेनार्द्धपलेन वा यथावत्प्रतिमां कुर्यात् पद्ममष्टदलं शुभं विंशतिशतं न कुर्यात् भवेन्निःपलमन्यथाद्रोणेति लाटके वा पितामहपात्रं जलाचि
 तं तस्य मध्ये तु गोपद्मं निदध्यात्कुंभुमार्वितं ब्राह्मणं श्रुतिसंपन्नं दक्षिणं हि होतृणां ग्राह्यगंधमालाद्यैर्विधिना चातिभक्तिः ततः स्वर्णमयं पद्मं दद्यान्मन्त्रेण संयुतं भगः
 पूषापतंगोसौहादशात्मात्रयीमयः पद्मेनानेन दत्तेन प्रीतो भवति भास्करः इति दानमंत्रः दत्तेनानेन मनुजो मूत्रकृष्टाद्यमुच्यते मूत्रकृष्टात्पुस्तकं दत्तं कुर्यात्प्रयत्नतः
 इति शशिवदनाष्टदोष्य स्तितस्मक्षणं यथा अगुरुचतुष्कं भवति गुरुद्वौ घनकुंचयुग्मे शशिवदनासाविति इति शशिवदनाष्टदोष्य मूत्रकृष्टचिकित्सा १८०

एतामुल्यानागरं दाडिमस्यांभोभिः पीतं वारसैस्ताम्रमूल्याः मूत्राघाते वासकघाथस्कोयो ज्योतिर्गोवासुकार्पूरधूलिः १८१ इति मूत्राघातचिकित्सा

अथ मूत्राघातप्रतीकात्माह एतेति एतामुल्यानागरं दाडिमस्य चूर्णं ग्रंभोभिः जलेः पीतं वा ताम्रमूल्या रसैः पीतं चूर्णं मूत्राघातं हंतीति शेषः अथ वा मूत्राघाते एकः वा
 सकघाथोदयः वासुकार्पूरधूलिः लिङ्गो ज्योतिर्द्वयः एतामुल्या रुद्रमैला नागरं शुंदी दाडिमं कारकं अनार इति भाषायां ताम्रमूलीयवासा वासकोद
 यः रुद्रा इति लोके कर्पूः प्रसिद्धः अथ मूत्राघातस्य निदानमाह मूत्रादिध्यायादृष्टेन रुद्ध्या रुद्ध्या शनैः शनैः मरुतो मृत्युज्यते मूत्रं मूत्रघातस्तदा भवेत्
 मूत्रादीनां ध्यायवेगविधारणेन चादिपदेन पूर्य शुक्रादीनां रुद्ध्या शनादीनां च ग्रहणं दुष्टेन मरुता मूत्रवध्या शनैः शनैः रुक्तज्यते तदा मूत्राघातो भवेदित्या
 शयः अथ मूत्राघातस्य ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुं कर्मविपाकं च तच्छांतिं च मूत्रकृष्टवज्ञेयम् इदं शालिनीधरः १८१ इति मूत्राघातचिकित्सा

अथाश्वरीप्रतीकारमाह एलेति एलायष्टीवायुशत्रुश्चंद्रश्च दृष्टा कौंतीशैलभेदाटूरुषैः सिद्धं यतोयं कषायं तत्कृष्टं सूत्रकृष्टं सर्करां अश्वरीच हन्यादित्यत्ययः एलाः त्रु
 टिः यष्टी मधुयष्टी मलेटी इति लोके अथस्यान्मधुकागुल्मः खल्पमिच्छां पुंस्त्वत् किंचिन्महादीर्घपत्रोत्पल्लासमिदस्य त्विति वायुशत्रुः एंडः दंष्ट्रा गोक्षुरुः दृष्टा
 पिप्यली कौंतीरेणः पित्तपापडा इति लोके पर्यटोर्जकवत्सिद्धस्तृणकः क्षत्रसंभव इति शैलभेदः पाषाणभेदः आटूरुषः सिंहास्यः रुसा इति भाषायां अथाश्वरीनिदाने
 माह वातपित्तकापैति स्त्रिभूतार्थं शुक्रजापरापाणश्चेष्टाश्रयः सर्वाः अस्मर्यः स्युर्पमोपमाः विशेषवेदुः स्तिगां सशुक्रं सूत्रं सपित्तं पवनः कफं च यदा तदा श्मश्रुपजायते
 व्रक्रमेण पित्तवचरोचनागेनिकदोषाश्रयाः सर्वा यथा स्यात्पूर्वलक्षणं वस्त्याधानं तथा सन्नदेशेषु परितोति नुक् सूत्रवत्तः संधत्वं सूत्रकृष्टं चरोरुचिः सामान्यलिङ्गं
 ग्रामिसेवनी वस्तिमूढं सुविशीर्णधारं सूत्रं स्यात्तया मार्गविरोधने तद्वपणया सुखमेहेदं शङ्गे मेदकोपममिति अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह तत्प्रतीकारं च शूरप्रेम

एलायष्टीवायुशत्रुश्चंद्रश्च दृष्टा कौंतीशैलभेदाटूरुषैः सिद्धं यतोयं कषायं तत्कृष्टं सूत्रकृष्टं सर्करां अश्वरीच १८२ इति अश्वरीचिकित्सा

पथ्याचूर्णीवायसंनैफलं चालेह्यं क्षौद्रैः सर्वमेहो पशान्यै वत्सादित्याचारसः क्षौद्रयुक्तो धात्र्याः क्षौद्रैः सर्वरीकल्बमिश्रः १८३

हृ पीडित मस्मर्योपहतमानसं शांतं जनयति रविणा दृष्टो जीवपुंहे चंद्रजः पुरुषां रुरुहे वर्तमान रविदृष्टवुधजनिता श्वरीप्रतीकाराय बुधप्रीतये पूर्वीतमे वज्रपट्टो मादि
 कौंकीर्ण्योत अथ कर्मविपाकमाह तत्प्रतीकारं च यथोक्तं परस्त्रीगामी अश्वरीभवति अश्वरीवास कृष्टं यं बुध्याति यद्यपि कारावोक्ता श्वरीहरत्वेदानं न अभिहितं त
 थापित्स्वर्णदानं कर्त्तव्यं तस्य सर्वरोगहरत्वात् तथा लोतां वस्त्या एडपुराणे सर्वरोगोपशमनं सौवर्णदानमुच्यते इत्यश्वरीरोगोदानं इदमपि शालिनीधंदः इत्यश्वरीचिकित्सा
 अथ प्रमेहप्रतीकारमाह पथ्येति सर्वमेहोपशान्त्यै प्रशमनाय पथ्याचूर्णीवायसंनैफलं चालेह्यं क्षौद्रैः सह लेह्यलीहं योम्यं वेति पश्चात्तरवत्सादन्यासः क्षौद्रयुक्तः
 पेयः वा शर्वरी कल्बमिश्रः धात्र्या रसः क्षौद्रैः सह पेय इत्यन्वयः पथ्याहरीतकी आयसं लौहं नैफलं शिवामलविमीतकी क्षौद्रं मधुः वत्सादनीघ्न रुहं गुर्वइति लो

५६ चः के शर्वीरात्रोहलदीतिभाषायां धात्रीशमलकीति इदमपिशालिनीधंदः १८३ अथप्रमेहेअन्यत्रतोकारमाह व्योषमिति व्योषंपथ्याभूतवासामलानि एतासर्वमो
 षधंतुल्यंभवेत्तात्समानःपुरःस्यात् एतदौषधं गोक्षुरःकाथेयोज्यं एकतः एकीकृतस्यौषधस्य युतचायनेनवर्तिकल्पयेत् कुर्व्यात्सूत्राघाते चपुनःसूत्रकृष्टेअस्त्रवाता
 त्वातेचयो न्यातेके योनिरोगचपायुरोगो गुदरोगो वह्निं अग्निं प्रेक्ष्यदृष्ट्वाएतर्ह्ययंज्यातयोजयेत् चपुनःइयंवर्तिःदुल्लसर्गमेहानहंति चपुनः देहेशरीरितिजः वलंकृत्वा
 शालिनीयंशौंदर्यंजायतेवरोतीत्यत्वयः व्योषंशुंदीमरिचपिप्यली पथ्याहरीतकी भूतवासकालिद्रुः बहडाइतिलोके आमलं आमलकी पुरोगालुः गोक्षुरः मिर्कं
 कः गोक्षुरइतिलोके अथप्रमेहनिदानमाह आस्यामुषंस्त्रसुखंदधीतग्रास्योदकानूपरसाः पयांसिनकत्राणानंगुडवैद्यतंचप्रमेहेहेतुः कफराक्षसर्वे जलेक्षुसाद्रासवशुक्र
 पिष्टलात्मासनेसैकातसीततस्तुमंजिष्टहारिकनीलकालक्षणास्ततोमजबसेभपै व्याः साध्याकफोत्थादशपित्तजाघट्याय्यः असाध्याः पवनाच्चतुष्पाः समं क्रियात्वादिषम

व्योषंपथ्याभूतवासामलानितुल्यं सर्वतत्समानःपुरस्यात् योज्यंकाथेगोक्षुरोरेकतश्चयुतचावर्तिकल्पयेत्प्रेक्षवहिं १८४ सूत्राघातेसूत्रकृष्टे
 स्त्रवातेयो न्यातेके पायुरोगेचयुंज्यात् सर्वमेहानंदुल्लरानहंतितेजः कृत्वादेहेजायतेशालिनीयं १८५ इतिशालिनीवृत्तिपदंशितप्रमेहचिकित्सा

क्रियत्वात् महाक्रियत्वाच्च यथाक्रमेति दोषप्रकोपचिह्नानिप्रमेहानामुपद्रवासारवोकाश्चपीपुत्रिण्यलंजीचविदारिकामसूरिवितताजालिन्यपिविदधिस र्षपीनामानुरूपः
 पिडिकाः देशमातदुपेक्षणादिति अथप्रमेहस्यज्योतिःशास्त्राभिप्रायेणहेतुराशुमरीवज्ञेयःअथकर्मविपाकमाह सातृगामीस्वहृगामीमधुमेही जायतेनरः भ्रातृभाष्या
 भिगामीचजलमेहीनराधिपयोगेद्रुगिनीनित्यमिष्टुमेहीसनिश्चयइतिवचनात् अत्रपूर्वोक्ताधिकंप्रायश्चित्तकार्यं मात्रादीनामतिमान्निषङ्गत्वात् यत्रशक्तःतत्रक्षु
 ऋंप्रतिदिनंचत्वारिंशद्वाह्यभोजनंकारयेत् पुरुषशूक्तंसहस्रनामस्तोत्रंगायत्रीजपंचकारयेत् आतेरुद्रशूक्तेनाज्यहोमंजपंचाश्रोतरसहस्रंजपत् चांडालीगामीसुवे
 प्रमेहवासेन सातंक्षुत्पिपासातुरश्चसपिपीलिकायवमध्यचांद्रायणानिकुर्व्यात् इदमपिप्रवहत्तदुत्तमंवरुणोत्वादिभिर्मंत्रैजपेत् जुहुयाच्च तिर्यगामीप्रमेहीशूलीस

संतनानि कुर्यात् व्याधिगुरुलघुभावेन प्रायश्चित्तगुरुलघुभावे दृश्यते इति शालिनी घट्टोपस्थितस्रक्षणां यथा रुक्मिवर्णी जायते यत्र घट्टः कंठुप्रीवित हृदे वा श्मोन्त्यः विश्रामः
स्यात्तच्चिदैस्तुरीयां भावते शालिनी घांटी सीयाः इति शालिनी दृष्टोपदर्शितप्रमेहचिकित्सा १८५ अथ शरीरस्थौल्यदुर्गधेश्वप्रतीकारमाह मधुयुतेति प्रातः प्रातः का
ले मधुयुतजलपीतं सप्तसप्तहसममुद्रयं स्थौल्यं क्षिप्रं शीघ्रं हरति हीति निश्चयेन अथेत्यनंतरं त्रिफला रजोपिमधुन सह पीतं स्यात् तथा करोति दृषदलसैः दृषपत्रसैः
सह दीर्घास्वनरजोचितः लेपः तनुदौर्गध्यं दुर्गधां जयति वा विल्वस्य दलजः रसः तनुदौर्गध्यं जयतीत्यन्वयः मधुक्षौद्रं त्रिफला शिवामलविभोतकी दृषोटारुषः रुसा इति
लोके दीर्घास्वनोशंसः विल्वः श्रीफलः अथ स्थौल्यस्य निदानमाह मेदस्तु यद्दुर्गधेश्वहेतुमिहोत्तनसामवत् सर्वकर्मसमर्थीति स्थूलसिगुदरस्तनु इति अथ स्थौल्य

मधुपुतजलं प्रातः पीतं ह्यथ त्रिफलासो हरति मधुना क्षिप्रं स्थूलं समस्तमुद्भवं दृषद्वलसैर्लेषो दीर्घस्य तस्य रजो न्वितो जयति तनुदौर्गन्धवि

स्वस्वगादलजोरमः १८६ इति मेदश्चिकित्सा

स्य ज्योतिःशास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह यथोक्तं जातके अलसं सुषिन्नं स्थूलं पतितं मृष्टाशनं भ्रगोक्षानयः स
त्राजनि तमेदः प्रशमनाय पूर्ववद्विधेयं अथ कर्मविणकमाह दधिचैर्व्येण पुरुषो जायते मेदसायुतः दधि
व्यविकीर्णः इदं हरणीशब्दः १८६ अथ लीह रोगाश्लीकारमाह त्रिकटु इति रसयुतं पारद
रणीतरसावेगेन लीहानं भवति अथवा शोभांजनं रसः तस्मात् लीहानं भवति च पुनः अल्लवेतसं संयुतं च पुनः
यतीत्यवयवः रसो पारदः त्रिकटुकं शुद्धी मरिच पिप्पली यवक्षारः वायसूकजः यवावा इति लोके हिङ्गुः राम
के अल्लवेतसं अल्लश्च रक्तवाहि शिरामूलं लीहाण्यतो महर्षिभिः लीहातुवामांगे भवति

दः चः अथ ज्वोतिः शास्त्राभिप्रायेण प्रीतिहेतुं कर्मविपाकं वगुल्मवद्विधमिति ॥ इदमपिहरणीष्टं १८८ अथोदरप्रतीकारमाह उदरेति एतन्निफलादिगुगुलुपर्यंतमेतद्वैष
 ५० पं० पृथग्यथास्यातथा उदरनिचयं उदरव्याधीनां समूहं हन्यात् कज्वलनसुरदारुकाथोपि उदरनिचयं हन्यात् महौषधचवयोकाथोपि कृत्स्नं जठरं सर्वजठरव्याधिं हन्यात् त
 थैव विवर्द्धिता कृत्स्नवर्द्धमानापिष्यत्यपि हन्यादित्यन्वयः निफला शिवामलविभीतकी शिलाजतुः शिलाखिदः शिलाजीत इतिलोके सुरभीमूत्रंगोमूत्रं वज्री सेहंडः
 सेहंड इति भाषायां गुगुलुः कौशिकः गुगुलु इतिलोके ज्वलनश्चित्रः सुरदारुः देवदारुः महौषधं शुकी चव्यं चविका चावदार इतिलोके वर्द्धमानपिष्यत्यपीति
 माह तिस्रः पंचाथैव सप्तमगधाक्षरेण साडेपंचाशतावधिग्रंथान्तरेति ॥ इदमपिहरणीष्टं १८९ अथान्यदुदरप्रतीकारमाह मरुदेति गौदुग्धेन सहितं मरुदरिभवतैलं उद

विकटकयवक्षारौ हिं ग्वामयश्च पट्टमं सद्युतमिदं चूर्णं सौभाग्यजनस्य रसो यथा जयति तरसा लीहानं चास्त्ववेतं संयुतं वाथितजलमेतच्छिग्रोः
 सैंधवेन च संयुतं १८९ इति श्रीहचिकित्सा उदरनिचयं हन्यादित्युक्तं तृथ कृत्स्नं निफला शिलाजतु च सुरभीमूत्रं वज्रीपयस्त्वथ गुगुलुः
 ज्वलनसुरदारुकाथो वामहौषधचव्यो हरति जठरं कृत्स्नं कृत्स्नातथैव विवर्द्धिता १८८ रं उदरव्याधिं हरेत् अथेत्यनंतरंगोमूत्रं यत्कृतं तैलमपि
 सकलोदरं अष्टविधमस्त्रविकारं हरति च पुनः कृमिरिपुः स्याद्यह्नुरिणी क्षणांतमेतात्थ्यौषधानि तेषां काथोपि हरतीत्यन्वयः कृमिरिपुर्विडंगः निशाहरिद्रा नीली
 नीलिकानीलवडी इतिलोके कम्पिष्टके रक्तांग कपीला इतिलोके शिवाहरीतकी तृष्टस्य सामानिशोभभाषायां द्विरददशना नारादती जमालगोटी इति भाषायां
 शशिनी शंखपुष्पी कौडियाला इति भाषायां शंखपुष्पौ सितारुणे वस्त्रिकेतरेणके विष्वक्लोमसेत्पकपत्रक इति अक्षः कलिद्रुमः बहेडा इति भाषायां आमलं अ
 मलकी आउला इति भाषायां हरिणीक्षणा मगधाक्षी इन्द्रायन इतिलोके ऐं दी विशाला च समे वल्यो ह्वत्य महाफल इति केचने स्थिरे इति अथोदरप्रतीकारमाह

मंदाग्निरहितैरनैरुदराण्यथानितुष्टयकदोषैः समसैश्च स्त्रीहवद्व्युत्पत्तौ दैः कार्त्तविहंग दैविल्यौ दारुण्यं प्रिमंदाय चोपवर्त्तिरुदराध्मानं सर्वदराहतिः क्लृप्ता
जुनादोषैः शिरासु रुद्रेकमात्र दुष्टावनखविह्वीगार्त्तवद्व्युत्पत्तौ विषादिभिः दूष्योदरं त्रिलिंगास्यान्नाभिरुद्धेचितासहक वामेज्जिज्वरा स्त्रीहायक दाल्पस्रोतो न्यतः रुन्नाभि
मध्ये निचितं दुष्टावर्त्तलेपदात वातेन नवहिय्याति तद्वद्गुदमार्त्तिकात् अन्नाद्यागतश्लेपेन मित्रमंत्रजलंगदात् श्रेवन्नाभिघोरं परिश्राव्युदरं हितात् स्निहपानाद्
मेरेकादशं वृषिपवतो हिमं वृषु पूर्णादिति प्राच्यमधोनाभेर्दको दारुपथाद्गुदं तुर्द्धं सर्वजातोदगंतथाप्रयोभवमभावाय पिडां त्रैवेदेरुणा मिति अथोदरस्य ज्योतिः श
स्त्राभिप्रायणं हेतुमाह सिंहस्योच्चिजनाथः करोति जातं रदनजठरोगार्त्तं स्त्री द्विषां च पुरुषं तथापि पासाश्चुधविष्टं अथ च स्थूलास्थिराफितमेनाप्रचुबदनं जीह्वस्य पिपा

मरुदरिभवौ लंडुग्धेन गोः सहितं हेरदु दारमथ युतागोमूत्रैरपि सकला दारुमिरिपुनिशनीलीकं पित्तकंच शिवात्तृद्विददशनाशं वि

न्यश्चामलं हरिणीक्षणा १८५ इति हरिणीष्टोपदर्शितोदरचिकित्सा क्षियुक्तः स्त्रीद्विविधुत्पिपासा जठरगुदरुजापीडितो मांसमुक्क पांशुदुस्त्री
हलोत्पपुत्रो विपिननगरविर्मातृवस्यः सुवता विक्रांतो कार्यकोपः शशभृतिरविभेगार्भगं भेदधृष्टिः अपांचप्रचुरामित्रस्त्रीक्षणे मृदकाया प्रिमदनात्समं द्रेषे चोद
रागैः पीडितो देहः पुमान्भवति गंडोदराक्षिरोगाः पासबंधनकं भवेत् अन्नात्प्रभवित्केशो यथाशुक्रगतोरविः क्षीणं चेद्रांतर्देशायामप्येवं सिंहशस्थितचंद्रचनितोदरोगोप
श्रांतये चंद्रप्रीतये प्रागुतां जपहोमादिकं कुर्यात् तथा च षष्ठस्थानस्थिते चंद्रे येवं अथ शुक्रांतर्देशवर्त्तिभास्कारजनितोदरोगोपशमाय पूर्ववद्भानुप्रीतये जपहोमादनादि
कं कुर्यात् तेनोपशान्तिर्भवतीति अथ वासीविपाकमाह ब्रह्मवित्तुमेहश्चराणां मुतमभावेन भेदसाधयति सज्जद्व्यधिगात्मवति तेष्वांतये कृष्टाति कृष्टां चंद्रायणानि
कुर्यात् मेहश्चरस्य सहस्रकालशुभिषेकं कुर्यात् उच्चत्रेधेत् च मयुतं जपेत् याते रुद्रसूक्तेन च रुद्रताभ्यामथोत्तरसहस्रं जुहुयात् मधुघृतं जुतं हिरण्यं च दद्यात्

५६ चः धर्मनिश्चयार्थं स्वाभितानि युक्तसुखीयव्ययमाचरतः प्राद्वि वाक्यमंत्रिणो वाजलोदरित्वं तस्य प्रायश्चित्तं मासत्रयं पयोदृतं शतव्राह्मणं भोजनं च कायेत् पश्य पुण्ये
 तं उदरव्याधियुक्तस्य भवेद्भयं गतामि चांद्रायणत्रयं कुर्यात् तस्य पापस्य शान्तये इति ५६ हरिणी धंदो व्यस्ति तल्लक्षणां यथा सुमुखलघुवोपंचश्रव्यास्ततोदशमांतिकस्त
 दनुललितालायेवर्णोपियोत्रिषतुर्दशे प्रभवति पुनर्यत्रोपांत्यः स्फुटत्वात् एकं कणोपतिरपि सैव देहैः स्फुटाहाणीति सा १८५ इति हरिणीस्तोपदग्निगोदाचिकित्सा
 प्रथमोऽथ गतीकारमाह कटुभद्रं कटुभद्रं च भूमिपिचुमंदं च अनयोः ससाहाराः कटुभद्रं भूमिपिचुमंदं च अनयोः काथः अथेत्यनंतरं असरदारु विश्वमित्यत्रापि समाहारद्वंद्वः
 एतयोः पिच्छाथः अथेत्यनंतरं दारुगुडं चैतद्वयस्यापि काथः अखिलशोथगदं विनिवारयति विनाशयति च पुनः केवलं शिलाजतुकं त्रिफलारसेन पोतं चेत्तर्हि अखिलशोथगो
 कटुभद्रं भूमिपिचुमंदं मथामदारु विश्वमथदारुगुडं विनिवारयत्यखिलशोथगदं त्रिफलारसेन च शिलाजतुकं १८६ शितमूलदारु
 रजनीदहनां मृतवल्लीगुडशिवा सहितं सुरदारु विश्वमृगुजासलिलं सुदरांघ्रिहस्तमुखशोथहरम् १८७ दं विनिवारयतीत्यन्वयः कटुभ
 द्रं शुंदी भूमिपिचुमंदं भूनिवं चिपयता इति लोके अथ भूनिवोभ्रं पत्रैर्गिरौ समासुवर्णपुष्पात्तणके इति असरदारुः देवदारुः विश्वं शुंदीदारुः देवदारुः गुडः प्रसिद्धः
 शिलाजतुप्रसिद्धः त्रिफला शिवामलविभीतकी इति इदं प्रसिद्धाक्षरद्वंद्वः १८७ अथ शोथेकाथमाह शितमूलं शितमूलदारु रजनीदहनां मृतवल्लीगुडशि
 वा सहितं सुरदारु विश्वमृगुजासलिलं कषायं हीति निश्चयेन उदरांघ्रिहस्तमुखशोथहरं नाशकारं स्यादित्यन्वयः उदरं च अंग्रीच हस्तौ च मुखं च णोषां समाहारः उदरां
 घ्रिहस्तमुखं उदरांघ्रिच हस्तमुखस्य शोथं उदरांघ्रिहस्तिमुखशोथमिति शितमूलतालपर्णी मुशली इति लोके मुशली तणका कंदो मृदुः कृष्णसदादिमासूक्ष्मच्छदः
 श्रेति दारु रजनी दारुनिशादारुहलदी इति भाषायां दार्वी कुठजवापत्रैरंकोदसदृशैर्गिरौ क्षीरणी चेति दहनश्रित्रकः चीता इति लोके अथ वल्ली गुडची गुडः इत्युवि

कारः शिवाहरीश्वरी सुरदारुः देवदारुः विश्वंशुंदी भृगुजाभार्गी भार्गी इति भावाः इदमपि प्रमिताक्षराधंदः १११ अथ शोथेलेपमाह कुर्षिति यदि शोथधंदं
 यमिहंतुमना चेत्तर्हि शितजटासहितं शिशुसर्षपमहौषधकैः लेपनं कुरु अथवा कृत्स्नमृत्तिलमनुष्करजलेपनं कुर्वित्यन्वयः शितजटातालमूली मुशली इति लोके
 शिशुः शोभांजनः सहिजन इति भाषायां सर्षपः सिद्धार्थकः सस्मो इति लोके महौषधं शुंदी कृत्स्नमृत्तिलमनुष्करजलेपनं कुरु इति लोके तिलप्रसिद्धं अरुण्यारोमस्नातः मिला
 वा इति भाषायां भस्मातपादपः लक्ष्मिलौल्यारुणापुष्पकाः तनुक्षीरे च तात्स्यष्टौ विंशतिफलं मधुः यवोदरं विकटुकं तद्वै स्थिसमं पृथक् कृत्वा परिणेतुं तस्मिन् स्थे चारु
 प्यारता इति अथ शोथस्य निदानमाह अतिक्षारम्लदुष्टांशुविरुद्धदधिमृद्नैः पंचकर्मापचारैः जायते खपथुर्दृष्टं शिरातनुत्वं वै वरण्यं रोमांचोत्सधगौरवं उष्मानव

कुरु लेपनं शितजटासहितं सह शिशुसर्षपमहौषधकैः यदि शोथधंदं यमिहंतुमना अथवा कृत्स्नमृत्तिलमनुष्करजं ११२ इति शोथचिकित्सा

स्थितत्वं च सर्वस्वपथुलक्षणं नवधा तैः प्रथमं द्वंद्वं सर्वेषां तादृषाश्च सः प्राणु कर्लिंगौ श्लेष्मा यथा हेतुः सघातजः विषजः सविषः प्राणिदंशमृत्रमलादिभिः उर्ध्वगामीनां पद्मा मधो
 गामी मुखान्त्रियं अभयं वृत्ति संजातः शोथो हंति न संसयः घर्दिः स्वासोरुचिरुत्सा ज्वरातीसार एव च सप्तकोयं स दौर्बल्यः शोफोपद्रवसंग्रह इति अथ ज्योतिः प्रास्वाभिप्राये
 णो हेतुं प्रतीकारं चाह नीचस्थगुरुदशायां प्राप्ते स्वपथुगुरुहकारोपाश्रितदर्शनात् तत्प्रतीकारार्थं दृढस्य ति प्रीतये जपहोमादिकं सकलमपि विधाय अथ कर्मविपाकमाह
 मार्गपुलिने पर्वताग्रे कपित्थच्छायायां मधिरुद्रविष्टं मुचति तन्नृषीयति आचमेति वासश्च पथुभिः पीड्यमानो निशंमूर्धितो भवति पर्वताग्रं नदीतीरं घातयामा रुह्यवानाः मूत्रं
 पुरीषमथ वायुः प्रयच्छति वाजलैश्च पथुः व्याधिमाप्नोति इत्याह भगवांश्चिबः स इन्द्रो विस्मयत्येत्यादिना ऐतरेयतन्त्रयं जपं द्रव्यान् शोपो हि शमयो भुवश्च येन चरुहता भा
 महेतरेयुतशतमयं होमं कुर्यात् अन्नव्याधिगुरुलघुभावप्रायश्चित्तगुरुलघुभावौ दृष्टव्यौ इति अथ दानं ग्रंथवाहुल्यभवाच्च लिखितं इदमपि प्रमिताक्षराधंदोति इति शोथचिकित्सा

५९ एतः च अथांडहृदि प्रतीकारमाह सुरभीति यदि कथितं सततं सुरभीजलाब्धिं फलत्रितयं पिवेत् हि कफमुद्रवं मुष्कभवं शोथविनिहंति अथायनं तां सवचसर्षपकैः लेपनं कुरुर्वित्थ
 न्वयः सुरभीजलंगो मूत्रं फलत्रितयं शिवामलविभीतकं वयोप्रांथसर्षपसिद्धार्थं अथांडहृदि निदानमाह वायुर्वेद्यणतः प्राप्य मुष्को मुष्कधराशिरः प्रपीड्य हृदि कुरुते मुष्कयोः
 सुकुण्डकः दोषसमेदो मूत्रात्रैः स्यादः सप्तधा स्यात् रुदाह कंडू दोषेभ्योऽस्यात् कल्लस्योऽरभायमेदो जः कफवत्सौत्रो धते स्रग्धंत्रणात् स्रज्जदिति अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हि
 हेतुमाह यदुक्तं अर्जितास्य रूपातो मीनस्यैकं दर्शनात् कुलटाभा र्यद्विषीष्टद्विनिष्टे बहुदृष्टो दर्पिद्रश्च अलिनिमित्तो भवति पुमान् प्रहीत शीलः स्याद्भाद शुक्रपूजादिकं विधिव
 अत्राघशब्देन मुष्कपण्डादयोऽपि रस्यंते तदुपशान्तये सूर्यप्रीतये कर्कटांशस्थितमंगलावलोकि तसूर्यजनित मुष्करोपपन्नं तये पूर्ववत् अपहोमादिकं कुर्यात् अथ वार्त्सवि
 सुरभीजलान्युत फलत्रितयं कथितं पिवेत् कफमरुत्प्रभवं विनिहंति मुष्कभवं शोथमथ कुरु लेपनं सवचसर्षपकैः १५३ सुवहास्य तारुवुक
 गोक्षुरकं सवलं सयष्टि सतमंत्रभवं रुवुतैल युगधरति हृदि मिहा विलमुल्लसि च्छति मनीषिणाः १५४ इति अंडहृदि चिकित्सा
 पाकमाह तत्प्रतीकारं च तत्र सुषाणासीवातवृषणः अस्य प्रायश्चित्तं आत्मजः स्त्रियं सकृदज्ञानाकृत्वा चांद्रायणद्वयात् शुद्धेन अज्ञानात् सकृदनेकं च दृष्ट्वा बुद्धिः आसमि
 तां बुद्धिपूर्वकं हृदि नेपुणाचात्र प्रिं प्रविश्य सतं शुद्धेन अपरं च अपराधमंतरेण यो नृपो भृत्यादीनां हस्तपादादीन धेदयति तस्य मुष्कमग्निना दाधति वशिलापिष्टमिव सप्रण
 आयते पश्चाद्दुधिं सवति नुद्रसंहिता सद्यो तत्सहस्रं जपेत् यतिचांद्रायणं कुर्यात् गांदघातं जायते वषणो यस्य व्याधिः पसदाहणः जपित्वा दशसाहस्रीं मुखे तनुं संहिता
 मिति इदमपि प्रमिताक्षरा र्थदः इत्यंडहृदि चिकित्सा १५५ अथांडहृदि प्रतीकारमाह सुवेदेति सुवहास्य तारुवुक गोक्षुरकं सतं कषायं कथं भूतं सवलं व लया सहितं पुनः
 कथं भूतं सयष्टि यष्ट्या सहितं पुनः कथं भूतं सतं रुवुतैल युक्तं अखिलं अत्र भवं हृदि हरति एतत्सतं मनीषिणा उत्समि च्छति उत्सं दियमिति तात्पर्यं मनीषिणां गणः

विहिम

मनोविगणः समुद्र इत्यर्थः सुवहा एला रामन इतिलोके अथवा गुडूची रूपकं वातारिः एरंड इतिलोके गोक्षुरः त्रिकंटकः गोक्षुर इतिलोके वलावट्यालकः वलियार इति
 लोके यदीमधुयदीमुलेदी इतिलोके अथस्यामधुकुं गुल्मः स्वल्पमिच्छरपुंखवत् किंचिन्महा दीर्घपत्रोत्पल्यलासमिदस्यवतिरुवुतैलं एरंडतैलं अथात्रवेहे निर्दि
 नमाह आघातादेर्महोत्प्लावुद्रां वंक्षणादधः अत्ररहिं करोत्यंतयत्रणात्स्यात्सहाधनिः वंक्षणाग्रंथिमलिनः करोतिरधमनामकमिति अथज्योतिशास्त्राभिप्रायेणहेतु
 रंडरहिं वदोऽधः कर्मविपाकमन्यदाह पूर्वजन्मनिवेश्यहंतुरं त्राणि पित्रानि भवन्ति पश्चाच्छीतज्वरमनंतमुलज्वरमपानदाहश्च भवति शतवाह्यणमोजनं च उद्यन्नघातचम
 पुत्रत्रयं जपेत् यो हृदसूतिनमधुधताम्यां जुहुयात् अथवा महिषीं प्रतिरूपां दद्यात् इति लोपश्च प्रणीडयां वस्त्रप्रोक्तं च यज्ञविप्रकरो मर्त्यजायते चात्ररहिमिति इदं

विधिवासरामदशिवादहनामययावशूकरुचकेभकणाः कुटुमद्रूपौष्करविडेः सहिताः कृतचूर्णमेतदनुवारिपिवेत् ११५ हृदयामयाविलज
 शूलगदापहभुक्तमेतदपिभिर्नृथामेवत्कदापिनिपतंवचनंप्रमिताक्षरेवमहतांमुखगीः ११६ मपिप्रमिताक्षरायंदः इत्यंडांनरहिचिकित्सा
 अथहृद्रोगोत्पत्तिमाह विधिनेति सरामदशिवादहनामययावशूकरुचकेभकणाः कुटुमद्रूपौष्करविडेः सहिता एषामौषधानां विधिनायत्नेन कृतं एतच्चूर्णं यदि अनुवारिवारिणा सह
 पिवेत् तर्हि हृदयामयाविलजशूलगदापहं भवति चपुनः एतच्चूर्णं कदापि वृथानभवेदिति त्रयिभिः नियतं निश्चितं वचनं उक्तं अत्रहेतुः महतांमुखगीः वारीप्रमिताक्षरा
 इव भवति हृदयस्य आमयं हृदयामयः अखिलाजातं अखिलजं अखिलजं चतश्चूलं च अखिलजशूलं अखिलजशूलमेवमाहः अखिलजशूलगदः हृदयामयश्च अखिलज
 शूलगदश्चतौ हृदयामयाविलजशूलगदौ हृदयांमखिलजगदयोः अपहं हृदयामयाविलजशूलगदापहं नाशकारमित्यर्थः समदोहिगुः शिवाहरीतकीदहनश्चित्रकश्च
 मयः कुमूं यावशूकयवक्षारः नुचकं कसलवणं इभकणा गजपिण्डीकोटुमद्रूपौ विडेः क्षारलवणं एषो नो न इति भाषायां अथहृद्रोगस्य निदानमाह इषपित्पारसं

काविसुत्रांतोकोयलइतिलोकेइदमपिमल्लिकाशंदः १५८ अथांडमालायाःप्रतीकारमाह द्वेपलेति अर्थवसाद्विभक्तिर्विषा लोमःअत्रषष्ठ्यर्थपंचमीतदेवविरणोति
योमनुष्यःइहवसंसारेअलंबुषाभवादसात्कीर्यःअलंबुषाभवस्यास्य द्वेपलेपिवेत्कथंभूतइमातमंडमालिकापचीप्रणाशहेतुकारकाचपुनःकांचनारवत्कलंतंदुलोदकेनपेष्यपि
शामाक्षिकेनक्षेत्रिणीपीतएवअथवासाक्षिकेनमरुशाकएवमूलवारिपीतयेनपीतचचिराणशीप्रेणगंडमालिकांअपास्यदूरीकृत्वातेनभनुषेणउत्तमामल्लिकास्त्रेगिववध्यात
इत्यचयःअलंबुषामुंडीविष्यकमुंडीसुगंधिश्चकंदंवाभफलास्थिराएणकांगुलिसंपन्नेतिकांचनारोकोविदारःकंचनारइतिलोकेक्षौद्रंमधुशाकारश्चोवरुणःखना
मल्यातःचरुणपादपक्षितस्त्रिपर्णाभिमर्षियःशुक्रंरुदलोदत्तपलतुल्यफलःसुमेकषायश्चेतश्चेतिअथगलगंडस्यनिदानमाह निवद्धस्वपथुर्व्यस्यमुष्कवल्लंतंवेतगलि

द्वेपलेपिवेदलंबुषाभवादसादिहैवगंडमालिकापचीप्रणाशहेतुकारकाच १५९ कांचनारवत्कलंतंदुलोदकेनपेष्य शाकएवमूलवारिपीत
मेवमाक्षिकेन २०० येनपीतमेतदेववध्यतेचिरेणतेनगंडमालिकामयास्यमल्लिकास्त्रगुत्तमेव २०१ इतिमल्लिकाशंदोपदर्शितगंडमालाचिकित्स

ला महावायदिवाहस्रोगलगंडंविनिर्दिशेत्वातंकफश्चापिगलेप्रदुष्टोमन्यसमाश्रित्यतथैवमेदःकरोतिगंडंक्रमशःखलिंसाणामाचिंतंतंगलगंडमाहुरितिअथगलगंडगंडमाला
याःनिदानमाहवर्कधुकोमलकप्रमाणैःकक्षांसमन्यागलुवंक्षणेभुमेदःकफाभ्यामिरमंदणकैःस्याद्वेगंडमालावदुभित्तुगंडैःतेग्रंथयःकेचिदवाप्राणावाःखवंतिनस्यतिभवंतिवा
न्येकालानुवहंचिसमादधातिहैवापचीतिप्रवर्दतिकेचिदितिअथगलगंडगंडमालाभांज्योतिःशास्त्राभिप्रायेणहेतुमाह तत्प्रतीकारंअडिदराक्षिरोगैःक्षितिपतिनावदनादि
मित्तनःशुक्रादशायांस्वयंविचरतिनूनंभवेत्पुत्रुषःशुक्रांतर्वर्तमानसूर्यजनितगलगंडगंडमालोपशांतयेशुक्रोक्तजपादिकंकुर्यात्अथकर्मविषयकमाह गुरुद्वेषीपर
चित्तदुःखकारीगुलीगंडमालाबाधमाज्जायतेएतद्वाहस्यत्यभिहितंअपंचब्राह्मणयद्योपाध्यायतोशिष्यश्चगुरुंवंचयित्वायोपदेतिसगंडमालीभवतिअस्यप्रायश्चित्तं

६१ अनुकनिःकृतिवाच्यं शृणु कुर्यात् मंडमालागलंगंडोपशान्तये पुरुषशूतं छंदोऋषिदेवानि ज्ञात्वेव जपेत् यतः अविदित्वा ऋषिछंदोदेवतं यजमेव च यो ध्यापयेद्य
 जेहापि पापीयान् जायते तु स इति वचनात् मस्त्रिकाद्येदप्यस्ति तज्ज्ञानं यथा हारणां चक्रमेण मंडितात्तु वर्णक नवर्णिता कृत्तुहलेन मस्त्रिकेति पिंगलेन इति वाणी भूषणे
 २०१ अथावुदलेपमाह ग्रहभूमेति २६ धूमलो ध्रुवपत्रकुनटी निशा पता ओषधः समसमभागं गृहीत्वा वरेण श्रेष्ठेन मास्त्रिकेन एनं लेपं अर्चुदे अर्चुदे रो कुर्वितान्वयः
 २६ धूमः कारुं आ इति लोके लोधाः निरीठः लोधा इति भाषायां शैले महीरुहो रो ओषट् दीर्घदलः सितः क्षीरकषायो हेमं ताव्याप्तः श्वेततैः सुसंयोज्यैः सतस्य सोपको
 गीतरत्नत्विति पत्रंतमालपत्रं तेजपात इति भाषायां कुनटी मन्त्रशिलादिव्योषधमेतसिल इति लोके तथा हि नैपाली कुनटी गोला शिलादिव्योषधिः स्रुतेति धर्मिष्ठः तालस्यै
 व मेदोऽस्ति मनो गुप्ता तदंतरं तालकं त्वति पीतस्याद्देवतमनः सिलेति भावमिथः धातुर्नैपाली रत्नालं पीतवर्णकमित्यत्रापि मनः शिलानिधाप्रोक्ता स्यामां गी कणवीरका

२६ धूमलो ध्रुवपत्रकुनटी निशाः समसमत्रकुहलेपमर्चुद एनमपि मास्त्रिकेन वरेण २०२ इत्यवुदचिकित्सा

खंडाणां च तित्तुं विविच्य परिकथ्यते स्यात्तस्यैव सौगं राचभा राट्वा स्यामि कामताते जस्त्रिनी च निर्गोराता म्वाभा कणवीरका चूर्णं भणति रत्नां गी सभा खंडपूर्वकेति वाभट्टः निशा
 हस्त्रि अथ्यं अथ्यवुद निदानमाह ग्रंथिकुत्राप्यणकोपे दोषस्तुड्जां समेदसा स एवणकोवुदः स्यात्तद्वत् षोडशमुहः स्वेदिति अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह तत्र
 तीकां च मूर्ध्नि शोणितदोषः शास्त्राद्येदोषेण आपि पिता समलो दोषरभिधुतो मानवो भवति अथ भौमदशा जनितावुद्व्रणप्रतीकाराय भौमप्रीतये पूर्वोक्तमेव सकलं कुर्यात्
 तेनोपशान्तिर्भवति अथ कर्माविपाकमाह पूर्वजन्मनि विधवा सार्धं समालो रत्तावुदमान भवति विधवा गमने नित्यं रत्तावुदी भवेन्नरः नारदीयवचनात् रत्तावुदी नः कु
 र्यात्प्रायश्चित्तप्रशान्तये इति वचनात् कृष्णाति कृष्णं चांशयणानि समस्तानि क्लृप्तानि वा पुरुलघुभावेन वापेक्षया समाचरेत् सुवर्णं दद्यात् ब्राह्मणभोजनं कारयेत् विभ
 वापेक्षया इति रत्तावुदे हरणे इत्यवुदचिकित्सा तामरछंदः २०२

अथविद्विधिप्रतीकारमाह शितमूलमिति शितमूलं शतजवाजिलंकाषायं पीतं सति शेषः बहुदोषविद्विधिहरिभवति च पुनः इहैव इह विद्विधिप्रोपुनरेव रूपमिति जलो
 कामिः रुधिरसुते सति अतः परं किं कितपिनेत्यर्थः शितमूलं पुनर्नवागदापुनैता इतिलोके पुनर्नवाप्रसिद्धास्तु पूर्वाभूत्याप्यधारणा अन्वावादेदलाभूत्या विषयपरं संचिता पुन
 र्नवापुनदलाभूत्या चोद्भूताः पूर्वाभूत्याप्यधारणासुमाहेतास्यासामहाराणेतिकामभटाचार्यः लवपत्राभवेद्भूतपत्रस्तु लवः सदापि स्त्रीणवस्त्रीत्यादिशतपुष्पापुनर्नवेति केचित्
 सेतुशकवृद्धः बहूणा इतिलोके अस्य परीक्षापूर्वकाजिज्ञा अथविद्विधेर्निदानमाह त्वग्रातामांसमदं सिप्रद्व्याप्तिसमाश्रितादोषाः शोफं शनेधिरंजनयं सुखिताभयं महाशूलं
 रुजावंतं शृत्तं वाप्यथवायतं सविद्विधिरिति व्यातिविज्ञेयः धिद्विधश्च सः पृथदोषैरुक्तैश्च धेतवान् ह्यजातथावसा मपितुतेषां तुल्यतां संप्रवक्ष्यते मुष्टिप्रमाणमुल्मस्तु विद्विधस्तुत

शितमूलसेतुजवारिवहुदोषविद्विधिहारी विमत्सुते पुनरेव रुधिररूपाभिरिहैव २०३ पितुमंदपत्रघृतेन तिलदारुणान्नियुतेन मधुना समं मधु
 केन लेपनं कुरुतेन २०४ व्रणशोधरोपणकेन काहपापुनरेव व्रणमाशुदीर्यत एव वरतो मरेन सैथैव २०५

तत्प्रागुक्तं तिष्ठति दोषैस्ते विद्विधमिति शोणिते विद्विधिः पच्यते तस्माद्गुल्माख्यानविपच्यते आभ्यानवद्भुनिसंदर्ष्टि हिक्काद्व्यावितं रजास्त्राससमायुक्तं विद्विधिनिशयेन्नरमिति अथ
 ज्योतिः प्रोक्तामिप्रोयेण हितुमाह तत्प्रातीकारं च मध्ये पापग्रहयोश्चंद्रमदनस्थिते र्कजे जंतौ स्वाक्षरं यन्विद्विधिभिर्गुल्मह्रीहादिपीडितः स नरः अथ पापग्रहदशांतवतमा
 नवेंद्रजनिता विद्विधिरोगप्रतीकाराय चंद्रप्रीतये पूर्वातं सकलमेव विधानं विधेयं अथ कर्मविपाका माह विद्विधिः फलहर्ता स्यात् मनुष्याग्राहणस्य त्वति अस्य प्रायश्चित्तं वीरमि
 हावलोकेने यथात्तमा मदानं कुर्यात्तिनोपशमयति तया ग्रंथवाहल्यनोक्तमिति इदमपि तो मारुतः २०३ इति विद्विधिविकित्ता २०३ अथ व्रणं गहपितुमंदेति
 पितुमंदपत्रघृतेन व्रणलेपनं कुरु कथं भूतेन तिलदारुणान्नियुतेन पुनः व्रणशोधरोपणकेन मधुना समं मधुकेन पुनरेव कनकाक्वयाश्रयधेन लेपनं कुरु एतल्लेपनं व्रण
 आशुदीर्यत एव यथा वरतो मरेण तो मरात्यायुधेन व्रणं आशुदीर्यत एव तथैवेत्यन्वयः पितुमंदोर्निवः तिलप्रसिद्धः दारुणान्नः दारुहृदि मधुद्वौद्रं मधुकं मधुयथी ॥

२. चं मुले दो इति लोको कनका लुया हे मक्षीरी चोष इति भाषायां तद्यथा वरुणी है मवती है मक्षीरी हि मावती इत्यमरः हे मवर्णा पयस्तस्य हि मवद्गु मिसंभवास्तानां गजिद्विवाकारात् न
 ६२ लं चो क उ च्ये इति इदं मणितो मरछंदः अस्मलक्षणमाह प्रथमं कं विनिधाय जगण ह्यं च निधाय कुरुतो मां सुख कारिण पणिराजवक्रा विहो रि २०४ २०४ २०५
 अथ व्रणे मलह समाह तुल्यकमिति तुल्यकं च पुनः स्फटिकं सौधं वसौ भाग्य चूर्णी चं कथं भूतं चूर्णी धष्टं खदिर संयुतं कं पि ल्लं चं मे ह दी च मुस्ता च इति सर्वसमं चूर्णी कथं भूतं गो घृत
 संयुतं ग्रहीतेति शेषः किं चिजल लुतं व्रणि नां व्रणे लेपयेदित्यन्वयः तत्फलं चाह वेषण निमित्तं स्नास्त्रिपात ये व्रणाः न प्ररोहंति न पूर्येति ये च बहु पूयवहाः अन्ये उपदंश भवा ये च ता
 न् सर्वान् विनिवारयेत् नाशं करोतीत्यन्वयः वैद्य इति शेषः तुल्यकं शिपंडी च त्रितिया इति लोके तावत्किं दंतु कृतं कं तुल्यमिति स्फटिकं च कं विहो रि इति भाषायां सौधं चूर्णी चूर्णा

तुल्यकं स्फटिकं सौधं चूर्णी सौभाग्यमेव च भष्टं खदिर संयुतं कं पि ल्लं मे ह दी ति व २०६ मुस्ता चेति समं सर्वं चूर्णी गो घृत संयुतं किं चिजल लुतं लेपं

लेपयेद् व्रणि वां व्रणे २०७ ये व्रणान् प्ररोहंति बहु पूयवहाश्च ये उपदंश भवाश्चान्ये तान् सर्वा विनिवारयेत् २०८

इति भाषायां चूर्णी स्तां वृत्तराग

कारो धारः सितास्मा शंख को वा पि द्वा भश्चूर्णीः सिता भवेदिति सौभाग्यं टंकं सुहा ग इति लोके खदिरा गायत्री कात्या इति लोके शमी दल सारुः शैलेऽ फल सस्यः कषाप
 कः खदिरा सौवम रोधः संस्थं सारं तदा ह्यं युज्यते तत्र रागार्थं तदभवे तु साधितः तद्दृष्टवल्क निर्या सोधनः शुष्को गुणोत्तरः सारादपि स योज्यो वा सारः खदिरा जीपि सु इति ।
 कं पि ल्लं रक्त चूर्णी कमी ला इति भाषायां मे ह दी खना स्ता प्रसिद्धा मुस्ता शंख धारः नाग सोथा इति लोके २०८ अथान्यद् व्रण प्रतीका समाह दूर्वा नीरेणेति दूर्वा नीरेण
 जलन कां पि ल्लं न नीरेण क षायेन वा सेन वा सों स हं वा दु ते लं व्रणं हंति नाशं करोति कथं भूतं तैलं दार्दी क लस मवित मित्यन्वयः दूर्वा गंड की दूव इति भाषायां कां पि ल्लं रक्त च
 र्णी दार्दी दाह हरि अथ व्रण स्थ निदान माह शरीरा गंतु मे देन रुद्धि धा गंतु दोष जं पां शस्त्रादि जं चात्र दोषै रूदाह गौरवं रत्ना स्त्रा वोरत्त येथा गंतु जंतु वषट्ति धं छिन्न मि

नष्टं विद्वं पिबितं पृथग्विपिपातांतर्भेदिसुखासर्वधर्मानघषणात् सशयं वं नराणां सवेदुदंचटचटधनितङ्कुरेनादरुहमोहरेकहिकापतानकः कस्यर्धदिसासकासपथा
 पातहनुग्रहाः शिरास्तंभोपसर्पश्चोपद्रवाषोडशरुहः सर्वैरैर्ग्रेणसाध्याप्योर्द्ध्वगतः सुखीति अथ ज्ञातिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह यथोक्तं जातके वणितांगस्त्रीलो
 लश्चैरः कांतः सुसंमतास्त्रीणां भौमशशांकसुरैर्यैरिष्येयं डरोषश्च मौमदशयामपित्रलो भवति दर्शनाच्चकौ मास्तरमाद्वंदे मालं कोरभूषितं प्राजं शूंसं प्राणागानं रूपां
 गं निरीक्षितो जीवः भूमुतशशिसुरगुरुसंघे प्राजनितप्राणवदनाविधाताय ग्रहत्रयपीतगे पूर्वोक्तमेव विधिं कुर्वीत अथ कर्मविषाकमाह जलाप्युद्धंधनादिनिमित्तेन यो मृ
 येत् स उदरव्रणी भवति गोद्वयंच दद्यात् पंचशब्दाह एभोजनंच कारयेत् दक्षिणांच दद्यात् तथाच अतिमानादति क्रोधादति लिहाद्र्यादपि यधमनिश्चयं जानन् अन्यथा

दूर्यर्नारिणसंसिद्धं कां पिबेन्नरसेन च कदुतैलं व्रणं हंति दार्वी कल्का समवितं २०५ इति तोसरुतोपदर्शितव्रणचिकित्सा प्रातः प्रातः पिव

तिमनुजो देवात्सालि सुरभिपयसा मुच्येद्वा श्रीपदमवरुजः साषोटंभः सुरभिसलिलात् २०६

करतेनरः स पूयशोणितवहाव्रणी भवति मानवः तच्छां
 तेयतुतत्प्रतीकारं प्रकुर्याच्च तिलप्रस्थदो भवति दर्भो ज्यतिलैः व्याहृतिभिरष्टात्तरसहस्रं जुहुयात् ब्राह्मणभोजनंच कारयेत् तथाच फलतश्कारस्याद्वाणी तथाच तिस्रं प्रा
 जादिवचः श्रावन्त्ययं भुक्ति सपित्तो देकातव्रणवान् भवति स्रष्टृश्रुतिश्च चंद्रायणनिकुर्यात् तथा विभवेतिलांश्च दद्यात् सर्पिर्मधुयुतं चाष्टोत्तरशतं होमं तदुक्तं मद्यसृजे
 द्र नविप्रैर्हर्षिषासधुसंयुतं जुहुयष्टोत्तरशतं यमप्रीत्यर्थं मेवेति इति तोसरुतोपदर्शितव्रणचिकित्सा २०५ अथ श्रीपदे प्रयोगाद्वयमाह प्रात इति यो मनुजः देवात्सालि सुरभिप
 यसा प्रातः प्रातः पिवति स पुरुषः श्रीभवरुजः मुच्यते वेति पक्षांतरं साषोटंभः सुरभिसलिलैः गोमूत्रैर्यदि पिवति तस्यापि श्रीपदमवरुजः मुच्येदित्यन्वयः देवात्सालि
 देवले एकावला घलि वास इति लोके द्वितीया अतिवला कंधी इति लोके सुखीपयः गोमूत्रं साषोटं स होडा इति भाष्यार्था हंसी छंदः २०० २०० २०० २००

६३. अथ श्रीपदलिपिमाह हेमैरडाविति हेमैरडो विशदकुसुमासिद्धार्थः शिषुविशदजटा एतैरौषधैर्लेपात् विरतिः पुमानविगतः रतिप्रीतिर्यस्य अतो विरतिः पुमान् पौग
 एश्रीपदभवहजः प्रजतिस्तु जतीत्यन्वयः हेमो धत्तः एडो वातारिः सिद्धार्थः सर्षपः शिषुः सौभाग्यजनः सहिजन इति लोके अथ श्रीपदस्य निदानमाह यः सज्ज्वरो वंश
 एजो भस्मार्तिः शोथो रणोपादगतः क्रमेण स श्रीपदः स्यात्कारणैर्नैव शिष्यो घृताशस्वपिकेचिदाहुरिति अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह अकुलीनो विकला
 गश्च जायते मनुजः सुखयोगानि स श्रीपदी कुजबुधभ्यामुन्देनैः सहितैः अथ मंगलबुधशुक्रोपजनित श्रीपदरोगवाधोपशान्तये हृत्त्रयप्रीतये यस्य यदुक्तं तत्प्राप्नुतामेव का
 र्त्तं अथ कर्म्मविणयमाह तत्पत्नीकां च स्वोन्नतस्त्राभिप्रायी स्यात् सेन्यां वा श्रीपदी भवितुं अथ शयश्चित्तं अमेचांद्रायणमिकं पयोव्रतमेकं वा कुर्यात् तदनु कल्पे सुवर्णदद्या

हेमैरडो विशदकुसुमासिद्धार्थः शिषुविसदजटा एतैर्लेपाद्ब्रजतिविरतिः पौगणश्रीपदभवहजः इति श्रीपदचिकित्सा २११ व्याघ्रं
 धात्रीकालितरुशिवा एतत्तुल्यः पुरइह भवेत् सपिर्षुका कृतशुभावटी दृष्टा वह्निं विमलमतिता २१२ दत्तानाडी व्रणगदमुदावर्ति शूलंगुद

जमपिचगुल्मं हन्यादियमपि भगंदरं दुष्टव्रणमुशमिनी २१३ इति नाडी व्रणचिकित्सा तत्पंचाशद्वाह्य एभोजनं कारयेदिति वचनादिति इदं म
 पिहंसी शब्दः इति श्रीपदचिकित्सा २११ अथ नाडी व्रणगदिका माह व्याघ्रमिति व्याघ्रं धात्रीकालितरुशिवा इह प्रयोगे एतत्तुल्यः पुरोपि भवेत् एतासामोषधीना
 मिति सपिर्षुका कृतशुभावटी विमलमतिता वैद्येन वह्निं दृष्ट्वा इयं दत्तानाडी व्रणगदं च पुनः उदाकर्त्तुं शूलंगुदं जमपिचगुल्मं च भगंदरं च हन्यात् कथं भूतावटी दृष्ट्वा
 एमुशमिनीत्यन्वयः व्याघ्रं श्रुंटी मरिचपिप्पली धात्री आमलकी कालितरुः भूता वा सोवहेडा इति लोके शिवाहरीकी पुरोगुगुलुः अथ नाडी व्रणस्य निदानमाह यः शोफ
 मान इति पक्वमुपैष्यति शोयो वा प्रणं प्रचुत्तुवमसाधु एते अभ्यंताग्रविशतिप्रविदार्यतस्स्थानानि पुनर्विहितानि ततः सप्रयः तस्यातिमात्रगमनादतिरिष्यते तु नाडी च ये हृदंति
 नमता तु नाडी नाडीनां गतिमन्विष्य शस्त्रेणात्मात्मकमिवित सर्वव्रणकमुकुर्यात् शोधनं रोपणं दिकमिति अथ ज्योतिशास्त्रानुसारेण हेतुकर्म्मविणयकं तच्छांतिं व्रणवद्भेद इति

इदं मपि हंसी शब्दः इति नाडी व्रणचिकित्सा २१३

अथशोणितोगेमंजिष्टादिद्याथमाह मंजिष्टेति मजिष्टाग्निःखदिरकदुकासूर्वादेतीकथंभूतादेतीकमिरिपुयुतावासेद्राहारजनियुगलंछिन्नारिष्टमरिचमगधात्रायंतीभूनियमन
 वराश्यामानंताकथंभूतानंतासहितजटिलापाटाजालीशुभशशिकलाएतासामोषधीनांयुतवायतेनकाथितंरुत्वाइतिशेषः औषधीपीतासतीजातावेकवचनमिति अभितःस
 र्वतः अखिलतनुगानकृत्तानरक्तोद्भवाद्गणानहन्त्यात्वंदूश्चित्रालसककिटिभंषामाविष्फोटकंवापितथाहन्त्यादित्यन्वयश्चित्राश्च अलसकश्चकिटिभश्चएतेषांसमा
 हारश्चित्रालसककिटिभंषामावविष्फोटकश्चअनयोसमाहारः पामाविष्फोटकमिति मंजिष्टात्तस्यः मंजीठइतिलोके अग्निःचित्रकः खदिरपक्षिहः कदुकाजिताकुटकीइ
 तिलोके मूर्ध्निमधुरसामोषफलीइतिभाषायांदंतीजयपालः जमालगोटाइतिलोके क्कमिरिपुर्विडंगः कासासिंहस्यः रुसाइतिलोके इन्द्राह्वाकुटजः कुरियाइतिलोके रजनि
 मंजिष्टाग्निःखदिरकदुकासूर्वादेतीकमिरिपुयुतावासेद्राहारजनियुगलं छिन्नारिष्टमरिचमगधा २१४ त्रायंतीभूनियमनवराश्यामानंतासहि

तजटिलापाटाजालीशुभशशिकलायुतवासर्वकाथितमभितः २१५ पीताहन्त्याद् खिलतनुगानकृत्तानरक्तोद्भवाद्गणान
 युगलं हरिद्रायुगलंकाहरीद्राहितोयादरुहरिद्रा छिन्नागुडूचीअरिष्टानिवः मरिचंशिशोःतंमिर्तइतिभाषायां मगधापिप्यली त्रायंतीत्रायमाणस्वनात्ताकश्चिद्देशे
 प्रसिद्धा त्रायमाणदुस्थिरमार्कवसंदलेति भूनियमनः भूनिंवः चिरायताइतिभाषायां वरात्रिफलाशिवामलविभीतकीप्रणामात्तद्वत् निशोतइतिलो केअनंताधन्वनः जवासा
 इतिभाषायां धन्वनः पादपोहतदलः कालफलीसुमइति जटिलामंसेजटामासीइतिलोके अथविधिन्नदलः स्तितः सुलोमशः मृदुः सुगंधिरुणकोदलतो गुणकोपिचेति
 पाटाश्रवणपाटीइतिलोके पाटानुष्णात्पापचेलीयस्थिरैवप्रता विनीविमुक्तातोपमापीलुफलामधुरपिष्टिलेति जालीकुलकं परतलइतिभाषायां खदुतिकेपटोल्योतुवली
 दुर्गंधयत्रके मृदुकांलीमशे स्तितगजिमद्यमधकांविंवानूनंफलमिति शशिकलाशशिलेलावकुचीइतिलोके लक्षपत्रामहार्थिन्योमहापुल्लीमालप्रभुः सेनाहतास्य

६४ चः भेदाविंशतिश्चतुर्गुणताडिकिर्गदवः हंसीधंदः इतिमंनिष्ठादिक्वाथः २१६ अथकंडूद्वंद्वसंगलेपमाह ईवेतिद्वयोपध्यापदुवरगदैर्लेपः तारसाशीघ्रेण
 कंडूद्वंद्वनहृदयंभूतान्कंडूद्वंद्वनयुगयुगभवान्कथंभूतैर्द्वयोपध्यापदुवरगदैर्दुध्रातैः संपुक्तैः पुनः कथंभूतैर्मथितसहितैः पुनः पिष्टैरित्यवयवः द्वयोश्चुभाद्वयइतिभाषायां पध्याहरीतकी
 पदुवाः संधय गदो कुष्टं कूटइतिलोको ददुघ्नः चक्रमर्दः वकवडइतिपमारइतिचलोके एतात्पुपुनदादयस्तेपिपट्टणके येवनामतः किंविमिताभाः सायास्तुजेवायश्चासया
 स्यात् मिमिमथितंतत्रां इदमपिहंसीधंदः २१७ अथश्वित्रेलेपमाह लेपइति श्वित्रेश्वित्रेणिकलितरुभक्तैर्लंकल्लोरागतमण्यलेपः श्वित्रंरुग्माशीघ्रेणहरतिचपुनःतद्वत्
 तथैवशितगिरिकर्णिकालिप्तासतीश्वित्रंहरतीत्यवयवः कलितरुः कलिदुमः वेहेडाइतिलोके रुल्लोराः रुल्ल सर्पः शितगिरिकर्णिकास्त्रितापान्निताविशुक्रांताइतिकोयलइति

कंडूश्वित्रालसककिटिभंयमाविष्णोटकामपितथा २१६ इतिमंनिष्ठादिक्वाथः द्वयोपध्यापदुवरगदैर्दुध्रातैर्मथितसहितैः पिष्टैर्लेपोहरतितारसा
 कंडूद्वंद्वनयुगयुगभवान् २१७ लेपश्वित्रेकलितरुभक्तैर्लंकल्लोरागतमण्य तद्वत्श्वित्राचशितगिरिकर्णिकाश्वित्रंहरतितारसा २१८
 फाल्गुदुलकजनितसलिलात्पातघुतवाचगुडसहितात् ज्यात्स्नाश्वित्रंदयतिवपुषोहंसीनीरात्ययद्वतरां २१९ इतिहंसीष्टतोपदर्शितिकुष्टमि
 चलोके एतावल्लीजातीदलाशंविफलागेनिमुमास्थिसितासितसुमेनिति इदमपिहंसीधंदः २१८ अथश्वेतकुष्ठेकाथमाह फाल्गुदुरिति गुडसहितात्फाल्गु
 दुलकजनितसलिलात्काथाघुतवापीतघोत्पत्ताज्यात्स्नातेजः श्रोत्रेभ्यजनिततेजः सावपुषः सकाशातश्चित्रंशुतरांश्रुतिश्रयेनदयतिविवेचयति कमिनहंसीनीरात्ययद्वदुग्धमि
 वेतनवयः विनापिप्रत्यर्पपूर्वजापदपोर्लोपः तेनप्रत्यर्पेपिप्रकृतिभावस्यपूर्वपदस्यसुइत्यल्लोपः भामासत्यासत्यभामेतिवत् फाल्गुदुः मलपूर्यष्टशः कदंवरइतिलोको व टसं
 कीर्णदीर्घातिवर्कशः श्रदनाफलैः सोदुवैः सुमैः क्षीरिणवपगाकोटरदुमइति अथश्वित्रसनिदानमाह विरह्वाहार्दुः कर्मपंतकर्मपवारतः स्त्रीमघमासदुष्टांयु

सर्वेषां कुशसंभवं वा पातालपुष्पकोत्पत्तदुष्टरिद्रियवेष्टतं पंगुल्यावलीकोप्यं वमहो कृष्टातिश्रित्वा कापालं वातवद्रूपं पितादौ दुर्वरस्त्ववत् कपासितं मंडलं तैर्गुणवत्का
 ति कणसंभवं वा पातालपुष्पकोत्पत्तदुष्टरिद्रियवेष्टतं पंगुल्यावलीकोप्यं वमहो कृष्टातिश्रित्वा कापालं वातवद्रूपं पितादौ दुर्वरस्त्ववत् कपासितं मंडलं तैर्गुणवत्का
 तकिणवातकीटभं चर्मदलं तु देवणात्रचः यमापाण्योः काण्डुभिर्विचरिष्यन्तस्तु तैः तैर्मंडणैश्चैव कः षट्द्वारिणिपादिकासिधोर्द्विदेहकवर्षणादाल्यलाकप्रभूतक
 शताहरल्याहमिष्यादलसंभोणमंडलं एककुष्टमस्य खंडोपमं श्रित्ततः पामिति अथ कुष्टस्य ज्योतिः शस्त्रिमिषायेण हेतुमाह शिद्रस्थाराहुमार्त एडो कुष्टे रोगप्रदायकौ
 महाकुष्टकरास्ताभ्यां संगतो मालः पामिति अथ रं च कृत्स्नतामाभतीव हृशयुः क्षीणबांधवो दीनः भोम एहे सितदृष्टे दिवसकौ जायते कुष्टीति अथ कर्मविणक माह
 तत्र जैतुषातकः कुष्टे रोगो वस्त्रहारी स्तु कुष्टी भवति अत्रैव महित्यं वा तु कुष्टी गोवधकारक इति स्थितं ससांतपनं कुर्यात् योनरोहंति विजंद कुष्टे रोगी भवितुसः सांतपनं च कुर्यात्

गुणुलकीमगधात्रिफलापंचशशिनिमिरेवपलैः अक्षमितागुटिकारचितागुल्मभांदरशोथहरा हंति भगंदरमं वुयुतं मर्त्यकपालजमस्थिलिपे

<p>भावात्तह शंकर इति हंसी चंदोप्यस्ति यदि सातद्विहृद्भिर्भूमिहितायेयाहंसीकमलवदन इति अथ भांदरे साहं श्रीकेन गुटिकां लिप्याह गुणुलकमिति गुणुलकीमगधात्रिफलापंचशशिनिमिरेवपलैः परिमाणैः रचितागुटिकागुल्मभांदर शोषहरा भवति कथं भूतागुटिका अक्षमिता साहं गुमाषपरिमिते त्वर्थः च पुनः भगंदरे मर्त्यकपालजं अस्थं वुयुतं यदि लिपेत्तर्हि तदस्थि भगंदरं हंतीत्यत्रयः गुणुलः प्रसिद्धः मगधापिण्लीत्रिफलाशिवामलविभीतकी अथ भांदरस्थनिदानमाह गुदस्य हं गुलेक्षेत्रेण श्वते पिडिकार्तिष्ठतमिन्नाभगंदरो जैगोसुचपंचविधा मतः कटीकतस्त्रिनिहताददाधकं डूहजादयः भवन्ति पूर्वहृणाणि भविष्यति भगंदरेष्टवणासनयोर्मध्ये प्रदेशे भगउच्यते तमेव दारयत्यस्माभगंदर इति स्थितः वात</p>	<p>त २२० इति भगंदरनिकित्सा</p>	<p>तस्त्वक्षणं यथा मंदात्रांतां तपयति रहिता सालं कारे भवति इति हंसी एतौ पदं शित् कुष्टनिकित्सा</p>
--	--------------------------------	---

४. च. मृगपुरीषाणि क्रमयः शुक्रमेव भागंदराः खवंतथनाशयंतितुमाहृतमिति अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हतुमाह यथा तं जातं कुण्डभाण्डरोगैरभितप्तं दुःखो वितं निधन सर्वं
 ६५ भविर्हर्नैर्जनयतिकितवं सदा पुरुषं अपरं च ऐगैः भागंदराद्यैः संतप्तो बंधुभिः सह विह्वलः कर्कटकोटिजनाथे गौमेन निरीक्षिते विश्रुतः अन्यच्च दुष्टकंदूविकारैश्चक्षययोगाभां
 दैः गजादिवाहनभयं भवेच्छांतो बुधे प्रथमश्चोक्ते शिवाय परितत्त्वाद्दृष्टमस्थानस्थितशनिजनितभाण्डरवाधोपशान्तये शनिप्रीतये पूर्वातमेव जपहोमादिकं कुर्यात्
 अथ कर्मविषाकमाह तत्प्रतीकारं च पूर्वजननियोधर्मनिश्चयार्थं पुरोहितः प्रतिहित सद्रथं गृहीत्वा गणायकं धर्मनिश्चितिसभां दराणां गान्भयति तथैवातं वाराहपुरा
 णे योगहोत्रादिजोमाहात्रयुक्तो धर्मनिश्चये भाण्डरो भवेत्तस्य सधर्मावदतो सुखं सहिरण्यं वस्त्रधान्यान्तानि भूमिं वा हस्तेभ्यो भोजनं दद्यात् ततो गान्भयति दुष्टप्रणि

अश्वरिपूत्यजटांसजलापेण लिपिदुपदंशादं धीतमथ त्रिफलासलिलैर्घातुपदंशजडुःखमहो २२० नीत्वा शुद्धसिंदूदेवकशुभं मां
 जूफलैलाशुभं शालूकं करहाटकं च सुराण्यपत्रं तथा क्षौमि २२१ विल्वाहं खदिरं पुण्ड्रं तु लोहिकटो हृदि पतनार्थं पिचुमंद
 वाष्टतलतो गाढं त्रिभिर्वासरैः एतत्सप्तवटीकृतं मुनिदिनैः खदेतयो भक्तकंपथ्यं तत्किल हंति भोगपवनं कुक्ष्यांगसंगोद्भवम् २२२

नामप्ययं पदपुण्येयुक्तं आचार्यभार्यागसने भाण्डरयुतो भवतीति इति भाण्डरनिकिता २२० अथोपदंशप्रतीकारमाह अश्वरिति अश्वरिपूत्यजटांसजलापेण
 पिष्टा उपदंशादं लिपिं अथेत्पनंतरं त्रिफलासलिलैर्घातं सत् अहविनाश्वर्य उपदंशजडुःखं याति व्रजतीर्थः अश्वरिपुः हवमारकः कौतूहलिके त्रिफलाहारितव्यस्य
 श्री अथ भोगपवने गुटिका माह नीत्वेति शुद्धसिंदूदेवकशुभं च पुनः मां जूफलैलाशुभं शालूकं करहाटकं च तथा च सुराण्यपत्रं च एतत्सर्वमौषधं अक्षौमि तं नीत्वा च
 पुनः विल्वाहं अर्धपलं खदिरं नीत्वा पुण्ड्रं तु लोहिकटो हृदि पतनार्थं पिचुमंदकाष्टतलतः काष्टदंडतलेन त्रिभिर्वासरैः त्रिभिर्दिनैः गाढं वयास्या

तयमर्द्यततः चलोषपस्यप्रवर्धं कुर्यादित्याशयेनाह एतत्समवतीकृतमौषधं मुनिदिनेः ६६ दिनेः पयोभक्तं पञ्चपथिनसहस्रं दत्तं किं लेति निश्चयनतदौषधं कुम्ह्यं गृह्णात् इव
 भृगापवर्धं हंति कुम्ह्यं तास्त्री कुम्ह्यं कुम्ह्यं यः श्रं कुम्ह्यं कुम्ह्यं गृह्णात् स्रंगः कुम्ह्यं गृह्णात् स्रंगः कुम्ह्यं गृह्णात् स्रंगः कुम्ह्यं गृह्णात् स्रंगः कुम्ह्यं गृह्णात् स्रंगः
 शुद्धपादं देवकुशुमं लवंगं मांजूषालं खनालाप्रसिद्धं ऐलावृटिः लाङ्गीभाषायां शालुकं पुंडरीकमूलं काहाटकं आकस्त्रकं अकारकारहाडं तिलोकोमुखापत्रं तुलसीप
 ग्रंथदिप्रसिद्धमिति २२३ अथ भृगापवनेलेपमाह शुद्धेति शुद्धोसंद्रश्च फटिकां वमुत्तुत्यं च तिलोत्थैतलं च एतत्सर्वमौषधं तुलोहपात्रे निर्वस्य काष्ठेन अद्भिः जलेः सह

शुद्धोसंद्रश्च फटिकां वमुत्तुत्यं च तिलोत्थैतलं सममेतदद्भिः संमर्द्य गाढं किल भृगनीरे निर्वस्य काष्ठेन तुलोहपात्रे २२४ तां कजलीं लिंगं समस्त
 देहं व्रणेषु भृगानिलं संभवेषु अदौ व्रणान्ताप्य वनोत्पलमौलिं पेद्रणाः यां चिरेण नाशं २२५ इष्टिकां गर्भमुत्कीर्य मुष्णक्षारं निवेशयेत्
 तत्रास्त्रोपरिविष्टां गुणयेत्ताम्रपात्रिकां २२६ इष्टिकाधः शनैः कुर्याद्दहनं स्वल्पकाष्ठजं मुष्णक्षारं तदुद्दीयताम्रपात्रिप्रयाति च २२७ स्थां

गशीतं समुद्भूतं सर्वकार्येषु योजयेत् रतिकां मुष्णक्षारस्य श्वेतस्य खदिरस्य च २२८ गाढं संमर्द्यत किं लिति निश्चयन भृगनीरेः भृगाजसिपि
 गाढं संमर्द्य तां कजलीं लिंगं समस्त देहं व्रणेषु भृगानिलं संभवेषु व्रणेषु पिलिपित एतद्वैपेन व्रणः च विरेण शीघ्रं व्रणनाशं
 यां तीपत्य यः शुद्धोसंद्रः शुद्धपादः फटिकां सौगंधी फिटकरी इति लोको सौगंधी भूमिजः पांशुः क्षारः साकुंदकं च मुदितितुत्थं शिनिशीवं तृतीया इति लोको २२५ २२५
 अथ भृगापवने मुष्णक्षारपाकमाह इष्टिकेति इष्टिकां गर्भमुत्कीर्य इष्टिकामध्यं उत्कीर्य खननं कृत्वा तत्र मुर्तं मुष्णक्षारं निवेशयेत् त्रियेत् अस्त्रोपरि मुष्णक्षारोपरिविष्टां

५० वृचः उदरमिति विद्याधीतपित्तमथापि इति अथ ज्ञातिः शास्त्रमिष्येण हेतुमाह तत्प्रतीकारं च तथा च त्रिग्रहयोगे आदित्यशनिदेव्येः सहावस्थानमागतेः जन्मवाले यदा
यस्य जायते शीतपित्तवान् अथैकस्थमानुशनिशुक्रजनिता शीतपितादिप्रतीकाराय ग्रहत्रयप्रतीये पूर्ववत्तपद्मो मादिकं कुर्यात् अथ शीतपितास्त्रपित्तयोः कर्मनिपादहितावनुतो
पिच्छलापपमूलत्वात् प्रमेकतत्वात् नान्यथा वा कुर्याद्विषयं वदयात् आह एभोजनं च कारयेत् तेनोपशान्तिर्भवतीति सावती चंद्राः अथोदरशीतपित्तस्यान्यप्रतीकार
माह निवदलानीति निवदलानि द्यौश्चरितानि तथा आमलकैश्चरितानि एवंविधिनस्य हृधाप्रिश्य एका मुसारावती औषधीकतादेत् स्फोटकशीतसपित्तस
कंदूकमिकोठकफक्षतये भवति अथैरपि बहुभिः अगदेः रोषधैः किं स्वादिति शोभनं सारं सुसारं विद्यते यस्मिंस्तु सारवती एका यस्तु सारवती च एकमुसारवतीति सावती चंद्राः

निंबदलानिष्टौश्रितान्यामलकैश्चतथाविधिना स्फोटकशीतसपित्तसंकंडूक्रमिकोठकफक्षतये २३४ किंयहुमिखगदैर्बहुभा

प्रेक्ष्यह्नीकसुसारवती इति सारवती वृत्तोपदर्शितोपदंशशतपित्तकोष्ठचिकित्सा शर्कराक्षौद्रवर्ध्यामलान्यकतस्तुल्य

मेतस्मिह्दंलपितापहं शीततोयानुवाशीरमुलं पिवन्नेत्रमायुष्करं हन्ति वल्पादिकं २३५ तक्षणां वथा चेद्भगवन्निर्वाणं क्रमतः सादु

स्ततः गतः क्रमतः श्रीयशवंतं नृपप्रथिता सावती कविभिः कथिता इति सावती एतौ पदप्रितो पदं शीतपितकोटचिकित्सा अथाह्लपितप्रतीकारमाह शर्कराति
शर्कराक्षौद्रवर्था मलानि एकतः एकीकृत्य शीततो गन्धेन दौषधं लिहेत् शीते तोयं अनुपश्चाद्य सतधीत तोयुनुपिवेदिष्यनुषंगः वेति पक्षांतरे उल्लंघीरंदुग्धपिवेत् कथं भूतं
एतदौषधं अह्लपितापहं पुनः कथं भूतं नेत्रे नेत्रयोर्हितं पुनः आयुष्करं पुनः बल्यादिकं वलीपलितादिभिः ईक्ष्वचिह्नं हंतो लब्धः शर्करा उपलामिश्री इति भाषायां क्षौद्रं
मधु वरी घतावरी आमलं आमलकी अथाह्लपितस्य निदानमाह पित्तं त्वह्लादिदग्धं विरचितं पृथुगानह्लपितं तदिदं दौषैरुत्संघातु पृथुमपृथुगयप्रयशश्चिह्नमस्य

६५
 तित्तल्लोद्गारमूर्धाटडहचिकशतापीततावद्दि मांशमिति अथासज्ज्योतिःशास्त्राभिप्रायेणहेतुंकर्मविपाकंतशांतिंत्तशीतचित्तवद्देयं लक्ष्मीधारणंदः प्रथमपित्तचिकित्सा
 अथविसर्पविस्फोटकविषप्रतीकारमाह चंदनैलेति चंदनैलानिशायुमयष्टीशिरीषामयांभोजटाचक्रसर्पिष्कृतः लेपः एवेति निश्चयनविसर्पशोफप्रणान हंतिपुनः
 तदिषविस्फोटकश्चान् शयंहंतीत्यन्वयः चंदनसत्ररक्तचंदनं दृश्यते तथोक्तं तत्रांतरे कषायलेपयोप्रायोयुज्यते रक्तचंदनमिति वचनात् एलाएथीका लाङ्गी इति भाषायां
 निशायुमं हंतिद्रायुमं यष्टी मधुयष्टी मुलेठी इति लोके शिरीषः शुक्रदृक्षः शिरस इति भाषायां शिरीषो मृदुपुष्पश्च भंडीः संविनीफलः कपीतनः शुक्रातरुः श्यामवर्णाश्च
 कपियप्रतिध्वं तरिः तस्मिन् शोफं चाह शिरीषस्तस्मान्नीलपंक्तिपत्रोत्पन्नशंखिकाः तन्वायता विस्फुताश्च बीजं वमूलवद्दृढमिति आशयः कुष्ठं शंभोजटाघ्नं सुगंधिवाला तस्य

चंदनैलानिशायुमयष्टीशिरीषामयांभोजटाचक्रसर्पिष्कृतः लेपः एवात्र वीसर्पशोफप्रणान हंतितदिषविस्फोटकं दानयं २३६

शतधैतिनसंज्ञैकं लेपयेत्सर्पिषा सर्ववीसर्वरोगापहं इति विसर्पविस्फोटकविषचिकित्सा

स्वेड इति हि
 जटाचक्रंतगारं द्दमपिलक्ष्मीधारणंदः

अथार्हं ह्येकोनविसर्पगोलेपमाह सतधैतेनेति सतधैतेवसर्पिषा एतेन सह सज्जैकं लेपयेत् लेपं कुर्यात् कथं भूतं गौरिकं सर्ववीसर्पशोफापहं मित्यन्वयः गौरिकं प्रसिद्धं अथ
 विसर्पविस्फोटकयोर्निदानमाह अतिदाह रूजो रोगस्तान् रूचरतिर्मदोऽसुद्रप्रणविसर्पीः स्युः सर्वतः परिसर्पणादिति अग्निदाहादिविस्फोटाविस्फोटः सुमहार्जः प्रथमं दं
 समस्ते हो रस्त्विति विषोपमेति अथ विसर्पविस्फोटकयोगांतिका मरुकादीनां जातकाभिप्रायेण हेतुं तत्प्रतीकां चाह निधनस्थे दिवानाथे भुजेनावलोकि ते विसर्पिष्फोटो
 गायामायति तस्य जन्मानि अष्टमस्थानस्थितमंगलावलोकि तन्मानुजनितविसर्पीदिदोषशान्तये भानुपीतये यद्योक्तं जपहोम दानादिकं कुर्यात् अथ कर्मविपाकमाह
 अमेध्यादाता विसर्पमान् जायते समासं पणो रतमाचरेदिति इदमपिलक्ष्मीधारणंदः इति विसर्पविस्फोटकविषचिकित्सा २३७ २३६ २३६ २३६

६८ चः अथार्द्धं स्त्रोकोनस्त्रायुर्मेरीगलेपमाह शिग्रुमूलमिति शिग्रुमूलधैः स्त्रायुर्कलेपयेत् कथं भूतिः धैः आरनालान्वितः पुनः कथं भूतिः पषितः पिष्टः कसिप्रयेजनाय एतच्चतियेन
 ६९ रातं धीतित्वयः शिग्रुः सौभाग्यजनः सैहिजन इति लोके आरनालः कांजिकं अथार्द्धं स्त्रोकोनस्त्रायुर्मेरीगलेपमाह स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् सौभाग्यजनः सैहिजन इति लोके
 गायत् पीतं सत् प्राशुशीघ्रं स्त्रायुर्कनाशयेदित्यन्वयः सुभेदिं सौमियं स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत्
 शोचं कवाभिर्षयान् मित्रिकं मिथोतत्र स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत्
 शिग्रुमाचहेत् तस्याता शोचं शान्तिश्च पुनः स्थानांतरे भवेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत् स्त्रायुर्कलेपयेत्

शिग्रुमूलधैः आरनालान्वितः पषितः पिष्टः कसिप्रयेजनाय एतच्चतियेन २३८ इति स्त्रायुर्क
 निकित्सा व्यंगनाशंकारी क्षौद्रलिप्ता समंगाथवारोचना शोषणालेपिता अर्कदुग्धेन रात्रिं लिपेद्गंडयोः श्यामिकां नाशयेत् तत्क्षणात् किं बहु

सूर्यवेद्यमिति लक्ष्मीधरधैः २३९ इति स्त्रायुर्कविकित्सा २३९ अथ व्यंगनाशंकारी प्रतीकारमाह व्यंगेति क्षौद्रलिप्ता क्षौद्रलिप्ता समंगाथवारोचना शोषणालेपिता अर्कदुग्धेन रात्रिं लिपेद्गंडयोः श्यामिकां नाशयेत् तत्क्षणात् किं बहु
 रति अथ व्यंगनाशंकारी प्रतीकारमाह व्यंगेति क्षौद्रलिप्ता क्षौद्रलिप्ता समंगाथवारोचना शोषणालेपिता अर्कदुग्धेन रात्रिं लिपेद्गंडयोः श्यामिकां नाशयेत् तत्क्षणात् किं बहु
 पीतार्थः क्षौद्रं मधुसंगां मंजिष्ठा मंजीठ इति लोके ऊषणा पिप्पली रोचना मंगल्य द्रव्यं हेली इति भाषायां अर्कमंदाह मंदाह इति लोके श्वितोत्र
 केक्षेत्रे पुसिद्धकालकः काष्ठगर्भश्च भेदः श्वितार्कयोः सुमेः सुगंधिपुष्पश्चान्योर्क इति रात्री हरिद्रा २४ मपिलक्ष्मीधरधैः २३९ २३९ २३९

अथविदधीप्रतीकारमाह गुणुलमिति गुणुलं पारदं नागवल्लीसैर्युक्तितः मर्दयेत् तज्जलेति शेषः ६५ कज्जलीविद्रघौलेपयेत् कथंभूतेविद्रघौदुष्टगंभीरकक्षोद्वेदुष्टशालीरंभीरश्च
दुष्टगंभीरः दुष्टगंभीरश्चासौ कक्षोद्वेदुष्टगंभीरकक्षोद्वेदः तस्मिन्गंभीरमनवगहमित्यर्थः चपुनः कर्णभूलेपिलेपयेत् चपुनः अग्निनामव्रणं शांतयेन्निरत्यर्थमपिलेपयेत् अग्निनामव्रणं शं
गियापनिषा इतिलोके गुणुलुः प्रसिद्धः पारदं तेंद्रपाश इतिलोके नागवल्ली तांबूलं पान इति भाषायां तांबूलवल्ली सिद्धेव सौराष्ट्रमाधादिषु किंचिदुन्नतभूमागविपुलोऽजमध्यजा
स्थिरार्द्धगप्रतनुकाफलपुष्पविवर्जित इति इदमपिलक्ष्मीधारधंदः २४० अथेन्द्रलुप्रतीकारमाह नक्तमालेति नक्तमालाश्चमारानलोमालतीभिरीषधैः यदि तैलं

गुणुलं पारदं नागवल्लीसैर्मर्दयेद्युक्तितः कज्जलीलेपयेत् विद्रघौदुष्टगंभीरकक्षोद्वेदकर्णभूलेग्निनामव्रणं शांतये २४० नक्तमा
लाश्चमारानलोमालतीतैलमभिः पचेदिन्द्रलुप्तापहं क्षौद्रयुक्तं लिपेदिन्द्रलुप्तं महौघाः रसोहं तिलक्ष्मीधोरीन्यथा २४१ पल्गार्द्धशुक्ति
चूर्णस्य भगं कर्षप्रकल्पयेत् पारदं गंधकं तालंतुत्यकं विहरोजकं सौभाग्यं चेति टैकैकं चूर्णमाविकसर्पिषा घृजानं नाशयेद्द्विधौलेपना
तापयोगतः २४२ इतिलक्ष्मीधारश्चोपदर्शितश्चुद्रोगचिकित्सा पचेत् तर्हि इन्द्रलुप्तापहं भवति यदि क्षौद्रयुक्तं महौघासः लिपेत् तर्हि महौघार

सः इन्द्रलुप्तं हंति गणालक्ष्मीधारः विलुः श्रीनृदेत्याहंति तथैवेत्येवमयः नक्तमालाकसः करंज इतिलोके अथ करंजकः सिद्धो ग्रगंधो भूर्जत्वकः पत्रोत्पलः शंखः निर
रितिल्लतदुपमस्तर्जधौत्यविधानित इति अथ श्वमारः वार्यारः कनैर इति अनलश्चित्तकः मालती मुमना चवली इति भाषायां गंतिपत्रा मालती तु गंधः सिद्ध इति महौघा ऊष्ट
कांतारः अंठकटारा इतिलोके लक्ष्मीधारधंदः २४१ अथ घृजानप्रतीकारमाह पल्गार्द्धमिति शुक्तिचूर्णस्य पल्गार्द्धमानं द्वात्रिंशन्मासपरिमितमित्यर्थः तन्नेति
शुक्तः भगं कर्षप्रकल्पयेत् षोडशमासपरिमितिमानं प्रकल्पयेत् पारदं च गंधकं च तालंतुत्यकं च विहरोजकं च सौभाग्यं च इति सर्वमौषधानां टैकैकं चतुर्मासकं चूर्णं आवि

६५ च. कसर्पिषासहतापयोगतः अग्नियोगतः लेपनात्शीघ्रं यथा स्यात्तथाश्च जानंनशयेदित्यन्वयः च जानंनश्चजनइतिलोके श्रुतिः सुक्ताशयः शिष्यीइतिभाषायां भंगमादनीभांइ
 तिलोके पादं शंभुं गंधकं प्रसिद्धं तालं हरतालं तुल्यकं शिमिरीवं तृतीयाइतिलोके विहरोजकं विरोजाइतिभाषायां सौभाग्यं टंकाणं सुहागाइतिलोके अथ सुद्रोमास्यनि
 दानमाह अथ व्यंगस्य लक्षणा माह क्रीडायासप्रकुपितो वायुः पितेन संयुतः मुखमागत्य सह सामंडलं विह्वलतः वीरुजं तनुकं स्यावं मुखे व्यंगं तमादिशेत् व्यंगं मुखभां ईइतिलोके
 च यश्यामिकाया लक्षणा माह यश्यामिकानीलिका कालमेवं गुणं गात्रे मुखे वानीलिकां निदुः अथ विद्वधेर्लक्षणा माह विद्वधेर्लक्षणे युता ज्ञेया विद्भिका च सा अथ इलुप्तस्य निदान
 माह रोमकूपानुगं पितं वतिन सह मूर्धितं प्रव्यावयति रोमाणि ततः स्नेहमासृते पितः रुणद्धि रोमकूपांस्तु ततो न्येषामसंभवः तदिंद्रलुप्तं खालित्वं रूकोति च विभावयेत् अथ सुद्रोम

सर्वरोगैः समुद्भूतैर्दंतदंष्ट्रोद्भवं रूजं निहंति सहस्रानस्या दूमः कागादसंभवः २४३ गत्यजातिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह व्याधिरिमिर्ग्रस्तः परकल
 हापत्रनिवर्तनशीरामंदग्रहेति मारिषोमौमेन निरीक्षितो विकलः शत्रुपृहे कदशायां न मनविनाशमवेक्ष्य कृजवं ज्वालादभिरागाः भवंति क्रमयः पराभूतिः अथ मकारं
 भांशस्थमंगलावलोकितमानुजनिन सुद्रोमिपशांतये विप्रीतये पूर्ववजपहोमादिकं कुर्यात् अथ कर्मीविणकमाह देवाय दत्तवस्त्राणि माल्यानि स्त्रियमुपभोक्तुं यदि चेन्न
 सुद्रोमी भवति अस्य प्रायश्चित्तं निराशरीत्रिणमुपवासीत्येवं आह तिभिः पापनाशार्थं पवमानशूतं जपेत् हिरण्यदानं कुर्यादिति लक्ष्मीधरं दौष्यति तस्मिन् क्षणं यथा द्वाद
 शैर्बर्णैर्कोटिर्मितं संततं तं हिलक्ष्मीधरं तमाकीर्तितं दृश्यते यच्च तु जीह्वैर्लंकितं पद्मगाधीशकाणी विनोदायितामिति इतिलक्ष्मीधरतोपदर्शितसुद्रोमाविकित्सा
 अथ दंतरोगे धूमपानमाह सर्वरोगैरिति यदि कागादसंभवः धूमः न स्यात् नाशिकायाः धूमस्य ग्रहणं कुर्यात् तर्हि सर्वरोगैः दंतपुण्ड्रयैः समुद्भूतैः सह दंतदंष्ट्रोद्भवं रूजं
 पीडां सहस्रशीघ्रेण हंतीत्यन्वयः कागादं प्रसिद्धं इति २४३ श्री श्री श्री श्री श्री

अथमुखगिर्गणगंडुषंवाह मंदिरधूममिति मंदिरधूम त्रैफलवह्निशोषयवाग्रेडूततिरीटैः तादृश्यकपाटातेजनिकाभिस्त्रिंशतं चूर्णं क्षौद्रेण सह यः पुरुषः आस्येति शेषः दधाति तस्य
 दंतगलास्यातं कंठो गंघ्रसंकां यथा स्यात्तथा हंति च पुनः यः पुरुषः मधुना सह गंडूषा दधाति तस्य दाहृषौ च पुनः आस्यव्रणं उन्मूल अयात्वे सद्यं विदधातीत्यर्थः विशदस्य निर्मल
 स्य भावः वै सद्यं मंदिरधूमो गृहधूमः कार्हुं आइतिलोके त्रैफलं त्रिफला शिवामलविभीतकी बन्धिः चित्रकः चोषं शुंठी मरिचिष्यली पवाग्रेडूतः यवद्याः जवालार इति भाषा
 यांतिरीटोत्तमः तादृश्यं कंठसांजनं स्यात् इति लोके पादाग्रं वष्टापाटी इति लोके ते जनिवाते जीवती ते जवलभाषायां . चंपकमाला छंदः २४५ अथमुखपकप्रतीका
 समाह गोस्तनिकेति गोस्तनिका जाती त्रिफलानां वासिजलं वा सपाटा एका त्रिफला भुक्तं सत् अनेकास्योद्भवपाकं विस्थं वा द्रुतजातं वा हंतीत्यर्थः अनेकशब्देनात्र वातपित्तक

मंदिरधूमस्त्रैफलवह्निशोषयवाग्रेडूततिरीटैः तादृश्यकपाटातेजनिकाभिश्चूर्णमिदं क्षौद्रेण दधाति २४४ दंतगलास्यातं कं
 मसंकं हंति च गंडूषो मधुनीयः दाहृषा वास्यव्रणमाशूस्मूल्य चै सद्यं विदधाति २४५ गोस्तनिका जाती त्रिफलानां वासिपाटा
 वा त्रिपालैवा भुक्तमनेकास्योद्भवपाकं हंति चिस्थं वा द्रुतजातं २४६ कुष्ठनिशायनदारुसंमाते जवती कटुका च सुपाटा लो

कनुधिरसत्रिपातोद्भवं ज्ञेयं मुखपाको

धूमिदं कृतचूर्णममीषां दंतनिघर्षणतो निनिहंति २४७ भवेद्वातातपितातद्वत्कफादपि तावत्

त्रिपाताच्चैत्याह शार्ङ्गधरः गोस्तनिका द्रष्टा

मुनका इति लोके जाती मालती च वेली इति भाषायां

त्रिफला अष्टाभयाधात्री इदं सपिचंपकमाला छंदः २४६ अथमुखरोगमिह नमाह कुष्ठेति कुष्ठनिशायनदारुसंमाते जवती कटुका च पुनः सुपाटा लोचं च अमी
 षामौषधानां शतचूर्णमिदं दंतनिघर्षणतः हंतीत्यर्थः अनेकास्योद्भवयोगमिति शेषः कुष्ठं व्याधिः कृष्ट इति लोके निशाह रिद्रा धनो मुस्तानागरमोषा इति लोके दारुः

२७० चः देवदारुः समं गमं जिह्मं जीठ इति भाषायां तेजवती तेजो ह्यतेजयत् इति लोके कटुकानि कुटकी इति भाषायां पाठाग्रं पाठी इति भाषायां लोधंतिरीटः लोध इति भाषायां इदमपि चंपकमालाष्टदः २४० अथ मुखरोगोऽपरं मञ्जनमाह प्रसवदस्त्रं सवद्रक्तं अतीवरुजः पीडांश्च यपुनः अनेकमुखद्विजतालुगदान् प्रतिभर्जितपूगफलं चपुनः पटुमुखं कथं भूतं जाजियुतं एतत्सर्वमोषधं दंतनिघर्षयदित्यतर्हि एतानि गन्धंतीति शेषः पूग फलं क्रमुकफलं सुपारी इति लोके तृणध्वजः पूगश्च निशाखो बहुपर्वकः फलं सपल्लवं दद्यात् भंतद्विफश्चाद्विवल्कलमिति पटुमुखं संधवं जाजीजालं जीठ इति लोके अथास्य रोगस्य निदानमाह सरतः कुरुते स्नेहादंताग्निदंतचालनं दौर्गंधं पिडिकापाकोपजिह्वादीनगदं मुखे इति निदानं मञ्जुशलाकायां अथ ज्योतिः शस्त्राभिप्रायेण हेतुमाह शुक्रदशायां सूर्यो विरचति मुखरोगो जायते तस्मिन् काराय सूर्यप्रीतये प्रा

प्रसवदस्त्रमतीवरुजश्च अनेकमुखद्विजतालुगदान्श्च भर्जितपूगफलं पटुमुखं जाजियुतं दंतदंतनिघर्ष २४० इति मुखरोगचिकित्सा

वर्णरमूत्रं संधवयुक्तं कोष्मिदं कर्णविनियुक्तं हंतिरुजं पाकादिरुजो वा कर्णिक कीटं सर्षपतैलं २४१ तैलमप्यैः श्रीफलक

ल्लैर्गोजलपिष्टैः साजपयोभिः पक्वमिदं वा धिर्यमशेषं हंतितिरस्थं वा द्रुतजातं २४० इति कर्णरोगचिकित्सा

गुक्तं जपहोमदानादिकं कुर्यात् अथ कर्मविषयकमाह स्वयं प्रवृत्तधर्मानुष्ठानविधेदी अविद्यमानदोषाविवादीष्यसद्दोषसंकीर्तनशीलो नासासंकोचादिना नापदीषदर्शको वा दुर्गो जायते अशोचांद्रायणं सक्तुचंदनधूपान्वादद्यात् पंचाशद्वाह्मणभोजनं दद्यात् इति पूतिवक्रोपरवाकनिद्राघातकरी नखरोगी भवति अपरं च क्लृप्तक्षीमुखरोगी शोणितपित्तगभवति सक्तुश्चातिशयश्च चंद्रायणानि कुर्यात् कुष्माण्डादिभिर्जुह्यात् सावित्रीं च जपेत् ग्रीहिहिरण्यं न दद्यादिति इदमपि चंपकमा

मालाष्टदः २४० इति सुखरोगचिकित्सा अथ कर्णरोगप्रतीकारमाह नर्करिति संधवयुक्तं वकीरसूत्रं कथंभूतं कोष्ठं इत्युक्तं यदि विनिर्मुक्तं चेत्तर्हि कर्णं पुनर्हन्ति तस्मात्
 दिहृजोवाहेति संधवयुक्तं संधपित्तं कर्णकटीटं हन्तीत्यन्वयः संधवंसिंधूत्थं संधानून इति लोके २४२ मपि चंपकमालाष्टदः २४५ अथ वाधिर्यं नित्यमाह नित्यमिति
 अपक्वैश्चीफलेन कालैः कथंभूतैः गोजलपिष्टैः पुनः कथंभूतं साजपयोमिः पक्वमिदं तैलं अशपं वाधिर्यं हन्ति कथंभूतं वाधिर्यं निरस्तं वा द्रुतं जातमित्यन्वयः अजपयोमिः सति
 निराजपयोमिः सति अजपयोमिः विल्वं श्रीफलं वेला इति लोके गोजलं गोमूत्रं तैलं शठेनात्र तिलस्य तैलं ग्राह्यं कस्य नैलेनुते तिलोद्भवं ग्राह्यमिति वचनात् अथ कर्णरोगस्य विद्वान्
 माह कर्णो विगुणो वायुर्मलं संप्रसक्तं कर्णयोः सकफः पाकवाधिर्यं शूलस्तावादिकान् गदानिति अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह धनवयमातः शुक्राभौ मोक्षकरीदो गच्छति

वातभवाभिष्यंदममंदं वातरिपुत्वकपत्रजटानां पित्तभवं धात्रीफलपिंडीशिगुदलोत्थाहंति वलासं २५१

तच्छांतये पूर्ववद्विधेयं अथ कर्मविणकमाह यो मातापितृभ्यां प्रवर्तमानमेथुनं श्रपोति सकर्णशूलीभवति यश्चाद्विधिरः किंचिदेव श्रपोति राकणलेच्छस्य धनिर्मिति
 तद्विज्ञातित्येतादयुतं जपेत् पुरुषसूक्तं वा अणामार्जनस्तोत्राभिमेत्रितं जलं पिबेत् यथाविभववाह्येण भोजनं दधिणां दद्यात् महाधनिर्मिषा विंशति कंदं वा तं गिह
 प्रकासगोविंदान् कर्णरोगोपशान्तिं भोजनं ग्राह्येण भक्ष्यं प्रदद्यात् प्रयत्नो नर इति वचनात् इदं मपि चंपकमालाष्टदः इति वार्णरोगचिकित्सा २५० २५०
 अथ नेत्ररोगप्रतीकारमाह वातभवेति वातरिपुत्वकपत्रजटानां पिंडीवर्ति वातभवाभिष्यंदं हन्ति कथंभूतं अभिष्यंदं अमंदं तीव्रं धात्रीफलं पिंडीपित्तभवं अभिष्यंदं हन्ति शि
 गुदलोत्थापिंडीवलासं हंतीत्यन्वयः वलासमिति वलासोद्भवस्योपलक्षणार्थमिति वातरिपुण्डः धात्रीफलं आमलकी शिगुः सौभागजनः सहिजन इति लोके २५२

पित्तवयवमालाष्टदः २५१

२४ च नित्रो गलेपमाह गेरिकि शुंढीलेपं यनेत्र भवाहृजताहंति वासुपिषिदग्धं संधवयुक्तं तिरीटं अविनेत्र भवाहृजः ताहंतीत्यवयः गेरिकं गिरिस्थं ताहृति भाषया शुं
 २५ रीभागां सां दशतिलोके सर्पिः एतं संधवंपटुतमं तिरीटं लाघं द्द मपि चंपक मालाघं द्दोति २५२ अथनेत्रो गे पुष्पवर्तीमाह मालतिकेति मालतिका पुष्पानिर्पचाशस्युः
 ५० तत्र तस्मिं तिलानां पुष्पाणि असीतिः ६० सौंड्या कणाः षष्टिः ६० मरिचानि षोडश १६ तोयैः जलैः पेष्पया कृता वर्तीः अर्जुन शुक्रादीन् विकारान् विनिहंति च पुनः चिरस्थानां
 सृष्टिं अपि विनिहंति च पुनः ५५ कौमुमवर्तिः दुस्तिमिण्यपि विनिहंतीत्यवयः मालती चैवली इति लोके तिलं प्रसिद्धं सौंड्या कणाः अजपिप्ली मरिचं प्रसिद्धं तिभिर्

गेरिक शुंढीलेपमनेकाहंति रुजो यनेत्र भवाया संधवयुक्तं सर्पिषिदग्धं हंति तिरीटं चाञ्जनलेपात् २५२ मालतिका पुष्पानि च
 पंचाशत्सुरशीतिस्तत्र तिलानां षष्टिकणा सौंड्या मरिचानि षोडश तोयैः पेष्पया कृताया । २५३ वर्तिरनेकानक्षि विकारान् अर्जुन शुक्रा
 दीन् विनिहंति मांसविष्टिं हंति चिरस्थानां कौमुमवर्तिर्दुस्तिमिरानि २५४ मालती निवपत्राणि द्वेह रिद्रि रसांजनं गोमयां वुक्तता वर्ति

नेक्रमयांते रोगनिशेषं तल्लक्षणं यथा नैकां ध्यां विनिवारयेत् २५५ तिमिराण्यः सर्वे दोषश्चतुर्थे पटलंगतः रूपं हि सर्वतो दृष्टिं लिंग
 नाशमतः तामिति शब्दार्थचिंतामणौ २५२ मपि चंपक मालाघं द्दोति २५३ अथनेत्रो गे पुष्पवर्तीमाह मालिनीति मालिनी निवपत्राणि द्वेह रिद्रि रसांजनं सेषां
 गोमयां वुक्तता वर्तिः नैकां ध्यां विनिवारयेत् गोमयस्य चतुः गोमयां वुः गोमयां वुक्तता गोमयां वुक्ततेति च पुनः एषा वर्तिः द्यौद्रयुता सति नेत्रश्रुति नेत्रस्वां हंति दीरयुता सति
 कंष्ट्रं हंति कांजिकस्य ता सति क्षणदं ध्यां त्र्यं ध्यं हंति तैलचरेण तिलतैलेन सह पुनर्भूतिमिमाहंति च पुनः सवर्तिः अज्ययुता सति पुष्पं हंति पुष्पं फूली इति लोके

अथेत्यन्तरं संपिर्मधुयुक्ता सति अन्यत्रैव ब्रह्मजं हति पक्षांतरे निशि त्रैत्रै फलचूर्णलीटं सत् अशेषावेत्रामयां हंति द्यौर्द्रोति शमः कः कः २५३ शः दनुजाता निगन्धयः
 दनेदस्य कन्याजातः इति दनुजः तानिति मालिनी जाती नैवली इति भाषायां निबोधप्रसिद्धः देहविहिरिद्रादाहुरिद्रा नरासां जनं तादृशं सौता इति लोके अथ दानै
 काथोद्भवधनं सांजनं प्रस्थमस्य द्रोणश्यापयो वृन्धनं श्वदशां जनं स्रष्टं क्षिप्रमुद्योत्सांजनमिति इदमपि चंपकमालाष्टं दोषि २५४ अथान्यत्रैव त्रैत्रै फलचूर्णलीटं सत्
 शिरीषेति शिरीषनिबोधवर्षीजं अंजनात् विरोधितान्यपि शुक्राणि निहंति वासैधवं चपलाशुक्राणि निहंति अथेत्यन्तरं केवलं संधयोपि शुक्राणि निहंति जलेनेति श

क्षौद्रयुताने त्रैश्रुतिमेषाक्षीरयुता कंडूक्षणदांध्यं कांजिकायुक्ता तैलवोणहंति पुनर्मृदुस्तिमिराणि २५६ आज्ययुता सापुष्यमथान्यत्रै
 ब्रह्मजं संपिर्मधुयुक्ता त्रैफलचूर्णलीटं मशेषाहंति निशीविशो दनुजातान् २५७ शिरीषनिबोधवर्षीजमंजनात् निहंति शुक्राणि विरो
 धितान्यपि सैधवं वाचपलाथसैधवो वटस्य दुग्धघनसारसंयुतं २५८ इति नेत्ररोगचिकित्सा

षः वाघनसारसंयुतं वटस्य दुग्धं शुक्राणि निहंतीत्यन्वयः शिरीषं शुकतरुः शिरस इति लोके निबोधप्रसिद्धः नीवं इति भाषायां सैधवं पट्टमं चपलापिप्यली घनसारी
 कपूर इति लोके सिद्धांसां समोद्भूतः विकारगर्भः कपूरः उच्चैरपि चतत्रतुल्यैकैकसूजीतरितवद्रं तानि सर्वशः आमथं सारवत् त्रैश्रुलसंडमनुत्तम मिति अथनेत्र
 रोगस्य निदानमाह धूलौ धूमार्कशां कात्स्न्यीक्षणं स्त्रीजागरादिभिः गंधसांजननस्यादिहीनानां सुर्गमयाः तिमिरं पटलं काचमभिषंदो धिमंथकः पक्षाकोपो वणः को
 पश्चात्प्राधान्यनाम्यानेत्रकोपप्रथमैर्वैस्तीक्ष्णान्यहेतुतः रोगश्चरागशोथोद्योगः पक्ष्मतो न्यथा अथार्कं तिमिरं चिकित्सा नैकपटली क्षता वाची हृदयं वरं अथ गंधोर्ध्व
 मधोनत्ति निदानां जनशलाकायां अथ ज्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह यथोक्तं जातं के विबले द्यौर्कलनेनेति मिरको जेखमेतुरात्र्यः पुद्गुदृष्टिः वाकिं एणको

७२. हृन्- लोचयस्य गशशांके च तथा च नृपवंधनसंततोभारमतिरुवति विद्वेषी विकलनयनोऽमस्थिमुखधनहीनो लज्जितः पुंसः अथ च नित्रातुरापि धनवान् शास्त्रकलाया
 ताश्चेशिलिरतः वाचस्पतिवृद्धहृत्स्थैलिविकाः पुमानेव अयं च नयरातुरः कुलीनः सुभगाकासल्यसयुतो मनुजः यक्रगुरुदिवसनाथैरेकस्थे स्याद्विभवसंप
 न्नः अथार्कलापस्थे विकलनयनत्वमपस्थे सूर्यनयनदोषः खराशौरात्र्यधः केर्कस्थे बुद्धदृष्टिः व्ययगचशशांकेपिकाणां तदुपशंतये चंद्रप्रीतये च कमेव विधानं
 कुर्यात् तथा च भौमगुरुविसंयोगे चैवं पूर्ववद्विधाने विदध्यात् अथ कर्मविपाकमाह तत्प्रतीकारं च परदृष्टिनिघातकृद्भिर्वा द्वि-त्याचारेण व्याधयिष्यत यद्यपर
 स्त्रियं दृष्टादृष्टियः प्रत्यतिगन्नित्रोगी भवति अस्य प्रायश्चित्तं चोद्रायणं पाराकांता कुर्यात् अत्राप्यशक्तः प्रतिदिनं पंगशश्चाह्मणभोजनं कारयेति अत्राप्यशक्तो वयः

कंटिकिनीदंतीसुरसाभिः शिग्रुवचाव्यौषैः सह पक्वं सैधवयुक्तैर्नीशनमुक्तैर्तैलमशेषं श्लेष्मगदानां २५९ प्रतिमशेषं हंति नसा

निर्गंधमिवोग्राचंपकमाला इति चंपकमाला एतौ पदर्शितपूतिनासाचिकित्सा २६० सुवर्णासुवर्णसीति च रुष्टताभ्यामथेतरसहस्रं बहुया

त्वायद्रोगमोक्षः चक्षुर्मेदेही त्वनेन मंत्रेण जपेत् तस्याज्यसहिताहिरण्यं मुज्जात्रं वा ह्मणोदद्यात् नेत्ररोगापनुत्तये इति इति नेत्ररोगचिकित्सा इदमपि चंपकमाला पंदो
 स्ति अथ पूतिनासा प्रतिस्थाप्यस्य च प्रतीकारमाह कंटिकिनीति सैधवयुक्तैः शिग्रुवचाव्यौषैः सह कंटिकिनीदंतीसुरसाभिः पक्वं तैलं अशेषं श्लेष्मगदानां ना
 शनं उक्तं च पुनः इदं तैलं नसः पूतिं पूतिनासां हंति काकमित्रयथा निर्गंधं निष्टगंधं उग्राचंपकमाला हंति तथैवेत्यन्यथैः सैधवं पट्टतमं शिग्रुसंहिजन इति लोके वचोऽग्रं
 वच इति लोके व्योषं शुंठी मृत्चिपिण्यली कंटिकिनी कंटकारी भटकैट्या इति लोके दंती नागदंती जमालगोटा इति भाषायां सुरसाह रिप्रिया तुलसी इति लोके इदं चंपक
 माला पंदो यस्ति तत्स्रष्टुं यथा अक्षरं किं स्याद्विगुणं चेदक्षरं पंते राक्षरं पंतगायत्रविरामः साकथितायैः चंपकमाला एतविशाला इति चंपमाला एतौ पदर्शित

पूतिनासाचिकित्सा

७३
 यथनाससिगिलमाह अंवेति श्रवणरजनीदेमूर्वासागधिकाचजातीपत्रकदंतीव अभूमिः पक्वतिलं नस्थेयुक्तं चेत् अशेषं उग्रं पीनं संहन्यात् निश्चुतरात् च हन्यात् इदमो
 पधीनासारुडनदलेखणीत्यन्वयः नासारुजः मदः नासारुडनदः तं नासारुडनदं नासारुडनदलेखणीति नासारुडनदलेखा अंवेष्टापपचेत् पाटी इति लोके रजनीदेह रि
 द्वादिमूर्वा मधुरा मागफली इति लोके मागधिका विषली जाती मालती च वेली इति लोके पत्रकं तमालेते जपात इति लोके दंती नागदंती जमाल गोटा इति लोके
 मदलेखा घंदोष्यसितस्य क्षणं यथा दीर्घचित्तयमादौ तत्तथा स्यात् अथ ह्युग्रं यमं न्यासासागदलेखेति इति मदलेखा एतौ पदप्रतिपीनसचिकित्सा

अंवेष्टारजनीदेमूर्वासागधिकाचजातीपत्रकदंत्यौ तैलं पक्वमसृभिर्हन्त्यानीनस्सुग्रं नस्थेयुक्तमशेषं हन्यात् निश्चुतरात् च नासारुडनदलेखा
 २६१ पवनारिजटासनागरजलपिष्टाशिरसिप्रलेपिता पवनोत्थशिरोरुजोहरेद्वुतेलामयकांजिकं तथा २६२ कचपञ्चकपद्मकचं

दमेः शतपर्वा मलकी वसिहकैः नलमूलकवीरसंयुतेः कुरुपितोत्थशिरोगदे लिपिं २६३ अथ शिरोगप्रतीकारमाह पवनेति सनागर पव
 नारिजटाजलपिष्टाशिरसिप्रलेपितासति पवनोत्थशिरोरुजः हरेत् तथा ह्वेतैलामयकांजिकं हेदित्यन्वयः नागरं शृङ्गी पवनारिः एडः नुचुतेलं एडौलं आसयः कुष्ठं
 कट इति लोके कांजिकं आनालं सुंदरी घंदः अथान्यशिरप्रतीकारमाह कचपञ्चकेति पितोत्थशिरोगदे नलमूलकवीरसंयुतेः कचपञ्चकपद्मकचं दनेः
 शतपर्वा मलकी वसिहकैः लिपिकुर्वित्यन्वयः नलमूलकं शून्यमध्यस्य जटाशून्यमध्यां नरकुल इति लोके वीरं उगीरं संयुतं इति लोके कचं जलं सुगंधिवाला इति लोके ॥
 सदाकं कमलं पद्मकं पद्मं पद्मा इति भाषायां चंदनशदेनात्रात्तचंदनं ग्राह्यं उक्तं च कषायलेपयोप्रायोयुज्यते रक्तचंदनमिति वचनात् शतपर्वा दूर्वा दूच इति भा
 षायां आमलकी धात्री आउला इति भाषायां कसेहकं जिचोटकं कसेह इति लोके सुहा इति त्यल्यकं दंष्ट्रघर्णा कसेहकं चिचोटकं कसेहः स्यात् एह द्राज कसेहकमिति

कपयद्वेः इदमपि सुंदरी घंदः २६३

७३ अथान्यष्टिरप्रतीकारमाह कटुभद्रककुष्टकृतनामरष्टधामयरोहिषैः लिपेत् शिरांसीति शेषः कथं भूतिः ग्रहिणैः च सैरि
 त्यर्थः पुनः कथं भूतिः गोसलिलैः प्रपेषितैरित्यन्वयः कटुभद्रकं शुंठी कुष्ठं तनः प्रपुनाटः पमास्यकवड इति च लोके अमारष्टक्षौद्रिवदारुः अमय व्याधिः कृड इति भा
 षायां रोहिषे संख्यां स इति लोके सुंदरी घं २६४ अथान्यष्टिरप्रतीकारमाह एतेति यः पुरुषः जलैः सह पिष्टं स शितं च एतत् भृष्टं सुकोशं रं यदि न सत नावनं
 कुर्यात् तर्हि सह श्रवणाक्षिशिरोर्द्धभेदकं दिनयावत् कशंखरोगहृदयनि च पुनः भृकुटी गदवातराजानो गान् हंति च पुनः शिरस्थितान् शिरसो रोगान् पिहंति अथ त्वन
 तं नागरकल्कं युक्तं पयः न स्यात् न स्य विधानतः शिरसो हृत्कारुजः प्रकारः नुक् प्रकारः नुक् प्रकारः स्य ग्रहिः नुक् प्रकारः शिरः समूहं प्रकारः भवति अथ वा गुडना

कटुभद्रककुष्टकृतनामरष्टधामयरोहिषैर्लिपेत् कफमर्द्धगदापहारिमिरहिमेर्गसलिलैः प्रपेषितैः २६४ एतत् भृष्टं सुकोशं रं जलेः

सह पिष्टं स शितं च न श्यते श्रवणाक्षिशिरोर्द्धभेदकं दिनयावत् कशंखरोगहृत् २६५ ग्रांजलेः सह न स्यात् शिरसः कंठभुजाक्षिरोगहृद्वक्तीत्यर्थः

सिताशर्कराकेसरं काशीरजं केसर इति लोके कुसुमसदृशैर्गुच्छैः लघ्नां केंकुसुमं समं भोटकाशीरविषयेतनुवाटनया द्विधा उत्तरं शुभमश्नोति वा मदीयं संप्रहृतेषु
 अथ केशरस्य परीक्षा माह काशीरदेशे जेक्षेत्रे कुंकुमं बडैर्वेडितं स्रक्ष्मकेशरमारुतं पद्मं गंधितं दुत्तमं वा ल्घीकदेशं सज्जानं कुंकुमं पांडुरं भवित् केतकी गंधं
 युक्तं तन्मध्यं स्रक्ष्मकेशरं कुंकुमं पारसीकेयत्तमधुगंधितदीरितं ईषत्पांडुरवर्णं तदधमं स्थूलं केशरमिति शब्दाश्च विनामणौ नागरं शुंठी पयोदुर्यं गुडं प्रसिद्धं अथ
 शिरसो रोगस्य निदानमाह वातः पित्तं विधो निशि शिरसि दिवा पित्तं रक्ते मिता पंश्चेष्मभूयो गुरुत्वं त्रितयमपि पुनः सन्निपाते क्षयश्च निहोदः कीटास्तश्चुतिरपि च न सः स्या

कमेवाथसूर्यावर्तोत्पत्तीवदुःखं यदि सहरविनावर्द्धते हीयते वा १ वातश्लेष्मावितोर्द्वयव्यतिशिरसः सार्द्धमेदोप्यपि तात्त्व्यवाताग्रं सदेशदधति यदि रुजोभूयसी
 शंसकः स्यात्तयोवातीत्रं धमीति २२ कुटिनयनयोः शंसयोर्गंडयोर्वामन्वायांभूरिपीडां वा दधदिह मुहुः सस्यतो नंत नामा इति अथ च्योतिः शास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह यदु
 क्तं जातके शिरसा रूगालरोगश्चित्रं सहसा ज्वरं च शूलश्च तपनदशायां शुक्ले देशे त्यागो भवेदरिमिः तथा च अंतर्दशसितशशिना गदि भवति तदा शिरोरोगः बुध
 स्थान्तमे कुजे पि शिरोरोगः अन्यच्च मलरशूलविरोधेर्नाना क्लेशश्च पुज्यते जंतुः इंदुसुतसदशायां भौमस्थान्तर्दशायां दाम्भवति अथ कर्म्मविपाकसाह वैद्यशास्त्रोक्ता
 तौषधानि दद्यात्प्रायोपवेशनेनैनेष्टिकादिष्टतया गी शिरोरोगी भवति सपंचाशद्वा ह्यणामो जयेत् उधन्नघेतृचं जपेत् कृष्णांडीभिर्जुहुयात् अपरंच प्रह्वचारी पूर्व

२२ कुटी गदवातरक्तजं शिरसो हंति विरस्थितानपि अथ नागरकल्कयुक्पयः शिरसो रूक्प्रक रारि न स्यातः २६६ अथ वा गुडनागरंज

लैः शिरशः कंठभुजाक्षिरोगहृत् २६७

घननादजटासांजनं मधुना तंदुलवारिपेषितं प्रमदाप्रदरं विनाशयेत्परि

जस्मनि भिन्नकांस्य भाजने भुक्ता जस्मांतरे एकदेश पीतं किल सर्वसंभवं २६८ शिरोरोगी भवति तदा अक्षोभ्यामिति श्रुतमक्षोभ्यं तदंशं जपेत् चरुष्ट
 ताभ्यां जुहुयादिति इदमपि सुंदरीधंदः इति शिरोरोगचिकित्सा २६६ अथ स्त्रीणां प्रदरप्रतीकारमाह घननादेति मधुना सह तंदुलवारिपेषितं पिष्टं घन नादज
 टासांजनं पीतं सत् किल इति निश्चयेन सर्वसंभवं त्रिदोषोद्भवं प्रमदाप्रदरं विनाशयेदित्यन्वयः प्रमदानां स्त्रीणां प्रदरं प्रमदाप्रदरमिति मधुक्षौद्रं तंदुलं प्रसिद्धं घन
 नादो मेघनादः चौरा इति लोके रसांजनं तादृश्यं सौत इति भाषायां इदमपि सुंदरीधंदः २६७ इति प्रदरचिकित्सा २६६

८५: अथान्यत्रप्रतीकारमाह अथेति तंडुलवारिपिबितं पिष्टं कुशमूलं पिबितं कथं शतं कुशमूलं प्रदद्यात् हं नासकारमित्यर्थः न पुनः अमृतवल्ली स्वरसः इषस्य स्वरसो
७४ वामदनां विशदप्रदः सोमप्रदप्रणासनो भवति अतः तमपि पिबेदिति शेषः तंडुलवारि तंडुलधावनं कुशोदमः शुष्ण इति भाषायां अमृतवल्ली गुडूची दृष्योऽरु
नः रुसा इति लोके इदमपि सुंदरी घंदः इति सोमप्रदरचिकित्सा २६५ अथार्मपतने प्रतीकारमाह अरुणोत्पलेति अरुणोत्पलसैंधवं तिलं कल्का विधानतः सि
तया सह यदि पिबेत् तर्हि स्त्रियां प्रपतद्गर्भनिवारणो भवति अतः पंसहदौषधं किं न किमपीत्यनयः कल्कमिति पंथकण्यां तर्गतदृषदिपे मितमौषधं तद्विधानं चाह

अथ तंडुलवारिपिबितं कुशमूलं प्रदद्यात् हं पिबेत् विशदप्रदप्रणासनो मृतवल्ली स्वरसो इषस्य वा २६५ अरुणोत्पलसैंधवं तिलं शि
तया कल्का विधानतः पिबेत् किमतः परमौषधं महत्प्रपतद्गर्भनिवारणो स्त्रियां २७० ह्युत्तैलमजापयो वला कल्कैः पाचितं मंगना
पिबेत् परिमर्तितमंत्रमुन्नतं वा ध्यानं विनिहंति शूलतां २७१ इति पस्वित्ति तोत्रतां त्रे

इत्यमात्रं शिलापिष्टं शुष्कं वा जलमिश्रितं तदेव शूरिभिः पूर्वः कल्कमित्यभिधीयते इति अरुणोत्पलं रक्तकमलं सैंधवं पट्टचमं तिलं प्रसिद्धं सिताशर्करा सुंदरी घंदः
इति गर्भपतनचिकित्सा २७० अथ पस्वित्ति तोत्रतां त्रे प्रतीकारमाह ह्युत्तैलमिति वला कल्कैः सह पाचितं ह्युत्तैलं अजापयश्च अंगनायदि पिबेत्
तर्हि पस्वित्ति तं अस्मदं उन्नतमंत्रं च आधानं वशूलतां विनिहंतीत्यनयः वलावात्वालकः वलियारा इति लोके ह्युत्तैलं एंडितैलं अजापयः अजा
दुग्धं इदमपि सुंदरी घंदोति इति अस्मदरचिकित्सा २७१ श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव श्रीशिव

अथ श्रीलंकाजलदोषप्रतीकारमाह पिकलोचनेति द्विपलंपिकलोचनबीजनागरंपलोमितांमोचरसंनमितजीरपल द्वयंचपुनःषट्विमलाषट्पलोमित्यर्थः तपुनः
पलंमर्कटतंडुलां कथंभूतां शुभां कुरुगुंदश्चपुनः शुभवधूलतरोर्द्विकंशर्द्वपलप्रमाणंवधूलतरुशब्देनात्रत्वचाग्राह्याकलात् उक्तं हि यतिस्थूलजदीयास्तु
तासांयास्यात्वचाधुवमिति वचनात् तपुनः त्रयोदशसितात्रयोदशपलेनितासितेत्यर्थः कथंभूताशिताविधिनाविचूर्णिता एषामोषधानां हविषा यतिन एक

पिकलोचनबीजनागरंद्विपलंमोचरसंपलोमितं सितजीरपलद्वयंचषट्विमलामर्कटतंडुलांशुभां २०२ कुरुगुंदपलंपलाद्विकं
शुभवधूलतरोस्त्रयोदश सुशिताविधिनाविचूर्णिताहविषा यिडितमकतः कृतं २०३ परिपूज्यगुरुं पलाद्विकं उपपुंजीतततः पि
वेत्तुतं धनवासकदारुलोधकं श्रवणीनिंमरुष्कांसमं २०४ चिरविल्वयुतं नितं विनीजलदोषास्थिरुजाहरीमातः त्र्यनुजंतुज
योनिजान्गदानुदरस्कंधमवासगर्मजान् निखिला नपितात्रिवायेद्भारद्वाजविनिर्मितावटी २०५ इति भारद्वाजनिर्मितामर्कटवटी

तः पिडितं कृतं गुरुं परिपूज्य तस्यापि षडातपलाद्विकं उपपुंजीसेवनं कुर्यात् ततः पश्चात् धनवासकदारुलोधकं श्रवणीनिंमरुष्कां एतत्कषायं पिबेत् कथंभूतां
एतद्दोषघ्नं समं समाभ्यामित्यर्थः भारद्वाजविनिर्मिता एषावटी चिरविल्वयुता स्यात् तर्हि त्र्यनुजंतुज योनिजानादानां गान् चपुनः उदरः स्कंधमवासगर्मजान् निखि
लनेतानादानां त्रीणां त्रिवायेत् कथंभूतावटी नितं विनीजलदोषास्थिरुजाहरीमतेत्यन्वयः जलदोषाश्च स्थिरुजाश्चाजलदोषास्थिरुजा नितं विनीजल

४.३. दोषस्थिरजाः नितंविनीजलदोषस्थिरजाः नितंविनीजलदोषस्थिरजाहरीति पिकलोचनं कोकिलाक्षीतालमघाता इति लोके
अथ द्युर्गुण्यभिर्कटकः ॥ १५ ॥ कोर्डागुलिदलः कर्कशः द्युस्कोस्थिरिति नामां शुद्धी मोचसंप्रसिद्धं सितजीरः खितजीरकं विमलातारसाक्षि कंरुणामयी इति
लोके सर्कटतंदुलः कपिवीजं मर्कटं सुवंदरिया इति लोके ॥ १६ ॥ विशेषः जस्वदीजं कुरुगुंदः कुंदरुकः कुंदरु इति भाषायां वन्तुलो प्रसिद्धः सितार्कसामिश्री इ
ति भाषायां इदमपि सुंदरीयं दोस्ति इति भारद्वाजवदी

अथ गुर्विणी ज्वरप्रतीकारमाह सहेति सुलोभकसारिवाचंदनहारहूलिका मोषधाना

सहकारि सुलोभसारिवाचशितचंदनहारहूलिका विधिवत्परिपीय गुर्विणी ज्वरमाशुच्यपहंति सत्वरं २७६ इति गुर्विणी चिकित्सा
सहकारमुजां ववत्वचः कथितं लाजकशकुमिलिहेतु अचिरादपिहंति गुर्विणी ग्रहणी रोगमुपद्रवान्युतं २७७ अतर्गमजरा
युतं तथा बहुकालं वविलीनतांगतं अचिरं एषा विनाशयत्स्त्रियावटकस्यांतरणी शिफापिवेत् २७८

सहितं सतयासिगुर्विणी विधिवत्परिपीय आशुज्वरं नवज्वरं सत्वरं यथा स्यात् तथा च्यपहंतीत्यन्वयः लोभकं मार्जनः लोघ इति लोके सारिवा गोपवल्ली सखिन
इति भाषायां अस्यालक्षणां एकीकृतं ज्ञेयं चंदनं रक्तचंदनं हारहूलिका द्राक्षामुनका इति लोके सुंदरीयंदः २७६ इति गुर्विणी ज्वरचिकित्सा
अथ गुर्विणी ग्रहणी प्रतीकारमाह सहेति कथितं सहकारमुजां ववत्वचः यदि गुर्विणी लाजकशकुमिलिहेतु तर्हि उपद्रवान्वितं ग्रहणी रोगं अचिरात् शी
घ्रेण हंतीत्यन्वयः सहकारः सारिवाचः जांववः जंवूनामुन इति लोके लाजः भृष्टधान्यविशेषः लावा इति भाषायां इदमपि सुंदरीयंदः इति गुर्विणी ग्रहणी

अथमूढगर्भचिकित्सास्यार्थमिति स्त्रीतिशेषः वटकस्थोत्तराणीशिकापिवित्तसावटकस्थोत्तराणीति फलनिष्पाशेण स्त्रियाः स्तनगर्भमयशुभां नाशयेत् निष्कासयेत् तथा च
 रुकालं च विलीनतां गतं विनाशयेदित्यन्वयः जापाचर्मणा युतं जरायुतं स्तनगर्भश्चासौ जरायुतश्च स्तनगर्भजरायुतः तं इति वटकस्थोत्तराणीशिकावटशुंगः नोऽस्ति
 लोके न यथशोणितगुल्मप्रतीकारमाह अथेति अथेत्वनंतरं तिलजं कथितं काथं स्त्रियां गतं कुसुमं चयति प्रकाशयति कथं भूतं का
 थं शोणिगुलानां शनं च पुनः विधानत विजयामूलभवं कथितं यदि पिवित्तं हि तया करोतीत्यन्वयः तिलः प्रसिद्धः निजयामं गामं गतिलोके २८ मयि सुंदरी
 छंदः इति रुधिरगुल्मचिकित्सा अथ वंध्याकारणोपायमाह उषितेनेति कामिनी यदि गणितं चंपकपत्रं उषितेन जलेन पिवेत तर्हि अंजसाश्च नायासे

अथशोणितगुल्मनाशनं कुसुमं रोचयति स्त्रियां गतं कथितं तिलजं पिवेत तथा विजयामूलभवं विधानतः २७५

उषितेन जलेन कामिनी निजपुष्पस्य विनाशनं पिवेत यदि चंपकपत्रमंजसा गणितं तावदेवैकवत्सरं २८०

न तावदेवैकवत्सरं तावत्संख्यकं गणितं चंपकपत्रसंख्यकं निजपुष्पस्य विनाशनं भवेदित्यन्वयः चंपकं हेमपुष्पकं चंपा इति लोके प्रसिद्धं अथ चंपकः पादपो
 गिरः सुता भरहृन्नुदलः सुमं पीतारुणं द्विधा वाटमिति सुंदरी छंदः अथ स्त्रीणां पुष्पनिवारणमाह यामिति आमारसपविनारी पुष्प
 निवारणं भवति यदि जपा पुष्पं कांजिकेन पीतं सततं दापुष्पकारमतं कथितमित्यन्वयः आरमा कुकुरंदः कुकुरोंधा इति भाषायां जया पुष्पं जैपा भाषायां जौसूं
 डा भाषायां गुडहल इति भाषायां जपा ईंगुलि पत्रा हरहृगंधारुणं सुमंगुषी इति २८ मनुष्य छंदः अथ स्त्रीणां ज्वरे स्तिका रोगाथ चूर्णमाह
 सह तेति मागधी चूर्णमिश्रं उग्रं सह च स्तं यदि नारी पिवति तर्हि ज्वरं जनिते विकारानहरति च पुनः स्तिका रोगमारहरति कथं भूतं स्तं शीथे रोगापहारि

४४. ॥ सुतं दीपनं उक्तं पुनः कथं भूतं वैद्यसां वैद्यानां सां वैद्यसां मित्यत्वयः ममाधीपिण्वली सहचारः सैर्यकः पियावासा इति लोके सैर्यकं त्रितयंतुल्यं समित्कं टकिप
 ४६. त्रैकोः भेदः पुष्पिषुते पीतरका खेता सुगुल्मकि २६१ अथ प्रसवपरिवर्तनमाह सहकारस्येति सहकारस्य मंजरी विवासे संप्रसृष्ट एकावर्णगवां क्षीरैः सह भव
 यत्नानां विधिवत्पिषयेत् मासद्वये गते गर्भे सति यानां क्रमात् प्रपिबेत् एतदौषधं यावत् षडमासिको गर्भः तावत्समाचरेत् एतदौषधात् स्त्रीणां पुत्रस्य अ
 चारमासं सपनिन नारी पुष्पनिवारणं कांजिकेन जणपुष्पं पीतं पुष्पकरं मतं २६२ सहचारस्य तु मुग्रं ममाधी चूर्णमिश्रं प्रपिबेत् यदिना
 रेशो धरोणापहारि ज्वलजनि तविकारान्धुति कारो मभारं हरति नियतं सुतं दीपनं वैद्यसां २६३ अथ प्रसवपरि वर्तनचिकित्सा
 सहकारस्य संप्रसृष्ट मंजरीं विवासे एकवर्णगवां क्षीरैः पिषयेद् द्विधिना वत् २६४ मासद्वये गते गर्भे यानां प्रपिबेत् क्रमात् याव
 त् षडमासिको गर्भस्तौ वदेत् समाचरेत् २६५ पुत्रः स्यान्नात्र संदेहो मुनिभिः संप्रकाशितं इत्यन्यथा भवेद्यस्यास्तस्याश्चाभा
 ग्यमादिशेत् २६५ अथान्यच्च स्वेतकं टकिनी मूलं कारिणा परिपिषितं घृतेन वटदुग्धं वा पुत्रगर्भं प्रदं पिबेत् २६६

व्रतं देहीनास्ति इदमौषधं मुनिभिः संप्रकाशितं यदि यस्याः स्त्रीणां अन्यथा भवेत्तस्याः आभाग्यं आदिशेदित्यत्वयः सहकारः सुगधियुक्ता स्रः मंजरी विरति
 लोके इदमप्यनुष्टुपधं दोस्ति इति प्रसवपरिवर्तनचिकित्सा २६५ अथान्यत्प्रसवपरिवर्तनमाह स्वेतेति कारिणा परिपिषितं पिष्टं स्वेतकं टकिनी मूलं पि
 वेत् वा घृतेन वटदुग्धं पिबेत् कथं भूतं पुत्रगर्भं प्रदं पुत्रगर्भं प्रददातीति पुत्रगर्भं प्रदमित्यत्वयः स्वेतकं टकिनी स्वेतकं टकारी भट्कटैया इति लोके वटो ५

शुक्लः वरगद इति भाषायां इदमप्यनुष्ठेयं २८६ अथ प्रसूत्युपायमाह रसेनेति सिंहवक्रास्य रसेन भगं नाभिं च लेपयेत् अथ वा सुर
साया रसेर्यदिलेपयेत् पिंपुयायात् तर्हि सुविनया शुशीघ्रं प्रसूयते जायतेत्यत्वयः श्रंगनेति शेषः सिंहवक्रः सिंहस्य रुसा इति लोके सुरसाश्च्युता प्रिया तुलसी
इति भाषायां इदमप्यनुष्ठेयं २८७ अथ गर्भोपायमाह गजेति वंध्यास्त्री सुरभीक्षीरयुतं गजकेशरं पुष्पजं रजः चूर्णीं क्रतौ क्रतुकाले पिबेत् कथं भूता वंध्या
मुतार्थिनी अथ वा सद्यजं हयगंधकारजः चूर्णीं पिवेदित्यत्वयः सुरभीक्षीरं गोदुग्धं गजकेशरं नागकेशरं हयगंधकाश्च श्वगंधाश्च सगंधा इति भाषायां अथ गर्भरोगस्य
निदानमाह स्त्रियो गर्भः स्यात्तु र्था मासात्पातस्ततः परं समूढं गर्भोपस्थात् च्युतो न वहि रपतेत् गर्भास्य दं द्रा विनाशो मृतो गर्भोपचारतः विरेकं शैत्यं द्रव्यं ज्वराद्यैः

रसेन सिंहवक्रास्य भगं नाभिं च लेपयेत् सुरसाय रसेर्वापि मुखमाशु प्रसूयते २८७ गजकेशरपुष्पजं रजः सुरभीक्षीरयुतं पिवेत्तौ

अथ वा सद्यजं मुतार्थिनी ननु वंध्या हयगंधकारजः २८८

स्या

सानसिध्यति इति गर्भनिदानं यथ स्मृतिका वृत्तलोकः श्रंगमर्दो ज्वरं कं पपिणासा गुरु गात्रतः शोथः श्रूलाति सारो च स्मृतिकारो गलक्षणमिति अथ प्रदरा वलो
कः यस्याश्नुतिः स्यात्प्रदरं यो निस्त्रीणा मना ते वात रुग्णं मर्दो र्वल्याः क्षुब्धं पांडु तदा ह कृतं चतुर्द्धा प्रथकं सर्वैः दीपि स्यादो र्वतं पुनः ससास्त्र तुल्यं यच्चोक्तं
पौतं वा सो न रं जयिदिति स्त्रीरोगनिदानं अथ ज्योतिः सास्त्राभिप्रायेण हेतुमाह श्रिकरा सिस्थिते शुक्रे स्त्रीणां यो निदोषं प्रदरादिकं वजायते स्त्री पुंस्यो र्जन्मफल
तु सत्वात् श्रिकरा शिस्थे शुक्रजनि तदोषोपशान्तये प्रागुक्तमेव विधानं विदध्यात् शुक्रप्रीतये अथ कर्मविपाकमाह मृते भर्ते रिया नारी प्र स्र च र्या मिधा तिनी
साम्भवद्भूतदोषेण संभोगांश्च मतिनतु संभोगानंतरं ती व्रवेदना पुरुषस्य तु सा च प्रदरादि रोगवती भवति सानील व्रष भं द्यात् मधुसर्पि मिस्तिलहो मं च फणीदि

ति इदं सुंदरी छंदः इति स्त्रीरोगचिकित्सा २८९

२७ चः अथ बालज्वरप्रतीकारमाह चपलेति शिशुर्बालकः ज्वरका सवमिप्रशान्तये चपलाति विषा विषाणिका कृतचूर्णमधुना सह लिहेत् अथ वा समाश्लिष्य शितकंदं लिहेदित्यन्वयः
 चपलापिप्ली अतिविषाघुणप्रिया अतीसइतिलोके विषाणिका कर्कटशृंगी काकडासिंगी इतिलोके माश्लिष्यं क्षौद्रं शितकंदं अतिविषा अतीसमाखायां इदमपि सुंदरी
 छंदः २८५ अथ शिशोरतीसारप्रतीकारमाह कटुभद्रं कटुभद्रविषा सह सह द्रव्यवालां पुद्गाधितं जलं काषायं उषसि प्रातः पालेयदि पीतं चेत् तर्हि इह अस्मि नति
 सारिवहुषकैः किंकिमपिन कथंभूतं जलं शिशुसर्वभवाति सारानुदित्यन्वयः कटुभद्रं शृंगी विषा अतिविषा सह सह क यव इंद्रेयवः इंद्रेजो इति भाषा
 यो बाला सुगंधिवाला अंबुदो मुक्ता अथ बालरोगनिदानमाह येगदा सहता मुक्तास्युक्ता एवार्भकेष्वपि किंतु दाहाग्निदोषादेः शस्त्रापलघवंपरंक्षीरालसः प्रथमदोषेर्ली
 चपलाति विषा विषाणिका कृतचूर्णमधुना लिहेच्छिशुः ज्वरका सवमिप्रशान्तये शितकंदं मथ वा समाश्लिष्य २८५ कटुभद्रविषा
 सह सह द्रव्यवालां पुद्गाधितं जलं शिशुसर्वभवाति सारानुदयदि पीतं ह्युषसीह किंयहु २५०

लासावोतिरोदनं गुंदपाकास्यपाकौ च दंतोद्रेदादयो परे ऊर्ध्वयश्चेदधः एवेत क्षिपेद्वा त्रं वमोत्पयः जागर्तिरोदति स्याद्योग्रह प्रक्षारभकोलसइति अथ ज्योतिःश
 स्त्रामिप्रायेण हेतुमाह त्वेच्चिस्वकीयभवेनेक्षितिपालतुल्यो लेप्तेर्कजेभवति ग्रामपराधिनाथः शेषेषु दुःखगदपीडित एववात्येदारिद्र्यकामवसगोमलिनोत्तमश्च
 ति अथ कर्मविषाकमाह गर्भस्थाने निषिद्धाहारे क्रियमाणे निषिद्धाचारेण अशुभकर्मणा जन्मांतरे जन्मप्रभृति शेषे रोगी जायते मातुरनुपचारकारी अशुचिदोषजा
 त रोगी जायते एतच्चरकादिशाल्ले सिहितं अस्य प्रायश्चित्तं कृच्छ्राति कृच्छ्रां द्रायणानि कारयेत् सर्वरोगोपशान्तिं वाहति होमं अन्नदानं च २५० इति बालचिकित्सा २५०
 अथ विषप्रतीकारमाह कमलेति हविषा सहिता प्रथगेकादृषदि प्रपेषिता कमला फलपाठला जटापिवतां जनानां एवावरजंगमं विषं विनाशयेदित्यन्वयः कमलाफलं

विल्वं पाटला जटाय मोक्षजटा पाटी इति लोके इदमपि सुंदरी छंदः २५१ इति स्थावरजंगमविषचिकित्सा अथ कुक्कुरविषप्रतीकारमाह मरिचमिति मरिचं रजनीसुरोचनासंरोनं
चपुनः वचया समन्वितं रोनमपिनयनांजनपाननस्यतः चपुनः प्रलेपनात् श्वविषं कुक्कुरविषं उपहंतीत्यन्वयः मरिचं प्रसिद्धं रजनीहरिद्रा रोचना गोरु रोचना गोलोचना इति भाषा
यां सुहोसिरसि पीतातुरोचना हियतेश्चैरिति यच्चैः प्रगंधावचेति प्रसिद्धं रोनं स्निग्धकंदं लहसुन इति लोके इदमपि सुंदरी छंदः इति कुक्कुरविषचिकित्सा २५२ २५२
अथ लज्जाविषलेपमाह रजनीति सपतंगं रजनीद्वयनागकेशरं सुसमं गाच एषामौ धानं बहु दोषजल्यतिका विषं आशुश्रुं तये श्वं वृना जलेन लेपनं कुरुत इत्यन्वयः बहुदो

कमलाफलपाटला जटास्थीकादृषदि प्रपेषिता हविषा सहिता विनाशये त्रिवतांश्च वरजंगमं विषं २५१ मरिचं रजनीसुरोचनासं
रोनं वचया समन्वितं नयनांजनपाननस्यतो ह्युपहंति श्वविषं प्रलेपनात् २५२ इति कुक्कुरविषचिकित्सा रजनीद्वयनागकेशरं सुसमं
गासपतंगमं वृना बहुदोषजल्यतिका विषं कुरुते लेपनमाशुश्रुं तये २५३ रजनीकटुतैलटंकणं लिपिरित्यनिहंति मार्करं विषमाशुवि
चर्चिकाभिधां किमतीत्यापरिवर्त्यतो मया २५४ इति लज्जाविषचिकित्सा

षाह्वातपित्तकफात् जायते यस्मूनिषा विषं तद्बहुदोषजल्यतिका विषं तस्मिन् रजनीहरिद्रासमं गासं जिशमजीठ इति लोके पतंगं पतंगं पतंग इति भाषायां रजनीद्वयं हरि
द्राद्वयं हरिद्रादारुद्विद्राच नागकेशरं लोके प्रसिद्धं सुंदरी छंदः २५३ अथ लज्जाविषे द्वितीयलेपमाह रजनीति रजनी कटुतैलटंकणं तस्य लिपिः लेपनक्रिया
विचर्चिकाभिधं मार्करं विषं लुता विषं आशुश्रुयथा स्यात्तथा विनिहंति अतो न्यतमया किं वर्णितं कथ्यते किमपि नैत्यन्वयः रजनीहरिद्रा कटुतैलं सर्षपतैलं टंकणं सोमा
यं सुहागा इति लोके इदमपि सुंदरी छंदः इति लज्जाविषचिकित्सा २५४ श्री शिव श्री शिव श्री शिव

४८ चं. अथात्र द्विषप्रतीकारमाह यदीति विषमोजिमिर्नरैः यदि टंकणं जंरजः चूर्णं घृतैः सह परिपीतं चेत्तर्हि इह संतरेहलाहलं विपत्ती कथ्यते किला इति निश्चयेन अन्यत्
 ५८ सौक्तकादिविषयतः किं किमपि निश्चयः टंकणं धातुद्रावी सुहागा इति भाषार्थः इदमपि सुंदरी छंदोस्ति २५५ अथ च श्रिकविषप्रतीकारमाह सघृतमिति सघृतं
 रंधयं परिपीयणीत्यादि श्रिकं जंविषं क्षणात् हरते अथवा सघृतं नलवलोत्तमेन व्रणे निषेचनं कुर्यात् तेनापि विषस्यानाशो भवतीति भावः व्रणशब्देनात्र दंशितस्थानं
 ज्ञेयमित्यन्वयः घृतं गन्धैर्धवं पूतं अथ विषनिदानमाह जिह्वामोठं शिरोदाह भूमौ नादा रुचिः ज्वरः स्वासहिक्कादंतहर्षजीनीयास्यावरं विषं दंशवैवर्धिशोफाभ्यां स

यदि टंकणं जंरजो घृतैः परिपीतं विषमोजिमिर्नरैः विपत्ती कथ्यते हलाहलं किमिहान्यत्किल सौक्तकादियत् २५५ सघृतं परिपीयसे
 धवं हरति च श्रिकं जंविषं क्षणात् अथवा लवलोत्तमेन वा सघृतं नैव निषेचनं व्रणे २५६ इति विषचिकित्सा कचरंजनपल्लवस्तिलै रशितै
 रतिपयोनुभुयासदा चिरजीवनमेति षट्पदं ध्रुविकेशविगतामयो हि सः २५७

करवतमभ्युत्थः निद्राक्षिरागरसनामोढोऽप्राहि विषवदेत् विद्वं
 तु च श्रिकेनागज्वलदंगारमग्निसरागरूढमोहमन्त्रयथा त्वं विषमुन्नयेदिति अथ ज्योतिःप्रास्त्राभिप्रायेण विषस्य हेतुमाह यथोक्तं जातके व्यालविषश्च स्वगंधनसु
 तीक्ष्णकूटे श्रधननाम्नः मानुदशायो लभते न क्षौषधाद्यविषकानने धनमिति अथ कर्मविपाकमाह अथ विशेषणायः पराहितमाचरति विषादिभि रतिभ्यस्ते ५ ति
 इदमपि सुंदरी छंदोस्ति २५६ अथ केशरंजनोपायमाह कचरंजनेति यः पुरुषः अशितैः कलैस्तिलैः सह कचरंजनपल्लवान् अति अनुपश्चात्सदा पयोभुक् एतादृशः
 पुमान् हीति निश्चयेन चिरजीविनं चिरायुषं प्रतिपादयति च पुनः तस्य सदा षट्पदं च विभ्रमरश्च विकेशा भवन्ति च पुनः विगतामयो भवतीत्यन्वयः तिलं पसिद्धं कचरं

७५

जनः मध्याराजः भयं रात्रि तिलोको रसः स्वरसकः पादांगुलिपत्रावदुत्थणः भृंगप्रसिद्धिगंधाल्पतिक्तः कर्कशकः स्थिरः तन्वंगुलिदल इति पञ्चवः नवपत्रं पयोदुग्धं
 २५७ अथवाजीकरणमाह कारिकर्णति यः पुरुषः प्रातः काले अतंद्रितः स न हविर्युतं करिकर्णरजः मलंसततं निरंतरं अतिभुक्तिशुमान् ललनासतमानमर्दनोभवति
 चिरजीवीवभवति बहुबुद्धिरस्ति वेत्यन्वयः हविर्युतं इदमपि सुंदरीछंदः २५८ अथान्यद्वाजीकरणमाह पयसेति पयसा दुग्धिनघ्नेन च संयुतां हयगंधां उलवारिणा सह
 परिपीय कृष्णपिदुर्वलापि पुमान् क्षिप्रं यथा स्यात्तथा मांसलोभवति अमंदविक्रमोतीव विक्रमो भवतीत्यन्वयः हयगंधातु रगंधा अमरांघ इति लोके इदमपि सुंदरीछंदः

करिकर्णरजाहविर्युतं सततं प्रातरतंद्रितो जितियः ललनाशतमानमर्दनश्चिजीवी बहुबुद्धिरस्ति सः २५८ पयसाथघ्नेन संयुतां हय
 गंधां मनुचो ह्यारिणा परिपीय कृष्णपिमांसलोभवति क्षिप्रममंदविक्रमः २५९ सहते बहुदेशजं जलं परिपीतं यदि भोजनाग्रतः
 अभया कटुभद्रजीरकं जलपिष्टं मनुजैर्विदेशीः अथ पाषाणसर्पः ३०० इक्षुर्पंचेति विख्याता कौशटोडीति वाक्चित् धूर्तपुष्पाव
 क्रदलाप्रसर्पणपरायणा ३०१ शरत्काले तु बहुलावने चोपवने तथा तद्दी जानियवानी च मौज्जफलविभीतकं ३०२
 इति वाजीकरणं २५९

अथ दुष्टदेशजं जलोपायमाह सहतेति विदेशीः मनुजैः भोजनाग्रतः भोजनाग्रजलपिष्टं अभया कटुभद्रजीरकं यदि परिपीतं तर्हि बहुदेशजं जलं सहतेत्यन्वयः
 अभयाहरीतकी कटुभद्रं शुद्धी जीरकं जाजी जीरा इति लोके इदमपि सुंदरीछंदः ३०० अथ खालसाहि फलद्रोसमाह इक्षुर्पंचेति तद्दी जानितस्य वी जानितद्दी जानि
 तस्याः कस्याः वी जानीत्याशयेनाह याः इक्षुर्पंचेति विख्याता वाक्चित् कस्मिंश्चिद्देशे कौशटोडीति विख्याता सा कथं भूता धूर्तपुष्पाधरावतपुष्पाणि यस्यासा धूर्तपुष्पा

७५ वृत्तः पस्याः पुष्पाणां धूपपुष्पवदाकृतिर्भवतीत्यर्थः पुनः कथं भूतावक्रादलावक्राणि कुटिलानि दलानि पत्राणि यस्याः पुनः कथं भूता प्रसर्पणपरायणाः प्रसर्पणोपराय
यस्या इति प्रसर्पणपरायणाः सार्शरुदौ वने तथा चोपवने बहुला भवति चकाराद् निम्बपुटहेपि बहुला भवतीति प्रसिद्धः तद्दी जानियवानीचु च पुनः मौजूफलविभीतकं मो
जूफलं च विभीतकं च अनयाः समाहारः मौजूफलविभीतकं वाट्यालकजटाच जातीफलं च पुनः पीताभदुग्धिका एतानि समांसानि सप्तोषधानि गृहीत्वानेषु मति
मानवैद्यः तत्समानि सर्वोषधसमानि धूर्तवीजानि दापयेत् ततः पानीयेन जलेन तासामोषधीनां च एकप्रमितां वटीं कुर्यात् ततः स्वाणसर्द्धा सायणकां वटीं प्रदाप
वाट्यालकजटा जातीफलं पीताभदुग्धिका सप्तैतानि समांसानि तत्समानि च दापयेत् ३०३ धूर्तवीजानि मतिमान्यानीयेन वटीं कुर्यात् च
एकप्रमितां तासां वटीमेकां प्रदापयेत् ३०४ तेलिकं द्रासयेद्युत्त्वा तैलाभ्यां चरेद्बहुस्निग्धक्षीरघृतादीनि पथ्यंदद्यात्थानलं ३०५ अनेनै
व विधानेन क्रमेण मतिमान् भिषक् यावत्तोलकसंज्ञासतावत्संख्या वटीं ददेत् ३०६ शोषं वाषसंतोयं यद्वटिकान्ते प्रदापयेत् यदा शुद्धिर्भवे
तस्य तदाभ्यां चरेद्बहु ३०७ यदा वाषसंज्ञास एकैकां वटिकां ददेत् एवं स्यात्वाषसर्द्धा सोह्यहि फेनोपिता दृशः ३०८ प्रोक्तं तु भेषजं

येत् ततः तेलिकं स्वाणसंयुतवाट्यासंयुतवायुक्तिश्च ३०९ स्वाषसर्द्धा सहेतवे इति वाषसश्च हि पित्तद्वयस्य कातदाह तत्परिमितमृत्तिकालोष्टस्य प्रति
दिवसं घर्षणं कृत्वा तोलयेद्वैकत्वाद्वा सोमविष्यति अनया युतवाट्यासंयुतवाट्यासं काले तैलाभ्यां चरेत् च पुनः स्निग्धक्षीरघृतादीनि यथानलं यथाग्निः पथ्यंदद्यात् अनेनैव वि
धानेन अनेनैव क्रमेण च मतिमान् भिषक् वेद्यः यावत्तोलकसंज्ञासः तोलकपरिमितवाषससंज्ञासः तावत्संख्यां वटीं ददेत् तेलिकं च वृत्तिरक्तिकापरिमितमित्यर्थः ददेदिति अ
नुदात्तबिलक्षणमात्रमात्मनेपदमनित्यं च षिड्धातोः डित् कर्णात् जापकाद्यथादयतीति सिद्धिर्भवति तथैव देदित्यस्यापि सिद्धिर्भविष्यतीति ततः यत्शोषं तोयं वटीपरि
माणद्वसिष्टपरिमाणं यत्तत्तैव तोयं तद्वटिकान्ते प्रदापयेत् एवं रीत्या तस्य पुरुषस्य यदा शुद्धिर्भवेत् स्वाणसा च्छरीर शुद्धिर्भवेत् त्यागो भवेत् तदा एकैकां वटिकामपि द्वा

६०
 पयोदित्यवयवः मधुच्छोदं लवणोत्तमं तैधवं मागधी पिप्पली एव कलंगमप्यफलाद कांगुलि पिल्लिका वत्रपत्रो हनूपजः विठपो मदनं तस्य फलमपीय युज्यते इति वसन विधिः
 मुंदरी छंदः ३१३ अथ रचन प्रकारमाह रतिरिति रसगंधकां कणोषणं च पुनः गुडं शुंटी लवणोत्तमं एतत्सर्वमोषधं समं सममानं उत्तमं जयपालं रसगं जातपारदान् त्रिगुणं रतद्वि
 लोषधं प्रहरं यथास्मात्तथा विधिवत् विमर्दयेत् ततः हिमं तोयेः सह रत्ति काद्वयं प्रदानयेत् त्विमलमुद्धिर्वेद्यः इति शेषः इदं श्री रचनमाह कथं भूते रचनं अखिला मय हत पुनः
 मलापहं च पुनः रुविरं मनोहरं निषिख्यः रसोपादः गंधकां मागरी नारी रजः गंधको तिमा मालो के प्रसिद्धं कणं सोभाग्यं मुहागा इति लोके उपर्णं मरिचं गुडं दधु विकारं शु

मधुना लवणोत्तमं तथा समनिगुट फलं समागधी सपशु प्रवरं प्रदापयेद्वलकालान् लदोष विस्तुधीः ३१३ इति वसन विधिः रसगंधका
 टं कणोषणं गुडं शुंटी लवणोत्तमं समं त्रिगुणं जयपालं मुत्तमं रसराजाद खिलं विमर्दयेत् ३१४ प्रहरं विधिवत् प्रदापयेत् हिमं तोयेः सह रत्ति
 काद्वयं अखिला मय ह नलापहं रुविरं रचनमाहुरी ६शं ३१५ इति रचन विधिः खेदित्येयं वापि दुग्धं महिष्या लोलाभ्यंगः पादयोर्वा
 विधयः निद्रानाशिका कजंघा कषायः पेयः रुक्ता मूलचूर्णं गुडैर्वा ३१६

दीनागारं लवणोत्तमं तैधवं जयपालं दंती जमाल गोटा इति भाषायां इदमपि मुंदरी छंदोति ३१५ इति रचन विधिः अथ निद्रा जननोपायमाह षादिदिति निद्राना
 शो महिष्या दुग्धं पेयं अथवा पादयोर्लोलाभ्यंगो वा विधयः वा का कजंघा कषायः पेयः अथवा रुक्ता मूलचूर्णं गुडैर्वा खेदित्यवयवः का कजंघा का कनासा कौश्रादीनां प्रसि
 द्धातयोक्तं शिवनिधंटे का कनासा च लोके तु कौश्राद्ये दीति विश्रुता इति रुक्ता मूलं पिप्पली मूलं इदमपि मुंदरी छंदोति ३१६

अथनिद्राजनने निद्रा नाशे च प्रयोगद्वयमाह प्रातरिति स्विन्नं सृष्टं तं हंताकं माक्षिकैः सह प्रातः प्रातःकाले अन्नं भुक्तं सत् वा सायं अन्नं सत् वा प्रातः स्विन्नं सृष्टं तं हंताकं सा
यं अन्नं सत् वा सायं स्विन्नं सृष्टं तं हंताकं प्रातरस्तं भुक्तं सत् तद्देवपूर्वीक प्रयोगवेदेव निद्रां जनयतीति अथ निद्राधिक्ये सति क्षौद्रैः सह वाजिला लोषणाभ्यां दद्यादं
जनमिति शेषः तस्मादंजनात् निद्रायातिवृजनीत्यन्वयः हंताकं वैगन इति लोके माक्षिकं मधु सह त इति लोके वाजिला लः तुरगलालः गाम इति भाषायां ऊषणा पिप्यली
इति निद्राजनन नाशनं ३१७ अथ हं हण प्रकारमाह क्षुरकेति यद्देहललनानां स्त्रीणां शतपंचकं भवेत् स एव पुमान् निशिरात्रौ क्षुरके भवत्वा त्म गोपणा स्थलश्रंगाट

प्रातः स्विन्नं शायमन्नं सृष्टं तं हंताकं वा माक्षिकैः सह देव निद्राधिक्ये वाजिला लोषणाभ्यां क्षौद्रैर्दद्यादंजनायाति निद्रा ३१७ क्षुरके भवत्वा
त्म गोपणा स्थलश्रंगाट वलावरी रजः पयसा निशिसीतियद्देहललनानां शतपंचकं भवेत् ३१८ मधुकस्य रजो मधुलुतं सततं यः स घृतं लिहेत्
रः अथ ग्रा ल्लेलि मूलजं रजो निशि दुग्धेन सह पिवेत् ३१९ मुशली द्वयं शात्मली जटा सुविदारी दहनं शतावरी कृतद्वर्णमिदं समं

वलावरी रजः चूर्णं पयसा दुग्धेन समं सततं मधुनं सममत्र सर्वतः ३२० इति मुशल्याभ्रकं अतिभुंजीतेत्यन्वयः क्षुरकः इक्षुरः नालमालाना
इति लोके इभवला नागवला गुलसुकारी इति भाषायां आत्मगोपणा प्रादृषायणी किमाच इति लोके स्थलश्रंगाटको गोक्षुरुः वलावाद्यालकः बलियारा इति लोके
वरीयतावरी इदमपि सुंदरी र्धदः ३१८ अथान्यहं हणमाह मधुकस्येति यो नृसततं निरंतरं स घृतं मधुलुतं मधुकस्य रजः चूर्णं लिहेत् अथ निशिरात्रौ शात्मलि मूल
जं रजः दुग्धेन सह पिवेत् तस्य पुरुषस्य सुदं हणं वीर्यं हिं भवेदित्यन्वयः मधुक्षौद्रं मधुकं मधुयष्टी मुलेटी इति भाषायां शात्मलि सेवर इति लोके असारः शात्मलि कुटो
हि धास्थूलाणुकं टकैः पंचघट्ट वट प्रलीलावाढ स्थूलमुमः फलं सतलं फलु चेतस्य रसो मोचरसाभिधमिति इदं सुंदरी र्धदः ३१९ अथ मुशल्याभ्रकमाह मुशलीति

८८ च. मुशलीहयशाल्मलीजटासुविदारीदहनं सतावरी एतत्सर्वसमं समंतुल्यं गृहीत्वा अत्र सर्वतः समं स्रुतं अमं प्रविष्टं ह्ययात् यत्तच्छर्णी इदं सर्वं निशिरात्रौ दुग्धेन सह पित्तं कायं भर्त्ता
 ८९ इदं कृतचूर्णी सुदृढं हणकारकमित्यन्वयः मुशलीहयं एकास्त्रिंशद्द्वितीयाष्टाश्रनेनैव नाम्ना प्रसिद्धा मुशलीहृणा कावान्दोऽस्तदुःखसासदादिमासृष्टस्य च देतिशाल्मलीसंवर
 इति भाषायां विदारी विलाई कंद इति भाषायां काहलाकारलोहितपुष्पः सद्विविधः दीर्घकंदो बहुक्षीरः हस्तिपादको लम्बक्षीर इति उल्लेखः दहनः चित्रकः सतावरी वरी
 यतावर इति लोके इदमपि सुंदरी ध्वन्दः ३२० अथ गगनाय स चूर्णीमाह त्रिकट्विति त्रिकटुः त्रिसुगंधिजातिका फलवांसी च पुनः उत्तमं श्रेष्ठं लवंगं च पुनः तुरगाह्वयदादि

त्रिकटुः त्रिसुगंधिजातिका फलवांशी सुलवंगं मुत्तमं तुरगाह्वयदादि मौसटी सहस्रं ग्यासममेव चूर्णितं मृतमायसमभ्रजं रजः सममेतस्य
 विनिश्चिपेत्सुधीः सकलस्य समासिता भवेत्यरियुं जीतवुधोऽस्मात्त्रकं ३२१ पललं जनयेद्दुताशनं सकलं मेहगणं विनाशयेत् तुरगायति मानवः
 सदा जयति क्षिप्रमनेककाशजान् ३२२ गगनाय समस्य नाम सन्निधिलव्याधि विनाशनं स्मृतं इति गगनाय स चूर्णी

मौ च पुनः श्रंग्या सह सटी एतदौषधं समं सममानं चूर्णितं एतस्य चूर्णस्य समं स्रुतं श्रायं स्रुतं मभ्रजं रजश्च सुधीवैद्यः विनिश्चिपेत् सिता सकलस्यौषधस्य समाभवेत्तवुधः अस्मा
 त्रकं षोडशमाषमात्रं चूर्णी यदि परियुं जीत् सेवेयेत्तर्हि एतच्चूर्णी पललं जनयेत्सां सृष्टिं करोतीत्यर्थः च पुनः दुताशनं अभिजनयेत् च पुनः सकलं विंशतिविधं प्रमेहगणं विना
 शयेत् च पुनः एतच्चूर्णं न सदा सर्वस्मिन्काले मानवः तुरगायति तुरगे वा चरति रताविति शेषः च पुनः क्षिप्रं यथास्थानं अनेककाशजानो गगान् जयति अस्य चूर्णस्य गगनाय स नामक
 थं भूतं चूर्णी सत् अर्धपुनः निखिलव्याधि विनाशनं स्मृतं कथितमित्यन्वयः त्रिकटुः शुंदी मरिचपिप्ली त्रिसुगंधिः त्वगेलापत्रकं जातिका फलं जातीफलं वांसी वंसलोचनः
 लंवरदिपुष्पं तुरगाह्वयः अश्वगंधादादिसंकारकांश्च नार इति भाषायां सटी कर्कशः शृंगी कर्कटशृंगी काकडासी गी इति लोके श्रायं संलोहं इदं सुंदरी ध्वन्दः इति गगनाय स चूर्णी ३२२

८२
अथान्वकमक्षणाह निश्चंद्रेति त्रिपलपरिमितं निश्चंद्रेत्योममस्तकथंभूतंयोममस्येनकेनापिप्रयोगेनसिद्धंएषांवक्ष्यमाणेषधानांसमतुलितरजःचूर्णंयोमतुल्यंअमृतुल्यंप्रदे-
यंजातीजातीफलंचत्रिकटुकंचमुशलीचवानरीचहस्तिकर्णीचगोकंठश्चतेःत्रिकटुकमुशलीवानरीहस्तिकर्णीगोकंठाःचपुनःवाजिगंधाशुकतरुसुजटाचचपुनःदेव

निश्चंद्रेत्योममस्तत्रिपलपरिमितयेनकेनापिसिद्धंएषामप्यौषधानांसमतुलितरजोयोमतुल्यंप्रदेयं३२३जातीजातीफलंचत्रिकटुका
मुशलीवानरीहस्तिकर्णीगोकंठावाजिगंधाशुकतरुसुजटादेवपुष्पंत्रिगंधं३२४देवाद्यालेजमोदाजलपिकनयनंमस्तकीदेयवान्यौसौ
गंधाण्यावरेन्द्राशनवहुपदिकेचेतिसर्पिर्मधुभ्यां३२५खदित्कर्षप्रमाणंतदनुचमुपयोगव्यमर्द्धावशेषंकिंनृमस्तद्रुणातांवहुगुणमधिका
शक्तिरस्तिप्रसंगे३२६नारीणांसौष्यमेकंरसपतिसमतासर्वरोगप्रहारिवीर्यलांभोतिहर्षविमलमुषत्रुचिलैजसस्फारमोजः३२७कास
स्वासक्षयाश्विमिमुषनयनघ्राणकंठैश्चरोगान्वातोत्थापितजातान्कफजनितगदानंदवह्निज्वरादीन्३२८हृन्त्यादितान्सादांकिंच
लिपलितहरंका मिनीकामरूपंषंडानांभयएवप्रचुरपुष्पतासागरेप्रीतमेतत्३२९इत्यन्वकमक्षणा

पुष्पंचचपुनःत्रिगंधंदेवाद्यालेचजमोदाचचपुनःजलपिकनयनंजलंचपिकनयनंचअनयोःसमाहाःजलपिकनयनंमस्तकीचचपुनःदेयवान्यौसौगंधाचचपुनःवरेन्द्रा
शनवहुपदिकावराचइन्द्राशनवहुपदिकाचतेःवरेन्द्राशनवहुपदिकाइतिसर्वाण्यौषधानितेषांरजःवर्षप्रमाणंषोडशमाषप्रमाणंसर्पिर्मधुभ्यांखदिततदनुप

आश्रद्धावशेषं गव्यं मुपयः पयः तत्प्रसंसा माह किमिति बहुगुणं अलिवहवः गुणाः संतियस्मिंतत् बहुगुणं अतः तद्रसस्य गुणा तां वयं विंदुमः किमपि वक्तुं न शक्नुमः च पुनः प्रसं
 मे स्त्रीपुंसोः प्रसंगे तस्य पुरुषस्य अधिका शक्तिरस्ति पुनः कीदृशं नारीणां एकं मौल्यं सुखदायकं न त्वन्यत् च पुनः सर्वरोगप्रहारेनाशरसपतिः समता अस्ति रसपतिः पारदः त
 स्य तुल्यत्वं च पुनः अस्य सेवनात् वीर्यं लभो भवति च पुनः अतिहर्षो भवति विसलमुखं रुचिश्च भवति च पुनः तेजः स्फारसो जी भवति तेज एव तेजसं तेजसेन स्फारसो जः तेज
 स स्फारसो जः स्फारं विपुलं तथाह हेमचंद्रे स्फारस्तु स्फारकादीनां बुद्धौ देविपुलेपि चेत् च पुनः एतद्रसं कासस्वासाश्वाश्रयमिमुषनयनघ्राणकं एतेष्ट रोगान् च पु
 नः वातोत्थानरोगान् पित्तजातांश्च कफजनितगदांश्चापि मंदप्रिच च पुनः ज्वरादीनपि एतान् रोगान् हन्यात् यद्येतां रोगान् हन्यात् तर्हि किं किंतु वलिपलितहरं
 पुनः किं भूत रसं कामिनां पुसां कामरूपं यद्येष्टरूपं दं इत्यर्थः च पुनः अस्य सेवनात् पंडानां न पुंसूनां भय एव पुनरेव प्रचुरं पुरुषता भवति च पुनः एतदौषधं सागरि साग
 रनाम्नि ग्रंथे प्रोक्तमित्यन्वयः व्योमंगरानं अवरष इति भाषायां जाती जाती पत्री जा वित्री इति लोके जातीफलं जातीकोशं विकटुर्कं शुंठी मरिचपिप्ली मुशली प्रसिद्धा वानरी
 आत्मगुप्ता किमात्र इति लोके हस्तिकर्णी चंदनं हस्तिकर्णी टसृष्टे हस्तिकर्णी तु चंदने इति शिवनिघंटे गो कंटो गोक्षुरुः गजिगंधाश्च गंधाश्च कतरुजं दशां लालिजटो देवं पुष्पं लवं गंधां गंधं लगे
 लापत्रकं देवाद्याले इति वलानागवला च अतिवला कंधी इति लोके नागवला गुलशकरी इति लोके जमोदा अजमोद इति लोके जलं ह्रीं विरं हा ऊ वेर इति भाषायां पिकनयनं को किलाक्षी
 तालमखाना इति भाषायां मलकी शलकी निर्यासः रुमी नलगी इति लोके द्वेयवान्यौ एकायवानी द्वितीया स्त्रिदेशा इवायवानी पुरासानी अजवाइन इति लोके सौ।
 गंधाकस्तूरिका कस्तूरी इति मुशक इति च लोके प्रसिद्धा तत्परीक्षा माह नृगाः सुगालवद्भेदि निर्विषाणां प्रिसंधयः तेषां तामिक्तुकल्लरी सिद्धेति कामरूपे च नैपाले का
 शीरि सा त्रिधा क्रमात् श्रेष्ठमध्यो धमाः रुक्मा नीलाभाः पिंगलां क्रमात् कर्पूरोपसमायूतः कामरूपोद्वातुया जले क्षिप्ता न चैव एयमेति साभू भुजां हि तालघ्नी लिग्धा
 कडु स्तिता तोलने मर्दिता स्ति कोतका गंधमुख्या गंधिना प्रीति तुल्यतां अग्नौ दग्धा दग्धचर्म गंधाया सापिपं च धा पुरिकांतिका कौलप्युप्रयिंडा च नापिकेति लि

^{८३}
 निघंटुसारे राजनिघंटु प्युक्तं यथा चूर्णाकृतिस्तु खरिफातिलका तिलाभाकोलात्थवीजसंदेशीचकुलित्थिकाख्यास्थूलाततः कियदियं किल पिंडका स्यात् तस्याश्च किंच
 दधिका पिच नायि वौषा इति कस्तूरिका कडुस्तिता क्षारिता शुक्ला गुरुः कणवातविषर्दिशीतदौर्गंधशोषहतं कामरूपोद्वाहकलानेपाली नीलवर्णयुक् का
 श्मीरी कपिल च्याया कस्तूरी विविधा मता कामरूपोद्वाहनेपाली मध्यमा भवेत् काश्मीरदेशसंभूता कस्तूरी ह्यधसा सृष्टेति शब्दार्थचिंतामणौ वरात्रिफला धात्री
 कलितरु शिवांद्राशनः विजयाभांग इति लोके बहु पदिका महापुनुषदंतिका घृतावर इति भाषाया मिति इत्यम्रकभक्षणां ३२५ अथ कामेश्वरसोदकमाह कपरेति

कर्पूरत्रिकटुकुलींजनशुभेकूष्मांडवीजंनसंभूतीसंकरहाटयंजनभवंवीजंचकौशातकं अश्वत्थाससतावरीशुकतरोर्निर्यासवर्षाभ
 वौत्वक्पत्रैलहुताशपिप्यलिजटाः प्रत्येकं टंकाद्वयं ३३० वीजं हेमभवं च हिंगुलरजः टंकाद्वयं पारदः शुद्धः स हिषनागफेण धुरकन्यग्रा
 धवीजानिवैः दिक्कै प्रमितानि देवकुसुमं जातीच जातीपालं विंवीपत्रलतोत्थसत्त्वममलं टंकाद्वयं कपंचमभिः ३३१ टंकाद्वयं कसुरुक्नम ।
 त्रविजयाटंकाद्वयं विंशतिश्रृणीकृत्यसत्त्वममलं विविधाप्रस्थद्विगोधूमकं सार्द्धं टंकाद्वयं कषासंचलितेन काथ्यपादांशकं नीत्वा प्रस्थयुरां
 कर्पूरत्रिकटुकर्पूरश्चत्रिकटुश्चतौकुलींजनशुभे ^{३३२} चण्डममलं सर्पिर्मधुप्रास्थिकं ३३२ कुलींजनंचशुभाचतेचपुनःकूष्मांडवीजंनतंच ॥
 चपुनःतालीसंकरहाटयंजनभवंचकारहाटयंजनभवंचजनयोःसमाहारः ॥ ३३३ जनभवंचजनयोरुजंनभवंवीजं ग्राह्यं कौशातकं वीजंच अश्वत्थाचकथंभूताअश्व
 त्थाससतावरीशुकतरुनिर्यासश्चवर्षाभश्चतौ अन्नसुमासिपिनिर्यासश्चस्यशुकतरुशाकमन्वयः त्वक्पत्रैलहुताशपिप्यलिजटाः पत्रचएलाचहुताशश्चपिप्यलिज
 टाचताः एतत्सर्वमौषधंप्रत्येकं टंकाद्वयं अष्टमाषकमितं ग्राह्यं हेमभवं वीजंच हिंगुलरजश्चटंकाद्वयः कोलयरिमितः शुद्धः पारदः चपुनः स हिषनागफेण धुरकः

८३ च न्यग्रोधवीजानिसद्विषश्चनागफेणश्चधुरकश्चन्यग्रोधवीजंचतानि कथंभूतानिदिकं कैः प्रमितानि वत्वारिंशन्माषप्रमितानि देवकुशुमंचजातीचजातीफलंचवि
 वीपत्ररसोत्थंसत्वंचकथंभूतंसत्वंचमलंनिर्मलंशतीनिसर्वाणिपंचभिर्दिकैः विंशतिर्माषपरिमितः ग्राह्यानित्रत्रटंकाईकसुरुकमंटंकाईकंचसुरुकमंचअनयोः
 समाहारः टंकाईकंसाईटंकांषणमाषकंचपुनः विंशतिटंकेकृताविजयाश्रीतिमाषकमितित्यर्थः समस्तएतदौषधंविधिनाचूर्णीकृत्यततः प्रस्थद्विसेटकद्वयं
 गोधूमकंग्राह्यं चपुनः साईट्टाटकखाण्डसंदिकसेटकमितंखाण्डसंगृहीत्वासलिलेनिकाथ्यकाथंकात्वापादांसकंकाथंतीत्वाएतत्सर्वंक्षिपेत्काथेइत्यनुषंगः त
 काथंअग्नियोगवशतः सांद्रीभूतंसत्प्रस्थयुगंअमलंखंडंक्षिपेत्चपुनः प्राणिकंप्रस्थप्रमाणंसर्पिर्घृतंमध्यपि क्षिपेत् मधुशीतेसतिक्षिपेदिति विशेषततः समस्तं पि
 सांद्रीभूतमथाग्नियोगवशतः शीतिमधुप्रक्षिपेत्पिंडीकृत्यसमस्तमिंदुबलतः खादेद्धर्द्यस्थिवत्गोदुग्धंसशितंपिवेदनुयदाकिंब्रू

महेतद्गुणवीर्याधिक्यमनेकसौष्यजनकंटेडेषुतारूपयकृत् संभोयंवरकामिनीगणरतौसर्वात्वादान्नाशयेत्३३३इतिकामेपूर्वरोमोटकः

हीकृत्यमोदकंकात्वाइंदुबलतः स्वकीयंचंद्रवलंदष्टावदर्थस्थिवमोटकंखादेत् यदाअनुपश्चात्सशितंगोदुग्धंपिवेत्तदातद्गुणान्तदौषधगुणान्वयंकिंब्रूमहे
 किंकथयामः कथंभूतंत्रौषधवीर्याधिक्यवीर्याधिक्यकारकमित्यर्थः पुनः अनेकसौष्यजनकंपुनः टेडेषुतारूपयकृत्टेडेषुजनेषुतारूपयतांकासेतीत्यर्थः चपुनः अयमौ
 षधः वरकामिनीगणरतौसंभः संभकारः शुक्रस्येतिशेषः चपुनः अयंसर्पान्गदान्तरोगान्नाशयेदित्यन्वयः कर्पूरोहिमांशुः कपर्दइतिलोके त्रिकटुः शुभीमरिचपिप्ली
 लीजनः उग्रगंधामहामराइतिकुलीजनइतिचलोकेप्रसिद्धः शुभावांसीवंसलोचनइतिख्यातः कृष्णंडं बहुवीजप्रालंपेठाइतिलोके नतंतगरंतालीसंखनास्ताख्यातं
 अखलक्षणंपूर्वोक्तंचैयंकरहाटः आकल्लकः अकरकरहाइतिभाषायांरंजनं गाजरइतिलोके रंजनोरुणकंदस्तुप्रसिद्धोनीचपल्लभइति कौश्यातकंवीजंजालिनी

८. ध. ८४ अथान्यस्तंभनमाहकारवीरकसिति कारवीरकमूलं शंभसाजलेन दृषदावर्षितलिंगलेपितं सप्तमदनोत्कटयौवनस्त्रियां सुरते सति हीति निश्चयेन रेतसः शुक्रस्य स्तंभकारं भवतीत्यर्थः ३३४ मदनैर्नको सित उक्ता अत्युग्रं यौवनं अस्याः स्त्रियायाः तस्यामिति कारवीरकं द्वयमारकं केनेह तिलोके ॥ इदं सुंदरी घंदः ३३५ इति द्वितीयो लेपः अथान्यस्तंभनमाह मधुनेति अंशुजबीजं मधुना दौद्रिणसह यद्विनिजनामिश्रं लिपितं पुनस्त्रियं आरमेत तर्हि पुरुषः यावदशेषमोषभुगस्तितावेत्पुरुषः वीर्यशुक्रं अधः नहि मुंचतीत्यन्वयः अंशुजबीजं पञ्चबीजं कमलगृह्णति इति लैकि इदमपि सुंदरी घंदः ३३६ अथान्यस्तंभनप्रयोगमाह हवि करवीरकमूलं सप्तमशा दृषदावर्षितलिंगलेपितं मदनोत्कटयौवनस्त्रियां सुरते स्तंभकारं हिरेतसः ३३५ मधुनांशुजबीजमालियेन्निजनामिं पुनरा रमेति स्त्रियं नहि मुंचति यावदस्य धः पुरुषो वीर्यमशेषमोषभुग ३३६ हविषा परिपेषितेन यश्चटकांडेन पदं विलेपयत् । नहि मुंचति वीर्यमस्य शनधारणीयः वदतः किमद्भुतं ३३७ आर्द्राण्यन्नेण पचेत्तलिन्यास्तद्वच्चर्कदेतमुदर्शनस्य तैलं ह्यतस्यानिरुणाद्विवेगं शुक्रस्य नाभौ परिलेपनेन ३३८ कारहाटरसं दुहिं गुलं त्वचपत्रं सकलं समं भवेत् आहिषेत युतं सुपेषितं कारवीरोत्थरसे स्त्रिभाषितं ३३९

पेति यः पुरुषः हविषा परिपेषितेन चटकांडेन पदं पादतलं विलेपयेत् ततः यावत् धारणीं प्रथीं अस्पृशन् शननस्पृशन् तावत्पुरुषः वीर्यशुक्रं नहि मुंचति न पातयेत् अतश्च स्मादौषधाद्भुतं किं न किं सपीत्यन्वयः अन्येति शेषः चटकः कलविद्धः गृह्णीडिविडा इति भाषायां चटति भिनति गृह्णात्यादिकं मुलेन यः स चटकः इदमपि सुंदरी घंदः ३३७ अथान्यशुक्रस्तंभनप्रयोगमाह आर्द्राणेति तलिन्याः आर्द्राण्यन्नेण हीति निश्चयेन अतस्याः तैलं पचेत् तद्वच्चर्कदेतमुदर्शनस्य तैलं ह्यतस्यानिरुणाद्विवेगं शुक्रस्य नाभौ परिलेपनेन ३३८ कारहाटरसं दुहिं गुलं त्वचपत्रं सकलं समं भवेत् आहिषेत युतं सुपेषितं कारवीरोत्थरसे स्त्रिभाषितं ३३९

अथान्यसंमनप्रयोगमाह कारहाटेति कारहाटसिंदुहिंगुलं चपुनः त्वचपत्रं एतत्सकलमौषधं संभवित् कथं भूतं चोषधं ब्रह्मिणेन युतं पुनः कथं भूतं करवीरोत्यरसैस्त्रिभावि
तं भावना विधानेन भावितं अथ प्रसंगाद्विधाना विधिमाह द्रव्येण पावतासम्यक् चूर्णं सर्वं युतं भवेत् भावनायाः प्रमाणं तु चूर्णं प्रोक्तं मिषवैरिति एवं भूतस्य भावितस्यौषधस्य
यदि चणकप्रमितावटी भवेत् तर्हि तावटी निशिगुत्रौ मुक्ता अनुपश्चात्तिता वितं पयः दुग्धं पिवेत् तर्हि सावटी एकयामिनीं शुक्रस्य बंधनं संभनं कुरुते कथं भूता सावटी
रमणी सुरते सुखप्रद इत्यत्रयः कारहाटः आकल्लकः अकरकारहाट इति लोके रसो पारदः इंदुः कपूरः हिंगुलं दरदं सिंगुरुपा इति भाषायां त्वचं चोचं तज इति लोके पत्रं

चणकप्रमितावटी भवेत् निशिमुक्ता अनुपयः शिताव्युतं रमणी सुरते सुखप्रदा कुरुते बंधनसेकयामिनीं ३४० इति कारहाटादिगुटिका
अथ स्त्रीद्रावणं मधुपारदचंद्रं टंकणं विलिपे स्निग्धमने कयोषितः सुरते मदना नलोडता यदि द्रावणं यतुं मनस्येह ३४१ सण्णखाषस
वीजजं रजस्तूरणीयो निजलापहं पिबेत् अहि सोदकधावनं भगिभाकं इति निवारकं मतं ३४२

हाटादिगुटिका ३ अथ स्त्रीद्रावणप्रयोगमाह मधुपारदिति सुरते मदना नलोडता स्त्रियः कामानलेनोत्ता स्त्रियः द्रावणं यतुं प्रातः यदि मनस्येह मनोरथः स्यात् तर्हि
अनेकयोषितः अनेकायोषता यस्यासौ अनेकायोषितः पुरुषः मधुपारदचंद्रं टंकणः लिंगं विलिपे इत्यत्रयः अत्रणिजप्रापणे धातुः द्विकर्मकत्वात् कर्मद्वयं ज्ञेयमिति म
धुक्षौद्रं पारदं रसं चंद्रः कपूरः टंकणः धातुद्रावी सुहागा इति लोके इदं पिसुंदरी धंदो इति द्रावणलेपः अथ स्त्रीणीयो नो कडुजल आवेच प्रयोगाह यमाह सण्णिति
तरुणी स्त्री सण्णखाषस वीजजं रजः चूर्णं पिवेत् सण्णखाषस अत्रयः सण्णखाषस सण्णखाषयोः वीजं सण्णखाषस वीजं सण्णखाषस वीजं जायते रजः

तस्मात्तत्रापात इति लोके इदं मपि सुंदरी धंदः इति कारहाटादिगुटिका ३

यः च ल्यपहमिति चपुनः भगो यो नो अहि मो द कथा वनं उलो द केन धावनं प्रक्षालनं कथं भूतं धावनं भारकं डू विनिवारकं मतं कथितं नाश कर मि त्व न्वयः मणः स न इति लोके ला ख सं वि त्क
 ८५ लं पो लो इति भाषायां इदमपि सुंदरी धंदः ३४३ अथ निर्लीभीकरणमाह अण्ड्येति गुणस्थानयोनिस्थान्केशान् पाठ्यात् दुपरिकुशुं भर्जितं यदि लिपितं हितं केशाः पुनर्नैव प्र
 रोहंति नो ह्वतीत्यर्थः अथ योगः कामिनी प्रियः इत्यन्वयः कुसुमः महामंजनः कुसुम इति भाषायां इति निर्लीभीकरणं अनुष्टुप धंदः ३४४ अथ संकोचीकरणे प्रयोग इयता
 ह स्फटिकेति स्फटिकामलवल्कलं स्फटिका च आमलवल्कलं च अतयोः समाहारः स्फटिकामलवल्कलं चपुनः जया मोच रसं च वारिणा जलेन विधिना वटकोक्त विधिना व
 अण्ड्ये केशां च स्थाप्य स्थानं तेलं लिपितं कुसुमं भर्जं पुनर्नैव प्ररोहंति योगो यं कामिनी प्रियः ३४३ अथ संकोचीकरणं स्फटिकामलव
 ल्कलं जया विधिना मोच रसं च वारिणा वटकं विनियोजयेद्भगो बहु स्वतापि कुमारिका भवेत् ३४४ सततं यदि धावनं भगो कथिते
 नामलकी त्वचो भवेत् किमतः स्थविरापि सुंदरी सुरते कांत मनः प्रमोदयेत् ३४५ अथ स्थूलीकरणं पारावतमलं लिपितं मधुना
 सैंधवेन च लिंगे किमधिकं भूयः स्थूलीकरणं सुत्तमं ३४६

टकं कृत्वा यद्यभगो यो नो विनियोजयेद्भगो रयित् तदा बहु स्वतापि ललना कुमारिका भवेदित्यन्वयः स्फटिका सौराष्ट्री फटफरी इति लोके प्रसिद्धा आमलं धात्री जया विजया
 भां प्र इति लोके मोच रसं शास्त्राली निर्यासं मोच रसं इति प्रसिद्धं इदमपि सुंदरी धंदः ३४५ अथान्यत्संकोचीकरणमाह सततमिति आमलकी त्वचं कथितेन जलेनेति शेषः
 यदि भगो भगस्य सततं निरंतरं धावनं स्यात् तर्हि स्थविरा इह पिललना सुंदरी भवेत् भगस्येत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमी सा सुंदरी सुरते रतौ कांत मनः प्रमोदयेदित्यन्वयः आमलकी धा
 त्री आवला इति लोके इदमपि सुंदरी धंदः तल्लक्षणमाह समाणौ जगणौ गुरुर्भवेद्विषमे चरणे दशाक्षरे सभराल गुरु हराक्षरेः सप्तपदे यदि सुंदरी भवेति इति संकोचीका

अथलिङ्गस्थूलीकरणमाह पाणवतीति पाणवतमलपरोषमधुनासहसैधवेनापिसहयदिलिङ्गोर्लिपेत् तर्हि उत्तमंस्थूलीकरणंभवतीत्यध्याहारः भूयः पुनः अधिकंस्थूलीक
 रणंकिंकिमपिनित्यत्वयः पाणवतं कपोतं कवूतर् इतिलोके पाणवतशब्देनाव्रवनकपोतं ग्राह्यं अत्युलत्वात् मधुद्वौद्रसैधवंपट्टतमं इदं अनुष्टुपघट्टः ३४ ३४०
 अथान्यस्थूलीकरणमाह अश्वगंधेति कल्कितां दंतकल्कविधानं अश्वगंधा कंटकारीसैधवंपिवेत् कथंभूतां दृष्ट्वा तर्हि लिङ्गस्थितिशिषः चपुनः अग्नीदुग्धेपक्वंघृतं लेपात्लि
 गस्यदृष्टिस्तद्वतीत्यन्वयः अश्वगंधावाजिगंधा अश्वगंध इतिलोके कंटकारीदृहती भटकटैया इतिभाषायां सैधवंपट्टतमं अनुष्टुपघट्टः इतिलिङ्गस्थूलीकरणम् ३४८

अश्वगंधाकंटकारीसैधवंकल्कितांपिवेत् अग्नीदुग्धेघृतं पक्वं लेपात्लिङ्गस्यदृष्टिस्तद्वतीत्यन्वयः ३४७ सवानरं वीजमुदंकणोद्भवं त्रिकंटकं मोच
 रसं पि केशणं सुता लमूलीन्द्रयवेष्टुराभ्यताविशुद्धसत्वं बहुलाचमसकी ३४८ श्लेष्मांतवीजं करहाटसंयुतं सुचूर्णितं भूरिफ
 लाभिधौषधं समंसमंतद्विगुणा शिता भवेद्गुटी कृतां कर्षमितां पयोवतां दिनावसाने ललना समागमे करोति वंधं बहु सेवते तसः

३४९ इति सुंदरी दृष्टोपदर्शितवाजीकरणम्

अथपुनस्तंभनमाह सवानरमिति सवानरं वानर्यासहितं सवानरमित्यत्र समासांतादृच् उदंकणोद्भ
 वं वीजं चपुनः त्रिकंटकं मोचरसंच चपुनः पिकेशणं सुतालमूली च चपुनः इन्द्रयवः इक्षुरश्च चपुनः अश्वतायाः विशुद्धसत्वं विमलसत्वं बहुला चपुनः मसकी करहाटसंयुतं
 श्लेष्मांतवीजं च चपुनः भूरिफलाभिधौषधं सुचूर्णितं एतत्सर्वमौषधं समंसमं ग्राह्यं न तेभ्यः औषधेभ्यः शिताद्विगुणा भवेत् एषां कृतां गुटी दिनावसाने रात्रौ ललना समागमियः
 अतिभुक्तिस्तस्य पुरुषस्य रेतसः सारवबहु यथास्यात्तथा वधकरोति कथंभूतां गुटीं पयोविता मित्यन्वयः वानरीमर्कटी किमान्न इतिलोके उदंकणं उद्वान्न इतिलोके त्रिकंटकं गो
 क्षुरः सचसंशुल्ललिनिर्गसं हनास्त्रप्रसिद्धं पिकेशणं कोकिलाक्षीतालमषाना इतिलोके तालमूली मुशली इन्द्रयवः कुटजवीजं इन्द्रजौ इतिभाषायां इक्षुरः शरः

के

८८ च रामशरितिलोके अस्त्यगुड्वी बहुलाएलालाइचोइतिभाषायां मस्तकीरुमीमलगीइतिलोतथोक्तं निघंटुसारे हमेभवस्यभास्वावोमस्तकीतिवलप्रदाशुलः स्वादुरांधः स्या
८९ तिच्छलादाटर्पकस्तदिति हमेहमेदेशमवस्यभाशस्त्री दक्षः तस्यास्वावो निर्यासइति करहाटः आकल्यकः अकरकरहाइतिलोके स्निग्धांत शैलुः लसोटाइतिभाषायां भू
रिफत्तयतिवलाकंधीइतिलोके वलभेदे इदं वंशस्थदः इति सुंदरी एतोपदुर्गितवाजीकाराणं ३५० अथैकैकयोगवर्णनमाह एकैकेति एकैकयोगेन ज्वरादीनामान्
जयेत् नाशं कुर्यात् वैद्यतिशेषः तदैकैकयोगां इह अस्मिन् ग्रंथे वदामि कथयामि यथापद्यते पुञ्जेषु सपपटोवारिधिरः स्यतः कथिता अपके क्षमेषु पुञ्जेषु लंघनानि कथि

अथैकैकयोगवर्णनं एकैकयोगेन जयेत् ज्वरादीन् किमन्ययोगैरहित इदमि सपपटोवारिधिरौज्वरेषु पक्षेषु पक्षेषु चलंघनानि
३५० स्यतोति सारिकुटजो ग्रहण्यांतक्रंच भस्मातकमर्शसीष्टं पथ्यात्वजीर्णेषु रूमौ रूमि प्रंपांडा मये किटमसंशयेन ३५१
वासासापिते च ध्ये सुराचकाशेषु सर्वेषु च कंटकारी हिक्का सुभार्गी सहनारिण स्वासे विभीतं मधुना प्रदद्यात् ३५२ स्त्रेवयस्था
सहनारिण चित्राणि भोज्यात्यरुचौ विदद्यात् धर्मांतुला जां टपित प्रशस्तं स्रद्धे लोष्टो इव वारितरैः ३५३

तानि अति सारिकुटजः स्यता ग्रहण्यांतक्रंच स्यतं अर्शसि अशरीरे भस्मातकं इष्टं अष्टं अजीर्णं तु पथ्या स्यता रूमौ रूमि रोगे रूमि प्रंपांडा मये पंडा रोगे अशंशयेन किटं लो
हकिटं स्यतं अस्त्रपित्ते रक्तपित्ते वासा स्यता च पुनः क्षये राजयक्ष्म णि मुरमाध्वी स्यता सर्वेषु कासिषु पंचविधेषु कासेषु कंटकारी स्यता हिक्का सुभार्गी स्यता स्वासे
स्वासे रोगे मधुना सह विभीतं विभीतं कं प्रदद्यात् स्त्रेवयस्था हरीतकी प्रदद्यात् अरुचौ अरुचि रोगे चित्राणि भोज्यानि दद्यात् धर्मांतु धर्दि रोगे तुला
जां प्रदद्यात् टपिते पुस्त्ये स्रद्धे लोष्टो इव वारिजलं प्रशस्तं सूरभिः मूर्ध्नि सुमधुना सह उपकुल्यां पिपली दद्यात् सदा त्वये मघं दद्यात् दाहे अनुसुहि मवस्तु दद्यात्

२७
 मनसोर्विकारोऽन्नाद्यादिरेवोसर्पिर्दद्यात् अपस्त्यतिनाशहेतोः ब्राह्मीस्यतामरुद्रोऽहंरसोनतैलं स्रुतं वातास्त्ररोगवातरक्तोरोगगुडचीहिताशामवातेगुडनागरचद-
 घातशूलयुतवायत्तिनविकेवमनं च दद्यात् पाश्वर्कमयेपुष्करं उद्दिशंति कथयन्ति वेद्या इति शेषः श्रानाहिनां पुंसां अधः प्रवृत्तावर्तिः स्रुतागुल्मेषु क्षारस्तु स्रुतः सर्वा-
 मूर्धसु दद्यान्मधुनापकुल्यांमदात्ययेमघमनुलवस्तुदाहेतुसर्पिर्मनसोर्विकारे ब्राह्मीस्यतापस्त्यतिनाशहेतोः ३५४ तैलंमनुद्रोऽहं-
 रसोनं वातास्ररोगे च हितागुडचीदद्याद्गुडं नागरसामवाते शूलविकेवमनं च युक्त्वा ३५५ पाश्वर्कमयेपुष्करमुद्दिशंति श्रानाहिनां वर्ति-
 रधः प्रवृत्ताः घातस्तुगुल्मेषु पयस्तथोष्टं सर्वादेरे विद्वधिहजलौका ३५६ स्थौल्ये हि संवारिमधुप्रशस्तं सर्वेषु कुष्ठेषु च वाक्त्रुची स्यात्
 ऊरुगदेरुगुलुरेकाएव मूत्रामयानां च शिलाजतूक्तं ३५७ मेहेयवः स्यात्स्वदिरमुखेषु नेत्रामयेषु त्रिफलाप्रयोगः नस्येन हन्यांश्चि-
 रसो विकारा निद्राधयेमाहिषदुग्धमाहुः ३५८ प्रोक्ताप्रतिस्थायहरारसालाक्षशेषु मघान्यवलेषु मांसं वा द्वेपयः स्नानसुरेस्त्रमग्रे
 सर्वा मयप्रं किल पथ्यमाहुः ३५९ इत्येकैकाप्रयोगः

दारविकारिषु त्रैष्टुभ्यः स्रुतं जलौका विद्वधिहजलौका स्थौल्ये स्थूलतारोरोमेददृष्टौ मधुप्रसक्तं
 युक्तं हि संवारि स्रुतं सर्वेषु कुष्ठेषु त्रैष्टुभ्यः स्रुतं जलौका विद्वधिहजलौका स्थौल्ये स्थूलतारोरोमेददृष्टौ मधुप्रसक्तं
 रोगेषु एव दिरस्रुतः नेत्रामयेषु त्रिफलाप्रयोगः कथितः शिरसो विकारान्नस्येन नस्य विधानेन हन्यात्माहिषदुग्धं निद्राधयेमाहुः रसालाः दूवाद्राक्षा विदार्यादिरचिता शिषरणीप्र-
 तिस्थायहराप्रोक्ताक्षशेषु मघानि दद्यात्त्रवलेषु मांसं दद्यात्वा द्वेष्टवस्थायां पयः प्रोक्तं श्रमग्रे पुनुषे स्नानसुरे कथिते स्नानं च सुराचो स्नानसुरे किल इति निश्चयेन एतत्सर्वं सर्वा

३५३ इत्येकैकाप्रयोगः इत्येकैकाप्रयोगः

८७ चः अथ ऋतुचर्यामाह सुकृतमिति सुकृतं ऋतुविचारंयः पुरुषः चरितं कुर्यात् स गदभारं जयति च पुनः यदि मुखेन सुखपूर्वकं न मुखेन प्रस्फुटं विकसितं स्पष्टं पठति तर्हि स
 समाजे प्रसूतो बहुवक्ता प्रभवति कथंभूतं ऋतुविचारं आत्मसारं आत्मनः सारं आत्मसारं पुनः कथंभूतं सर्वलोकोपकारं सर्वलोकस्य उपकारं सर्वलोकोपकारमिति च ३६०
 अथ यस्तं तु चर्यामाह कासारमिति कुसुमाकरैः सतं त्रीं कुरंगीदृशः कामिन्यः ईदृशं कासारं तडागं सितं कथंभूतं कासारं कलहं सकोककुररी क्रौंचादिकारं डवक्रीडा कुजितकल
 लकैरवकुलं कलहं सकोककुररी क्रौंचादिकारं डवानां यात्रीडातामिः क्रीडामिः कुजितां याता कुलकैरवकुलं पुनः कथंभूतं कल्हारकल्लोलितमिति च पुनः कुसुमादृशः

अथ ऋतुचर्या सुकृतं ऋतुविचारंयः सारं सारं सजयति गदभारं सर्वलोकोपकारं पठति यदि मुखेन प्रस्फुटं वा मुखेन प्रभवति
 बहुवक्ता स समाजे प्रशस्तः ३६० कासारं कलहं सकोककुररी क्रौंचादिकारं डवक्रीडा कुजितकललकैरवकुलं कल्हारकल्लोलि
 तं कामिन्यः कुसुमाकरैः कुसुमितं कामालयं काननं कुजकोकिलकाकलीकलकलाकीर्णं कुरंगीदृशः ३६१ यत्किंचित्कपना
 शनं सुकवर्लं सीधां कदूलादिकं व्यायामं लघुभोजनं वरजलं वापीनदीकुपजं कामिन्यः एतदृशं काननं श्रपिसेवते कथंभूतं काननं कु
 सुमितं पुष्पितं पुनः कामालयं कामस्य गालयं स्थानमित्यर्थः पुनः कुजकोकिलकाकलीकलकलाकीर्णं कुजंतश्चेत्कोकिलाश्चेत् कुजकोकिलातां काकल्यः सुदृमसधु
 रस्फुटध्वनतां कलकलः कोलाहलं सितं याकीर्णं अथवा कुजंतश्चेत्कोकिलाश्च कुजकोकिलाः कुजकोकिलानां काकल्यः कुजकोकिलकाकल्यः कुजकोकिल
 काकल्यश्च कलकलाश्च कुजकोकिलकाकलीकलकलाः ते राकीर्णं व्याप्तं कलकलशब्देनात्र बहुभिः पश्चिभिः कृतकोलाहलं ज्ञेयमित्याशयः एतादृशे वसंतं तीर्थ
 किंचित्कपनाशनं सुकवर्लं प्रासं यतीदृशं चापिकवर्लं कदूलादिकं व्यायामं लघुभोजनं वापीनदीकुपजं वरजलं दीपनपाचनमन्त्रं च मृदुपलं मृदुमांसं

चएतत्सर्वंसेवितुंयोग्यमित्यर्थःचपुनःअस्मिन्संतर्तोदधिचस्तिग्धानं चकिंभूतमन्मगुरुपुनःसद्रवंद्रवेणसहितंपुनःकिंभूतंमधुरंएतत्सर्ववर्ज्यंत्पुनःशक्यांदिवा
निद्रां चापित्यज्येदित्यत्रयःइतिवसंतंक्रतुचर्या ३६२ अथग्रीष्मचर्यामाह यत्प्रोक्तमिति प्रकृष्टमितिभिःविद्वज्जनेःप्रकृष्टमनयोःयेषांतेतेःप्रकृष्टमितिभिःशरदिशदृते
यत्प्रोक्तंकाथितंतच्चग्रीष्मेपिपटपतिराचरेत् अत्रग्रीष्मोकिंचिद्विशेषकं विशेषेणपटपतिनादिवसेनिद्रासंथाउदमंथादयमसेव्याःउदमथोमंथःतथथामंथःशक्तुहिमाद्या
ज्यैःनातिसांद्रद्रवोमतेति चपुनःसुभद्रवादिगस्त्रिलोप्यं सुभद्रवादिकंकेतकार्कादिकंविद्यते यस्मिंतत्सुभद्रवादिवारि उतांचवारभटे पाटलांवासितं चामःसकपूरं सु

अनंदीपंपाचनंरुदुपलंसेव्यंचवर्ज्यं दधि स्तिग्धानंगुरुसद्रवंचमधुरंनिद्रांदिवाचत्यजेत् ३६२ इतिवसंतर्तुचर्या यत्प्रोक्तंशरदि
प्रकृष्टमितिभिर्ग्रीष्मेपितत्वाचरेत्किंचिच्चित्रविशेषांतुदिवसेनिद्रादमंथादयः ३६३ पयंवारिसुभद्रवादित्पतिर्विद्योपदेशाद्भजेद्वैरेकं
रुधिरश्रुतिंनिधुवनंत्याज्यंवुधैर्नादरेत् इतिग्रीष्मक्रतुचर्या ३६४ गृहहर्मशिरःसुवीरणद्योतेरात्माह लालोकिनिमंदंमंदंसमीरग
भंष्टपतासिंचद्ववाक्ष्यदौतत्रस्थोपतिःसुभद्रवास्तमभूषितस्त्रीजनैःसौदामिन्यवशात्सांद्रजलदस्पृहापिवत्वारुणी ३३५

शीतलमिति चपुनःव्यपतिःवेद्योपदेशात्वेकं विरचनक्रियांरुधिरश्रुतिंरक्तमोक्षणं चभजेत्सिवित् चपुनःअस्मिन्तौवुधैःत्याज्यंनिधुवनंसुरतंनादरेत् आदरंनकुर्व्यात्
विशेषेणनकुर्व्यादितिभावः इतिग्रीष्मर्तुचर्या ३६४ अथवर्षर्तुचर्यामाह गृह इति 'वर्षासुवर्षाक्रतौसुभद्रवास्तमभूषितस्त्रीजनैःसहृतत्रस्थःतत्रगृहेस्थितःन
पतिःयारुणीमदिरांपिवन्सत्सौदामिन्यवशात्सांद्रजलदस्पृहामकरोत् यथाजलदोजलंपीत्वासौदामिनिपुनश्चेदुन्मतोभवतितथैववारुणीपीत्वासौदामिनिपुनमस्त्री
जनैःसहृयुक्तोभूतोनातोभवतीत्यर्थः कथंरतिमोहे हर्मशिरस्तुवीरणद्योते गृहमस्तकेषुगृहोपरिभागेषुउत्तीरकतेगृहे वंगत्याइतिलेकि पुनःकथंभूतं सत्सादलाली

८८ चः किं नि सत्प्रशंसाद्वलं हरि न ह्यथां शालो किं यत्सा तत्सा त्सा ह्यलोलो किं तस्मिन् पुनः किं भूति मंदं संदं समीरानि पृथता सिंचद्वाक्ष्यदौ संदं सट्श्चासा समीरं श्रमं दमंदं समीरः
 संदं सट् समीरः गर्भे यस्या तादृशेन पृथता जल कणो न सिंचद्वाक्ष्यदौ श्च दिरप्यगारो सायमान इति लोके तत्र वर्षा क्रयतौ सः नृपतिः जांगला मिषरसैः सह परं दीपनं यत्नं
 देत किं भूतमन्नं स्तिग्धं च पुनः किंचित्स्वल्पं अनियमस्तुं द्रव्यं च खोदेत किंचिदिति कुतः यत्स्नात्पितं उपयते तथा हृषितमस्त्वाच्च जायते इति वर्षा सुपितं स्वभावतः संवीयते इति हि
 तोः तद्यथा वर्षा सुवीयते पितं शरत्काले प्रकुप्यतीतीति सुपटुं लवणं अपि खोदेत तत्रैत्यनुषंगः च पुनः कौपांतरिश्चंपयः जलं पिवेत् कौपंचं शंतरिश्चं च अनयाः समाहारः कौपांतरि
 क्षमिति च पुनः तत्र आसौः धारा संपातेः शिशिरीकृते अहिदिवसे प्राग्वत पूर्ववात संरक्षणं कार्यं च पुनः काशीरागुरु सत्व सौरभकृता मोदतेन यतिदूरगामिनि सुगंधेन संमो
 खोदेत तत्र सजांगला मिषरसैरन्नं परं दीपनं स्तिग्धं किंचिदनिग्धमस्तु सुपटुं कौपांतरिश्चंपयः आशौ शिशिरीकृते हि किमपि प्राग्वत संरक्ष
 णं काशीरागुरु सत्व सौरभकृता मोदतेन संमोदयेत् ३६५ नीहारं च नवनीरं च नर्मनिलयादत्यं च नवान्नं च दिवानिद्रा च निःशयनं च नदीनिधुवनं च नार्क
 नरेशैर्नरैः देशं देशभुजंगमाखुधरणीवाष्पौष्मिकं तित्तकं व्यायामं दधिपल्लवां वुकदुर्कं च वर्षा सुवर्ज्यं सदा ३६७ इति वर्षा क्रयतु चर्च्य

देयत मन इति शेषः च पुनः वर्षा सुवर्षा क्रयतौ नरेशैः नरैः नीहारं च नवनीरं च नर्मनिलयादत्यं च नवान्नं च दिवानिद्रा च निःशयनं च नदीनिधुवनं च
 सदा वर्ज्यं व्याज्यं च पुनः तत्र वर्षा क्रयतौ नरेशैः नरैः नार्कं अपि वर्ज्यं न शुभरां च नार्कं नकारः शुभगेधर्मचेति विश्वः वामं द्युक्तं नदीजलोदमंथाहस्वप्रायासातपांस्त्य
 जेदिति च पुनः तत्र देशभुजंगमाखुधरणीवाष्पौष्मिकं देशं चापि वर्ज्यं देशं च भुजंगमाश्च आखुधरणीवाष्पौष्मिकं च तद्युक्तं देशभुजंगमाखुधरणीवाष्पौष्मिकं धरणीवा
 ष्पौष्मिकं उष्मायत्तं तित्तकं च व्यायामं च दधि च पल्लवां वुकदुर्कं च एतत्सर्वं सदा वर्ज्यं व्याज्यमित्यत्वयः नीहारं तु घ्राणत्वा इति लोके ॥

नवंनीरं नवं जलं नर्मिलयं दत्तं नर्मिलयः क्रीडायाः निलयं स्थानं नर्मिलयं तस्मादन्त्यवर्ज्यं किंतु नर्मिलयमेव उपवनादिकमेव तत्र सेव्यं प्रतोऽन्यत्र वर्ज्यमित्यर्थः निधुव
नं सुतं व्यायाममायासमिति ३६७ इति वर्षीकृत्युचर्या अथ शरदृत्युचर्यामाह सेव्यमिति शयः वाहुल्येन शरदिशरदौ वपुषः प्रियाय शरीरस्य हिताय एतत्सेव्यं किमित्यता
द स्वादु सरोजसौमशरसन्नीरसश्चर्करासेव्यं सचतन्नीरं च सन्नीरसस्तः सन्नीरं शरः सन्नीरं सरोजैः सौरभं सरोजसौरेभं चतत्सरः सन्नीरं च सरोजसौरभसरः सन्नीरं सती च सौ
शर्करा च सश्चर्करा स्वादु च सरोजसौमशरः सन्नीरं च सश्चर्करा च एतेषां समाहारः स्वादु सरोजसौरभशरः सन्नीरसश्चर्करमिति स्वादुर्मिष्टं स्वादुर्मेनोजे मिष्टे चेति हेमः सरोजसौ

सेव्यं स्वादु सरोजसौरभसरः सन्नीरसश्चर्करां सौधं स्वात्तरणं शशांकशुकरैः संस्कारितं सद्गतसौगंधं सशरं सशर्करपयः खेतास्रजः
शालपः श्रीखंडः शिशिराणि सुंदरमुषीसल्लापशुखांशुकं ३६८ तितातीक्ष्णकषायजां गलरसागोधूममुद्गादयो वर्ज्यं चाध्यसनं दि
शकरकरासैलं च निद्रादिवायुकिंचित्क्वटुकं पटुर्देधिसुराप्राप्तापि नातर्पयेत्सायं तश्चरदिप्रियाय वपुषोरतं हरेद्दिचयेत् ३६९ इति

सौरभसरः सन्नीरं कमलैस्तुगंधितं सरससल्लडागस्य सत्समीची शरदृत्युचर्या नन्नीरं जलं सप्रेष्टा शर्करा मिश्री सौधं च सेव्यं सौधं राजविस्स तथाहि सौधोऽस्त्री राजस
दनमित्यमरः स्वात्तरणं च सेव्यं किंभूतं स्वात्तरणं शशांकशुकरैः संस्कारितं शशांकशुक्रैः तस्य शुकरैः शुभाकिरणैः संस्कारितं शीतलीकृतं स्वात्तरणं शय्याच्छादनं वस्त्र
मित्यर्थः पुनः किंभूतं सद्गतं तत्समीचीनं सत्रं सद्गत्तं निवसत् सद्गतं तद्वत्समीचीनं धवलमित्यर्थः च पुनः सशर्करपयोपि सेव्यं कथंभूतं पयः दुग्धसौगंधं सुगं
धेनसहितं सौगंधं पुनः कथंभूतं पयः सशरं शरेण संतानिकया सहितं सशरं संतानिका मलाई इति लोके ण्याता च पुनः खेतास्रजः अपि खेतपुष्पापरचितामालाश्च
विह्वलाः शालयः अपि सेव्याः श्रीखण्डश्च दनमपि सेव्या शिशिराप्यपि द्रव्याणि कदल्यादीनि सेव्यानि कुतः पित्तहरत्वात् शरदिपित्तं कोपमुपेतीति कारणान् च पु

नः सुंदरसुखीसल्लापशुभांशुकं च सेव्यं सुंदरं सुखं यस्यासातस्यासल्लापः इति सुंदरसुखीसल्लापः सुंदरसुखीसल्लापं च शुभांशुकं च सेव्यं च नयोः समाहारः सुंदरसु
 खीसल्लापशुभांशुकमिति च पुनः तित्तातीक्ष्णकषायजांगलरसाप्रतिसेव्याः गोधूममुष्णादयोपि सेव्याः च पुनः अधसनं दिग्गकरकराः तैलं दिवानिद्रा च अस्मिन्
 कृतौ वर्ज्यं यत्किंचित्कटुकं द्रव्यं पटुश्च दधि च सुरा च प्राप्तापिलब्धापि नात्रर्पयेत् इन्द्रियाणीति शेषः च पुनः अस्मिन् कृतौ रक्तं हरेत् शोणितं मेक्षणं कुर्यात्
 च पुनः रेचयेत् रेचनं कुर्यादित्यन्वयः ३५ इति शरद्वृत्तं चर्या अथ हेमंतं तु चर्या भाह हेमंत इति हेमंते हि मन्त्रतौ वलिनो नरस्य अनिलः अग्निः पटुतरः भवति सो
 हेमंतो वलिनो नलः पटुतरः सोलाति धातुः संतलादस्त्वपटुस्तुल्यमधुरं सांसं पयः सर्पिषीति लंघनं लतनूनपातरणाय स्तां वूलतुंगस्तना
 तारुण्योत्तरलोत्तरंगतरुणीतत्रांतनुद्राणकं ३० व्यायामंगुरुभोजनानि सुस्मीन्येतान् भजिजांगलान्नीसारं वरं कं वं यदि न चेद्बहि

मिः धातुनरसं घलाति भुंक्ति तस्मात्कारणात् अस्त्वपटुस्तुल्यमधुरं सांसं पयः सर्पिषीति ते सेव्याति
 लंघनं च पुनः तूलतनूपातरणाय असेव्याः तूलं च तनूपाचतरणि अतूलतनूनपातरणायः तारुण्योत्तरलोत्तरंगतरुणी च सेव्या तारुण्येन उत्तल्याः चंचलाः उत्त
 रंगाः विभक्तकटाक्षादयः तद्युक्ताः जरुणी इत्यर्थः कथं भूता तरुणी तौ वूलसहि तातुंगस्तनायासांताः ताम्बूलतुंगस्तनेति तां वूलमुच्चस्तनेति पाटे सति तां वूलमपि सेव्यं
 बोधं तत्रांतनुद्राणकं च व्यायामं च गुरुभोजनानि च सुस्मीन्येतान् भजिजांगलान्नीसारं वरं कं वं यदि न चेद्बहि
 स्तां वरं कं वं चर्याति निश्चयेन एतान् शरद्वृत्तान् भजितुं वेतयदि न वेतनं भजेत् तर्हि बहिरग्निः मंदतां व्रजेदित्यन्वयः हेमंतं तौ यद्येतान् भजेत् तर्हि अग्निः धातुः त्रसंच भुक्त्वा
 स्वयं मंदतां व्रजेत् तस्मिन् प्रौढे सति रिभाणा मुत्पत्तिर्भवत्यस्मादेतान् भजेदित्यर्थः रांकवं मृगरोमजमिषमरः मृगशब्देनात्राविकायं बोध्यं तेन कं वलाद्यपि प्रासं नी सारं

एवमिदं तिलोके तद्यथा नीसारस्यात्तावरणे हि मानिलनिवारणे इत्यमरः नितरां शीर्यते हि मा निला वत्रानेनेति इति हेमंतर्तुचर्या ३७१ अथ शिशिरर्तुचर्यामाह एवमि
ति एवं शिशिरकोविधिः विहितः कथितः एवमिति योविधिः हेमंते विहितः स एव विधिः शिशिरेपि विहितः इत्यर्थः वामटेष्ठुक्तं अयमेव विधिः कार्यः शिशिरेपि विशेष
तः तदा हि शीतमधिकं रोक्ष्यं वादनकालजमिति अयमेव विधिः हेमंतकोविधिरिति च पुनः तत्र शिशिरे अतिरुक्षं कटुं च भिषजः त्यजंति च पुनः किंकुत्सितं काषायं अपि
भिषजः त्यजंति क्लृयते कवनं वा कुशद्वे गहुलकादडिम्कायते डिमिर्वाहीति निश्चयेन अन्यं सर्वं हेमंतिकं हेमंतोक्तविधिं कुर्यादित्यन्वयः इति शिशिरर्तुचर्या ३७२ इति

एवं शिशिरकोविधिरुपि विहितस्तत्रातिरुक्षं कटुः कारवायं किमपि त्यजंति भिषजो ह्यन्यंतु हेमंतिकं ३७२ इति षड्रतुवर्णनं समाप्तम्
ये स्त्रीयनामात्रविनिःक्षिपेयुं ग्रंथे मदीये बहु कष्टजाते तेषां मदीयं श्रमवन्ति रुच्यैर्दोघुक्षतुस्वर्गयशो वस्त्रनि ३७३ ये ये प्रयोगान् श्रु
तापवाच्यास्तेष्वत्र योगाः प्रकटीकृतार्थाः परोपकाराय यशः प्रवृत्त्यै तस्माद्भवन्तोऽप्यनुमोदयंतु ३७४ यो याच्यमानाय ददीत् पुनः
कमदीयमेतद्भिषजं विपश्चिते शिवस्य पूजा बहु कालतः कृता फलेन तस्मात्तददत्तं युज्यतां ३७५ षड्रतुवर्णनं समाप्तम् ३७५

अथ ग्रंथकर्तृरुक्तिमाह यइति ये पुरुषः अत्र अस्मिन् मदीये बहु कष्टजाते ग्रंथे स्त्रीयनामविनिक्षिपेयुः निक्षिपणं कुर्यात् तेषां पुंसां स्वर्गं सुखं च पुनः यशः वस्त्रनिचमदीयं श्रम
वन्ति उच्चैरेषां स्नातथा दोघुक्षतु अतिशयेन तनं क्षतिना शंकरिष्यतीत्यन्वयः यइति ये प्रयोगाः न श्रुता ये प्रयोगाः अपवाच्याः न वक्तुं योग्यास्तेऽपि अस्मिन् ग्रंथे प्र
योगाः प्रकटीकृतार्थाः प्रकटीकृताः अर्थाः येषां प्रकटीकृतार्थाः येन श्रुता यवाच्या इत्यपि षट् अत्र षट् ये प्रयोगाः सुताय न वाच्यास्तेष्वत्र प्रकटीकृतार्थाः किमर्थं परोपकाराय
च पुनः यशः प्रवृत्त्यै तस्माद्भवन्तः अस्मिन् अनुमोदयंतु इत्यन्वयः ३७४ यइति ये पुरुषः एतन्मदीयं पुस्तकं याच्यमानाय विपश्चिते भिषजे ददीत् सददन् पुरुषः बहु कालतः

६० च. कृतायाशिवस्य पूजातस्याफलेन प्रयुज्यतामित्यन्वयः ३०५ अथ ग्रंथकर्तारभिधेयं दर्शयति लक्ष्मीति जाग्रजगजैतिली श्रीसारस्वतविप्रवंसविदितः श्रीमद्वंसतो द्विजः
लक्ष्मीलक्ष्णलक्ष्यलक्ष्मणपुरे आशीत उत्तमयशः तत्पुत्रः मणिरामः पुनः कथंभूतः मणिरामः श्रीकृष्णपादाब्जजम्बाजकेशसौरभेष्मधुपः तेन इयं चरत्नावली
आविष्कृता प्रकटीकृतेत्यन्वयः जगति जैतिली जगजैतिली श्रिया युक्तः सारस्वतः श्रीसारस्वतः जगजैतिल्यश्च ते श्रीसारस्वताश्च जगजैतिली श्रीसारस्वताः ते एव विप्राः
तेषां यो वंशः तस्मिन् विदितः प्रसिद्ध इति लक्ष्मीश्चतुर्लक्ष्णं चलक्ष्मीलक्ष्णं वा लक्ष्म्याः लक्ष्णं लक्ष्मीलक्ष्णं तेन लक्ष्यं यल्लक्ष्मणपुरं तस्मिन्निति श्रीकृष्णपादा

लक्ष्मीलक्ष्णलक्ष्यलक्ष्मणपुरे जाग्रजगजैतिली श्रीसारस्वतविप्रवंसविदितः श्रीमद्वंसतो द्विजः तत्पुत्रो मणिराम उत्तमयशः
श्रीकृष्णपादाब्जजम्बाजकेशसौरभेष्मधुपस्तेनेयमाविष्कृता ३०६ यत्रोत्तमोत्तमजलासरितांवरिष्ठा श्रीगोमतीप्रचुरपात
कपुजहन्त्रीयस्यां वसंतिकविवाहुजवैश्यशूद्राभूयात्मुदेलषनजनगरीप्रसिद्धा ३०७ वसुनवरसचंद्रवत्सरमासिचैत्रशशि
करकृतशुभ्रेशुक्रवारोदशम्यां प्रकटितगुणमालावैद्यविद्याविशाला जयति विविधैर्तैर्दत्तरत्नावलीयम् ३०८

स्वजेषु भाज्यत केशरत्नसौरभेष्मधुपमणिरामः अथ लक्ष्मणपुरस्य समासेन वर्णनमाह यत्रेति यत्र यस्यां नगर्या उत्तमोत्तमजलासरितांवरिष्ठाः
श्रीगोमतीप्रचुरपातकपुजहन्त्रीयस्यां वसंतिकविवाहुजवैश्यशूद्राः वसंतिसेयं लषनज इति नाम्ना प्रसिद्धानगरीमुदेलषनदायभूयादित्यन्वयः ३०७
अथ ग्रंथपुरणयोश्च तदेवाह वसिति वत्सरे कथंभूते वत्सरे वसुः नवरसचंद्रोदशशताष्टनवतौ वत्सरे च पुनः चैत्रमासि च पुनः शशिकरकृतशुभ्रेशुक्रवारोदशम्यां तिथौ च इयं चरत्नावली परिपूर्णता गतेति शेषः च पुनः इयं चरत्नावली

विविधद्वैतैर्जयति किंभूताप्रकटितगुणमालाप्रकटिताः गुणानांमालापस्यां सौ यद्वा प्रकटितारचिता चसौ गुणमालाचप्रकटितगुणमालासपि पूर्णतांगता गुणमाला
 शब्देन गुणरत्नमाला नाम ग्रंथविशेषो न्योयोध्यः पुनः किंभूतावैद्यविद्याविशालावैद्यानां विद्यावैद्यविद्यावैद्यविद्याविशेषाण्यत्यंतेशोभतेऽतिवैद्यविद्याविशालेत्यन्वयः ३५
 अथग्रंथकर्तुं ग्रंथावलोकनार्थमुक्तिमाह मणिरामेति मणिराममिषकजनेन विधिवद्यथा मति यादृत्तरत्नावलीरचिता सायदिदं चिकित्सितोत्सुका उत्कण्ठयेधौतेः
 बुधवैद्यैः कृपया विलोक्यतामित्याशय इत्यन्वयः ३५ अथग्रंथांतर्गतमंगलमाह श्रीमन्मंजुलेति एतादृशेष्टंदावनेमंगलं सदा वर्तते कथंभूतेष्टंदावने श्रीमन्मंजुलेवं

मणिराममिषकजनेनयारचितेयं विधिवद्यथा मति यादृत्तचिकित्सितोत्सुकैः बुधवैद्यैः कृपया विलोक्यतां ३५ श्रीमन्मंजु
 लवंजुलावलिलताकुंजेलिपुंजेहसकुंजेरंजित इंदुरस्मिनि करैर्नानाद्रुमामोदिते कालिंदीमृदुवालुकासुललिते श्रीमत्पदैरं
 किते राधाभाधवयोर्विषक्तमनसोर्दंदावनेमंगलं ३६ भव्यंभाव्यमितीरयंति वनिताः श्रुत्वावचः सादरं प्रष्टुं त्या किमिदं सखी हरि

जुलावलिलताकुंजे श्रीमन्मंजुलश्चमनोह रसोतातेत्यवोचत्पदं रश्मि एव वंजुलः वानीरजलवेतसः तेषां प्राचलिः पंक्तिः लतानां कुंजः लताकुंज
 श्रीमन्मंजुलवंजुलश्चलताकुंजंचतौ वर्तते यस्मिन्सतथाभूते पुनः कथंभूतेत्रलिपुंजेप्रलीनां पुंजयस्मिन्तथाभूते पुनरुसतिविकसंति कंजानिकमलानियस्मिन्तथाभूते
 पुनः इंदुरस्मिनि करैः रंजिते प्रकाशिते पुनः नानाद्रुमामोदिते नानाद्रुमानां ग्रामोदः दूरगामिन्यः सुगंधयः तामिरामोदिते पुनः कालिंदीमृदुवालुकासुललिते का
 लिंदीः सखी सुतायाः यमुनाया मृदुवालुकातामिः ललिते तस्मिन् पुनः राधाभाधवयोः विषक्तमनसोर्दंदावनेमंगलं ३६ भव्यंभाव्यमिति लालोल्लासिनयोद्भविषुदशने आनंदीदधिवीचिसप्रमनसासात्रा पुनश्चुर्विते वारंवारचुर्विते कलेसदामंगलं

एवं स्यात् कथं भूतया मात्रा सादरं यथा स्यात् तथा किमिदं सखीः प्रथं स्यात् किं कृत्वा भवं भव्यमिति वनिता इत्यंति श्रौ हारिः तात इति पदं श्रवोचत इति तासां वचः श्रुत्वा स्वत्वकः
५ तासां मित्यध्याहरः श्रयवा सखी रिति संबोधनमाद्यय वनिता गोपिका भव्यं भव्यतीत्यंतीति वचः श्रुत्वा हि सखीः किमिदं यतो वनिता भवं भव्यमिति तीरयन्ति श्रौ हारिस्तोति निपट

अनंदो दधिवी विमग्न मनसा मात्रा पुनश्चुं किल लोलास्मिन् नवोद्भूतुदशने कृते सदा संगलं ३८१ इति श्रीमणि राम मिश्र विरचिता दृष्टा
रत्नावली समाप्ता ॥ अथ तिलककर्ता स्ववंश प्रस्तावं दर्शयति अथ विराजति यत्र सुगोमती मतिमतीत्यकविन्दधतो बुधः अथ हारानु।
दिनं सुजनुष्मातां विधिभ्यते न्तिकश्चुत्ति सुवताम् १ नयनमार्गमितापि जनुष्मातानलमधौ घसमुद्गतये वहमसुरसुरद्व गिलां सुरव
चिता वितुमिमां मिवर्तत श्रविका २ प्रथममधुषितेय सुलक्ष्मणेन लभति स्म तदा स्पटमाख्यया जगति तस्य ततो जनता जगौ ल
खनउ सुपरम्परायानया ३ समवलोकय दृष्टि स नारातं दशमुखा लुलिता त्रपते लका सुखकरी रूपदोद्भवतां त्यजाश्च नुवसन्ति सुखेन
पुरीति माम् ४ अमदत्रवसंत इति श्रुती मिष गिलातल विश्रुत सद्यशाः पुरिचजीवति यत्र मिषतमेन हि जनानपमृत्युरवाधात् ५

भवोचत यग इति सादरं प्रथं सित्यन्वयोवा सखी यमिच्छतीति स्त्री सखी स्तस्याः संबोधननदी संज्ञाया अभावात् तत्र युक्तं कार्यमपि न हे सखीः लालासिः उल्लसति तदीयः
लालोष्मासी लालोष्मासि नवोद्भूतुदशने नोपस्मिन् सस्तस्मिन्निति ३८१ अथ तिलककर्ता स्ववंश प्रस्तावं दर्शयति अथ विराजतीति श्रीशिष श्री

प्रभवन्मणिरमाद्यतिप्रथिताभुवनेषु वसंतसुतस्तुमिषकप्रवलोत्तरपमागतमन्त्रकरोपि विभायकुतोत्तरुजाङ्ग एनादसारस्यते योजनिजैतिली
 येसमाख्योर्वीवलयेप्रसिद्धिचक्रेशुभापण्डितमान्यदत्तरत्नावलीरत्नगुणैरूपेतामप्रजजिरेकेशववद्विदसाराङ्गहस्तामणिरामपुत्राः ३
 भ्रासुतः केशवदासविद्यादिषतामशशङ्करदासशर्मा ८ महादिनन्दपरमादिनन्दप्रशादमल्लत्रादिगंतकीर्तीन्सुतान्महिष्यामगादावदा
 वानजीजनच्छङ्करदासशर्मा ९ महानन्दसुतामुन्मूलालप्रियवदयालुकः मूरिमल्लसुतोमुतासिंहश्चनवमीहरिः मुन्मूलालेनजनितोजगन्ना
 थाजगप्रियः चत्वारोयस्यतनयादिगिभाइवजजिरे ११ प्रथमासगुल्लीलयतोदिनानिप्रकर्षतायस्यवसेवभवधामस्यशकीर्तिसुष्यशु
 भ्रासप्रथामलालः प्रथमोवभव १२ मेघज्यमासीदुवनेष्वतुल्यं यशोमल्लमस्तलमानसेस्यप्रकर्षताश्रूयतशुश्रूतिडासोभूद्वितीयो गिरिधारि
 लालः १३ मोहितोमदनः कांत्यरिहितारोगभङ्गः लोहितोपितिरश्चक्रेशोभून्मदनमोहनः १४ वागभटेप्राङ्गटोभूमौचरकोर्कडवापरः
 विहारिलालः संजातसुरीयोमिषगुणमः १५ विहारिलालात्संजुजिगौरीशंकरसंजकः बोधीतेस्तातिशास्त्राणिगौरीशंकरशंकरः १६ मोला
 नाथोरामरत्नोनारायणइतित्रयः मल्लसुतवश्यते श्यामलालतनूङ्कवाः १७ श्रीरामरत्नोजनयन्महिष्याप्रियंवदं श्रीशिवशङ्करं सुतममद्या
 किनीवल्लभमुप्रकीर्तिनारायणजीजनदातसद्यथाः १८ पुत्रोभून्निरिधारिशर्मा मिषजः कालीप्रशादोमिषग्याप्तंयद्यसशाखिलंजगदि

मेघज्यमप्यनश

६८२
श्रीसाः शुश्रूतवाग्भटादिकमहाग्रंथेषु योजागरीहयिष्यस्वसेनवन्तुणराणाः शंभोर्यथासिद्धयः १५ तेनियं प्रचरन् श्रमेण सुखे विद्वज्जना
नन्ददामैषज्य कन्दनादिव्यंजनवती व्याधिर्निन्दैर्युता वर्षतागनराक्षिनन्दनदजेमसिसुमार्गशुचौपक्षेनांदयुते सुनन्दनतिथौ घसेनवा
र्च्याल्यके २० सौम्यर्क्षपरिपूर्णातामुपगमत्प्रशादादियं श्रद्धौष्टतपदान्वितामृतमयीरत्नावलीचंद्रिका हज्जडवायधविनाशि
नीमुभिषजांधीमानसोल्लासिनी भैषज्यप्रकारिणी गुणनिधिप्रद्योतिनी सर्वदा इति श्रीमदार्यनदात्मजश्रीमद्देवीदत्तगुरोर
नुग्रहाद्भिषज्यजनचकोरेषुकुमुदवांधवश्रीमद्भिरीधारीलालभिषगात्मजकालिकाप्रसादविरचिताष्टतरत्नावलीचंद्रिकासमाप्ता ।
श्रीगणेशायनमः श्रयेमातर्गामत्यखिलशिवकारिण्यघहरे भजेत्वांगीरीशो ग्यनिशममलेशोशतधृतिः तवापांशंस्पर्शादजस्मसा
एवञ्चविवजेत् यतस्त्वांसंध्या येजननिजनदुखौघहरिणी १ तवेदंसत्तीरसुखदशुभातीरेसुखहेवसिष्टोत्तिर्गोमिदगुगुलहकौत्सा
दिमुनयः तपस्तप्तागष्टयनिशममराभां व्रह्मपदवीं श्रतस्त्वांसंध्याये ० २ तवाण्ये मग्नानचभवतिमग्नोभवनेदेयदातेस्मोपीतंन
चपिबतिमातुस्तनमहो स्पृशतर्णयोवैस्पृशतियमल्लेकंनहितदा श्रतस्त्वांसंध्याये ० ३ यदायेतेनाम्नः शकृदपिचव्रयुर्निजमुखा
त् तदाभुक्तिर्भुक्तिर्निर्वसतिवोतेषां शयतलेमृतेह्मर्गीयायुर्गानचरयानैर्हिमनुजाः यतस्त्वांसंध्याये जननिजनदुखौघहरिणी ४

कदाचिज्ज्वारीनिधनमगमत्वापिपथिकः तदोड्डीनारेणः प्रवेलमरुतायातिवदने प्रतापातद्रेणोः खलु निमिसिलोकंसंगतवान् ।
 अतस्त्वासंध्याये ५ असारिसंसारितवचरणसारंजननिये भजंतिध्यायंतिदुष्पणहरिसर्वप्रियतमेनोदुखं द्रष्टुं नरकशतजन्यं सुकृतिनः
 अतस्त्वासंध्याये ६ अहोवासिधेदंतवसलिलमात्वादुसुखदं विहंगाः मातंगाः करिरिपुभुजंगाश्चक्रमयः सुपीत्वागच्छंति त्रिदशतनु
 मास्त्रिद्वसदनं अतस्त्वासंध्याये ७ अतोमातर्गीगोयदिसुमहिमाद्यैः परतटमशिवेशः पद्मेशोद्दिगामुजगेशोचसततं नगंतुं श
 तास्तेद्युनदिकथमाप्नोतिमनुजाः अतस्त्वासंध्याये जननिजनदुल्लोचहरिणी ८ गोमत्यष्टकसंज्ञकं शुभमिदं पापौघनिर्नाशनं मा
 द्यस्यापतनं पठंत्यपि सद्यो गोमतीसन्निधौ ते गच्छंति सुरालयं विहसुतैः प्रौत्रैः प्रौत्रैर्धनैर्मातंगाश्चरथादिभिश्चनियतं युक्तं भवे ।
 तसर्वदा ९ अश्नत्सुदक्षसुयशोवती तलेगिरिधारिलालोमिषजांवरिष्टः काली प्रशदाख्यसुतोहितस्य यशोधनसेनविनिर्मितं
 विदं १० क्वक्षिदुर्गादुमिते सुवत्सरे वह्निगर्भजसमेवशाके वैशाखमासे प्यसिते च पक्षे तिथौ शराख्ये परिपूर्णितामगात् ११
 इति श्रीगिरिधारीलालमिषगात्मजकालिकाप्रशादविरचितं गोमत्यष्टकं समाप्तम् ॥ मुद्रालये मुद्रितवान् स्वकीये सद्गुरुतरत्नावलिचंद्रि
 काख्यं मुप्रीतिदां पंडितवैजनाथश्चाजौ ग्रनेत्रांकरसाहू वर्षे १९३१ माघे सिते युष्मतिथौ नदीशस्तनंधवाद्देशतारकाद्यैश्चैकितिकानां लि

अतस्त्वासंध्याये ५ असारिसंसारितवचरणसारंजननिये भजंतिध्यायंतिदुष्पणहरिसर्वप्रियतमेनोदुखं द्रष्टुं नरकशतजन्यं सुकृतिनः
 अतस्त्वासंध्याये ६ अहोवासिधेदंतवसलिलमात्वादुसुखदं विहंगाः मातंगाः करिरिपुभुजंगाश्चक्रमयः सुपीत्वागच्छंति त्रिदशतनु
 मास्त्रिद्वसदनं अतस्त्वासंध्याये ७ अतोमातर्गीगोयदिसुमहिमाद्यैः परतटमशिवेशः पद्मेशोद्दिगामुजगेशोचसततं नगंतुं श
 तास्तेद्युनदिकथमाप्नोतिमनुजाः अतस्त्वासंध्याये जननिजनदुल्लोचहरिणी ८ गोमत्यष्टकसंज्ञकं शुभमिदं पापौघनिर्नाशनं मा
 द्यस्यापतनं पठंत्यपि सद्यो गोमतीसन्निधौ ते गच्छंति सुरालयं विहसुतैः प्रौत्रैः प्रौत्रैर्धनैर्मातंगाश्चरथादिभिश्चनियतं युक्तं भवे ।
 तसर्वदा ९ अश्नत्सुदक्षसुयशोवती तलेगिरिधारिलालोमिषजांवरिष्टः काली प्रशदाख्यसुतोहितस्य यशोधनसेनविनिर्मितं
 विदं १० क्वक्षिदुर्गादुमिते सुवत्सरे वह्निगर्भजसमेवशाके वैशाखमासे प्यसिते च पक्षे तिथौ शराख्ये परिपूर्णितामगात् ११
 इति श्रीगिरिधारीलालमिषगात्मजकालिकाप्रशादविरचितं गोमत्यष्टकं समाप्तम् ॥ मुद्रालये मुद्रितवान् स्वकीये सद्गुरुतरत्नावलिचंद्रि
 काख्यं मुप्रीतिदां पंडितवैजनाथश्चाजौ ग्रनेत्रांकरसाहू वर्षे १९३१ माघे सिते युष्मतिथौ नदीशस्तनंधवाद्देशतारकाद्यैश्चैकितिकानां लि

